यह पञ्चाङ्ग ... रजिस्टर्ड हो चुका है अतः कोई महाशय इसके किसी ... की नकल करने का साहस न करें। रजिस्टर्ड नं० ८४५

श्रीबघाटमहीमहेन्द्र "धर्ममार्तण्ड"

पँवारकुलभूषण श्रीमद्राजाधिराज
श्री १०५ दुर्गासिंहजी बहादुर C.I.E.
सोलन

॥ ॐ ॥

हृदन्तरज्ञानतमोवितान-निवारणं पण्डितमण्डलीडयम्।
त्रिकालदर्शि प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्डपञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

सार्वदेशिक सर्वोत्तम सर्वाङ्गशुद्ध पञ्चाङ्ग

श्रीगणेशाय नमः मार्तण्ड के उदय से जगमग हुआ आकाश।
क्या तारा क्या चन्द्रमा सबका छुपे प्रकाश ॥ श्रीलक्ष्म्यै नमः

राजा चन्द्रः

मन्त्री चन्द्रः

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड श्री १०५ मद्दुर्गासिंहवर्मभिः संरक्षितम्

रूपगढ़ीया (रूपड़) क्षवृत्तीयं दृग्गणितैक्यविषयं।

1953–54

अलंकृतम्, धर्मशास्त्रसम्मतं च

भारत के विख्यात पञ्चांगकर्त्ता
एवं ग्रन्थकार
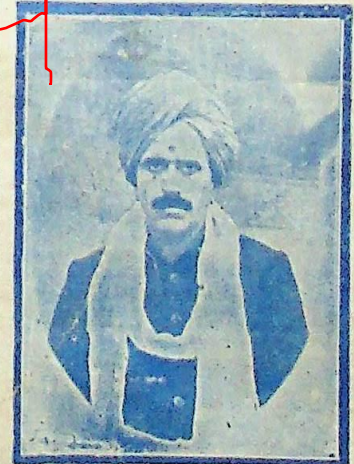
दैवज्ञरत्नराजज्योतिषी
श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य
कुराली (पंजाब)

BAGHAT श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्गम् PANCHANG

श्रीविक्रमार्कीय सं० २०१०, शके १८७५, सन् १९५३-५४ ई०, जयहिन्द सं० ६, (१५ अगस्त से ७)

गुरुवर्य्य श्री ६ पूज्यपाद कै० वा० गोविन्द सदाशिव आपटे एम. ए. बी. एस. सी. गणकचक्रचूड़ामणीत्याद्युपाधिधारिणाम् एवञ्च श्रीजयपुरमहाराजाश्रित-सिद्धान्तपञ्चाननपूज्यश्री ६ पं० केदारनाथसाहित्यभूषणज्योतिषयन्त्रालयाध्यक्षाणां शिष्येण श्रीमद्दैवज्ञवर्य पं० रामचन्द्रात्मजेन पञ्चाम्बुदेशान्तर्गतकुरालीनिवासिना बघाटनरेशाश्रितेन ज्योतिषाचार्येण श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मणा विरचितम्। गणितकर्तारौ—साहित्याचार्यश्रीसत्यव्रत-प्रियव्रतशास्त्रिणौ।

बांकीपुर पटना ❁ मोतीलाल बनारसिदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, नेपालीखपरा बनारस ❁ किनारी बाजार देहली

विषय-सूची

सूचना—आषाढ़ शुदी के लष्टर में प्रसमैन की गलती से भद्राव्रतादि वाला छः लाइनों का मैटर एक लाइन कुछ ऊपर सरक गया है कृपया ठीक करके पढ़ें।

आशीराशंसना

जयन्ति श्रीमहाविद्या पादपङ्कजरेणवः।
यत्कृपालेशमात्रेण रङ्को राजति सत्वरम् ॥१॥
श्रीदुर्गासिंह वर्माख्यो राजा राजगुणैर्युतः।
सनातनी धर्मधुरं, वहन् भागवतोत्तमः ॥२॥
बघाटेशः सोलनाख्य[१] राजधान्यामुदारधीः।
राजते धर्ममार्तण्डो गोविप्रगणपूजकः ॥३॥
निदेशात्तस्य राजर्षेरिदम्पञ्चाङ्गमुत्तमम्।
प्रसृत्य मार्तण्डसममज्ञानान्ध्यं व्यपोहतु ॥४॥

१ पुरोनवपलान्यस्ति रेखातः सोलनं पुरम्।
यत्र रुद्रव्यङ्गुलाद्रि (७।११) मितांगुलप्रभा ॥

श्री १००८ आनन्दमयी मां

धात्रे भवाब्धि बनपाशविमुक्तिदायै
श्रद्धावनम्रमनसां शरणागतानाम्।
आनन्द भक्तिममितां सततं ददत्यै
आनन्दसान्द्रचरिताकृतये नमस्ते॥ —सत्यव्रत

विशेष व्रतोत्सवों के चन्द्रोदय

	घं०मि०
भाद्र० कृ० ७ चन्द्रवार चन्द्रोदय रेलवे	११।२४
भाद्र० शु० कलंक ४ वार शनिवार चन्द्रास्त	८।१३
कार्तिक कृष्ण १ करक ४ रविवार चन्द्रोदय	७।५८

वर्षारम्भे प्लूटो—प्लूटो राश्यादिः—३।२८।४।४।

आवश्यक सूचना

पौष कृष्ण ३० मंगलवार को सूर्यग्रहण हमारे यहां दृश्य न होगा। इसकी भूमण्डलीय गणित का सार और मुहूर्तों का चमत्कार हमारे श्रीवटुक पंचांग में देखिये।

पञ्चांग कर्ता के सुपुत्र—उपसम्पादक
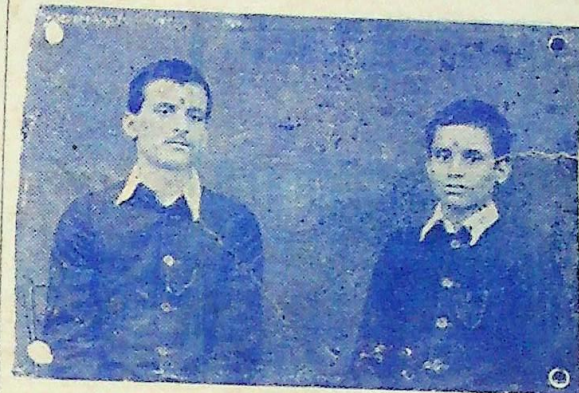
साहित्याचार्य श्री सत्यव्रत शर्मा शास्त्री—प्रियव्रत शर्मा शास्त्री

शुभविवाह—प्रभु की असीम अनुकम्पा से मेरे सुपुत्र चि० सत्यव्रत शास्त्री साहित्याचार्य का शुभ विवाह गत २००९ वै० शु. १३ बुधवार को दोराहामण्डी निवासी पं० वलायतीराम जीकी सुपुत्री सौ० अमरावती से यथाविधि सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रपति तथा श्री १०५ बघाट नरेश जी एवं मान्य सज्जनों ने आशीर्वाद भेजकर शुभकामनाएं प्रकट कीं तथा मेरे अनेक इष्टमित्रों ने समय पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ायी, अतः मैं उक्त सबों को सादर धन्यवाद प्रदान करता हूं।

श्रीमुकुन्दवल्लभः

विद्वत्सु किञ्चिन्निवेदनम् ।

पञ्चाङ्गकमदः श्रीमन्मार्तण्डाख्यं प्रवर्त्तितम् ।
देशे विद्वन्मनःपद्मोद्भेदे सूर्यायतां सदा ॥ १ ॥

सौरपक्षार्षतिथ्यादिसप्रमाणं सयुक्तिकम् ।
सोपपत्तिकमाम्नातं धर्मशास्त्रमतेन यत् ॥ २ ॥

तदत्र स्वीकृतं येन धर्मकर्मकलापके ।
कालभेदेन वैगुण्यं विद्वत्तल्लजनिन्दितम् ॥ ३ ॥

आर्षानार्षविभू वादौ प्रवृत्तौ भारते चिरात् ।
तत्रार्षवादिनः पूर्वे परे प्रत्यक्षवादिनः ॥ ४ ॥

प्राच्यं स्थूलं न चाकाशे दृश्यं वेधैर्यथातथम् ।
तद्वाक्यं मुनिभिः प्रोक्तं "कालभेदोऽत्र केवलम्" ॥ ५ ॥

धर्मप्रमुख्ये राष्ट्रेऽस्मिन् धर्मप्राणजनेप्सिताम् ।
रक्षितुं सर्वदा धर्मक्रियाकालव्यवस्थितिम् ॥ ६ ॥

मान्यैर्नक्षत्रविद्वर्गमौलिरत्नैः सुधार्मिकैः ।
आर्षमेव मतं तावत्संस्तुतं मुक्तकण्ठकम् ॥ ७ ॥

नवीनादृश्यवक्तारो वेधयन्त्रैः स्फुटीकृतं ।
च प्रत्यक्षमयं सूक्ष्मं गणितं संप्रचक्षते ॥ ८ ॥

तेषां मतिरियं साध्वी कलौ शिल्पयुगे तथा ।
पाश्चात्यसंस्कृतेरेष रागो गूढो दुराहरः ॥ ९ ॥

धर्माधर्मविवेकस्य लेशो यत्र न विद्यते ।
म्लेच्छतायाश्च साम्राज्यं यत्र विजृम्भतेतराम् ॥ १० ॥

तेषां शताब्दपर्यन्तं प्राप्तानां निम्नतां चिरात् ।
हिन्दुसंस्कृतिसाहित्यसूर्योऽस्तप्रायतामयात् ॥ ११ ॥

सौवर्णवेलेयं पुनरद्य समागता ।
दृश्यतां सर्वैः पाश्चमा न च भारतैः ॥ १२ ॥

यावत्सारोकला भूयो भारते भासततराम् ।
तस्यां तुष्यन्तु ते विज्ञास्तद्ग्रहः कौशिका न किम् ॥ १३ ॥

अस्मद्विशालसाहित्यं जागरूकं जयावहम् ।
संस्कृतिर्विगतप्राया प्राप्तस्थाना भवेत्पुनः ॥ १४ ॥

सर्वैरपि च स्वप्राचां शिक्षागौरवमद्भुतम् ।
ज्ञात्वा तत्सत्क्रियं कर्तुं यथाशक्तिप्रयस्यताम् ॥ १५ ॥

तदेतद्भारतं भूयादितीशं प्रार्थयामहे ।
मनुर्यं तज्जनुर्यस्मिन्गौरवेणेदमब्रवीत् ॥ १६ ॥

"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ १७ ॥

स्मृतयः सत्पुराणास्ते तथा वेदत्रयी च सा ।
किंपुनः सकलं शास्त्रं धर्ममूलकमस्ति नः ॥ १८ ॥

धर्मः सम्मानितो यस्यां भयः पुण्यावहाः क्रियाः ।
यस्यामीश्वरपूजायाः श्रेयःस्त्रिजगदुत्तरम् ॥ १९ ॥

ईशावतरणं साक्षाद्धर्मरक्षणहेतवे ।
यस्यां भवति सा भूमिः पुण्यभूमिः समुच्यते ॥ २० ॥

जन्मना समलंकृत्य याञ्च प्राञ्चो महर्षयः ।
ववृधुस्तपसा तावत्सूक्तानध्यात्ममूलकान् ॥ २१ ॥

तेन पञ्चगुणं सत्यधर्मप्रतिकृति-स्मृतम् ।
शुद्धं विश्वैर्नमस्कार्यमदसीयं चरित्रकम् ॥ २२ ॥

पाश्चात्यसभ्यताभूतं प्रभूतं परगौरवम् ।
दधाना धारणा धीषु धेया नैव कदाचन ॥ २३ ॥

ये च काङ्क्षन्ति राष्ट्रस्याभ्युदयं शाश्वतं पुनः ।
तया यतन्तां ते नाम धर्मः प्रमुखतां व्रजेत् ॥ २४ ॥

जगद्गुरौ भारतेऽस्मिन् शिक्षां संप्राप्तुमिच्छया ।
राष्ट्रान्तरीया आयान्तो गौरवं वर्धयन्तु नः ॥ २५ ॥

अस्माभिरेष साधीयान् सिद्धान्तो रचनान्वितः ।
कृतः प्रफुल्लतामुप्तं प्ररूढं गौरवांकुरम् ॥ २६ ॥

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

कालं नैव विरुन्धानो लोके प्राणीति कश्चन ।
विवेको महनीयःस्याद्यो हि तथ्ययुतो भवेत् ॥ २७ ॥

नात्र नो वादिता तावत्केनचिच्चाप्यणीयसी ।
"परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ २८ ॥

प्रभोर्वचनपीयूषं स्वादं स्वादं मुहुर्मुहुः ।
तृप्यन्तस्तर्पयन्तश्च भारतान् सुखमश्नुमः ॥ २९ ॥

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥ ३० ॥

राष्ट्रस्वतंत्रतालक्ष्मीः वर्धतामनुवासरम् ।
विभूतिभिः पूरयन्ती पृथिव्या वसुधापदम् ॥ ३१ ॥

इति प्रार्थयते पुष्प-शरशत्रुमहर्निशम् ।
सत्यव्रतः सदा विद्वच्चरणाब्जमधुव्रतः ॥ ३२ ॥

मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, बनारस

लक्ष्मी अथात् धन प्राप्त का मन्त्र

ॐ अस्य श्रीसप्तविंशत्यक्षरसर्वसमृद्धिकरणरमामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीमहालक्ष्मीर्देवता श्रींबीज ह्रीं शक्तिः लक्ष्मीप्रीत्यर्थ जपे विनियोगः ॥ ऋष्यादि-न्यासः—ॐब्रह्मर्षये नमः शिरसि । ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुखे । ॐ श्रीमहालक्ष्मीदेवतायै नमो हृदि । ॐ श्रीं बीजाय नमो गुह्ये । ओं ह्रीं शक्तये नम. पादयोः ॥ मूलेन करौ प्रमृज्य । कर पञ्चांगन्यासौ—श्रींह्रीं श्रीं कमले श्रींह्रींश्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः (हृदयाय नमः) । श्रींह्रीं श्रीं कमलालये श्रींह्रींश्रीं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहम) श्रींह्रींश्रीं प्रसीद श्रींह्रींश्रीं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवौषट्) श्रींह्रींश्रीं प्रसीद श्रींह्रींश्रीं अनामिकाभ्यां नमः (कवचाय हुं) श्रींह्रींश्रीं महालक्ष्म्यै श्रींह्रींश्रीं करतलपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) (करन्यास पूर्ण करके पीछे हृदयादि न्यास करे) मानसोपचारैस्सम्पूज्य ॥ ध्यानम्—सिन्दूरारुणकान्तिमब्जवसतिं-सौंदर्यवारांनिधिम् । कोटीराङ्गदहारकुण्डल-कटीसूत्रादिभिर्भूषिताम् । हस्ताब्जैर्वसुपात्र मब्ज युगलादर्शौ वहन्तींपरामावीतां परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत्प्रियां शार्ङ्गिणः ॥

मूलमंत्रः—ॐश्रींह्रींश्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रींह्रींश्रीं महालक्ष्म्यै नमः ॥ १२५००० जप से दशांश हवनादि करे । इस मन्त्रकी सिद्धि से व्यापारादिक में अतुल धनराशि की प्राप्ति होवे ॥

पहले ही मृत्यु जान लेने का अद्भुत उपाय

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च (गीता)

जन्म लेई मरना अवश अमर भया नहीं कोय ।
जीवन नद बहता रहे नीर अचल नहीं होय ॥

प्रातःकाल में सूर्योदय होने पर जैसे सूर्यास्त अवश्य होता है, दिन का प्रकाश छिपने पर जैसे रात का अंधेरा निश्चित है, वैसे ही जन्म लेने पर मृत्यु भी अवश्य होती है यह अटल नियम है, जन्म लेने पर और कुछ हो या न हो मृत्यु तो अवश्य ही निश्चित है । आज हो या कल हो या दश वर्ष पीछे हो किन्तु एक दिन सब को ही उस सर्वग्रासी यमराज के घर अवश्य पहुचना होगा । एक दिन जब मृत्यु नित्य प्रत्यक्ष सत्य है तब कितने दिन बाद अपनी प्राण से प्यारी स्त्री और प्राणधार पुत्र कन्या एवं धन जन पूर्ण सुख का संसार छोड़कर जाना पड़गा, इसको कौन बुद्धिमान नहीं जानना चाहता ? विशेषकर मृत्युको पहले जान लेने पर अपनी स्त्री तथा नाबालिग पुत्र कन्या की देख भाल हिफाजत एवं सम्पत्ति विभाग की सुव्यवस्था के साथ सारे कुटुम्ब का प्रबन्ध भी कर सकते हैं जिससे अपनी मृत्यु के पश्चात् पारिवारिक झगडे की रोक हो सकती है । दूसरा कल्याणप्रद सुभीता यह भी है कि मौत के परद पर नजर पड़ने से यथा शक्ति परोपकार दान भजनादि द्वारा सहज ही में परलोक की राह साफ करके परम शान्ति पूर्वक दुर्लभ सद्गति प्राप्त हो सकती है । मृत्यु जानने के दो प्रकार हैं एक सिद्धसंकेत द्वारा दूसरे मंत्रयोग से, पहले सिद्धसंकेत लिखते हैं—

दाहिन हाथ की मुट्ठी बांध कर नाक के सामने [illegible] आकाश की ओर ऊपर मुख करक दोंनों भृकुटी ऊपर चढ़ा मणिबन्ध (आज कल हाथ की घड़ी बांधने का स्थान) को एक टक देखो यदि ऐसे देखने पर मणिबन्ध मट्ठी से पृथक दीख पड़े तो उस दिन से ६ मास की आयु शेष समझनी चाहिये । यदि उपरोक्त विधि करने पर मणिबन्ध बिलकुल पतला और मुट्ठी के साथ लगा हुआ दीख पड़े तो अपनी आयु अधिक समझना यह निश्चित सत्य है । सिद्ध संकेत का यह लक्षण प्रकट होने के बाद

नित्य प्रातःकाल के समय आँख मूंद कर अंगुली की नोक से आँख का कोई कोना जरा सा दबाने पर आँख के भीतर चमकते हुए तार की भांति कोई बिन्दु या ज्योति देख पड़ती है या नहीं ? इसकी परीक्षा करें । जिस दिन से यह ज्योति न दीख पड़े तो समझ लो कि आज से १० दिन की आयु शेष रहती है, मरने से पहले यह दो लक्षण सब मनुष्यों के शरीर में प्रकट होते हैं । इन लक्षणों के पहचानने के लिये किसी के पास जाकर कोई शिक्षा प्राप्त करने की जरूरत नहीं । इस सिद्ध सङ्केत के अतिरिक्त हमारे प्राचीन पुस्तक भण्डार में काश्मीरी लेखनी से लिखा हुआ मृत्यु ज्ञान का बड़ा ही चमत्कारी निम्नलिखित मन्त्र भी है । इसी मन्त्र के प्रभाव से प्रायः महापुरुष अपनी मृत्यु की सूचना चिरकाल

पहले दे देते थे । दूर की बात नहीं हमारे पितामह स्व० श्रीपण्डित नानकचन्द्र जी ने भी इसी मन्त्र के अद्भुत प्रताप से अपनी मृत्यु की सूचना मुझे और अपन प्रेमियों को पार्थिव पूजन करने के उपरान्त श्रावण में ही कर दिया था कि "बच्चा अब यह हमारा नश्वर शरीर आश्विन मे नहीं रहेगा । तदनुसार ठीक उसी आश्विन कृष्ण में तृतीया को उनका शरीरान्त हुआ था । मन्त्र बड़ा चमत्कारी है दैनिक कुछ मिण्ट स्मरण करने से ही यह ज्ञान प्राप्त होता है । इस मन्त्र को किसी कर्मठ विद्वान् से ग्रहण करना चाहिये तदनन्तर ज्येष्ठ शु० १० या ग्रहण या किसी अन्य शिवरात्रि आदि पर्व में ७ या ११ माला जप कर के इसको जागृत करना आवश्यकीय है, उसके बाद अपने दैनिक नित्य कर्म के अन्त में केवल ७ बार एकाग्र चित्त से पढ़ लेना ही पर्याप्त है । तदनन्तर रात्रि को श्रीशङ्कर का ध्यान करके तीन बार पढ़कर सो जाना चाहिये । इस तरह इस मन्त्र का प्रातः ७ या ११ बार और रात्रि को ३ बार नियमित रूप से जप करने वाले को अपनी मृत्यु का ज्ञान अवश्य हो जायगा कोई विशेष साधना का झञ्झट उठाने की जरूरत नहीं मन्त्र यह है—

ओं ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम् । उर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं विश्वरूपाय नमो नमः

जिस दिन इस मंत्र का "ऋतं" यह शब्द स्पष्टोच्चारण करने म साधककी जिह्वा अटक जावे तो समझ लेना चाहिये कि काल भगवान का सन्देश आ गया है छठे ६ मासमें अवश्य मृत्यु हो जायगी । जिस दिन मन्त्र का "सत्यं" शब्द जिह्वा ठीक उच्चारण न कर सके तो समझलो अब आयु के ५ मास शेष रह गये हैं । इसी तरह जिस रोज "परं ब्रह्म" शब्द पर जिह्वाअटक

जावे तो समझलो कि अब आयु के केवल ४ मास शेष है "पुरुष" शब्दसे ३ मास, "कृष्णपिङ्गल", शब्द से दो, मास "ऊर्ध्वलिङ्ग" शब्द से एक मास, "विरूपाक्ष" शब्द से १५ दिन , "विश्वरूप", शब्द से ३ दिन, और नमोनमः शब्द के स्पष्टोच्चारण न होने से उसी दिन मौत का सन्देश समझना चाहिये । इस काल विधि को हमने कई वर्ष हुए ब्रह्मप्रेस इटावामें छपा करवितीर्ण किया था । वही यहां इस वर्ष पंचाङ्ग प्रेमियों के लाभार्थ लिखा गया है ।

दाहिन हाथ की मुट्ठी बांध कर नाक के सामने टोक सीध में मत्थे पर रखकर ... मियों के लाभार्थ लिखा गया है।

(१) वैशाख मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	७।३४	९।२९	११।४३	१४।५	१६।२५	१८।४५	२१।७	२३।२७	१।३१	३।१३	४।३९	६।१
२	७।३०	९।२५	११।३९	१४।१	१६।२१	१८।४१	२१।३	२३।२३	१।२७	३।९	४।३५	५।५७
३	७।२६	९।२१	११।३५	१३।५७	१६।१७	१८।३७	२०।५९	२३।१९	१।२३	३।५	४।३१	५।५३
४	७।२२	९।१७	११।३१	१३।५३	१६।१३	१८।३३	२०।५५	२३।१५	१।१९	३।१	४।२७	५।४९
५	७।१८	९।१३	११।२७	१३।४९	१६।९	१८।२९	२०।५१	२३।११	१।१५	२।५७	४।२३	५।४५
६	७।१४	९।९	११।२३	१३।४५	१६।५	१८।२५	२०।४७	२३।७	१।११	२।५३	४।१९	५।४१
७	७।१०	९।५	११।१९	१३।४१	१६।१	१८।२१	२०।४३	२३।३	१।७	२।४९	४।१५	५।३७
८	७।६	९।१	११।१५	१३।३७	१५।५७	१८।१७	२०।३९	२२।५९	१।३	२।४५	४।११	५।३३
९	७।२	८।५७	११।११	१३।३३	१५।५३	१८।१३	२०।३५	२२।५५	०।५९	२।४१	४।७	५।२९
१०	६।५८	८।५३	११।७	१३।२९	१५।४९	१८।९	२०।३१	२२।५१	०।५५	२।३७	४।३	५।२५
११	६।५४	८।४९	११।३	१३।२५	१५।४५	१८।५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३३	३।५९	५।२१
१२	६।५०	८।४५	१०।५९	१३।२१	१५।४१	१८।१	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२९	३।५५	५।१७
१३	६।४६	८।४१	१०।५५	१३।१७	१५।३७	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२५	३।५१	५।१३
१४	६।४२	८।३७	१०।५१	१३।१३	१५।३३	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२१	३।४७	५।९
१५	६।३८	८।३३	१०।४७	१३।९	१५।२९	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१७	३।४३	५।५
१६	६।३४	८।२९	१०।४३	१३।५	१५।२५	१७।४५	२०।७	२२।२७	०।३१	२।१३	३।३९	५।१
१७	६।३०	८।२५	१०।३९	१३।१	१५।२१	१७।४१	२०।३	२२।२३	०।२७	२।९	३।३५	४।५७
१८	६।२६	८।२१	१०।३५	१२।५७	१५।१७	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२३	२।५	३।३१	४।५३
१९	६।२२	८।१७	१०।३१	१२।५३	१५।१३	१७।३३	१९।५५	२२।१५	०।१९	२।१	३।२७	४।४९
२०	६।१८	८।१३	१०।२७	१२।४९	१५।९	१७।२९	१९।५१	२२।११	०।१५	१।५७	३।२३	४।४५
२१	६।१४	८।९	१०।२३	१२।४५	१५।५	१७।२५	१९।४७	२२।७	०।११	१।५३	३।१९	४।४१
२२	६।१०	८।५	१०।१९	१२।४१	१५।१	१७।२१	१९।४३	२२।३	०।७	१।४९	३।१५	४।३७
२३	६।६	८।१	१०।१५	१२।३७	१४।५७	१७।१७	१९।३९	२१।५९	०।३	१।४५	३।११	४।३३
२४	६।२	७।५७	१०।११	१२।३३	१४।५३	१७।१३	१९।३५	२१।५५	२३।५९	१।४१	३।७	४।२९
२५	५।५८	७।५३	१०।७	१२।२९	१४।४९	१७।९	१९।३१	२१।५१	२३।५५	१।३७	३।३	४।२५
२६	५।५४	७।४९	१०।३	१२।२५	१४।४५	१७।५	१९।२७	२१।४७	२३।५१	१।३३	२।५९	४।२१
२७	५।५०	७।४५	९।५९	१२।२१	१४।४१	१७।१	१९।२३	२१।४३	२३।४७	१।२९	२।५५	४।१७
२८	५।४६	७।४१	९।५५	१२।१७	१४।३७	१६।५७	१९।१९	२१।३९	२३।४३	१।२५	२।५१	४।१३
२९	५।४२	७।३७	९।५१	१२।१३	१४।३३	१६।५३	१९।१५	२१।३५	२३।३९	१।२१	२।४७	४।९
३०	५।३८	७।३३	९।४७	१२।९	१४।२९	१६।४९	१९।११	२१।३१	२३।३५	१।१७	२।४३	४।५
३१	५।३४	७।२९	९।४३	१२।५	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२७	२३।३१	१।१३	२।३९	४।१

(२) ज्येष्ठ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	७।२८	९।४३	१२।४	१४।२५	१६।४५	१९।७	२१।२६	२३।३०	१।१२	२।३८	४।१	५।३४
२	७।२४	९।३९	१२।०	१४।२१	१६।४१	१९।३	२१।२२	२३।२६	१।८	२।३४	३।५७	५।३०
३	७।२०	९।३५	११।५६	१४।१७	१६।३७	१८।५९	२१।१८	२३।२२	१।४	२।३०	३।५३	५।२६
४	७।१६	९।३१	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।५५	२१।१४	२३।१८	१।०	२।२६	३।४९	५।२२
५	७।१२	९।२७	११।४८	१४।९	१६।२९	१८।५१	२१।१०	२३।१४	०।५६	२।२२	३।४५	५।१८
६	७।८	९।२३	११।४४	१४।५	१६।२५	१८।४७	२१।६	२३।१०	०।५२	२।१८	३।४१	५।१४
७	७।४	९।१९	११।४०	१४।१	१६।२१	१८।४३	२१।२	२३।६	०।४८	२।१४	३।३७	५।१०
८	७।०	९।१५	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।३९	२०।५८	२३।२	०।४४	२।१०	३।३३	५।६
९	६।५६	९।११	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।३५	२०।५४	२२।५८	०।४०	२।६	३।२९	५।२
१०	६।५२	९।७	११।२८	१३।४९	१६।९	१८।३१	२०।५०	२२।५४	०।३६	२।२	३।२५	४।५८
११	६।४७	९।२	११।२३	१३।४४	१६।४	१८।२६	२०।४५	२२।४९	०।३१	१।५७	३।२०	४।५३
१२	६।४३	८।५८	११।१९	१३।४०	१६।०	१८।२२	२०।४१	२२।४५	०।२७	१।५३	३।१६	४।४९
१३	६।३९	८।५४	११।१५	१३।३६	१५।५६	१८।१८	२०।३७	२२।४१	०।२३	१।४९	३।१२	४।४५
१४	६।३५	८।५०	११।११	१३।३२	१५।५२	१८।१४	२०।३३	२२।३७	०।१९	१।४५	३।८	४।४१
१५	६।३१	८।४६	११।७	१३।२८	१५।४८	१८।१०	२०।२९	२२।३३	०।१५	१।४१	३।४	४।३७
१६	६।२७	८।४२	११।३	१३।२४	१५।४४	१८।६	२०।२५	२२।२९	०।११	१।३७	३।०	४।३३
१७	६।२३	८।३८	१०।५९	१३।२०	१५।४०	१८।२	२०।२१	२२।२५	०।७	१।३३	२।५६	४।२९
१८	६।१९	८।३४	१०।५५	१३।१६	१५।३६	१७।५८	२०।१७	२२।२१	०।३	१।२९	२।५२	४।२५
१९	६।१५	८।३०	१०।५१	१३।१२	१५।३२	१७।५४	२०।१३	२२।१७	२३।५९	१।२५	२।४८	४।२१
२०	६।११	८।२६	१०।४७	१३।८	१५।२८	१७।५०	२०।९	२२।१३	२३।५५	१।२१	२।४४	४।१७
२१	६।६	८।२१	१०।४२	१३।३	१५।२३	१७।४५	२०।४	२२।८	२३।५०	१।१६	२।३९	४।१२
२२	६।२	८।१७	१०।३८	१२।५९	१५।१९	१७।४१	२०।०	२२।४	२३।४६	१।१२	२।३५	४।८
२३	५।५८	८।१३	१०।३४	१२।५५	१५।१५	१७।३७	१९।५६	२२।०	२३।४२	१।८	२।३१	४।४
२४	५।५४	८।९	१०।३०	१२।५१	१५।११	१७।३३	१९।५२	२१।५६	२३।३८	१।४	२।२७	४।०
२५	५।५०	८।५	१०।२६	१२।४७	१५।७	१७।२९	१९।४८	२१।५२	२३।३४	१।०	२।२३	३।५६
२६	५।४६	८।१	१०।२२	१२।४३	१५।३	१७।२५	१९।४४	२१।४८	२३।३०	०।५६	२।१९	३।५२
२७	५।४२	७।५७	१०।१८	१२।३९	१४।५९	१७।२१	१९।४०	२१।४४	२३।२६	०।५२	२।१५	३।४८
२८	५।३८	७।५३	१०।१४	१२।३५	१४।५५	१७।१७	१९।३६	२१।४०	२३।२२	०।४८	२।११	३।४४
२९	५।३४	७।४९	१०।१०	१२।३१	१४।५१	१७।१३	१९।३२	२१।३६	२३।१८	०।४४	२।७	३।४०
३०	५।३०	७।४५	१०।६	१२।२७	१४।४७	१७।९	१९।२८	२१।३२	२३।१४	०।४०	२।३	३।३६
३१	५।२६	७।४१	१०।२	१२।२३	१४।४३	१७।५	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५९	३।३२

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(३) आषाढ़ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७।४०	१०।२	१२।२२	१४।४२	१७।४	१९।२४	२१।२८	२३।१०	०।३६	१।५८	३।३२	५।२६
२	७।३६	९।५८	१२।१८	१४।३८	१७।०	१९।२०	२१।२४	२३।६	०।३२	१।५४	३।२८	५।२२
३	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।३४	१६।५६	१९।१६	२१।२०	२३।२	०।२८	१।५०	३।२४	५।१८
४	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।१६	२२।५८	०।२४	१।४६	३।२०	५।१४
५	७।२४	९।४६	१२।६	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।१२	२२।५४	०।२०	१।४२	३।१६	५।१०
६	७।२०	९।४२	१२।२	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।८	२२।५०	०।१६	१।३८	३।१२	५।६
७	७।१६	९।३८	११।५८	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।४	२२।४६	०।१२	१।३४	३।८	५।२
८	७।१२	९।३४	११।५४	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।०	२२।४२	०।८	१।३०	३।४	४।५८
९	७।८	९।३०	११।५०	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२०।५६	२२।३८	०।४	१।२६	३।०	४।५४
१०	७।४	९।२६	११।४६	१४।६	१६।२८	१८।४८	२०।५२	२२।३४	०।०	१।२२	२।५६	४।५०
११	७।०	९।२२	११।४२	१४।२	१६।२४	१८।४४	२०।४८	२२।३०	२३।५६	१।१८	२।५२	४।४६
१२	६।५७	९।१९	११।३९	१३।५९	१६।२१	१८।४१	२०।४५	२२।२७	२३।५३	१।१५	२।४९	४।४३
१३	६।५३	९।१५	११।३५	१३।५५	१६।१७	१८।३७	२०।४१	२२।२३	२३।४९	१।११	२।४५	४।३९
१४	६।४९	९।११	११।३१	१३।५१	१६।१३	१८।३३	२०।३७	२२।१९	२३।४५	१।७	२।४१	४।३५
१५	६।४५	९।७	११।२७	१३।४७	१६।९	१८।२९	२०।३३	२२।१५	२३।४१	१।३	२।३७	४।३१
१६	६।४१	९।३	११।२३	१३।४३	१६।५	१८।२५	२०।२९	२२।११	२३।३७	०।५९	२।३३	४।२७
१७	६।३७	८।५९	११।१९	१३।३९	१६।१	१८।२१	२०।२५	२२।७	२३।३३	०।५५	२।२९	४।२३
१८	६।३३	८।५५	११।१५	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।२१	२२।३	२३।२९	०।५१	२।२५	४।१९
१९	६।२९	८।५१	११।११	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।१७	२१।५९	२३।२५	०।४७	२।२१	४।१५
२०	६।२५	८।४७	११।७	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।१३	२१।५५	२३।२१	०।४३	२।१७	४।११
२१	६।२१	८।४३	११।३	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।९	२१।५१	२३।१७	०।३९	२।१३	४।७
२२	६।१८	८।४०	११।०	१३।२०	१५।४२	१८।२	२०।६	२१।४८	२३।१४	०।३६	२।१०	४।४
२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१६	१५।३८	१७।५८	२०।२	२१।४४	२३।१०	०।३२	२।६	४।०
२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१२	१५।३४	१७।५४	१९।५८	२१।४०	२३।६	०।२८	२।२	३।५६
२५	६।६	८।२८	१०।४८	१३।८	१५।३०	१७।५०	१९।५४	२१।३६	२३।२	०।२४	१।५८	३।५२
२६	६।२	८।२४	१०।४४	१३।४	१५।२६	१७।४६	१९।५०	२१।३२	२२।५८	०।२०	१।५४	३।४८
२७	५।५८	८।२०	१०।४०	१३।०	१५।२२	१७।४२	१९।४६	२१।२८	२२।५४	०।१६	१।५०	३।४४
२८	५।५४	८।१६	१०।३६	१२।५६	१५।१८	१७।३८	१९।४२	२१।२४	२२।५०	०।१२	१।४६	३।४०
२९	५।५०	८।१२	१०।३२	१२।५२	१५।१४	१७।३४	१९।३८	२१।२०	२२।४६	०।८	१।४२	३।३६
३०	५।४६	८।८	१०।२८	१२।४८	१५।१०	१७।३०	१९।३४	२१।१६	२२।४२	०।४	१।३८	३।३२
३१	५।४२	८।४	१०।२४	१२।४४	१५।६	१७।२६	१९।३०	२१।१२	२२।३८	०।०	१।३४	३।२८
३२	५।३८	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।३०	३।२४

(४) श्रावण मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

प्रविष्टे	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	८।०	१०।२०	१२।४०	१५।२	१७।२२	१९।२६	२१।८	२२।३४	२३।५६	१।२९	३।२४	५।३८
२	७।५५	१०।१५	१२।३५	१४।५७	१७।१७	१९।२१	२१।३	२२।२९	२३।५१	१।२४	३।१९	५।३३
३	७।५१	१०।११	१२।३१	१४।५३	१७।१३	१९।१७	२०।५९	२२।२५	२३।४७	१।२०	३।१५	५।२९
४	७।४७	१०।७	१२।२७	१४।४९	१७।९	१९।१३	२०।५५	२२।२१	२३।४३	१।१६	३।११	५।२५
५	७।४३	१०।३	१२।२३	१४।४५	१७।५	१९।९	२०।५१	२२।१७	२३।३९	१।१२	३।७	५।२१
६	७।३९	९।५९	१२।१९	१४।४१	१७।१	१९।५	२०।४७	२२।१३	२३।३५	१।८	३।३	५।१७
७	७।३५	९।५५	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९।१	२०।४३	२२।९	२३।३१	१।४	२।५९	५।१३
८	७।३०	९।५०	१२।१०	१४।३२	१६।५२	१८।५६	२०।३८	२२।४	२३।२६	०।५९	२।५४	५।८
९	७।२६	९।४६	१२।६	१४।२८	१६।४८	१८।५२	२०।३४	२२।०	२३।२२	०।५५	२।५०	५।४
१०	७।२२	९।४२	१२।२	१४।२४	१६।४४	१८।४८	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४६	५।०
११	७।१८	९।३८	११।५८	१४।२०	१६।४०	१८।४४	२०।२६	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४२	४।५६
१२	७।१४	९।३४	११।५४	१४।१६	१६।३६	१८।४०	२०।२२	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३८	४।५२
१३	७।१०	९।३०	११।५०	१४।१२	१६।३२	१८।३६	२०।१८	२१।४४	२३।६	०।३९	२।३४	४।४८
१४	७।६	९।२६	११।४६	१४।८	१६।२८	१८।३२	२०।१४	२१।४०	२३।२	०।३५	२।३०	४।४४
१५	७।२	९।२२	११।४२	१४।४	१६।२४	१८।२८	२०।१०	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
१६	६।५७	९।१७	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।२३	२०।५	२१।३१	२२।५३	०।२६	२।२१	४।३५
१७	६।५३	९।१३	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।१९	२०।१	२१।२७	२२।४९	०।२२	२।१७	४।३१
१८	६।४९	९।९	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।१५	१९।५७	२१।२३	२२।४५	०।१८	२।१३	४।२७
१९	६।४५	९।५	११।२५	१३।४७	१६।७	१८।११	१९।५३	२१।१९	२२।४१	०।१४	२।९	४।२३
२०	६।४१	९।१	११।२१	१३।४३	१६।३	१८।७	१९।४९	२१।१५	२२।३७	०।१०	२।५	४।१९
२१	६।३७	८।५७	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।३	१९।४५	२१।११	२२।३३	०।६	२।१	४।१५
२२	६।३३	८।५३	११।१३	१३।३५	१५।५५	१७।५९	१९।४१	२१।७	२२।२९	०।२	१।५७	४।११
२३	६।२९	८।४९	११।९	१३।३१	१५।५१	१७।५५	१९।३७	२१।३	२२।२५	२३।५८	१।५३	४।७
२४	६।२४	८।४४	११।४	१३।२६	१५।४६	१७।५०	१९।३२	२०।५८	२२।२०	२३।५३	१।४८	४।२
२५	६।२०	८।४०	११।०	१३।२२	१५।४२	१७।४६	१९।२८	२०।५४	२२।१६	२३।४९	१।४४	३।५८
२६	६।१६	८।३६	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४२	१९।२४	२०।५०	२२।१२	२३।४५	१।४०	३।५४
२७	६।१२	८।३२	१०।५२	१३।१४	१५।३४	१७।३८	१९।२०	२०।४६	२२।८	२३।४१	१।३६	३।५०
२८	६।८	८।२८	१०।४८	१३।१०	१५।३०	१७।३४	१९।१६	२०।४२	२२।४	२३।३७	१।३२	३।४६
२९	६।४	८।२४	१०।४४	१३।६	१५।२६	१७।३०	१९।१२	२०।३८	२२।०	२३।३३	१।२८	३।४२
३०	६।०	८।२०	१०।४०	१३।२	१५।२२	१७।२६	१९।८	२०।३४	२१।५६	२३।२९	१।२४	३।३८
३१	५।५६	८।१६	१०।३६	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२५	१।२०	३।३४

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय [illegible] से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(५) भाद्रपद मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथु.	कर्क
१	८।१७	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२२	१९।४	२०।३०	२१।५२	२३।२६	१।२०	३।३४	५।५६
२	८।१३	१०।३३	१२।५४	१५।१४	१७।१८	१९।०	२०।२६	२१।४८	२३।२२	१।१६	३।३०	५।५२
३	८।९	१०।२९	१२।५०	१५।१०	१७।१४	१८।५६	२०।२२	२१।४४	२३।१८	१।१२	३।२६	५।४८
४	८।५	१०।२५	१२।४६	१५।६	१७।१०	१८।५२	२०।१८	२१।४०	२३।१४	१।८	३।२२	५।४४
५	८।१	१०।२१	१२।४२	१५।२	१७।६	१८।४८	२०।१४	२१।३६	२३।१०	१।४	३।१८	५।४०
६	७।५७	१०।१७	१२।३८	१४।५८	१७।२	१८।४४	२०।१०	२१।३२	२३।६	१।०	३।१४	५।३६
७	७।५३	१०।१३	१२।३४	१४।५४	१६।५८	१८।४०	२०।६	२१।२८	२३।२	०।५६	३।१०	५।३२
८	७।४८	१०।८	१२।२९	१४।४९	१६।५३	१८।३५	२०।१	२१।२३	२२।५७	०।५१	३।५	५।२७
९	७।४४	१०।४	१२।२५	१४।४५	१६।४९	१८।३१	१९।५७	२१।१९	२२।५३	०।४७	३।१	५।२३
१०	७।४०	१०।०	१२।२१	१४।४१	१६।४५	१८।२७	१९।५३	२१।१५	२२।४९	०।४३	२।५७	५।१९
११	७।३६	९।५६	१२।१७	१४।३७	१६।४१	१८।२३	१९।४९	२१।११	२२।४५	०।३९	२।५३	५।१५
१२	७।३२	९।५२	१२।१३	१४।३३	१६।३७	१८।१९	१९।४५	२१।७	२२।४१	०।३५	२।४९	५।११
१३	७।२८	९।४८	१२।९	१४।२९	१६।३३	१८।१५	१९।४१	२१।३	२२।३७	०।३१	२।४५	५।७
१४	७।२४	९।४४	१२।५	१४।२५	१६।२९	१८।११	१९।३७	२०।५९	२२।३३	०।२७	२।४१	५।३
१५	७।१९	९।३९	१२।०	१४।२०	१६।२४	१८।६	१९।३२	२०।५४	२२।२८	०।२२	२।३६	४।५८
१६	७।१५	९।३५	११।५६	१४।१६	१६।२०	१८।२	१९।२८	२०।५०	२२।२४	०।१८	२।३२	४।५४
१७	७।११	९।३१	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५८	१९।२४	२०।४६	२२।२०	०।१४	२।२८	४।५०
१८	७।७	९।२७	११।४८	१४।८	१६।१२	१७।५४	१९।२०	२०।४२	२२।१६	०।१०	२।२४	४।४६
१९	७।३	९।२३	११।४४	१४।४	१६।८	१७।५०	१९।१६	२०।३८	२२।१२	०।६	२।२०	४।४२
२०	६।५९	९।१९	११।४०	१४।०	१६।४	१७।४६	१९।१२	२०।३४	२२।८	०।२	२।१६	४।३८
२१	६।५४	९।१५	११।३६	१३।५६	१६।०	१७।४२	१९।८	२०।३०	२२।४	२३।५८	२।१२	४।३४
२२	६।५०	९।१०	११।३१	१३।५१	१५।५५	१७।३७	१९।३	२०।२५	२१।५९	२३।५३	२।७	४।२९
२३	६।४६	९।६	११।२७	१३।४७	१५।५१	१७।३३	१८।५९	२०।२१	२१।५५	२३।४९	२।३	४।२५
२४	६।४२	९।२	११।२३	१३।४३	१५।४७	१७।२९	१८।५५	२०।१७	२१।५१	२३।४५	१।५९	४।२१
२५	६।३८	८।५८	११।१९	१३।३९	१५।४३	१७।२५	१८।५१	२०।१३	२१।४७	२३।४१	१।५५	४।१७
२६	६।३४	८।५४	११।१५	१३।३५	१५।३९	१७।२१	१८।४७	२०।९	२१।४३	२३।३७	१।५१	४।१३
२७	६।३०	८।५०	११।११	१३।३१	१५।३५	१७।१७	१८।४३	२०।५	२१।३९	२३।३३	१।४७	४।९
२८	६।२६	८।४६	११।७	१३।२७	१५।३१	१७।१३	१८।३९	२०।१	२१।३५	२३।२९	१।४३	४।५
२९	६।२२	८।४२	११।३	१३।२३	१५।२७	१७।९	१८।३५	१९।५७	२१।३१	२३।२५	१।३९	४।१
३०	६।१८	८।३८	१०।५९	१३।१९	१५।२३	१७।५	१८।३१	१९।५३	२१।२७	२३।२१	१।३५	३।५७
३१	६।१४	८।३४	१०।५५	१३।१५	१५।१९	१७।१	१८।२७	१९।४९	२१।२३	२३।१७	१।३१	३।५३

(६) आश्विन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८।३४	१०।५६	१३।१५	१५।२०	१७।२	१८।२७	१९।५०	२१।२३	२३।१८	१।३२	३।५३	६।१४
२	८।३०	१०।५२	१३।११	१५।१६	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१९	२३।१४	१।२८	३।४९	६।१०
३	८।२६	१०।४८	१३।७	१५।१२	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१५	२३।१०	१।२४	३।४५	६।६
४	८।२२	१०।४४	१३।३	१५।८	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।११	२३।६	१।२०	३।४१	६।२
५	८।१८	१०।४०	१२।५९	१५।४	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१।७	२३।२	१।१६	३।३७	५।५८
६	८।१४	१०।३६	१२।५५	१५।०	१६।४२	१८।७	१९।३०	२१।३	२२।५८	१।१२	३।३३	५।५४
७	८।१०	१०।३२	१२।५१	१४।५६	१६।३८	१८।३	१९।२६	२०।५९	२२।५४	१।८	३।२९	५।५०
८	८।६	१०।२८	१२।४७	१४।५२	१६।३४	१७।५९	१९।२२	२०।५५	२२।५०	१।४	३।२५	५।४६
९	८।२	१०।२४	१२।४३	१४।४८	१६।३०	१७।५५	१९।१८	२०।५१	२२।४६	१।०	३।२१	५।४२
१०	७।५८	१०।२०	१२।३९	१४।४४	१६।२६	१७।५१	१९।१४	२०।४७	२२।४२	०।५६	३।१७	५।३८
११	७।५४	१०।१६	१२।३५	१४।४०	१६।२२	१७।४७	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१३	५।३४
१२	७।५०	१०।१२	१२।३१	१४।३६	१६।१८	१७।४३	१९।६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।९	५।३०
१३	७।४६	१०।८	१२।२७	१४।३२	१६।१४	१७।३९	१९।२	२०।३५	२२।३०	०।४४	३।५	५।२६
१४	७।४२	१०।४	१२।२३	१४।२८	१६।१०	१७।३५	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३।१	५।२२
१५	७।३८	१०।०	१२।१९	१४।२४	१६।६	१७।३१	१८।५४	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५७	५।१८
१६	७।३३	९।५५	१२।१४	१४।१९	१६।१	१७।२६	१८।४९	२०।२२	२२।१७	०।३१	२।५२	५।१३
१७	७।२९	९।५१	१२।१०	१४।१५	१५।५७	१७।२२	१८।४५	२०।१८	२२।१३	०।२७	२।४८	५।९
१८	७।२५	९।४७	१२।६	१४।११	१५।५३	१७।१८	१८।४१	२०।१४	२२।९	०।२३	२।४४	५।५
१९	७।२१	९।४३	१२।२	१४।७	१५।४९	१७।१४	१८।३७	२०।१०	२२।५	०।१९	२।४०	५।१
२०	७।१७	९।३९	११।५८	१४।३	१५।४५	१७।१०	१८।३३	२०।६	२२।१	०।१५	२।३६	४।५७
२१	७।१३	९।३५	११।५४	१३।५९	१५।४१	१७।६	१८।२९	२०।२	२१।५७	०।११	२।३२	४।५३
२२	७।९	९।३१	११।५०	१३।५५	१५।३७	१७।२	१८।२५	१९।५८	२१।५३	०।७	२।२८	४।४९
२३	७।५	९।२७	११।४६	१३।५१	१५।३३	१६।५८	१८।२१	१९।५४	२१।४९	०।३	२।२४	४।४५
२४	७।१	९।२३	११।४२	१३।४७	१५।२९	१६।५४	१८।१७	१९।५०	२१।४५	२३।५९	२।२०	४।४१
२५	६।५७	९।१९	११।३८	१३।४३	१५।२५	१६।५०	१८।१३	१९।४६	२१।४१	२३।५५	२।१६	४।३७
२६	६।५३	९।१५	११।३४	१३।३९	१५।२१	१६।४६	१८।९	१९।४२	२१।३७	२३।५१	२।१२	४।३३
२७	६।४९	९।११	११।३०	१३।३५	१५।१७	१६।४२	१८।५	१९।३८	२१।३३	२३।४७	२।८	४।२९
२८	६।४५	९।७	११।२६	१३।३१	१५।१३	१६।३८	१८।१	१९।३४	२१।२९	२३।४३	२।४	४।२५
२९	६।४१	९।३	११।२२	१३।२७	१५।९	१६।३४	१७।५७	१९।३०	२१।२५	२३।३९	२।०	४।२१
३०	६।३७	८।५९	११।१८	१३।२३	१५।५	१६।३०	१७।५३	१९।२६	२१।२१	२३।३५	१।५६	४।१७
३१	६।३३	८।५५	११।१४	१३।१९	१५।१	१६।२६	१७।४९	१९।२२	२१।१७	२३।३१	१।५२	४।१३

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(७) कार्तिक मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८।५६	११।१५	१३।२०	१५।२	१६।२७	१७।५०	१९।२३	२१।१८	२३।३२	१।५३	४।१४	६।३४
२	८।५२	११।११	१३।१६	१४।५८	१६।२३	१७।४६	१९।१९	२१।१४	२३।२८	१।४९	४।१०	६।३०
३	८।४८	११।७	१३।१२	१४।५४	१६।१९	१७।४२	१९।१५	२१।१०	२३।२४	१।४५	४।६	६।२६
४	८।४४	११।३	१३।८	१४।५०	१६।१५	१७।३८	१९।११	२१।६	२३।२०	१।४१	४।२	६।२२
५	८।४०	१०।५९	१३।४	१४।४६	१६।११	१७।३४	१९।७	२१।२	२३।१६	१।३७	३।५८	६।१८
६	८।३५	१०।५४	१२।५९	१४।४१	१६।६	१७।२९	१९।२	२०।५७	२३।११	१।३२	३।५३	६।१३
७	८।३१	१०।५०	१२।५५	१४।३७	१६।२	१७।२५	१८।५८	२०।५३	२३।७	१।२८	३।४९	६।९
८	८।२७	१०।४६	१२।५१	१४।३३	१५।५८	१७।२१	१८।५४	२०।४९	२३।३	१।२४	३।४५	६।५
९	८।२३	१०।४२	१२।४७	१४।२९	१५।५४	१७।१७	१८।५०	२०।४५	२२।५९	१।२०	३।४१	६।१
१०	८।१९	१०।३८	१२।४३	१४।२५	१५।५०	१७।१३	१८।४६	२०।४१	२२।५५	१।१६	३।३७	५।५७
११	८।१५	१०।३४	१२।३९	१४।२१	१५।४६	१७।९	१८।४२	२०।३७	२२।५१	१।१२	३।३३	५।५३
१२	८।१०	१०।२९	१२।३४	१४।१६	१५।४१	१७।४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१।७	३।२८	५।४८
१३	८।६	१०।२५	१२।३०	१४।१२	१५।३७	१७।०	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१।३	३।२४	५।४४
१४	८।२	१०।२१	१२।२६	१४।८	१५।३३	१६।५६	१८।२९	२०।२४	२२।३८	०।५९	३।२०	५।४०
१५	७।५८	१०।१७	१२।२२	१४।४	१५।२९	१६।५२	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५५	३।१६	५।३६
१६	७।५४	१०।१३	१२।१८	१४।०	१५।२५	१६।४८	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५१	३।१२	५।३२
१७	७।५०	१०।९	१२।१४	१३।५६	१५।२१	१६।४४	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४७	३।८	५।२८
१८	७।४५	१०।४	१२।९	१३।५१	१५।१६	१६।३९	१८।१२	२०।७	२२।२१	०।४२	३।३	५।२३
१९	७।४१	१०।०	१२।५	१३।४७	१५।१२	१६।३५	१८।८	२०।३	२२।१७	०।३८	२।५९	५।१९
२०	७।३७	९।५६	१२।१	१३।४३	१५।८	१६।३१	१८।४	१९।५९	२२।१३	०।३४	२।५५	५।१५
२१	७।३३	९।५२	११।५७	१३।३९	१५।४	१६।२७	१८।०	१९।५५	२२।९	०।३०	२।५१	५।११
२२	७।२९	९।४८	११।५३	१३।३५	१५।०	१६।२३	१७।५६	१९।५१	२२।५	०।२६	२।४७	५।७
२३	७।२५	९।४४	११।४९	१३।३१	१४।५६	१६।१९	१७।५२	१९।४७	२२।१	०।२२	२।४३	५।३
२४	७।२०	९।३९	११।४४	१३।२६	१४।५१	१६।१४	१७।४७	१९।४२	२१।५६	०।१७	२।३८	४।५८
२५	७।१६	९।३५	११।४०	१३।२२	१४।४७	१६।१०	१७।४३	१९।३८	२१।५२	०।१३	२।३४	४।५४
२६	७।१२	९।३१	११।३६	१३।१८	१४।४३	१६।६	१७।३९	१९।३४	२१।४८	०।९	२।३०	४।५०
२७	७।८	९।२७	११।३२	१३।१४	१४।३९	१६।२	१७।३५	१९।३०	२१।४४	०।५	२।२६	४।४६
२८	७।४	९।२३	११।२८	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३१	१९।२६	२१।४०	०।१	२।२२	४।४२
२९	७।०	९।१९	११।२४	१३।६	१४।३१	१५।५४	१७।२७	१९।२२	२१।३६	२३।५७	२।१८	४।३८
३०	६।५६	९।१५	११।२०	१३।२	१४।२७	१५।५०	१७।२३	१९।१८	२१।३२	२३।५३	२।१४	४।३४

(८) मार्गशीर्ष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

	वृश्चि०	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९।१८	११।२२	१३।४	१४।३०	१५।५२	१७।२५	१९।२०	२१।३४	२३।५६	२।१६	४।३६	६।५८
२	९।१४	११।१८	१३।०	१४।२६	१५।४८	१७।२१	१९।१६	२१।३०	२३।५२	२।१२	४।३२	६।५४
३	९।१०	११।१४	१२।५६	१४।२२	१५।४४	१७।१७	१९।१२	२१।२६	२३।४८	२।८	४।२८	६।५०
४	९।६	११।१०	१२।५२	१४।१८	१५।४०	१७।१३	१९।८	२१।२२	२३।४४	२।४	४।२४	६।४६
५	९।१	११।५	१२।४७	१४।१३	१५।३५	१७।८	१९।३	२१।१७	२३।३९	१।५९	४।१९	६।४१
६	८।५७	११।१	१२।४३	१४।९	१५।३१	१७।४	१८।५९	२१।१३	२३।३५	१।५५	४।१५	६।३७
७	८।५३	१०।५७	१२।३९	१४।५	१५।२७	१७।०	१८।५५	२१।९	२३।३१	१।५१	४।११	६।३३
८	८।४८	१०।५२	१२।३४	१४।०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१।४	२३।२६	१।४६	४।६	६।२८
९	८।४४	१०।४८	१२।३०	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१।०	२३।२२	१।४२	४।२	६।२४
१०	८।४०	१०।४४	१२।२६	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५८	६।२०
११	८।३५	१०।३९	१२।२१	१३।४७	१५।९	१६।४२	१८।३७	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।५३	६।१५
१२	८।३१	१०।३५	१२।१७	१३।४३	१५।५	१६।३८	१८।३३	२०।४७	२३।९	१।२९	३।४९	६।११
१३	८।२७	१०।३१	१२।१३	१३।३९	१५।१	१६।३४	१८।२९	२०।४३	२३।५	१।२५	३।४५	६।७
१४	८।२२	१०।२६	१२।८	१३।३४	१४।५६	१६।२९	१८।२४	२०।३८	२३।०	१।२०	३।४०	६।२
१५	८।१८	१०।२२	१२।४	१३।३०	१४।५२	१६।२५	१८।२०	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।३६	५।५८
१६	८।१४	१०।१८	१२।०	१३।२६	१४।४८	१६।२१	१८।१६	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।३२	५।५४
१७	८।९	१०।१३	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।११	२०।२५	२२।४७	१।७	३।२७	५।४९
१८	८।५	१०।९	११।५१	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८।७	२०।२१	२२।४३	१।३	३।२३	५।४५
१९	८।१	१०।५	११।४७	१३।१३	१४।३५	१६।८	१८।३	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१९	५।४१
२०	७।५७	१०।१	११।४३	१३।९	१४।३१	१६।४	१७।५९	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१५	५।३७
२१	७।५२	९।५६	११।३८	१३।४	१४।२६	१५।५९	१७।५४	२०।८	२२।३०	०।५०	३।१०	५।३२
२२	७।४८	९।५२	११।३४	१३।०	१४।२२	१५।५५	१७।५०	२०।४	२२।२६	०।४६	३।६	५।२८
२३	७।४४	९।४८	११।३०	१२।५६	१४।१८	१५।५१	१७।४६	२०।०	२२।२२	०।४२	३।२	५।२४
२४	७।३९	९।४३	११।२५	१२।५१	१४।१३	१५।४६	१७।४१	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।५७	५।१९
२५	७।३५	९।३९	११।२१	१२।४७	१४।९	१५।४२	१७।३७	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।५३	५।१५
२६	७।३१	९।३५	११।१७	१२।४३	१४।५	१५।३८	१७।३३	१९।४७	२२।९	०।२९	२।४९	५।११
२७	७।२६	९।३०	११।१२	१२।३८	१४।०	१५।३३	१७।२८	१९।४२	२२।४	०।२४	२।४४	५।६
२८	७।२२	९।२६	११।८	१२।३४	१३।५६	१५।२९	१७।२४	१९।३८	२२।०	०।२०	२।४०	५।२
२९	७।१८	९।२२	११।४	१२।३०	१३।५२	१५।२५	१७।२०	१९।३४	२१।५६	०।१६	२।३६	४।५८

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(९) पौष मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.
१	९।२३	११।५	१२।३१	१३।५३	१५।२७	१७।२१	१९।३५	२१।५७	०।१८	२।३८	४।५६	७।१६
२	९।१८	११।०	१२।२६	१३।४८	१५।२२	१७।१६	१९।३०	२१।५२	०।१३	२।३३	४।५४	७।१४
३	९।१४	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१५।१८	१७।१२	१९।२६	२१।४८	०।९	२।२९	४।५०	७।१०
४	९।१०	१०।५२	१२।१८	१३।४०	१५।१४	१७।८	१९।२२	२१।४४	०।५	२।२५	४।४६	७।६
५	९।६	१०।४८	१२।१४	१३।३६	१५।१०	१७।४	१९।१८	२१।४०	०।१	२।२१	४।४२	७।२
६	९।२	१०।४४	१२।१०	१३।३२	१५।६	१७।०	१९।१४	२१।३६	२३।५७	२।१७	४।३८	६।५८
७	८।५८	१०।४०	१२।६	१३।२८	१५।२	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५३	२।१३	४।३४	६।५४
८	८।५४	१०।३६	१२।२	१३।२४	१४।५८	१६।५२	१९।६	२१।२८	२३।४९	२।९	४।३०	६।५०
९	८।५०	१०।३२	११।५८	१३।२०	१४।५४	१६।४८	१९।२	२१।२४	२३।४५	२।५	४।२६	६।४६
१०	८।४५	१०।२७	११।५३	१३।१५	१४।४९	१६।४३	१८।५७	२१।१९	२३।४०	२।०	४।२१	६।४१
११	८।४१	१०।२३	११।४९	१३।११	१४।४५	१६।३९	१८।५३	२१।१५	२३।३६	१।५६	४।१७	६।३७
१२	८।३७	१०।१९	११।४५	१३।७	१४।४१	१६।३५	१८।४९	२१।११	२३।३२	१।५२	४।१३	६।३३
१३	८।३३	१०।१५	११।४१	१३।३	१४।३७	१६।३१	१८।४५	२१।७	२३।२८	१।४८	४।९	६।२९
१४	८।२९	१०।११	११।३७	१२।५९	१४।३३	१६।२७	१८।४१	२१।३	२३।२४	१।४४	४।५	६।२५
१५	८।२५	१०।७	११।३३	१२।५५	१४।२९	१६।२३	१८।३७	२०।५९	२३।२०	१।४०	४।१	६।२१
१६	८।२१	१०।३	११।२९	१२।५१	१४।२५	१६।१९	१८।३३	२०।५५	२३।१६	१।३६	३।५७	६।१७
१७	८।१७	९।५९	११।२५	१२।४७	१४।२१	१६।१५	१८।२९	२०।५१	२३।१२	१।३२	३।५३	६।१३
१८	८।१३	९।५५	११।२१	१२।४३	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४७	२३।८	१।२८	३।४९	६।९
१९	८।९	९।५१	११।१७	१२।३९	१४।१३	१६।७	१८।२१	२०।४३	२३।४	१।२४	३।४५	६।५
२०	८।४	९।४६	११।१२	१२।३४	१४।८	१६।२	१८।१६	२०।३८	२२।५९	१।१९	३।४०	६।०
२१	८।०	९।४२	११।८	१२।३०	१४।४	१५।५८	१८।१२	२०।३४	२२।५५	१।१५	३।३६	५।५६
२२	७।५६	९।३८	११।४	१२।२६	१४।०	१५।५४	१८।८	२०।३०	२२।५१	१।११	३।३२	५।५२
२३	७।५२	९।३४	११।०	१२।२२	१३।५६	१५।५०	१८।४	२०।२६	२२।४७	१।७	३।२८	५।४८
२४	७।४८	९।३०	१०।५६	१२।१८	१३।५२	१५।४६	१८।०	२०।२२	२२।४३	१।३	३।२४	५।४४
२५	७।४४	९।२६	१०।५२	१२।१४	१३।४८	१५।४२	१७।५६	२०।१८	२२।३९	०।५९	३।२०	५।४०
२६	७।४०	९।२२	१०।४८	१२।१०	१३।४४	१५।३८	१७।५२	२०।१४	२२।३५	०।५५	३।१६	५।३६
२७	७।३६	९।१८	१०।४४	१२।६	१३।४०	१५।३४	१७।४८	२०।१०	२२।३१	०।५१	३।१२	५।३२
२८	७।३२	९।१४	१०।४०	१२।२	१३।३६	१५।३०	१७।४४	२०।६	२२।२७	०।४७	३।८	५।२८
२९	७।२८	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२३	०।४३	३।४	५।२४

(१०) माघ मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तिथि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु
१	९।१०	१०।३६	११।५८	१३।३२	१५।२६	१७।४०	२०।२	२२।२२	०।४२	३।४	५।२४	७।२८
२	९।६	१०।३२	११।५४	१३।२८	१५।२२	१७।३६	१९।५८	२२।१८	०।३८	३।०	५।२०	७।२४
३	९।२	१०।२८	११।५०	१३।२४	१५।१८	१७।३२	१९।५४	२२।१४	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
४	८।५८	१०।२४	११।४६	१३।२०	१५।१४	१७।२८	१९।५०	२२।१०	०।३०	२।५२	५।१२	७।१६
५	८।५४	१०।२०	११।४२	१३।१६	१५।१०	१७।२४	१९।४६	२२।६	०।२६	२।४८	५।८	७।१२
६	८।५०	१०।१६	११।३८	१३।१२	१५।६	१७।२०	१९।४२	२२।२	०।२२	२।४४	५।४	७।८
७	८।४६	१०।१२	११।३४	१३।८	१५।२	१७।१६	१९।३८	२१।५८	०।१८	२।४०	५।०	७।४
८	८।४२	१०।८	११।३०	१३।४	१४।५८	१७।१२	१९।३४	२१।५४	०।१४	२।३६	४।५६	७।०
९	८।३८	१०।४	११।२६	१३।०	१४।५४	१७।८	१९।३०	२१।५०	०।१०	२।३२	४।५२	६।५६
१०	८।३४	१०।०	११।२२	१२।५६	१४।५०	१७।४	१९।२६	२१।४६	०।६	२।२८	४।४८	६।५२
११	८।३०	९।५६	११।१८	१२।५२	१४।४६	१७।०	१९।२२	२१।४२	०।२	२।२४	४।४४	६।४८
१२	८।२६	९।५२	११।१४	१२।४८	१४।४२	१६।५६	१९।१८	२१।३८	२३।५८	२।२०	४।४०	६।४४
१३	८।२२	९।४८	११।१०	१२।४४	१४।३८	१६।५२	१९।१४	२१।३४	२३।५४	२।१६	४।३६	६।४०
१४	८।१८	९।४४	११।६	१२।४०	१४।३४	१६।४८	१९।१०	२१।३०	२३।५०	२।१२	४।३२	६।३६
१५	८।१३	९।३९	११।१	१२।३५	१४।२९	१६।४३	१९।५	२१।२५	२३।४५	२।७	४।२७	६।३१
१६	८।९	९।३५	१०।५७	१२।३१	१४।२५	१६।३९	१९।१	२१।२१	२३।४१	२।३	४।२३	६।२७
१७	८।५	९।३१	१०।५३	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५७	२१।१७	२३।३७	१।५९	४।१९	६।२३
१८	८।१	९।२७	१०।४९	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५३	२१।१३	२३।३३	१।५५	४।१५	६।१९
१९	७।५७	९।२३	१०।४५	१२।१९	१४।१३	१६।२७	१८।४९	२१।९	२३।२९	१।५१	४।११	६।१५
२०	७।५३	९।१९	१०।४१	१२।१५	१४।९	१६।२३	१८।४५	२१।५	२३।२५	१।४७	४।७	६।११
२१	७।४९	९।१५	१०।३७	१२।११	१४।५	१६।१९	१८।४१	२१।१	२३।२१	१।४३	४।३	६।७
२२	७।४५	९।११	१०।३३	१२।७	१४।१	१६।१५	१८।३७	२०।५७	२३।१७	१।३९	३।५९	६।३
२३	७।४१	९।७	१०।२९	१२।३	१३।५७	१६।११	१८।३३	२०।५३	२३।१३	१।३५	३।५५	५।५९
२४	७।३७	९।३	१०।२५	११।५९	१३।५३	१६।७	१८।२९	२०।४९	२३।९	१।३१	३।५१	५।५५
२५	७।३३	८।५९	१०।२१	११।५५	१३।४९	१६।३	१८।२५	२०।४५	२३।५	१।२७	३।४७	५।५१
२६	७।२९	८।५५	१०।१७	११।५१	१३।४५	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२३।१	१।२३	३।४३	५।४७
२७	७।२५	८।५१	१०।१३	११।४७	१३।४१	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।५७	१।१९	३।३९	५।४३
२८	७।२१	८।४७	१०।९	११।४३	१३।३७	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।५३	१।१५	३।३५	५।३९
२९	७।१७	८।४३	१०।५	११।३९	१३।३३	१५।४७	१८।९	२०।२९	२२।४९	१।११	३।३१	५।३५
३०	७।१३	८।३९	१०।१	११।३५	१३।२९	१५।४३	१८।५	२०।२५	२२।४५	१।७	३।२७	५।३१

सूचना—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है, उस से पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

(११) फाल्गुन मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर
१	८।३८	१०।०	११।३४	१३।२८	१५।४२	१८।४	२०।२४	२२।४४	१।६	३।२६	५।३०	७।१२
२	८।३४	९।५६	११।३०	१३।२४	१५।३८	१८।०	२०।२०	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।८
३	८।३०	९।५२	११।२६	१३।२०	१५।३४	१७।५६	२०।१६	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२२	७।४
४	८।२६	९।४८	११।२२	१३।१६	१५।३०	१७।५२	२०।१२	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१८	७।०
५	८।२२	९।४४	११।१८	१३।१२	१५।२६	१७।४८	२०।८	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१४	६।५६
६	८।१८	९।४०	११।१४	१३।८	१५।२२	१७।४४	२०।४	२२।२४	०।४६	३।६	५।१०	६।५२
७	८।१४	९।३६	११।१०	१३।४	१५।१८	१७।४०	२०।०	२२।२०	०।४२	३।२	५।६	६।४८
८	८।१०	९।३२	११।६	१३।०	१५।१४	१७।३६	१९।५६	२२।१६	०।३८	२।५८	५।२	६।४४
९	८।६	९।२८	११।२	१२।५६	१५।१०	१७।३२	१९।५२	२२।१२	०।३४	२।५४	४।५८	६।४०
१०	८।२	९।२४	१०।५८	१२।५२	१५।६	१७।२८	१९।४८	२२।८	०।३०	२।५०	४।५४	६।३६
११	७।५८	९।२०	१०।५४	१२।४८	१५।२	१७।२४	१९।४४	२२।४	०।२६	२।४६	४।५०	६।३२
१२	७।५४	९।१६	१०।५०	१२।४४	१४।५८	१७।२०	१९।४०	२२।०	०।२२	२।४२	४।४६	६।२८
१३	७।५०	९।१२	१०।४६	१२।४०	१४।५४	१७।१६	१९।३६	२१।५६	०।१८	२।३८	४।४२	६।२४
१४	७।४६	९।८	१०।४२	१२।३६	१४।५०	१७।१२	१९।३२	२१।५२	०।१४	२।३४	४।३८	६।२०
१५	७।४१	९।३	१०।३७	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४७	०।९	२।२९	४।३३	६।१५
१६	७।३७	८।५९	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।३	१९।२३	२१।४३	०।५	२।२५	४।२९	६।११
१७	७।३३	८।५५	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१६।५९	१९।१९	२१।३९	०।१	२।२१	४।२५	६।७
१८	७।२९	८।५१	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५५	१९।१५	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।२१	६।३
१९	७।२५	८।४७	१०।२१	१२।१५	१४।२९	१६।५१	१९।११	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।१७	५।५९
२०	७।२१	८।४३	१०।१७	१२।११	१४।२५	१६।४७	१९।७	२१।२७	२३।४९	२।९	४।१३	५।५५
२१	७।१७	८।३९	१०।१३	१२।७	१४।२१	१६।४३	१९।३	२१।२३	२३।४५	२।५	४।९	५।५१
२२	७।१३	८।३५	१०।९	१२।३	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१।१९	२३।४१	२।१	४।५	५।४७
२३	७।९	८।३१	१०।५	११।५९	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२१।१५	२३।३७	१।५७	४।१	५।४३
२४	७।५	८।२७	१०।१	११।५५	१४।९	१६।३१	१८।५१	२१।११	२३।३३	१।५३	३।५७	५।३९
२५	७।१	८।२३	९।५७	११।५१	१४।५	१६।२७	१८।४७	२१।७	२३।२९	१।४९	३।५३	५।३५
२६	६।५७	८।१९	९।५३	११।४७	१४।१	१६।२३	१८।४३	२१।३	२३।२५	१।४५	३।४९	५।३१
२७	६।५३	८।१५	९।४९	११।४३	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।५९	२३।२१	१।४१	३।४५	५।२७
२८	६।४९	८।११	९।४५	११।३९	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।५५	२३।१७	१।३७	३।४१	५।२३
२९	६।४५	८।७	९।४१	११।३५	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।५१	२३।१३	१।३३	३।३७	५।१९
३०	६।४१	८।३	९।३७	११।३१	१३।४५	१६।७	१८।२७	२०।४७	२३।९	१।२९	३।३३	५।१५

(१२) चैत्र मास में दैनिक लग्न सारणी रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं० मि०

तारीख	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
१	८।२	९।३६	११।३०	१३।४४	१६।६	१८।२७	२०।४७	२३।८	१।२८	३।३२	५।१४	६।४०
२	७।५८	९।३२	११।२६	१३।४०	१६।२	१८।२३	२०।४३	२३।४	१।२४	३।२८	५।१०	६।३६
३	७।५४	९।२८	११।२२	१३।३६	१५।५८	१८।१९	२०।३९	२३।०	१।२०	३।२४	५।६	६।३२
४	७।५०	९।२४	११।१८	१३।३२	१५।५४	१८।१५	२०।३५	२२।५६	१।१६	३।२०	५।२	६।२८
५	७।४६	९।२०	११।१४	१३।२८	१५।५०	१८।११	२०।३१	२२।५२	१।१२	३।१६	४।५८	६।२४
६	७।४२	९।१६	११।१०	१३।२४	१५।४६	१८।७	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१२	४।५४	६।२०
७	७।३८	९।१२	११।६	१३।२०	१५।४२	१८।३	२०।२३	२२।४४	१।४	३।८	४।५०	६।१६
८	७।३४	९।८	११।२	१३।१६	१५।३८	१७।५९	२०।१९	२२।४०	१।०	३।४	४।४६	६।१२
९	७।३०	९।४	१०।५८	१३।१२	१५।३४	१७।५५	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।०	४।४२	६।८
१०	७।२५	८।५९	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।५०	२०।१०	२२।३१	०।५१	२।५५	४।३७	६।३
११	७।२१	८।५५	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४६	२०।६	२२।२७	०।४७	२।५१	४।३३	५।५९
१२	७।१७	८।५१	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४२	२०।२	२२।२३	०।४३	२।४७	४।२९	५।५५
१३	७।१३	८।४७	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३८	१९।५८	२२।१९	०।३९	२।४३	४।२५	५।५१
१४	७।९	८।४३	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३४	१९।५४	२२।१५	०।३५	२।३९	४।२१	५।४७
१५	७।५	८।३९	१०।३३	१२।४७	१५।९	१७।३०	१९।५०	२२।११	०।३१	२।३५	४।१७	५।४३
१६	७।१	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।५	१७।२६	१९।४६	२२।७	०।२७	२।३१	४।१३	५।३९
१७	६।५७	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।१	१७।२२	१९।४२	२२।३	०।२३	२।२७	४।९	५।३५
१८	६।५३	८।२७	१०।२१	१२।३५	१४।५७	१७।१८	१९।३८	२१।५९	०।१९	२।२३	४।५	५।३१
१९	६।४९	८।२३	१०।१७	१२।३१	१४।५३	१७।१४	१९।३४	२१।५५	०।१५	२।१९	४।१	५।२७
२०	६।४४	८।१८	१०।१२	१२।२६	१४।४८	१७।९	१९।२९	२१।५०	०।१०	२।१४	३।५६	५।२२
२१	६।४०	८।१४	१०।८	१२।२२	१४।४४	१७।५	१९।२५	२१।४६	०।६	२।१०	३।५२	५।१८
२२	६।३६	८।१०	१०।४	१२।१८	१४।४०	१७।१	१९।२१	२१।४२	०।२	२।६	३।४८	५।१४
२३	६।३२	८।६	१०।०	१२।१४	१४।३६	१६।५७	१९।१७	२१।३८	२३।५८	२।२	३।४४	५।१०
२४	६।२८	८।२	९।५६	१२।१०	१४।३२	१६।५३	१९।१३	२१।३४	२३।५४	१।५८	३।४०	५।६
२५	६।२४	७।५८	९।५२	१२।६	१४।२८	१६।४९	१९।९	२१।३०	२३।५०	१।५४	३।३६	५।२
२६	६।२०	७।५४	९।४८	१२।२	१४।२४	१६।४५	१९।५	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३२	४।५८
२७	६।१६	७।५०	९।४४	११।५८	१४।२०	१६।४१	१९।१	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२८	४।५४
२८	६।१२	७।४६	९।४०	११।५४	१४।१६	१६।३७	१८।५७	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२४	४।५०
२९	६।८	७।४२	९।३६	११।५०	१४।१२	१६।३३	१८।५३	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।२०	४।४६
३०	६।४	७।३८	९।३२	११।४६	१४।८	१६।२९	१८।४९	२१।१०	२३।३०	१।३४	३।१६	४।४२

सूचना:—मेषादि राशियों के नीचे जो समय लिखा है वह लग्न की समाप्ति का है. उससे पहिली राशि के नीचे लिखे समय से लग्न का प्रारम्भ जानना।

दैनिक लग्नसारिणी देखने की रीति—

दैनिक लग्नसारणी में जो घण्टे मिनट लिखे हैं वे रेल्वे व्यावहारिक ढंग से लिखे गये हैं। जैसे रात के १ को १ लिखा गया है और दिन के १ को १३, तथा २ को १४, एवं ३ को १५, रात के १२ को २४ (०) लिखा है। जैसे—वैशाख प्रविष्टे १० को ५ बजे शाम का लग्न देखना है तो वैशाख मास की सारिणी में उस दिन १५।४९ सिंह है याने मध्याह्नोत्तर ३।४९ बजे तक सिंह लग्न खतम होकर कन्या लग्न शुरु हो गया जिसका समाप्तिकाल १८।९ अर्थात् शाम के ६ बज कर ९ मिनट पर है। अतः मध्याह्नोत्तर ५ बजे कन्या लग्न की संधि में एक आध मिनट का कहीं २ अन्तर रहेगा।

नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति लाने की विधि—

जिस लग्न में नवांश काल जानना हो उस काल का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल दोनों लग्न सारिणी द्वारा निकालें। फिर लग्न के समाप्ति काल में से लग्न के प्रारम्भ काल को घटा देवे, शेष घंटा मिनट बचेंगे। घण्टा को ६० से गुणा कर उसमें मिनट भी मिला दें। इस प्रकार यह सम्पूर्ण लग्न मान के मिनट हो जावेंगे। उन मिनटों में ९ का भाग देवे, लब्धि १ नवांश के मिनट जाने। ९ का भाग देने से जो शेष बचा हो उसको ६० से गुणा करके दुबारा फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आवेंगे। यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होगा तुम्हें जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से उस एक नवांशके मान को गुणा कर जो मिनट प्राप्त हों उन मिनटों को लग्न के प्रारम्भ काल म जोड़ने से अभीष्ट नवांश का प्रारम्भ काल आ जावेगा। और इस नवांश के प्रारम्भ काल में एक नवांश का मान जोड़ देने से नवांश का समाप्ति काल आजावेगा। निम्नलिखित उदाहरण से इसका अच्छी तरह स्पष्टीकरण हो जावेगा—

उदाहरण—वैशाख प्रविष्टे १ को मेष लग्न में सिंह के नवांश का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल निकालना है। अब ऊपर कहे हुवे के अनुसार मेषारम्भकाल ६ घण्टा १ मिनट को मेष समाप्तिकाल ७ घण्टा ३४ मिनट में से घटाया तो १ घण्टा ३३ मिनट शेष बचे। १ घण्टा को ६० से गुणा किया और उसमें ३३ मिनट जोड़े तो ९३ मिनट हुवे। अर्थात् मेष लग्न का काल मान ९३ मिनट है। अब इन ९३ मिनटों को ९ का भाग देने पर १० मिनट २० सैकेण्ड एक नवांश का मान प्राप्त हुवा। अब हमें मेष लग्न में सिंह नवांश के प्रारम्भ काल का ज्ञान करना है। यहाँ मेष से लेकर कर्क तक अर्थात् ४ नवांश गत हुवे, अतः इस एक नवांश के मान (१० मिनट २० सकेण्ड) को ४ से गुणा किया तो ४१ मिनट २० सैकेन्ड हुवा। इस ४१ मिनट २० सकेन्ड को मेष लग्न के प्रारम्भकाल ६ घन्टा १ मिनट में जोड़ा तो ६ घन्टा ४२ मिनट २० सैकेन्ड मेष लग्न के सिंह नवांश का प्रारम्भ काल हुवा। इसी प्रारम्भ काल ६ घन्टा ४२ मिनट २० सैकेन्ड में एक नवांश का मान १० मिनट २० सैकेन्ड (जो कि अभी पीछे ही निकाला है) जोड़ देने से मेष लग्न के सिंह नवांश का समाप्ति (अन्त) काल ६ घन्टा ५२ मिनट ४० सैकेन्ड हुवा। इसी प्रकार अन्य नवांशों को भी निकालें।

विवाह यज्ञोपवीत, गृहप्रतिष्ठा एवं गृहप्रवेश प्रभृति शुभ मुहूर्तों में उपर्युक्त सूक्ष्म विधि से सिद्ध किये गये नवांशों को प्रयोग में लाने से शास्त्रोक्त शुभफल की प्राप्ति हो सकती है॥ अथ चन्द्रोदयास्त ज्ञानम्—तिथिप्रमाणेन हतं निशायाः प्रमाणमनं च युतं भुजाभ्याम्॥ कृष्णे सिते यास्तिथिभक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ताः स्युः॥१॥ भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन के रात्रिमान की घट्यादि को गुणें, शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उसमें २ घटी जोड़ना, यदि कृष्णपक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना तदनन्तर उसमें १५ का भाग देकर दो फल घटी पलात्मक लाना, यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चन्द्रास्त होगा, यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध पलात्मक फल को दिनमान में युक्त करने से जो घट्यादि होवें उतनी घटी सूर्योदय के पीछे चन्द्रोदय होगा। इस रीति से चन्द्रोदय स्थूलमान से आता है, सूक्ष्म चन्द्रोदयास्त "सर्वानन्द लाघव" से जानो।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—जन्म समय मेष लग्न हो तो माता का पूर्व या पश्चिम में शिर, उपसूतिका २ या तीन, प्रसव म माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवं मीठा भोजन किया था। वस्त्र लालमलीन। ४।११।१६।४४।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान गोदान मृत्युञ्जय जप करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों में बचे तो १०० वर्ष जीवे।

वृष—माता का दक्षिण में शिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर के पूर्व हिस्से में सूतिका स्थान श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहिले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया, १।२८। ३३।४४।६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय जप और ब्राह्मण भोजन करवाना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन—माता का शिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, शिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे, ४।१०।१४। ३८।५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे, इन वर्षों के प्रारम्भ म शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवावे। यदि इन वर्षों से बचे तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में शिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छींका, नाल छूटा, भूमि पर जन्मा, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव के पहले मधुर एवं शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग में लहसन आदि का चिह्न, देर से रोया, ५।२५।४०।४८।६२इन वर्षों में बालक कष्ट पावे, इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवें कष्टकारक वर्षों के प्रवेशसमय तुलादान, छायादान मृतसंजीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याण प्रद है।

सिंह—माता का पश्चिम या पूर्व म शिर, मलीन सा लाल वस्त्रशुष्क करौला या

ट्ठा भोजन किया था, जन्म समय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, ५।१३।२८।३६।४८। इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में शिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्टान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्म समय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्ध शब्द किया। घर के नैऋत कोण में सूतिका स्थान, ४।१६।२३।३६।५५ वर्ष कष्टकारक हैं, यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठण्डा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई गई थी, जन्म समय स्त्री ३ या ६, वहां १ कन्या भी हो दीपक उ [illegible]या गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहर कर अर्द्ध शब्द करके रोया, घर के पश्चिम भाग में सूतिका स्थान, ८।१५।३१।३५।६२।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रह का दान, हवन जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे।

वृश्चिक—माता का दक्षिण वा उत्तर में शिर, रक्त वा दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी दो आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया और छींक भी किया, दीर्घ केश घर के पश्चिम भाग में प्रसवस्थान, ११।२८।३८।५२।६२ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु:—माता का शिर पश्चिम या पूर्व को, पीत वा रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ से उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्य कोण में सूतिकास्थान, २।१०।१८।३१।३८।४२ ६७ इन वर्षों के प्रारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मण भोजन श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर—माता का शिर दक्षिण में, ऊपर काला या जीर्ण कमजोर वस्त्र, गुड़, दुग्ध क [illegible]ला भोजन, ठण्डा जल पान किया था, जन्म समय स्त्रियां २, पीछे से १ आई, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तर भाग में पुराना सूतिकास्थान, ५।१३।२७।३६।५७।६३।८७ इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ९५ वर्ष जीवे।

कुम्भ—माता का शिर पश्चिम को, जीर्ण, धूम्र वर्ण या कुरूप वस्त्र, मधुर शीत शाकादि कुभोजन, कष्ट अधिक, जन्म समय पास स्त्रियां ४ या २, स्त्री पीछे से आई उनमें एक स्त्री गर्भिणी भी हो। दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्ध शब्द से रोया, वामांग में कोई चिन्ह भी हो, घर के उत्तर भाग में सूतिकागृह, २।२८।३३।४८।६४ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप हितकारक है, इन वर्षों से बचे हो ९० वर्ष जीवे।

मीन—माता का शिर उत्तर में, पीत या मलीन वस्त्र, विचित्र सा अल्प भोजन, जन्म समय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ से उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका स्थान, १।८।१३।३६।४८ इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रहशान्ति हवन मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है, यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे।

स्मरण रहे कि अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें वही बालक का जन्म लग्न जानना क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

अथादौ पितृपरोक्ष ज्ञानम्—१ जन्म लग्न को चन्द्रमा न देखे २ बुध शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, ३ लग्न में शनैश्चर चन्द्रमा से अदृष्ट हो, ४ भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो, इन ४ योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना।

जहां राहु शय्या तहां भंग जहां कुज होय।
रविस्थान में दीप कही शनी लोह कहि सोय॥

जन्मकुण्डली में दिशा ज्ञान—पूर्व, द्वितीय तृतीय ईशान। चतुर्थ—उत्तर। पञ्चम षष्ठ वायव्य। सप्तम पश्चिम। अष्टम नवम नैऋत। दशम दक्षिण। एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना।

अथ प्रसूतिस्थानात् पाकशालादि विचार:—

जन्म कुण्डली में सूर्य मंगल जिस दिशा में हों वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना, इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान, और शनि से अशुभ (मैला) स्थान जानना चाहिये। दो० लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्नप दिशि जानिए कहत वुद्धि आगार। केन्द्र (१।४।७।१०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली (स्वराशिमित्रोच्च न मूल त्रिकोण राशिका केन्द्र स्थान में स्वमित्र शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो उसकी दिशा में वा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है। ग्रहोंकी दिशा—सूर्य की पूर्व चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण बुध की उत्तर गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनैश्चर की पश्चिम, राहु केतु की नैऋत।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्—चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रिका जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं तो दीपक में तेल ज्यादा कहना यदि चन्द्रमा आधी राशी भोग कर चुका हो तो दीपक में आधा तेल कहना, यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशी पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तेल कहना। सो—तनुस्थान शशि जाई वा शशि षष्ठे भवन में, शिशु जन्मे तब आई, तब कहि दीपक तैल नहि। सित शनि-दशमें धाम पञ्चम तनुपै चन्द्रमा, शिशु जन्मे तब वाम, दीप तैल सों युक्ति कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्—जन्म लग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहना, अधिक अंश हो तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतरगतैर्ग्रहै: स्युरुपसूतिका—यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उप सूतिका पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्नसे चन्द्र पर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी ही उप सूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखे। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करे अन्यथा उसे नहीं जोड़े। इसी प्रकार जो ग्रह लग्न में हों, और उसके अंश लग्न से अधिक हों, तब ही उसकी संख्या जोड़ना अन्यथा नहीं जोड़े। लग्न चन्द्रान्तर्गत कोई ग्रह वक्र अथवा उच्च का हो तो तीन गुणा करना और स्वराशि

स्वनवमांश स्वद्रेष्कोण में हों तो द्विगुण करना, इस प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के अस्त के होवें उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान में रखने योग है कि वह लग्न चन्द्रान्तर्गतग्रह लग्न के भोग्यांश से सप्तम भाव पर्यन्त होवे तो सूतिका गृह से बाहर समीप में, और सप्तम भाव से लग्न के भुक्तांश पर्यन्त हो तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना। उन ग्रहों में जो जहां शुभ ग्रह हों वहां धर्मशीला सौभाग्यवती स्त्रियां कहना, अशुभ ग्रहों से विधवा व दुश्चरित्रा कहे।

अथ शय्या शिर वा पाद विचार

लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषडंकान्त्येषु पादाः। लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहना, अर्थात् १।२ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण ४।५ में दक्षिण, ६ में नैऋत्य ७।८ में पश्चिम, ९ में वायव्य कोण, १०।११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशानकोण की तरफ जानना। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना। इन स्थानों में से जिस स्थान में पाप ग्रहयुक्त हो तो वही सूतिका के पलंग का पावा फटा टूटा समझना।

अथ चिह्नज्ञानम्—षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामें कुछ लहसन कहैं गर्गवचन परिमाण ॥ भानु तथा सौरी तन धन कुज कण्टक चन्द। बालक के षट अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिन्ह रखाहु ॥ सुहृद भाव में कवि तम भौम वा सौरी लग्न। वाम पाद के चिन्ह को भाषत ज्योतिषमग्न ॥ नौमें पांचमें भृगु बसे तनु वा चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिन्ह भणंद ॥

बालारिष्ट

दो०—द्यूनाष्टमतनु पाप खग,बरहैं शशी जो खीन। कण्टकशुभखग ना बसे, वेगि ताहि यम लीन ॥
बसे चन्द्रमा द्वादशे अष्ट भवन में पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥

लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु पिता संताप ॥
लग्नाष्टम शशि राहु युत जन्म समय जो पाव। बालक दशवासर जियें कहत बुद्धि गुण भाव ॥

अथ काणयोगाः—तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसे त्रिकधाम। वा शशि धन रवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुत भवन बसैं त्रिक जाय। जन्म अंध यह योग है भाषत बुध समुदाय ॥ तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिय घर नाथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान ॥ भानु राहु दहनो नयन, बुधजन कहत बखान ॥

मूकयोगाः—पञ्चमेश गुरु युक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौन भौमपतियुक्त ह त्रिक हि मूक कहि सोय ॥ शुक त्रिके गुरुसिंह अज, दश भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश ॥

दुःखदयोगाः—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पाप युक्त लग्नेश। जन्म समय जाके परे ताको अंग कलेश ॥ पाप युक्त तनु भवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु सुख रखवावीस। पापग्रहयुत लग्न पति, परै लग्न में आय। वीर्य्य हीन नर होय सो अधिक व्याधि जताय ॥

बन्धनयोगाः—क्रूर रहैं धन नवम व्यय, और पञ्चम आगार। सो नर सुर कसूर करि, निवसैं कारागार ॥

सुखदयोगाः—अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गह में परे तो जानो सख संग ॥ जन्म लग्न में उच्च ग्रह जो काहू के होय। मित्र दृष्टि तापर परे सर्व सुखी नर होय ॥

क्लीव(नपुंसक)योगाः—दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीव योग तब जानु। शुक्र भवन ते रिष्क षट मन्द बसें क्लिब भानु ॥

कुष्टयोगाः—लग्नप बुध कुज शशि युते राहु युक्त वा केतु। स्वेत कुष्ट को योग यह बरणत गुणी सचेतु ॥ भौम भास्कर मन्दयुत रक्तकृष्ण कह कुष्ट। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापमण्ड अति रुष्ट ॥ जलजगंडयुत चन्द्र जो ग्रन्थिगंड कुज साथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनु नाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयी रोग भृगुसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून ॥

केमद्रुमः—आगे पीछे चन्द्र के जो न परें ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय ॥ उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।

सर्पवेष्टित योगाः—यदि अष्टमेश लग्न में राहु सहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित होता है।

यमल जन्म योगाः—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्ध और धन के उत्तरार्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिके लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहना। अथवा आधान लग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे—शनि मंगल से ५।७।९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु समय विचार—जिन अरिष्ट योगों में मरण काल नहीं कहा गया उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है तब कहना। अथवा जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है तब मरण कहना। अथवा चन्द्रमा लग्न राशि में आता है तब मरण कहना। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योग युक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पाप ग्रहों करके देखा जाता हो तब मरण कहना चाहिये। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इस वास्ते आयु का प्रथम विचार कर फिर मृत्यु कहे।

प्रसवकष्ट दूर—प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकंडा) की जड़ लाकर घृतयुक्त गुग्गुल की धूनीदेकर कटि में बांधे। और साथ ही "ॐमुक्ताः पाशविपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भ-मेहि माचिर माचिर स्वाहा ॥" इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र प्रसव होगा। अगर तीसका यन्त्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख धोकर पिला देवे तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि पहले उपरोक्त मन्त्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात को मन्त्र का जप करके तथा यन्त्र को लिख लिख कर चलता कर लेवे। तब कष्ट को मिटाता है।

अमावस्या की नन्दादि संज्ञा—दर्शस्य घटिकाषष्ठ्या भानुभानुप्रकीर्तिता । नन्दा-भ ा-जया-रिक्ता-पूर्णा च तिथयः क्रमात् ॥

भावार्थ—अमावस्या की साठ घड़ियों में क्रमशः बारह २ घड़ियां नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता, पूर्णा संज्ञक होती है । यदि अमावस्या का स्पष्ट घटयादिमान ६० घड़ी से न्यूनाधिक हो तो ५ का भाग देकर १२ घड़ियों से न्यूनाधिक जाने ।

तीसका यन्त्र

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

अथ पुरुष-जन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	१ शूर अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	२ धननाश	सम्पत्तिमान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	३ नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	४ दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत	५ सुतहानि	धनीपुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	६ शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित	सबल	सबल
स्त्री	७ स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगिणी	स्त्रीहा
मृत्यु	८ अल्पायु	रोगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्वः	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुत
धर्म	९ दुष्टमती	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पा ी
कर्म	१० शूर	तेजयुत	तेजवान्	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ	११ धनी	धनी	धनी	धनी	सलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	ध ी
व्यय	१२ दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदारहा	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्री-जन्मकुण्डल्यां भावस्थ ग्रहफलानि

भावाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	क
तनु	१ क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखनी
धन	२ दरिद्रा	बहुधना	वन्ध्या	धनाढया	धनाढया	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज	३ सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढया	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत	४ सपीड़ा	दुर्भगा	दुखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातहा
सुत	५ विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	६ सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	७ दुःखार्त्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	८ विधवा	रोगिनी	विधर्मा	कृतघ्नी	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	९ धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढया	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोकार्त्ता
कर्म	१० सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	११ सधना	गुणज्ञा	सलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	१२ क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिनी

अथ मातृसुखनाशयोगः—(१) पाप ग्रह से युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रह से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिये ।

पितृनाशयोगाः—(१) सूर्य मंगल दशमें वा नवमें गये हों (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १० वें हो (४) पाप ग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो; इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो ॥

भ्रातृनाशयोगाः—भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय ।
जाके ऐसे योग है भ्रातृ हीन नर होय ॥

संतानसुखनाशयोगः

गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव । ऐसा योग जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव ॥ पुत्र धर्म अरु लग्नपति, जाय परे त्रिक थान । जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान ॥

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पञ्चम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है ।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खग आई । भवन पाँचवें गुरु बसै नीच जातमन साई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल । म्लेच्छ होई कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल ॥ जिनके बुध भृगु राहु संग, सप्तम भाव विराज । लहे सर्वदा राज सुख होवे वेश्याबाज ॥

जारजयोगाः—भानु चन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न । सो शिशु है पर पुरुषको भाषत ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार । तीन उत्तरा जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

अथ मातापित्रोः अरिष्टफलम्—

जिस बालक ी जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ पा ी ग्रह हों, अथवा देखते हों या सूर्य पाप ग्र ों के बीच में पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए । इसी प्रकार सूर्य से ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना । इसी प्रकार यदि चन्द्र के साथ २।१२।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हो, शुभ कोई भी न हो तो माता को कष्ट जानना ।

अथ स्त्री जातक—क्रूरलग्नयुत क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहि होय। सो कन्या कुल गरल है, भूलि न व्याहेउ कोय॥ जाके कुज दशमें बसे ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु॥ क्रूरयुक्त लग्नेश जो पाप ग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहँ कुजनीच॥ राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पाप दृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर॥ लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज रण्डा कहे, पति को तजें तमारि॥ छठे आठवें चन्द्र जो क्रूर परे निज अंग। भौम आठवें भवन में सो पति करिहै भंग॥ राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सों हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दोय या तीन॥ द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसे त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम। पापग्रहों के बीच में लग्न होईं वा चन्द। सो त्रिय नाशे कुल दुवो भाषत कविकुल वृन्द॥ सप्तम भृगु जाके बसे सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृगु बसे बुध जन कहत विचारि॥

वैधव्य (विष कन्या) योगाः—चौ०—रविवार द्वितीया जो होय। श्लेषा ताहि दिन में जोय॥१॥ कृतिका होय शनिश्चर वार। साते तिथि का करो विचार॥२॥ होय शतभिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार॥३॥ इन योगन में कन्या हो्य। निश्चय विधवा जानो सोय॥४॥ जन्म लग्न द्वै शुभ ग्रह होय। एक पापग्रह नभ १० में जोय॥५॥ शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो॥६॥ अश्लेषा द्वितीया को होय। मन्दवार युत लीजो जोय॥७॥ परे शतभिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार॥८॥ रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय॥९॥ ऐसो योग लखि जो परे। तो कन्या को विधवा करे॥१०॥ दो०—व्रयं सदन में भूमिसुत जन्म सदन शनि जान। सूर्य होय सुत सदन में कन्या विधवा मान॥११॥

वैधव्य (विषकन्या) भंग योगाः—जन्म लग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्न पति सुभगा कन्या होय॥

काकवन्ध्यादि योगाः—ज्ञे अष्टमे काकवन्ध्या। मन्दार्कावष्टमे वन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्भा वा मृतापत्या॥

स्त्रीणां राजयोगाः—चौपाई—केंद्रधाम नभगा शुभ होईं। नरतनु पाय कलत्र समोईं॥ रानी होय बहुत धन ताके। मन प्रसन्न होइ है सुत वाके—चन्द्रज तुंग बसे तनु जाईं। लाभ भवन गुरु आवें धाईं॥ सो तिय होय नृपति की नारी। जनविख्यात होय सुकुमारी॥ जो षट्वर्ग शुद्ध गुरु होईं। शशि दृग केन्द्रभवन में होईं॥ ऐसे योग जन्मे सुकुमारी। रानी होय सदन धनभारी॥ दोहा—कर्क चन्द्रमा सातवें जीव दृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरि युत ताको पति नृप शूर। लाभ भवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौन। सुरगुरु परिपूर्ण लखे रानी होइ है तीन॥

स्त्रीणां पुत्रभाव विचारः—पञ्चमे शुभसंदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥

स्त्री आदि के लिये अशुभ प्रसव मास—कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथिनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊंटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चा जन्मे तो ६ मास में पिता व घर वाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है॥ माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन को घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र होवे। स्मरण रहे कि यहां सर्वत्र सौरमास का ग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर व्याहृति मन्त्रों से घृताक्त श्वेत सरसों का हवन करे, बच्चा जन्मे तो कार्तिक शांति करे, तो शुभ रहे।

त्रिखल जन्म फल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण माता पिता को भय धन हानि आदि कष्ट होते हैं, कृपणता छोड़कर त्रिखल शान्ति करे तो शुभ होता है।

बालक की दन्तोत्पत्ति मास फल

बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातुल पक्ष को भय हो। एक मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृसुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में धनी।

अथैकनक्षत्रजननफलम्—वृद्ध गर्ग जी कहते हैं कि यदि भ्राताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। स्वर्णदान से कल्याण होता है।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्—

शिरे	मुखे	कण्ठे ५	हृदये	बाहु	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानु	पाद	स्थान
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी.
पशुना	धनना	धनना	कुटिला	धनला	दयाव.	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्यं	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्र फलम्—

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च०)
फलम्	(१।२।३ च०) श्वशुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठनाश	देवरनाश

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः॥

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूला	रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक मातापिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिये, तत्पश्चात् शांति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल ौर आश्लेषा नक्षत्र के चरणजन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से शुभ	१	,,	शान्ति से शुभ

मलजनने वृक्ष विभाग फलम्

मूल	स्तंभ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्पे	फलम्	शिव	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुषचक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाहु	हस्ते	हृदये	नाभौ	[illegible]	जानु	पादे	स्थान
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटी.
राजा	पि. म.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ. भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२। ५। ८। ११	३। ६। ९। १२	१। ४। ७। १०
मूल निवास स्थान	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाश	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्प भय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम्॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्॥ दिनक्षये व्यतिपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघे यमघण्टके॥ ब्रह्म दंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतछिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ बालकाम्बापितृस्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मंतव्यं क्षेममीप्सुभिः॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी क मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी घटी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग कर दे या आठ वर्ष, असमर्थ हो तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा नाश माप्नोति चाभुक्तर्क्षे विशेषतः॥

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र क प्रथम चरण म जन्म ो ो पिता के भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

गण्डमूलोत्पन्न बालकका जन्म काल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	समय
मू० ज्ये०	म० श्ले०	रे० अश्वि०	ल
पिता को भय	माता को भय	शरीर भय	

मघा पाद फलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धनविद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश। तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने आपका नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठे हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलर्क्षे मातरं पितरं तथा॥

रेवती पादफलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री वा मुखतार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चौथे चरण में अनेक कष्ट हों।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म फलम्।

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुल कष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है तदनुसार फल जाने अशुभ हो तो शांति करे। अमावस्याजन्मफलम्—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो उसे धनहानि अपयश आदि भय होते हैं। कुहू अमावस्या में प्रसूति हो तो विशेष अशुभ होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र की कलांश शेष हों; कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्णकला नष्ट हों।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यति में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृकष्ट वा दारिद्र, चन्द्र सूर्य ग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति

…षष्टके ॥ ब्रह्म दंडे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः । जा… …तो व्याधि, पीड़ा, कलह, धनहानि हो, जपहोमशान्ति
…न्तिकम् ॥ करानेसे कल्याण हो ।

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़ें और बलि को ७ बार शिर पर घुमा कर यथोक्त स्थान पर मौन होकर रख आवे ॥

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है?	ग्रसित लक्षण	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलिविधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मंत्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद, मन्दस्वर, कम्पन, ज्वर, अरुचि, अंगशोष ।	नदीके दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक ५ आटेके सतिये, कपूर लोहबान	श्वेतभात, ५पूर्णपोली, (सुहाली) १ पहर दिन चढे पूर्वदिशा में चौरस्ते पर रखना ।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ॥	राई खस आक के फलबिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र गोघृत ।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्ररोग, भयकृशता ।	एक सेर चावलों का आटा	१०दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलोंके आटेके सतिये १०	भात एकसेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय पश्चिमदिशामें चौरस्तेपर रखना	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्लां ह्लीं ह्लीं ह्रूं ह्रूं दुष्टा ग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा	
तृतीयदिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिरझुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा ।	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत-ध्वजा दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १० ।	एकसेर लालभात, आधसेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशामें किसी वृक्ष के नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	लसुन गोशृंग, सांप कीकांचली नीम के पत्ते, पुरुष औरबिल्ली के बाल, गोघृत ।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्रभंग, शिरझुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमिलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता ।	तिलचूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प ।	भात १ सेर आटेके पूड़े, आध सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्षके नीचे रखना ।	सुनन्दनाविधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज ।	एक सेर चावलों का आटा ।	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये ।	श्वेतभात, ७ पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना ।	ॐ भगवती ह्लीं ह्लीं ह्रूं ह्रूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलि गृह्ण गृह्ण अस्त्रं ठःठः चामुण्डे सर्वारिचण्डिके ठःठःस्वाहा	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना कभी २ रोना, मोह, मूर्च्छा ।	नदीके दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५, श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां, १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरस्ते पर रखना ।	योगिनीविधानोक्त	कूट गुग्गुल, राई, हाथी दांत, घृत ।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीरकम्पन ।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५ ।	भात, ७पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरस्तेपर मौनहोकर रखना ।	विडालिकाविधानोक्त	
अष्टमदिन मास वर्ष कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप ।	जल के दोनोंकिनारोंकी मिट्टी	रक्तचन्दन, ५ रंग की झंडी ५ दीपक ५ ।	गेहूं कीरोटी, मसूरकीदालहरासाग छागमांस, संध्यामेंचौरस्तेपररखना	विडालिकाविधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष म मदना	ज्वर, खासी, श्वास, शूल, अफारा, घृणा ।	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झंडी ५ ।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी सुहाली उत्तरमें प्रातःचौरस्तेपर रखना ।	ॐनमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहनहुंफट्स्वाहा	गोशृंग, लसुन, सांप की कांचली निम्बपत्र मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत ।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास ।	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, २५ झंडी, २५ दीपक २५ सतिये ।	गुड़ के घी भुनेचावल, गोघृत, सायंकालदक्षिणमें चौरस्तेपररखना	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा ।	
[illegible]कादश दिन मास व[illegible] [illegible]दसना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता ।	काले उड़दोंका आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झंडी, २५ आटे के सतिये ।	श्वेतभात ७ पूड़े, सुहाली ७ सायं व प्रातः दक्षिणमेंचौरस्तेपररखना	ॐनमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहस्ताय ज्वल २ दुष्टग्रहादीन ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप ।	चावलों का आटा एक सेर	१३दीपक, १३ झंडी, १३ सतिये आटे के ।	सुहाली पूड़े ७ पूड़ियां ७ मत्स्य-मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण चौरस्ते पर रखना ।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हनहन शोषय२ मर्दय२ शोषय२ हुं३ हन२ दुष्टानां हं हं फटस्वाहा	

अथ नक्षत्रकष्टावलीचक्रम् ।

यस्मिनृक्षे यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्विष्णुपूजाकर्तव्या तत्तदीश्वरतुष्टये ॥ ऋक्षेशरूपं कनकेन कृत्वा तल्लिगमंत्रैश्च सुगन्धपुष्पैः । वस्त्राक्षतैर्गुग्गुलधूपदीपैर्नैवेद्यताम्बूलफलैश्च सम्यक् । पूजां च कृत्वा भयनाशनाय द्विजाय दद्यात् [दतुलं धनञ्च] ॥

सस्वामिक नक्षत्राणि	कष्टदिनानि चरण १	२	३	४	करे धारणम्	कष्टलक्षणानि	गन्धादिकम्	बलिद्रव्यम्	होमद्रव्यम्	दानभोजनम्	जपनीयमन्त्राः	जप-संख्या
अश्विनी (दस्रौ)	९	११	१०	२०	अपामार्ग-मूलम्	वातज्वरअर्द्ध-गात्रपीडानिद्रा-भंग बुद्धिभ्रम	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प घृत-गुग्गुलधूप घृतदीप क्षीर मोदक गुड नैवेद्य	गुडौदन	खण्ड यवाज्य	सुवर्णघृतकुम्भ ब्राह्मणभोजन	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् । ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	५ हजार
भरणी (यमः)	०	८०	४०	११	अगस्त-मूलम्	अनेक रोग तीव्र-ज्वर आलस्य छर्दरोग ।	अगरगंध करवीरपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप गुडोदन नैवेद्य	कृसरान्न (खिचड़ी)	घृतमधु तिलाक्षत	गोमहिषीघृत शर्करा छायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐयमायत्वामखायत्वासूर्यस्यत्वातपसे देव-स्त्वासवितामध्वानक्तु । पृथिव्याः संस्पृश-स्पाहि अर्चिरसिशोचिरसितपोसि ॐयमाय नमः ।	१० हजार
कृत्तिका (अग्निः)	९	११	१६	२८	कार्पास-मूलम्	ऊरुशूल अतिदाह नेत्रपीड़ा अनिद्रा	श्वेतचन्दनगंध जुहीपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपतिलमाषान्नबडाधीका नैवेद्य	पायस	तिल यव घृत	स्वर्ण गोदान ब्राह्मणभोजन	ॐअग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । पां रेतांसिजिन्वति । ॐ अग्नये नमः ॥ ३ ॥	१० हजार
रोहिणी (ब्रह्मा)	७	९	१८	३०	अपामार्ग-मूलम्	ज्वरपीडाकुक्षि शूलशिरःपीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्प दशांग-धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मध्वाज्यक्षौद्र शाल्यन्न क्षीर	तिलाज्य यव	सप्तधान्य कृष्णा गोदान ५ कुमारीभोजन	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवे-नआवः । सुबध्न्या उपमाअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विषः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॥४॥	५ हजार
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	९	५	७	१०	जयन्ती-मूलम्	बर्द्धगात्रपीडा, महाकष्टत्रिदोष	श्वेतचन्दन गन्ध, कमलपुष्प दशांग धूप घृतदीपपायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य	दधि शर्करा शाल्य	दधिपायस	दधि तण्डुल सवत्सागोदान ब्राह्मणभोजन	ॐ इमंदेवाअसपत्नं सुवध्वं महते क्षत्रायमह-तेज्यैष्ठयायमहतेजान राज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविषएषवोऽमीराजा-सोमोऽस्माकं ब्राह्मणना राजा । ॐ चंद्रमसे नमः ॥	१० हजार
आर्द्रा (शिवः)	०	१८	०	०	सचंदनाश्व-त्थमूलम्	ज्वरसर्वांगपीडा त्रिदोषअनिद्रा	श्वेतचन्दनगन्ध सौरभपुष्प दशांग धूपघृतदीप पायसौदन नैवेद्य	दध्योदन मध्वाज्य	घृतमधु	कृष्णवृषभ कृष्ण-वस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥६॥	१ हजार
पुनर्वसु (अदिति)	७	१४	२	२१	अर्क-मूलम्	ज्वरशिरपीडा कटिपीडा	हरिद्राकुंकुमगन्धसेवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध धूप घृतदीप घृताक्त पीतवर्णान्न नैवेद्य	साज्य-पीततण्डुल	घृत तण्डुल	वस्त्र स्वर्ण कमल ५ कन्या ५ भोजन	ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपि ता सपुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदिति-र्जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ अदितये नमः॥७॥	१० हजार
पुष्य (गुरुः)	७	७	१०	२१	तुषार-मूलम्	ज्वर शूल महा कष्ट ।	कुंकुम गन्ध कमलपुष्प घृतगुग्गुल-धूपघृतदीपघृतपायसशर्करानैवेद्य	समण्डक मोदक	घृत पायस	सुवर्ण गौ पीतवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐ बृहस्पतेअतियदर्योअर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुम-ज्जनेषु । यद्दीदयच्छ्वस ऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः॥८॥	१० हजार

द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृहस्पतये नमः॥८॥ हजार

अश्लेषा (सर्पः)	०	०	४१	०	पटोल-मूलम्	सर्वांगपीड़ा पा. मृत्युसम कष्ट	कुंकुम अगरगन्ध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुलधूपघृतदीप घृतक्षीर नैवेद्य	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	सवत्साकृष्णागौ छायापात्रब्राह्मणभो.	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये केच पृथिवी मनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्वेभ्यो नमः। ॐ सर्प्पेभ्यो नमः॥९॥	१० हजार
मघा (पितरः)	१५	७	१७	२०	भृङ्गराज मूलम्	अर्द्धगात्रपीडा तथा शिरपीडा	श्वेतचंदन गन्ध चम्पकपुष्प, घृत गुग्गुलधूप घृतदीप घृतमिष्टान्न	सतिलाज्य दुग्धान्न	तिलाज्य तण्डुल	सवस्त्रतिलमाष दान ब्राह्मणभोजन	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः अक्षन्नपितरोमीमदन्तपितरोऽती तृपन्न पितरः पितरः शुन्दध्वम् ॐपितृभ्यो नमः	१० हजार
पू. फा. (भगः)	०	१५	०	३०	कण्टकारि-मूलम्	ज्वरशिरपीडा गात्रव्यथा	श्वेतचन्दनगन्ध मालतीपुष्प घृत बिल्व धूप घृतदीप अपूपौदन मोदक नैवेद्य	घृतौदन पायस	प्रियंगु कंगनीतिल	पित्तलयवमाषान्न स्वर्णगोदानभोजन	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाद दन्नः भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवंतः स्याम॥ ॐ भगाय नमः॥११॥	१० हजार
उ. फा. (अर्यमा)	७	१४	७	६०	पटोल-मूलम्	कुक्षिशूल, शिरःशूल ज्वर अतिकष्ट	कर्पूरकेसर गन्ध अर्क पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतशर्करा शाल्यन्न	तिलाज्य	सुवस्त्ररजतस्वर्णान्न गोदान ब्रा० भोजन	ॐदेव्यावध्वर्यू आगतं रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञं समञ्जाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं ॐ अर्यम्णे नमः॥१२॥	१० हजार
हस्त (सविता)	१५	१७	१५	०	जाति-मूलम्	अफारा ऊरु शूल सर्वांग-पीड़ा प्रस्वेद	रक्तचन्दन केसरगन्ध कमलपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप घृत पायस नैवेद्य	मिष्टान्न	दधि घृत	सुवर्णपयस्विनीगोदान ब्राह्मणभोजन	ॐविभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपता वाविह्रुतम्। वात जूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजाः पुपोष पुरुधाविराजति। ॐसवित्रे नमः	५ हजार
चित्रा (विश्वकर्मा)	११	९	९	१६	मखव-मूलम्	विचित्रानेक-रोग,अतिकष्ट	केसरअगरगन्धविचित्रवर्ण पुष्प घृत गुग्गुल धूप घृतदीप विचित्रान्न मोदक नैवेद्य	विचित्रान्न घृत	तिलाज्य तण्डुल	तिलगुडविचित्रवृ ष.छा.पा.ब्रा.भो.	ॐत्वष्टातुरीयो अद्भुत इंद्राग्नी पुष्टिवर्द्धना द्विपदाच्छन्दऽइंद्रियमक्षागौर्नवयोदधुः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥१४॥	१० हजार
स्वाति (वायुः)	६०	१७	३०	०	जाति-मूलम्	नानाकष्ट	चन्दनगंधदमनकपुष्पअगरगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	घृत पायस	तिलाज्य यव	स्वर्ण रक्तधेनुदान पक्वान्न ब्रा. भोजन	ॐवायोयेते सहस्रिणो रथासस्ते भिराग हि नियुत्वामसोमपीतये॥ ॐ वायवे नमः॥१५॥	१० हजार
विशाखा (इंद्राग्नि)	१५	०	४	१३	गुञ्जा-मूलम्	कुक्षिशूलस-र्वांग पीड़ा	चंदनकेसरगंद कमलपुष्प देवदारु घृत धूप घृतदीप घृतपायसनैवेद्य	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	रक्तपीतवस्त्रकु.वृ. छायापा.दा.वि.भो	ॐइंद्राग्नी आगतं सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्यपात धियोषिता॥ ॐ इंद्राग्निभ्यां नमः।	१० हजार
अनुराधा (मित्रः)	६०	१२	३६	०	सुपुष्प-मूलम्	तीव्र ज्वर शिर पीड़ा	केसरगन्धकमलपुष्प चन्दनधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	मध्वाज्य माषान्न	गुड यवाज्य	स्वर्णगोछा.पा.दा. ब्रा.भोजन	ॐनमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतं सपर्यत दूरदृशे देवजातायकेतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशं सत्। ॐ मित्राय नमः॥१७॥	१० हजार
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	५९	९	६	४	अपामार्ग-मूलम्	व्याकुलतापित्त रोगकम्पन	श्वेतचंदनगंध चम्पकादिसुपुष्प कर्पूर धूप घृतदीप मनोहर चित्रान्न नैवेद्य	दध्योदन सुपुष्प	तण्डुलतिल घृत	स्वर्णतिलनीलवस्त्र ब्राह्मणभोजन	ॐत्रातारमिन्द्रसवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। बयःमिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्तिन मघवाधात्विन्द्रः ॐशक्राय नमः॥१८॥	१० हजार

मूलम् (राक्षसः)	०	९	१५	६	मन्दार-मूलम्	उदरतथामुख-रोगसन्नि-मय	कृष्णअगरगन्धनीलोत्पलपुष्पघृतदीप कृष्णागुरुधूप माषमिश्रान्न नैवेद्य	सहवि माषान्न	घृत कन्दमूल	स्वर्ण व.कृ. गौछा पात्र दा.कु.पू.वि.	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवीपुरीष्यमग्नि स्वेयोनाव भारुवा। तांविश्वेदेवऋतुभिःसंवदानःप्रजा-पतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु। ॐनिर्ऋतये नमः ।१९।	५ हजार
पू. षा. (जलम्)	०	१५	२४	१०	कार्पासि-मूलम्	शिरपीडाकम्प. महाकष्ट	श्वेतचन्दनगंधकमलपुष्पघृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	घृतपायस मिष्टान्न	तिलतण्डुल घृत	स्वर्णव.ति.त.ज. कु.गो.दा.ब्रा.भो.	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपामार्गत्वमस्मदपदुःष्वप्यं सुव ॥ ॐ अद्भ्यो नमः ॥२०॥	५ हजार
उ. षा. (विश्वेदेवा)	१०	२४	२६	१६	कार्पासि-मूलम्	ऊरुशूल कटि पीडा प्रलाप	श्वेतचन्दनगंध कमलपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायसान्न नैवेद्य	सहविपा. तिलाज्य	तिलाज्य यव	आमान्नस्वर्णदान ब्राह्मणभोजन	ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमं हवंमेये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्टाये अग्निजिह्वा उतवाय जत्राआसद्यास्मिन्वर्हिविषमादयध्वम् ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥२१॥	१० हजार
श्रवण (विष्णुः)	६०	२४	६	९	अपामार्ग मूलम्	अतिसार सर्वां. पीडा त्रि. भय	श्वेतचंदनगंध मालतीपुष्प कर्पूरगु. धूप घृतदीपषडरस शाल्यन्न नैवेद्य	सहवि पायस	तिलाज्य यव	स्वर्णगोछायापा. ब्राह्मणभोजन	ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव-मसि विष्णवेत्वा ॐविष्णवे नमः ॥२२॥	१० हजार
धनिष्ठा (वसवः)	१५	२	२०	२१	भृंगराज-मूलम्	मूत्रकृच्छ्र ज्वर रक्तातिसार	श्वेतचंदनगंध कमलपुष्पगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस-नैवेद्य	पायसमो. पूपतिपि.	तिलाज्य पायस	छत्रोपानत्अश्वस्व गोदा. ब्रा.भोजन	ॐवसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र-मसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सवितापुनातु वसोपवित्रेण शतधारेण सुप्त्वाकामधुक्षः वसुभ्योनमः	१० हजार
शतभिषा (वरुणः)	०	४५	३	२२	कमल-मूलम्	सन्निपातक्षय वातज्वरकष्ट	केसरअगरगंध कमलपुष्प कर्पूरचं. धूप घृतदीप घृतपोलिका नैवेद्य	घृत चित्रान्न	आज्य दध्योदन	स्वर्णतिलान्नघट छायापात्रगोदा. कु.पू.ब्रा.भोजन	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कम्भ-सर्जनीस्थो वरुणस्यऋतऽसदन्यसि वरुण-स्यऽऋतसदनमसि वरुणस्यऋतसदन-मासीद ॐ वरुणाय नमः ॥२४॥	१० हजार
पू. भा. (अजैकपा.)	०	१२	२१	१९	भृंगराज मूलम्	शरीरपीडात्रि व्याकुलतावमन	केसरचंदनगंध श्वेतार्कपुष्प शतौष. मिश्रितधूप घृतदीप दधिपायसनैवेद्य	दध्योदन	क्षीराज्य शर्करा	स्वर्णरजत अन्न श्वेत छा. पात्र दान ब्रा. भोजन	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृ-थिवीसमुद्रः। विश्वेदेवाःऋतावृधोहुवानः स्तुतामंत्राः कविशस्ताअवन्तु। ॐअजैकपदे नमः।	१० हजार
उ. भा. (अहिर्बुध्न्य)	१०	२	९	१५	अश्वत्थ मूलम्	शूल ज्वर वात व्याधि अतिसार कामला रोग	चंदनकर्पूरगंध कमलपुष्प बिल्व गुग्गुलधूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	तिलाज्य मुद्गमाष	तिलाज्य यव	स्वर्णरजततिल कृष्णवस्त्रदान ब्राह्मणभोजन	ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तु मामा हिं सीः। निवर्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्या प्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वा-यसुवीर्याय। ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः ॥२६॥	१० हजार
रेवती (पूषा)	१८	१०	९	२०	अश्वत्थ-मूलम्	चित्तभ्रम उष्ण शू.ज्वर बा.पि.	रक्तचंदनगंध मंदारपुष्प घृतगुग्गुल धूप घृतदीप घृतपायस नैवेद्य	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	रजतवस्त्र पैत्तल. पा.वृ.छा.दा.भो.	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ॥ ॐ पूष्णे नमः ॥२७॥	५ हजार

रोगोत्पत्तौ कुयोगाः

(१) जन्मराशि नक्षत्र लग्न में या राशि व लग्न से आठवें चन्द्र वा यमघंट कुयोग हो।

(२) सूर्यवार को मघा द्वादशी या भरणी अनुराधा नक्षत्र हो।

(३) सोमवार को आर्द्रा या उत्तराषाढा नक्षत्र हो।

(४) मंगलवार को कृ. मघा व शतभिषा या नन्दा (१।६।११) हो।

(५) बुधवार को अश्विनी व विशाखा या भद्रा (२।७।१२) आश्ले. हो।

(६) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया व मघा हस्त हो।

(७) शुक्रवार अष्टमी व अश्विनी या आश्लेषा व श्रवण या रिक्ता आर्द्रा व धनिष्ठा हो।

(८) शनिवार को नवमी व पूषा. या हस्त वा पूभा. या पूर्णा (५।१०।१५) व भरणी हो।

(९) सूर्य मंगल शनिवारों को ४।६।९।१२।१४।३० तिथि भरणी कृत्ति. आर्द्रा आश्ले. पूर्वा ३ विशा. ज्ये. धनि. शत. नक्षत्र हो तो मृत्यु व मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना। क्योंकि विना मारकेश आये मृत्यु तो होती ही नहीं, हां, ऐसे योग में कष्ट जरूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जय जप करना कल्याणप्रद है॥

अथ रोगत्रिनाड़ीचक्रम्

आर्द्रा.	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.	प्रथमाः
पुन	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रवण	पू. भा.	अश्वि	रो.	मध्याः
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा	रेव.	मृ.	अन्त्याः

सूर्य नक्षत्र दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र व नाम नक्षत्र 'रोगत्रिनाड़ीचक्र' में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है, मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले उसी दिन निस्संदेह रोगी की मृत्यु कहे। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित करना।

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

दिन नक्षत्र से नाम नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार १०।१८ वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाड़ां) होती हैं। काल के मुख दाड़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु पर्यन्त हालत होती है। रोग पर, सर्पादिदर्शन पर, विग्रह-युद्ध में जाने पर, काल के मुख दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुभ होता है।

ज्वरयन्त्र

ओं

प	ब	क	०
३	४९	८	३३
३५	८७	५	३९
५१	७	३	२५

ज्वर आने से पहले यह यन्त्र लिख कर अपनी कलाई पर धूप देकर बांधे तो बारी का बुखार दूर हो। पहले यंत्र सिद्ध कर लेवे फिर लिख कर देना शुरु करे। विधि—सफेद कागज पर अनार की कलम और लाल चन्दन से २१सी लिख कर आटे की गोलियां बना मछलियों को डाल देवे।

तिथिकष्टावलीयन्त्रम्

ति.	तिथीश	कष्टदि.	बलि व दान
१	अग्नि	१२	शर्कराज्य बलि घृतदान
२	ब्रह्मा	५	पायस बलि भोजनदान
३	काम	७	घृतान्न बलि रक्तवस्त्रदान
४	गणेश	१६	मोदकान्न बलि मूंगादान
५	सर्प	२१	पायस बलि दुग्धदान
६	स्कन्द	१२	मोदकान्नबलि चित्रवस्त्रदान
७	सूर्य	८	पायस बलि ताम्रपात्रदान
८	ईश्वर	१३	नानाभक्ष्यबलि पीतवस्त्रदान
९	दुर्गा	१८	मिष्टान्नबलि रक्तवस्त्रदान
१०	यम	२५	कृशरान्नबलि नीलवस्त्रदान
११	विश्वेदेव	७	मोदकान्नबलि पीतवस्त्रदान
१२	विष्णु	७	मोदकान्नबलि श्वेतवस्त्रदान
१३	काम	१०	दधिशर्कराबलि सुवर्णदान
१४	शिव	६०	मिष्टान्नबलि क्षौद्रशाकभो.
१५	चन्द्र	३	दध्योदनबलि रौप्यदान
३०	पितर	१८	पूपकान्नबलि उत्तमान्नभो.

वारकष्टावलीयन्त्रम्

वा.	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	५	पायसबलि सूर्यदान
चं.	गौरी	८	नानाभक्ष्यबलि चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	५	दुग्धबलि भौमदान
बु.	विष्णु	७	मुद्गान्नबलि बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	५	घृतपक्वबलि गुरुदान
शु.	इन्द्र	७	तिलयवाज्यमधुबलिशुक्रदान
श.	यम	१५	माषान्नबलि शनिदान

कालांगविभाग

कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशिका, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, ऊरु (दोनों जंघाओं) में धनु राशि का, दोनों जानू (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में ऊरु, दशम भाव में जानू, एकादश भाव में जंघा, और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपरोक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों में युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग पुष्ट और सुन्दर होता है और पापग्रह से युक्त वा दृष्ट हों तो वह अंग रोगादि से युक्त होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

ग्रहाः गोचराद्यदेशाक्रमाद्यंग्रहकलानिष्टफलशमनाथ प्रत्यक्ग्रहाणां दानपदार्थाः															जपनीयमन्त्राः	समय-समिध	
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णां०	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुंथेशकाले

सूर्यादिग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धोषधै रोगा नश्येयुर्मंत्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खस	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

शनिविचारः—अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति व रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिं बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं। लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा॥ १॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा॥ २॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६ कंगनी ७।

अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होता है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)॥

॥ देश भेद से दशा निर्णयः ॥

शुक्लेगेऽर्क होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा। कृष्णे चन्द्रस्य होरायां-रात्रावष्टोत्तरीमता॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा॥ १॥

अर्थः—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब युक्त प्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है। किन्तु विशेष निर्णय में यथा समय के फल विकाश कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म, सूर्य का होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हों तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना।

अथ ग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भय	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	विजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धः	धनला.	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	बंधनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा.	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	धनना.
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनला.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना-	दौर्मन.	धनला.	धनना.
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैरं	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि२।	मा १॥	मा. १	व. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकक्षभोग
आदौ	अंत्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशेः प्राकफलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	लोहम्	राजवर्तं	राजवर्तं

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
चं, मं, बृ	सू. बु	सू च. बृ.	सू शु	सू, मं, चं.	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं बृ शु. श.	शु. श.	मं. बृ, श,	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	००	बु.	च.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं,	शत्रवः

शनि—यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह यन्त्र शनिवार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्पलाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती॥ अथ शनैश्चर पाद विचार—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर, जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना फल हानि॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ १॥ अथ रजतपाद फलम्—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे॥ २२॥ अथ ताम्रपाद फलम्—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे॥ ३॥ अथ लोहपाद फलम्—शरीरपीड़ा रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां वश पुत्र-पीड़ाम। व्यापारनाशं नपनेर्भयञ्च लोहस्य पादे खलु निर्धनत्वम॥ ४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि	द. भौम मूगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

ग्रहाः गोचराद्यदेशाक्रमाद्यग्रहकलानिष्टफलशमनाथ प्रत्यकग्रहाणां दानपदार्थाः | जपनीयमन्त्राः | समय-समिध.

ग्रहाः	दानपदार्थाः														जपनीयमन्त्राः	समय	समिध
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंगा	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सु. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णा॰	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तैल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारेल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मृन्या	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुथेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः		मुथेशकाले

सूर्यादिग्रहपीड़ासु स्नानार्थमौषधानि—(यथा सिद्धौषधै रोगा नश्येयुर्मंत्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालतीपुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	श्वेतसरसों	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षला	लोबान	मुत्थरां	मुत्थरां
केशर	सिप्पी	रक्तपुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदंत	गजदंत
खस	श्वेतचंदन	सगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
मुलठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती			मुत्थरां		
रक्तपुष्प		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		
रक्तकनेर								

शनिविचारः-अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्—कल्याणी प्रददाति व रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधि बन्धुविरोध-देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् ॥ मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्नेर्भयं। लोहं शस्त्रभयं सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥ १ ॥ अथ बृहत् कल्याणी (साढेसाती) फलम्—राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिः। नानाक्लेशं करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामा ऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाथवा ॥ २ ॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, कणक (गेहूं) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६ कंगनी ७।
अष्टगन्ध—अगर, तगर, कस्तूरी, दोनों कुंकुम, कपूर दोनों चन्दन।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिल्लां, कांगनी, जव, सरसों, देवदारु, हलदी, सर्वौषधि, लोध इन औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ानाश होता है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शान्ति होती है ॥ गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता; जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह भी पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

॥ देश भेद से दशा निर्णयः ॥

शुक्लेगेऽर्क होरायां दिवा विंशोत्तरी दशा। कृष्णे चन्द्रस्य होरायां-रात्रावष्टोत्तरीमता ॥ अन्यथा योगिनी कार्या सदा कार्या महादशा ॥ १ ॥

अर्थः—देश भेद से दक्षिण गुजरात में अष्टोत्तरी, दिल्ली राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब युक्त प्रान्तों में विंशोत्तरी करना लिखा है। किन्तु विशेष निर्णय में यथा समय के फल विकाश कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में दिन का जन्म, सूर्य की होरा ये तीनों एक साथ जन्मकाल में हो तो विंशोत्तरी उत्तम फलकारक सिद्ध होगी। कृष्ण पक्ष, रात्रि का जन्म, चन्द्र की होरा में जन्म लेने वालों को अष्टोत्तरी से फल कहना। अन्यथा योगिनी दशा से विचार करना।

अथ ग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

गोचरग्रहाणां द्वादशभावफलबोधकचक्रम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानना.	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्यं	बिजयः	मार्गः	पीड़ा	सुकृ. ना.	सिद्धः	धनला.	द्रव्यना.
चन्द्रः	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोगः	कार्यनाशः	धनला.	स्त्रीला.	रोगः	धर्मला.	सौख्यं	धनला.	धनना.
भौमः	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभीः	शत्रुपी.	शोकः	धनला.	धनना.
बुधः	बधनं	धनलाभ	शत्रुभीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला	पीड़ा.	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनला.	पीड़ा
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेशः	धननाश	सुखं	शोकः	राजमा.	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनला.	धनला.
शुक्रः	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभीः	शोकः	धनला.	वस्त्रला.	दुःखं	धनला.	धनना.
शनिः	भयं	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभीः	पुत्रनाशः	धनला.	दोषः	पीड़ा	धर्मना-	दौर्मन.	धनला.	शोकः
राहुः	हानिः	धननाश	धनलाभ	वैं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शत्रुभी.
केतुः	रोगः	वैरं	सुख	भयं	सुखं	धनला.	कलहः	रोगः	पापं	शोकः	कीर्त्तिः	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश से आदि लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों की अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

ग्रहमैत्रीचक्रम्

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रहाः
च, म, बृ	सू. बु.	सू च. बृ.	सू शु	सू, मं, चं.	बु. श.	शु. बु.	मित्राणि
बु.	मं बृ शु. श.	शु. श.	मं. बृ. श.	श.	मं. बृ.	बृ.	समाः
शु. श.	००	बु.	च.	बु. शु.	सू. चं.	सू. चं. मं.	शत्रवः

शनि—यन्त्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यह यन्त्र शनिवार को भोज पत्र पर लिख कर धारण करने से शनिकृत अरिष्ट निवृत्त करता है।

अथ ग्रहाणामेकगेभोगफलसमयादिज्ञानम्

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा. के.	ग्रहाः
मा १	दि२।	मा १॥	मा. १	म. १२	मा. १	मा ३०	मा. १८	एकक्षभोग
आदौ	अंत्ये	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्त्ये	अन्त्ये	फलसमयः
दि.५	घ.३	दि.८	दि.७	मा. २	दि. ७	मा ६	मा. ६	गंतव्यराशे प्राकफलम्

अथ ग्रहतुष्टयर्थधारणाय मणयः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यं	मुक्ताफलम्,	प्रवाल	पन्ना	पुष्पराग	हीरा	नीलम	गोमेदम्,	वैडूर्यम्,
विद्रुमम्,	रौप्यम्,	विद्रुमम्,	सुवर्णम्,	मुक्ताफलम्,	रौप्यम्,	लोहम्,	आजवर्त,	आजवर्त,

अथ शनैश्चरस्तोत्रम्—पिप्पलाद उवाच—ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोस्तु ते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो! नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च॥ इस स्तोत्र को प्रातः पढने से साढसाती व ढैया की दुःखद पीड़ा नहीं होती॥ अथ शनैश्चर पाद विचार—ग्रहगोचर फल विचार में प्रायः शनैश्चर के राशि बदलने पर सुवर्णादिपाद विचार इस प्रकार देखा जाता है कि शनैश्चर, जिस दिन जिस समय राश्यन्तर में जावे उस समय अपनी जन्मराशि से चन्द्रमा (जन्मनिरसे रुद्र सुवर्ण हानि) १।६।११ वें स्थान में हो तो सुवर्ण पाद जानना फल हानि॥ यदि २।५।९वें हो तो चांदी के पाद आया जानना फल शुभ (द्विपञ्चनन्दा रजतं शुभं च) यदि ४।८।१२ वें हो तो लोह के पाद आया जानना फल कष्ट (चतुरष्टमद्वादशलोहकष्टम्) यदि ३।७।१० वें हो तो ताम्रपाद आया जानना फल शुभ (त्रिसप्तदशमे ताम्रं शुभञ्च) अथ सुवर्ण पादफलं—कुटुम्बरोधं बहुरोगयुक्तं क्लेशोदयं चैव करोति नित्यम्। द्रव्यार्थनाशं बहुलं करोति सुवर्णपादे स्वजने विरोधम्॥ १॥ अथ रजतपाद फलम्—व्यापारमुग्रं धनधान्यसम्पत्महत्प्रतापः खलु राजमान्यम्। तद्वर्षमध्ये सुखसम्पदाप्तिः स्यान्मंगलं वै यदि रौप्यपादे॥ २२॥ अथ ताम्रपाद फलम्—अनन्तलक्ष्मीं प्रकरोति लाभं कलत्रपुत्रैः सुखसम्पदाप्तिम्। लाभोदयं चैव करोति सौख्यं शरीरसौख्यं खलु ताम्रपादे॥ ३॥ अथ लोहपाद फलम्—शरीरपीड़ा रुधिरप्रकोपं कलत्रपीड़ां पशु पुत्र-पीडाम। व्यापारनाशं नपतेर्भयञ्च लोहस्य पादे खल निर्धनत्वम॥ ४॥

ग्रह पीड़ा नाशकारी नवग्रह मुद्रिका

ई. बुध पन्ना	प. शुक्र हीरा	आ. चन्द्र मोती
उ. बृ. पुखरा.	मध्येसू. माणि	द. भौम मूंगा
वा. केतु वैडूर्य	प. शनि नीलम	नै. राहु गोमेद

ग्रहाणां दृष्ट्यादिचक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एकपाददृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाददृष्टिः
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणां वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपुर जप	रुद्री जप	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	भुजग दान	ध्वजा दान	नेष्टग्रहस्य वर्षे दानोपायसाधनं
कृ. उफा. उषा.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. ध.	अश्ले. ज्ये. रे.	पुन.वि. पू. भा.	भ. पूफा. पू. षा.	पुष्य. अ. उभा.	आर्द्रा स्वा. श.	म. मू. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु रा. .श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहाः
बु.	मं. श. गु. श.	शु. श.	मं. श. गु.	श. रा.	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं	र. चं. मं.	०	शत्रु-ग्रहाः
मेष १०	वृषभ ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशः
तुला १०	वृश्चि. ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनुः १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे.वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पु. स्त्री नपुंसक
चतुरस्र	व. स्थूल	चतुष्को.	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्ण	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्ण	अपराह्ण	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दग्ध	श्मशान	वाणी	जलभू	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरवंत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
बन	जल	[illegible]	ग्राम	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बिवर	बिवर	स्थान

राशिज्ञाने विशेषः

नक्षत्र वा श और स में ब और व में कोई भेद नहीं होता, तथा जिस के नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें। (संयोगजाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्यं तदादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु
प्रथमचरण	चू	ली	आ	०	ओ	वे	०	कु	के
द्वितीयच०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को
तृतीयच०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वु	०	की	छ	०

राशयः	कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीयच०	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीयच०	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.
प्रथमचरण	म	रु	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे
द्वितीयच०	म	रे	तू	०	नी	या	यो	ध	०
तृतीयच०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०

राशयः	मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	उ. षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीयच०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीयच०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

नाम्नि ऋलृकृर अनुस्वारमात्रायां न भवन्ति ते । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया इ उ ए च यथाक्रमम् ॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युःकथञ्चन। ततःपश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषिते येन येनागच्छति शब्दितः । तस्य नामाद्यवर्णं या मात्रा स्वरः स एव हि ॥३॥ अथ जन्मराशि–नामराश्यो प्रधानता निर्णीयते–विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके ॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश[3] कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते । सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम् । नामभाच्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्–निर्णयः---वैश्वप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़ के उसके चार भाग करो,उसको अभिजित् का एक चरण मान कर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढा का एक एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़ के जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १-१ चरण मानो। उस प्रकार को प्रायः सामान्यगणक नहीं जानते एतदर्थ यहां लिखा गया है । अपने बच्चों का सुन्दर व शुद्ध नाम रखना चाहते हों तो "राश्यभिधान कल्पलता" मोतीलाल बनारसीदास, नेपालीखपरा, पो० ब० ७५ बनारस से मंगाइये । मूल्य १।) रु० ।

नक्षत्र विषघटी ज्ञानम्---अब विषघटी के स्पष्ट करने की क्रिया समझ लीजिये । क्योंकि नक्षत्रगुणज्ञानचक्र में नक्षत्रों की विषघटी के मध्यम ध्रुवांक लिखे हैं, इनका स्पष्ट ऐसे करना,यथा---जिस दिन विषघटी देखना है उस दिन के सर्वर्क्ष से उसी नक्षत्र के ध्रुवांक को गुणा कर६०का भाग देने से जो लब्धि मिले वही विषघटी के प्रवेश का समय है और विषघटी ४ घटी की होती है । इनका भी स्पष्ट करना जरूरी है । उदाहरण---मघा के सर्वर्क्ष ५५ को मघा के ध्रुवांक ३० से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्धि २७।३० मिले, बस इसी समय से विषघटी का प्रारम्भ हुआ, विषघटी ४ को ५५ से गुणा कर ६० का भाग देने से लब्ध ३।४० मिले, बस इतने समय तक अर्थात् २७।३० से ३१।१० तक शुभ कार्य नहीं करना ।

जन्मकुण्डली से विशेष विचार और इष्टशुद्धि

लघु भ्राता का जन्म समय जानना---(१) जन्म लग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़े जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई या बहन का जन्म होता है ।

(२) तृतीयेश, तृतीयस्थग्रह, तृतीयेशस्थ राशीश की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो ।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना---(१) जन्म लग्नेश के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहिन को कष्ट होता है ।

(२) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटावे (यथा---ल० तृ०-शे । द×मं=यो. शे.---यो=शे.) शेष राशि में जब गोचर का शनि होता है तब भ्रातृकष्ट होता है ।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, मंगल इन चारों स्पष्टों को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब भ्रातृकष्ट जानिये ।

माता की मृत्यु का समय जानना---(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चन्द्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना ।

(२) सुखेश, चन्द्रमा या इनके साथ वाला ग्रह सुखस्थ ग्रह चतुर्थ भाव पूर्णदर्शी ग्रह इनमें जो माता के लिये विशेष अरिष्टकारी ग्रह हो उस ग्रह की दशान्तर्दशा में माता को कष्ट होता है ।

टिप्पणी---(१) जशोर्जः, यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकरराशिः । कषसंयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं ध्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२)यथा–ऋषभदेवः ऋतकरामः लृतरामः । (३)गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः । जातकर्माभिधेयं च निष्क्रमप्राशने मतम् । चूड़ोपनयनं वेद–व्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान–मेषलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशक्रियः॥

पुत्रोत्पत्ति का समय जानना––(१) जन्मलग्नेश पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़े योग फल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों के त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है तब सन्तान उत्पन्न होती है।

(२) चं० ल० गु० इन तीनों से पंचम स्थानेश या नवम स्थानेश की दशान्तर्दशा में सन्तानोत्पत्ति होती है।

विवाह स्त्री सुख होने का समय जानना–१ जन्मलग्नेश सप्तमेश को जोड़ कर जो राशि हो उस राशि में जब गोचर का गुरु आवे तब विवाह होता है।

(२) चन्द्र राशीश और अष्टमेश को जोड़े उस राशि में जब गोचर का गुरु हो तब विवाह होता है।

(३) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो उस राशि से द्वितीय भाव में जब गोचर में गुरु चन्द्र होते हैं तब विवाह होता है।

(४) श० चं० सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय जानना––(१) गुलिकस्पष्ट से सूर्यस्पष्ट घटावें, शेष राशि के त्रिकोण में गोचर का शनि जब हो तब पिता रोगग्रस्त होता है। और उक्त शेष राश्यादि के समय जब गोचर का गुरु होता है तब पिता की मृत्यु होती है।

(२) सूर्य से १।२।७।१२ भाव में जो पापग्रह हो तो उसकी दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

पराशरोक्त प्राणपद से जन्मेष्ट काल शुद्ध करना––जहां अटे-सटे से लग्न बनाया गया हो, या जन्मपत्री के लग्न की अपेक्षा लग्न अधिक शुद्ध देखना हो तो इष्टकाल की घड़ियों को ४ से गुणा करें। पल १५ से अधिक हों तो १५ का भाग देकर जो लब्ध आवे वह चारगुणी की हुई इष्ट घटी के अंक में मिला दें। १५ का भाग देने से जो शेष पल रहें उनको दुगुने कर चतुर्गुणित इष्ट घटी के नीचे रखना। पश्चात् १२ का भाग देना शेष राशिअंश बचे उनमें स्पष्ट सूर्य यदि चरराशि का हो तो ज्यों का त्यों, स्थिर में हो तो ८ राशि मिलाकर, द्विस्वभाव, में हो तो ४ राशि मिला देने से राश्यादि प्राणपद बन जाता है। प्राणपद मनुष्यों की कुण्डली में प्रायः १।५।९ स्थान में, पशुओं की कुण्डली में २।६।१० स्थान में, पक्षियों की कुण्डली में ३।७।११ स्थान में और कीट सर्प जलचर जन्तुओं की कुण्डली में ४।८।१२ स्थान में रहता है। लग्न के व प्राणपद के अंश सदा एक समान रहते हैं।

भावीविचार

(१) पौष मास में मूल नक्षत्र से लेकर भरणी नक्षत्र तक के ११ नक्षत्रों को ध्यान पूर्वक देखकर कापी में लिख रक्खें, यदि इन दिनों में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र से लेकर विशाखा तक ११ नक्षत्रों में वर्षा होवे। अर्थात मूल नक्षत्र में बादल हों तो आगे वर्षाकाल में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र बर्षता निकले। ऐसे ही पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, उत्तराषाढा से पुष्य, श्रवण से आश्लेषा, धनिष्ठा से मघा, शतभिषा से पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद से उ. फा. उ. भा. से हस्त, रेवती से चित्रा, अश्विनी से स्वाति और भरणी से विशाखा नक्षत्र में वर्षा होवे॥ सुज्ञ जनों को चाहिये कि इन दिनों को अवश्य देखें और विचार पूर्वक अपने पास नोट कर लें जिस से वर्षा का अन्दाजा ध्यान में रहे॥

(२) माघशुक्लसप्तमी को पूर्व उत्तर की वायु चले आकाश बादलों से ढका रहे वा बिजली चमके तो आगामी वर्ष अच्छा होता है, इस दिन आकाश निर्मल हो तो दुर्भिक्ष पड़ता है, निश्चय है।

(३) माघशुक्लनवमी को बादल या वर्षा आदि हो तो भाद्रपद में वर्षा अच्छी होती है।

(४) चैत्रकृष्ण में आकाश का निर्मल रहना अच्छा है, यदि यहां मूल से भरणी नक्षत्र तक बादल व वर्षा हो तो अनावृष्टि होती है। पौष में तो इन नक्षत्रों में बादल होना अच्छा है और इधर इस मास में निर्मल रहना अच्छा है॥

(५) चैत्रशुक्लप्रतिपदा को वर्षा बिजली या मेघ गर्जन हो तो श्रावण भाद्रपद में वर्षा की खेंच जरूर होती है॥

(६) अश्विनी भरणी नक्षत्र पर सूर्य रहते यदि वायु-शास्त्रसम्बन्धी कोई वर्षा-नाशक अपयोग बना हो, परन्तु कृत्तिका के सूर्य में बिजली छींटे आदि हो जायें तो अशुभ फल नहीं होता है। रोहिणी में तपे, कृत्तिका में छींटे बिजली वा वर्षा हो और मृगशिर में वायु चले तो वर्षाकाल में अच्छी वर्षा होती है, परन्तु रोहिणी में मेघ गर्जे, थोड़ी वर्षा हो या वायु चले, कृत्तिका में तपे पर मेघ गर्जन बिजली छींटे न हों, मृगशीर्ष में तपत हो तो वर्षा में खेंच होती है और दुर्भिक्ष पड़ता है॥

(७) कृत्तिका में यदि वर्षा बूंदा बांदी हो जाय तो वायुमण्डल में पहले कुछ अशुभ योग भी हुए हों तो उनका बुरा फल नहीं होता, वर्षा काल में अच्छा पानी बर्षता है। अतः कृत्तिका के सूर्य में बूंदा बांदी बिजली बादल का होना अच्छा है।

(८) रोहिणी पर सूर्य को अच्छा तपना चाहिये, गर्मी अधिक हो तो वर्षा श्रेष्ठ, वायु अधिक हो तो वर्षा की खेंच और वर्षा हो तो पहिले वर्षा की खींच होकर पीछे वर्षा होती है, इन १५ दिनों में वायु, बादल, बिजली वर्षा होना हितकर नहीं स्वच्छ धूप पड़नी चाहिये, रोहिणी में बूंदाबांदी होने पर वर्षा की खींच जरूर होती है यह अनुभवसिद्ध है, आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु अच्छी होने पर भी इसके खेंच का असर तो पहिले होता ही है॥

(९) मृगशिर नक्षत्र पर सूर्य रहे तब तक जोर का पवन चलना अच्छा है, यदि वायु न चले तो वर्षा देर से आती है और कम भी होती है॥

वर्षा विज्ञान

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहाँ कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहाँ वर्षा न होवे। जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
७५	५०	४५	४२	३९	३४	२१	३०	२८	२४	२१	१६	१२

रोहिणी पर रहे उन दिनों में गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ। वायु से राजाओं में विग्रह। थोड़ी वर्षा से संवत् नेष्ट, दैवात् यदि अधिकवर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली से वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली से शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी। निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञानसारणी

दिसंबर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जून जुलाई	जू. १४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	जु. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
जनवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
जुलाई अगस्त	जु. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
फरवरी	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८			
अगस्त सितंबर	अ. १५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मार्च	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
सितंबर अक्टूबर	सि. १२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अप्रेल	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
अक्टूबर नवंबर	अ. १३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न. १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

वर्षाज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति—दिसंबर, जनवरी, फरवरी मार्च इन चारों मासोंकी तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितंबर, अक्टूबर इन चार मासों में वहाँ वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के वृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसंबर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना में १९ दिसंबर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहाँ २ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञानसारणी यह बता देगी कि वर्षा ऋतु में वहा २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में कहीं वर्षा हुई हो तो वहा ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिये शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीखवार टाइम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतुकी वर्षाका ज्ञान ठीक हो सकता है, विशेष सूक्ष्मताके लिये मेघगर्भ तथा ग्रहोंका सप्तनाड़ी चक्रादि विचार करना चाहिये।

अथ अनावृष्टिशान्तिप्रयोग

गंगा, यमुना आदि महानदी को छोड़ के अन्य किसी नदी के तट पर वा तालाब वा वन वा शिव के मन्दिर में जाकर वहाँ मेघों का आवाहन करे। कमल के आकार का अष्टदल का यंत्र बना के उसमें पर्जन्य सहित सातों मेघों को स्थापन करके कनेर के पीले लाल तथा श्वेत पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आदि से पूजा करे। (मेघों के नाम और आवाहन मंत्र) ॐ ह्रीं मेघदूताय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥१॥ ॐ ह्रीं मेघदूती कमलोद्भवाय नमः आगच्छ २ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं महानीलराजाय हिमवद्वासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं नन्दकेश्वराय जठरनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं सिंहराजाय कैलाशनिवासिने मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ।५॥ ॐ ह्रीं कुम्भराजाय वामश्रृंङ्गमेरु निवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं नन्दराजाय दक्षिणश्रृंगमेरु निवासाय मेघराजाय आगच्छ २ स्वाहा ॥७॥ फिर नाभि मात्र जल में खड़ा होवे ऊपर लिखे प्रत्येक मंत्र को १०००-१००० जपे पश्चात् गुगल, श्वेत चन्दन, अगर, कनेर के पुष्प और बहुत सी शहद, तथा घृत की १०८-१०८ आहुति प्रत्येक मंत्र से दे तो निश्चय ही वर्षा होवे॥ अतिवृष्टि शान्ति प्रयोग। "ॐ नमो हनवन्त वीर अंजनी पवन देवता की आण जहू ऐसी मेघ मण्डली वर्षसी इत उत फूट सत खण्ड जावसी" ॥ अति वर्षा के समय इस मंत्र का ७-७ बार जाप करके तीन बार ताली बजाकर आकाश की ओर मुख करके फूक मारने से अतिवर्षा करते हुवे मेघ भी तत्काल फट जावे। इसी मंत्र को जपता हुआ वर्षते हुए पानी को झाड़ू से दूर करके उस झाड़ू को सीधा खड़ा कर दे तो वर्षा बन्द हो जावे। मन्त्र को पहले दीपमाला में जपकर सिद्ध करले॥

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१० वि.

राशय:	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन
मेष	लाभ उत्तम, स्त्रीचिंता, वाहन भय, राजपक्ष शुभ।	लाभ कम, कमर तोड़ खर्च, शत्रुनाश।	पित्तपीड़ा,वाहनभय, लाभ अच्छा, शुभकृत्यकी चिंता।	स्वास्थ्य ठीक, कारोबार उत्तम, बंधुचिंता, शत्रुहानि	स्वास्थ्यसुख, द्रव्यप्राप्ति, संततिसे सुख,शत्रु व राज्यसे भय	देहसुख, स्त्रीकष्ट, संततिसुख, व्यय अधिक, गुप्तचिंता
वृष	अचानक चिंता, कारोबार उत्तम, मित्रलाभ, स्वास्थ्यठीक	मन चंचल, मित्रोंसे विरोध, शुभ समाचार सुने।	उद्योगमें असफलता, बंधु चिंता, माससमध्य शुभ।	लाभसे खर्च ज्यादा, संतान चिंता. स्वास्थ्यठीक, दुष्टभय	शरीरसुख, लाभ सामान्य,व्यय अधिक, जल व अग्नि से भय	स्वास्थ्य मध्यम, संततिसुख, बंधुसुख,लाभसे व्यय ज्यादा
मिथुन	लाभ उत्तम, संतति चिंता, राज्यसे मान, कारोबारमें वृद्धि	जिम्मेदारी बढ़े, लाभ अच्छा चिंता कम,स्वास्थ्य कुछ खराब	कुटुम्ब चिंता, शिरपीड़ा कारोबार ठीक,यात्रामें कष्ट	हृदयमें कष्ट, शुभमें खर्च मित्रमिलाप, कारोबार ठीक	बंधुसुख, शरीरपीड़ा, शत्रुसे हानि, स्त्रीकष्ट, लाभ अच्छा	शरीरसुख, द्रव्यलाभ, पुत्र सुख, व्यय अधिक, धर्मप्रेम
कर्क	कारोबार की चिंता, शुभमें व्यय, नये कामका विचार।	बंधुसुख, कारोबार उत्तम विवादमें जय, घरू चिंता।	उदर विकार, चोरभय, गुप्त चिंता, वृथा खर्च	कारोबार ठीक, स्वास्थ्य कुछ खराब, स्त्रीपुत्रचिंता, मित्रसुख	वायुविकार, स्त्रीसुख, शत्रुवृद्धि,वृथाखर्च, लाभमें बाधा	लाभ अच्छा, वृथा यात्रा, संतानकष्ट, वायुविकार
सिंह	स्वास्थ्यहानि, बंधुवर्ग से विरोध, लाभ मध्यम।	कारोबारकी चिंता, यात्रा में कष्ट, परस्पर विवाद।	राजभय,गृहभूम्यादिकी चिंता लाभमध्यम, कोषमें कमी	लाभ अच्छा होते हुये भी धन चिंता, रोगभय,मासांत शुभ	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यहानि, बंधुप्राप्ति, राज्यमान, चोटभय	स्वास्थ्यसुख, द्रव्यलाभ, पुत्र सुख, शत्रुनाश, उत्साहवृद्धि
कन्या	गुप्त शत्रुपीड़ा,स्वास्थ्य ठीक, लाभ में बाधा, स्त्रीसुख।	कुटुम्ब क्लेशके कारण चिंता वृथा व्यय, शत्रु बढ़ें।	लाभ होते हुए भी परेशानी स्वास्थ्यहानि, नौकरसे बिगाड़	गृहचिंता, कार्यसिद्धि की फिकर, बड़े आदमीसे भय	राज्यसे लाभ, स्त्रीसुख, उन्नति, व्यय अधिक, शिरदर्द	शरीरसुख, लाभ कम, संततिकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबारचिंता
तुला	रोगभय. मित्रबंधुसे संतोष स्त्री वा संतति की चिन्ता।	लाभ हाथसे निकल जावे, स्वास्थ्यमध्यम, मानहानिभय	खर्च विशेष, बंधु चिन्ता, मासान्त शुभ, दुष्ट भय।	कारोबार की फिकर, रोगभय मित्रमिलाप, लाभ कम	स्वास्थ्य अच्छा, बंधुवियोग सुतकष्ट, शत्रुनाश. लाभमध्यम	बंधुमिलाप, दुःस्वप्न,शत्रु बढ़ें राज्यभय, लाभमें बाधा
वृश्चिक	अपयश, कार्य में विघ्न. शरीरकष्ट, लाभ कम।	शत्रुनाश, लाभ अच्छा, पैर व शिरमें कष्ट, मिथ्या कलंक	पशुकष्ट, विवादमें खर्च, धनचिंता, स्त्रीसुख,लाभ कम	स्त्रीपुत्रसे खुशी, शत्रुवृद्धि, कारोबार में तरक्की।	स्त्रीहेतु धनव्यय, बंधुसुख सामान्य, पुत्रप्राप्ति, राज्यसम्मान	द्रव्यनाश, शत्रुभय, सुख कम, व्यय ज्यादा, धर्म कार्य हो
धनु	लाभ उत्तम, मित्रोंसे सहायता, नौकरोंसे सावधान।	विशेष लाभ न हो, शत्रुनाश, सोचे हुये कार्य सफल।	शत्रुनाश, यात्राकष्ट, लाभ मध्यम, किसीसे विवाद।	रोग तथा शत्रुपीड़ा, स्त्रीपुत्रादि की चिंता, कारोबारठीक।	शरीर व संततिकष्ट, स्त्रीसे कलह, कारोबार से लाभ	वायुपीड़ा, द्रव्यलाभतथा साथ २नाश भी, शत्रुनाश, चोटभय
मकर	स्वास्थ्य मध्यम, बंधु सुख, धनलाभ, संतानकष्ट ।	संपत्ति बढ़े, स्त्रीसुख, यश वृद्धि, शुभमें खर्च, लाभकम।	संतानसुख, राज सम्मान, कारोबार ठीक ।	लाभका मौका हाथ आवे उदरविकार, शत्रुनाश।	स्वास्थ्य साधारण,द्रव्यप्राप्ति बंधुओंसे मिलाप, चोट का भय	शरीरकष्ट,राज्य तथा मशीनरी से लाभ, व्यय कम
कुम्भ	व्यर्थ विवाद, धर्ममें प्रवृत्ति, व्यापारहानि, वृथा यात्रा।	लाभ मध्यम, बंधुकष्ट सेवक से मन खिन्न, शरीर ढीला।	कहीं आना जाना पड़े,लाभ खर्च सम, शरीरकष्ट,वृथाचिंता	बंधुसुख, कारोबार ठीक, संततिचिंता, जलभय।	स्वास्थ्यहानि, संपत्ति बढ़े,बंधु कलह, स्त्रीसुख, लाभ अच्छा	शरीरसुख, संततिसुख, स्त्रीकष्ट, शुभमें व्यय, वृथाविवाद
मीन	लाभ होकर फिर हानि, गुप्तांगमें पीड़ा, शत्रुनाश।	लाभ अच्छा,स्त्रीपुत्र चिंता,सोचाहुआ कार्य बने,नजदीक यात्रा	कारोबार अच्छा होते हुये भी परेशानी, बंधुओंसे सुख।	जमीन मकानकी चिंता, स्त्री द्वारा व्यय, रोगभय।	शरीरसुख, संतानकष्ट, राज्यसे लाभ, शत्रु हानि।	वाहनभय, स्त्रीकष्ट, लाभकम,कारोबार बढ़ानेकीचिंता

नोट–उपर्युक्त द्वादश राशियों का फल सामूहिकरूपेण स्थूल मानसे मिलता है, सूक्ष्म ठीक ठीक मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश सं० २०१० वि.

राशयः	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
मेष	व्यय अधिक शत्रुभय, बंधुसुख, संतति चिंता।	स्वास्थ्यहानि,स्त्रीसुख,मास-मध्यशुभ, लाभकम, व्यय ज्या.	स्वास्थ्य ठीक, द्रव्यनाश, बंधुकष्ट, चिन्ता अधिक	स्वास्थ्यठीक, लाभ अच्छा, बंधुसुख, स्त्रीकष्ट, शत्रुभय	शरीरकष्ट, लाभ अच्छा,संत-तिप्राप्ति, शत्रुवृद्धि, व्यय काफी	वायुपीड़ा, लाभ अच्छा, बंधु सुख, संततिकष्ट, शत्रुभय।
वृष	लाभ मध्यम, शत्रुनाश, पुत्रादि का सुख।	स्वास्थ्यहानि,व्ययअधिक,बंधु सुख सामान्य, संततिकष्ट	स्वास्थ्य अच्छा, बंधुसुख, लाभ अच्छा, प्रेमीमिलाप, यात्राकष्ट	स्वास्थ्यहानि, द्रव्यनाश, बंधु व पुत्र वियोग, लाभ सामान्य	शरीरसुख, यात्राकष्ट, स्त्रीसुख राज्यसे हानि, संततिसुख	उदरपीड़ा, राज्य से लाभ संततिसुख, शत्रुभय
मिथुन	शरीरसुख कम, लाभ अच्छा बंधुसुखका अभाव, मानवृद्धि	स्वास्थ्यमध्यम, लाभ कम, बंधुनाश, शत्रुभय, कार्यसिद्धि	स्वास्थ्यहानि, स्त्रीसुख, व्यापा-रादिसेलाभ, व्ययकम, खुशीहो	स्वास्थ्य मध्यम, द्रव्यलाभ, स्त्रीकष्ट, व्यय विशेष	स्वास्थ्य मध्यम, द्रव्यलाभ, स्त्रीकष्ट, राज्यहानि, मित्रलाभ	स्वास्थ्य मध्यम, द्रव्यप्राप्ति, पुत्रसुख, कारोबारकी चिन्ता
कर्क	शरीरसुख कम, लाभ अच्छा शत्रुनाश, शुभकर्ममें प्रवृत्ति	स्वास्थ्य ठीक,स्त्रीकष्ट,गुप्त चिंता, कारोबार में हानि	स्वास्थ्य मध्यम, द्रव्यनाश, शत्रुभय,स्त्रीकष्ट,लाभमें विघ्न	स्वास्थ्यहानि, बंधुकष्ट स्त्री-सुख, लाभ अच्छा, व्यय अधिक	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यनाश, बंधु चिंता, संततिसुख, शत्रुभय	द्रव्यलाभ, बंधुनाश,संततिसुख शत्रुभय, व्यय ज्यादा।
सिंह	शरीरसुख मध्यम, लाभ अच्छा, यात्रा कष्ट।	स्वास्थ्य सामान्य,लाभ कम, शत्रुभय, स्त्रीकष्ट, चौरभय	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यलाभ, बंधुसुख, स्त्रीसुख, वृथाखर्च	स्वास्थ्यचिंता, शत्रुभय, पुत्र-स्त्रीसुख,लाभमध्यम,व्यय अधि.	स्वास्थ्य मध्यम, संततिसुख, शत्रुभय, स्त्रीकष्ट, व्यय अधिक	शरीर व बंधुकष्ट, शत्रुभय, लाभकम, व्यय अधिक।
कन्या	शरीरसुख अच्छा, बंधुवियोग, धननाश, दुष्टभय।	स्वास्थ्यहानि, लाभकम, सं-ततिदुःख, व्यापार चिंता।	स्वास्थ्यहानि, संततिकष्ट, शत्रुपीड़ा, कारोबार चिंता	शरीरसुख, स्त्रीसुख, राज्य से लाभ, कारोबारमें हानि	स्वास्थ्यहानि, द्रव्यनाश, बंधु-सुख, स्त्रीसुख, लाभ अच्छा	शरीरकष्ट, शत्रुसे हानि,स्त्री-सुख, राज्यभय, लाभ अच्छा
तुला	स्वास्थ्यहानि, लाभ अच्छा, कारोबार चिंता, शुभविचार	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यनाश, बंधुसुख, कार्यान्तिरका विचार	स्वास्थ्य सामान्य, बंधुवियोग, लाभ अच्छा होकरभी न मिले	स्वास्थ्यमध्यम, बंधुकष्ट, शत्रु नाश, लाभ अच्छा,व्यय काफी	शरीरसुख सामान्य, लाभ अच्छा, बंधुकष्ट,शत्रु नाश, राज्य से हानि	स्वास्थ्यहानि, संततिकष्ट, शत्रु नाश,कारोबारखराब,गुप्तचिंता
वृश्चिक	स्वास्थ्य अच्छा, कारोबार में हानि, बंधुसुख कम, वृथा विवाद	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यलाभ, यशवृद्धि, बंधुनाश, शत्रुभय	स्वास्थ्यहानि, बंधुकष्ट, शत्रु-नाश, लाभव्यय सम, यात्रा हो	स्वास्थ्यहानि, बंधुकष्ट, शत्रु नाश,राज्यसुख लाभव्ययअधि.	शरीरसुख, बंधुकष्ट, शत्रुनाश, स्त्रीसुख, लाभ व्यय सम	उदरविकार, नये कार्यका वि-चार, लाभ अच्छा, बंधुकष्ट।
धनु	स्वास्थ्य अच्छा,लाभकम,स्त्री सुख, गुप्तचिंता, दूरकी यात्रा	बिगड़े कार्य सिद्ध, स्त्रीसुख, लाभ अच्छा, शत्रु भय	स्वास्थ्यहानि, संततिसुख,शत्रु नाश, स्त्रीकष्ट, व्यय ज्यादा	स्वास्थ्यमध्यम, लाभ सामान्य पुत्रसुख, शत्रुभय, व्यय अधिक	शरीरपीड़ा, द्रव्यलाभ, संत-तिकष्ट, शत्रुभय, बंधु-स्त्रीसुख	वायुपीड़ा, द्रव्यलाभ, संतति-कष्ट, स्त्रीसुख, व्यय ज्यादा
मकर	स्वास्थ्य हानि, बंधुनाश, शत्रुभय, लाभकम, यात्रासुख	स्वास्थ्य ठीक,व्यापार या राज्य से धनप्राप्ति, मित्र समागम	स्वास्थ्य ठीक,लाभ सामान्य, पुत्रसुख, शत्रुभय, चिन्ता	स्वास्थ्य सामान्य,राज्यसे द्रव्य प्रा., पुत्रकष्ट, शत्रुनाश,स्त्रीसुख	स्वास्थ्य अच्छा, राज्यसुख, कारोबारमें लाभ,व्यय सामान्य	स्वास्थ्य मध्यम,स्त्रीसुख, लाभ अच्छा, पशु सुख, दुःस्वप्न।
कुम्भ	लाभ मध्यम, शत्रुनाश स्त्री-सुख, दुःस्वप्न, शिरपीड़ा।	स्वास्थ्य अच्छा, धनप्रा.,बंधु कष्ट, संततिसुख, वाहनभय	स्वास्थ्य उत्तम, लाभ अच्छा, संततिसुख, चिन्ता दूर	स्वास्थ्यअच्छा, द्रव्यलाभ, संत-तिप्रा., शत्रुभ., स्त्रीक.,व्यय अ.	स्वास्थ्य मध्यम, द्रव्यलाभ, बंधुसुख, शत्रुवृद्धि, स्त्रीसुख	शिर वा उदरपीड़ा, शत्रुभय, राज्यसे लाभ, कारोबार ठीक
मीन	स्वास्थ्य अच्छा, लाभकम, शत्रुनाश,पैरकष्ट,स्त्रीद्वाराव्यय	स्वास्थ्य अच्छा, स्त्रीकष्ट, लाभकम, मानवृद्धि, अग्निभय	स्वास्थ्य अच्छा, द्रव्यलाभ, बंधु सुख,स्त्रीसुख, अग्नि वा शत्रुभय	स्वास्थ्य अच्छा, संततिकष्ट, शत्रुभय, स्त्रीसुख, व्यय कम	स्वास्थ्य अच्छा,बंधुकष्ट,संत-तिसुख, शत्रुनाश,लाभव्यय सम	संततिसुख, स्त्रीकष्ट, द्रव्य-नाश, अचानक यात्रा

नोट—उपर्युक्त द्वादश राशियों का फल सामूहिकरूपेण स्थूल मानसे मिलता है, सूक्ष्म ठीक ठीक मासिक फल जानना चाहें तो अपना वर्षफल बनवाइये।

चैत्र शुक्ल १ को वर्षफल श्रवण

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
बिनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संव्वत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यक् बिचार्यगणितं दैवज्ञजनतुष्टिदम् । मुकुन्दवल्लभेनेदं तिथिपत्रं विनिर्मितम् ॥३॥
अनेन धार्मिकजनः कालज्ञानसहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्वित्येव याच्यते ॥४॥
तिथिर्वारञ्च नक्षत्रं योगः करणमेव च। पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगास्नानफलं लभेत् ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरण आदि से गृह सुशोभित करें, मङ्गल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरुकी पूजाकर, स्त्रियाँ शिशु आदि बस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजीका सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्बके कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें कालीमिर्च, हीग, नमक (सैंधा) अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है (वर्ष पर्यन्त ज्वरादि बीमारी नहीं होती)।

पञ्चाङ्गस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्न आदि भोजन करावें, गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्दपूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं शृण्वन्ति भक्त्या प्रतिवार्षिकं नराः। ते दुःखदारिद्रचरुगादिवर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्यसंकुलाः ॥१॥ शाकस्य श्रवणात्सुपुण्यजननं - संवत्सरस्याद्यतां, राज्ञो राजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं वृद्धिदम्। धान्यं धान्यपतेः रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा, सस्यं सर्वसुखञ्च वत्सरफलं संशृण्वतां सिद्धिदम् ॥२॥ इति संवत्सरादिफलश्रुतिः।

सृष्टिक्रम वर्णन

अथवा सृष्टि के संक्षिप्त इतिहास की अवतरणिका—समस्त जगत् की उत्पत्ति स्थिति और लय कारणरूप ब्रह्मा की आयु अपने ही दिनों के मान से सौ वर्ष की होती ह। अब ब्रह्माकी आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर, ५१वें वर्षके प्रथम दिनका उदय है। इस दिनकी १३ घड़ी, ४२ पल, ३ विपल, ४३ प्रतिविपल व्यतीत हो चुके हैं। मनुष्यमान से ब्रह्मा की आयु का विस्तार इस प्रकार है—एक चतुर्युगी का एक महायुग होता है, उसकी सौरमान से वर्षसंख्या ४३२०००० है। इस प्रकार के एक हजार युगों का ब्रह्मा का एक दिन होता है (ऐसे ब्रह्मा के हजार युगों की विष्णु की एक घड़ी होती है, विष्णु के १२ लाख युगों का रौद्रकलार्ध होता है। रुद्र के अर्बुद संख्यक युगों का अक्षरात्मक ब्रह्म होता है। ब्रह्मा के इस एक दिन में जो १४ मन्वन्तर होते हैं, उनमें से १ स्वायम्भुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ये छे मनु व्यतीत हो गये है, अब सातवाँ वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है, उसमें भी २७ चतुर्युगी गत होकर अठाइसवीं चतुर्युगी के ३ युग व्यतीत हो गये हैं, और यह २८वाँ कलियुग है।

अथ युगकाल व्यवस्था—सत्ययुग—कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार के प्रथम पहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सतयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी, इसमें श्रीनारायणके मत्स्य, कच्छप, बराह और नृसिंह, ये ४ अंशावतार हुए, श्रीमत्स्यजी ने वेदोंके चौर शंखासुर को मार कर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये, भगवान् कच्छप ने पृथ्वी के रक्षार्थ मन्दराचल को पीठ पर धारण कर शेषनाग की डोर से देवदैत्यों द्वारा समुद्र-मंथन करा कर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहजीने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्रीनृसिंहावतारने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पद पर कायम था, गौएँ कामधेनु के समान होती थीं, प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्के के स्थान में रत्न का परस्पर व्यवहार था। इच्छित वर्षा होती थी, एक बार बीज बो कर २१ बार काटते थे। ब्राह्मण चारों वेद के जानकार तथा सत्यभाषी परद्रव्य-परस्त्री-पराङ्मुख और त्यागी होते थे। शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियाँ पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक (राजवंश) वर्ग न्यायपरायणान्तःकरण से प्रजा को स्वपुत्रवत् समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में रहते हुए जीवन व्यतीत करते थे। इस युगमें तीर्थ पुष्कर प्रधान था।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२९६००० वर्ष की थी, इसमें भगवान् के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्र ये तीन अवतार हुए। श्री वामनजी ने राजा बलि से ३ पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को ३ पैर में नाप बलि को पाताल का राज्य दिया। श्रीपरशुरामजी ने कर्तव्य विमुख एवं अन्यायी विलासिता के प्रेममें प्रमत्त अभिमानी क्षत्रियों-का नाश करके २१बार ब्राह्मणराज्य स्थापित किया था। श्रीरामचन्द्रजी ने महा-अभिमानी राक्षसराज रावण का वध करके देवता और ऋषियों को निर्भय किया था। इस युग में धर्म तीन पैर का रह गया था। गौवें त्रिकाल दूध देनेवाली होती थीं, प्रायः चाँदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा मौके पर होती थी, एक बार बोकर सात बार काटते थे। ब्राह्मण तीन वेदों के बक्ता और किञ्चिन्न्यून तपोनिष्ठ परस्त्री-परद्रव्यसे पराङ्मुख होते थे, वर शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ चित्रिणी पतिव्रता होती थीं। इस युगमें सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियोंका राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वह इन्द्रलोग पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तोलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था। द्वापर—माघ कृष्ण ३० शुक्रवार तृतीयप्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान् योग में द्वापरयुग की उत्पत्ति हुई, इसकी आयु ८६४०००वर्ष की थी। इसमें पूर्ण ब्रह्म के श्रीकृष्ण श्रीबलदेव ये दो अवतार हुए। भगवान् श्रीकृष्णने दत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया, तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धारार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्रीबलदेवजी ने सामयिक लीला करते हुए दुष्टों का नाश करके धर्मका उद्धार किया। इस युग में धर्म दो पैर वाला रह गया था, गौवें दो वक्त घटपूर्ण दुग्ध देनेवाली होती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा था। वर्षा समय पर हो जाती थी, एक बार अन्न का बीज बोकर ३ बार काटते थे। ब्राह्मणलोग दो वेदों के पारंगत होते थे और कुछ असत्य विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देव-पूजनादि करनेवाले किञ्चित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात् वर और

शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियाँ शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में धर्मप्राण चन्द्रवंशी राजा हुए। प्रायः चारों वर्ण अपने अपने वर्णाश्रम धर्म पर कायम थे, परस्त्री-परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र प्रधान था। **कलियुग**—भाद्रपद कृष्ण १३ अर्धरात्रि के समय आश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग की उत्पत्ति हुई थी, इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्री बुद्ध और श्री कल्कि (निष्कलंक) हैं जिनमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कलि अवतार जब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब शंभल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्तधर्म की स्थापना के साथ साथ न्यायपरायण क्षत्रियराज्य भी कायम होगा। इस युग में एक पैरवाला धर्म रह जायगा। गौएँ दूध कम देंगी मृण्मय पात्र और ताम्रपात्र तथा कर्गल मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का सञ्चार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से शून्य तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को तिलाञ्जलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे शास्त्रनिन्दित मृतचर्म (जूता आदि) के व्यापार से भी लाभ उठायेंगे, शूद्र लोग पाखण्डी होकर बहुधा उच्चवर्णवालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायगा, धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियाँ ज्यादा हस्तिनी पैदा होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रता कहीं कहीं देखने में आयेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे। स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा। पिता कन्या-विक्रय करेंगे। गौ ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्रों का माता पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा हरिद्वार होगा।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः—पिशाचवदनःक्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वाञ्च नृत्यति ॥ **अथ कलिमाहात्म्यम्**—धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरं गतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटिनश्चित्तञ्च शाठ्योज्झितम्। राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे ॥ निर्बीजा पृथ्वी निरोषधिरसा नीचा महत्त्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्मरहिता विप्राः कुमार्गं गताः। भार्या भर्तृविरोधिनी पररता पुत्रा पितुर्द्वेषिणो, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः ॥ न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचाश्च अवनिपतयो दुष्टमतयो, जना शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति ॥ **कलौ गंगायाः स्थितिः**—पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदैव विष्णुस्त्यजति मेदिनीं नरपुंगव। **भगीरथं प्रति गंगावाक्यञ्च**—यावद्धरण्यां तुलसी प्रपूज्यते गुरुर्नभस्यां दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रं बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रवर्ति ॥ इति ॥ कलौ दशसहस्राणीति वाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्, नान्येषु कलिष्विति ॥

अथ वर्षराजादि फल विचार २०१०

अथ श्रीमन्नृपतिधर्ममूर्ति-विक्रमादित्यानां राज्यसिंहासनाध्यासनादतीताब्दानि तत्संवताभिधः २०१० श्रीमन्नृपतिचक्रचूड़ामणि—शकजातियवननिर्बीजक-शालिवाहनराज्याद् गतहायनानि सन् शकाभिधः १८७५ श्रीकृष्णजन्म सं० ५१८९ श्री महावीरनिर्वाण (जैन) संवत्सरः २४७९—८० ईस्वीसन् १९५३—५४ हिजरी सन् १३७२—७३ फसली सन् १३५९ वर्षादौ गुरुमानेन प्रभवादिषष्ठ्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशत्यां ४० पराभवनाम्नः संवत्सरस्तस्य फलम्—पराभवाब्दे राज्ञां स्यात्समरः सह शत्रुभिः। आमयः क्षुद्रसस्यानि प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥ पराभववर्ष में राजाओं का शत्रुके साथ युद्ध हो, रोग और क्षुद्र धान्य अधिक हो, वर्षा थोड़ी हो, जैन ग्रन्थों में इसका विशेष फल लिखा है। तद्यथा—पराभवे केतुः स्वामी मध्यमवृष्टिः, चैत्रे वैशाखे चान्नं महर्घं, मेघगर्जितविद्युद् वायवः, ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः, उद्दण्डवायुः, आषाढ़ेऽल्पमेघः, अन्ने द्विगुणो लाभः श्रावणे महती वर्षा, अन्नसमता, भाद्रपदे खण्डवृष्टिः, परं दुर्भिक्षं, आश्विने किञ्चिद् लोकसुखं परं धान्यरसवस्तुमहर्घमेव। धातुसमर्घता, कार्तिकादि मासपञ्चके समता, पश्चिमायामन्नसमता, सिन्धुदेशाद्धान्यागमः ॥ अथात्र वर्षे राजा चन्द्रः मन्त्री चन्द्रः सस्येशो गुरुः, धान्येशो भौमः, मेघेशः रविः, रसेशः शनिः, नीरसेशो बुधः, फलेशः रविः, धनेशो बुधः, दुर्गेशरविः, एते दशाधिकारिणः। अथैषां फलानि—**राजा चन्द्रस्तस्य फलम्** (सर्वदेशेषु)—चन्द्रे नृपे मङ्गलशोभनानि, प्रभूतवारि प्रचुरं च धान्यम्। प्रशाम्यति व्याधितरो नराणां सुखं प्रजानामुदयो नृपाणाम् ॥ इस वर्ष का राजा चन्द्र होने से प्रजा में अच्छे २ मांगलिक कार्य हों, वर्षा अधिक हो, धान्य बहुत हो, मनुष्यों की व्याधि शान्त हो, प्रजा को सुख और राजाओं का उदय हो। **मन्त्री चन्द्रस्तस्य फलम्** (बाल्हीकमालवयोः)—सुधाकरे भूः सचिवेऽन्नपूर्णा फलैरसाढ्यास्तरवश्च गावः। पुत्रप्रसूतिबहुलावधूनां, जनेषु वाणी जयिनी मधूनाम् ॥ चन्द्रमा मंत्री हो तो पृथ्वी धान्यसे और वृक्ष फलों से पूर्ण हों, गौ अधिक वत्स प्रसव करें और स्त्रियों की वाणी मनुष्यों में प्रिय हों। **सस्येशः गुरुस्तस्य फलम्** (पौण्ड्रविदर्भयोः)—कणपतौ सुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकः। जलधरा जलदा बहुसस्यदा रसपयांसि बहूनि वसूनि वै ॥ यदि बृहस्पति सस्येश हो तो वेद विहित मार्ग से सौख्य हो, वर्षा बहुत हो, अन्न तथा रस गोरस दूध आदि भी बहुत हों। **धान्येशो भौमस्तस्य फलम्**—भूमिजे ग्रीष्मधान्येशे ग्रीष्मधान्यमहर्घकम्। शालीक्षुघृततैलादि महर्घाणि भवन्ति च ॥ मंगल धान्येश हो तो ग्रीष्मधान्य (जौ, गेहूँ आदि) महंगा हो और चावल ईख घृत तैलादि भी महँगे हों। **मेघेशरविस्तस्य फलम्**—जलदपे यदि वासरपे तदा सरसि वै रमते जनता रसम्। यवचनेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयः सुलभो भुवि वर्तते ॥ यदि मेघेश सूर्य हो तो जनता आनन्दपूर्वक जलमें विहार करती है, जौ, चने, ईख, नीवार चावल आदि अच्छे उत्पन्न हों और पृथ्वीपर सुख हो।

रसेशः शनिस्तस्य फलम्—रविसुते रसपे रससंक्षयो न जलदा गददाश्च पयोधराः। अजगवां गजवाजिखरोष्ट्रहा जनपदेषु नरा न रसैर्युताः ॥ शनैश्चर रसेश हो तो रसों का नाश हो बादलों से पानी के बदले रोग वर्षे, बकरी, गौ, हाथी, घोड़े, गधे और ऊँट इनका नाश हो और मनुष्यों में नीरसता रहे। **नीरसेशो बुधस्तस्य फलम्**—चित्रवस्त्रादिकं चैव शङ्ख चन्दनपूर्वकम्। अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि ॥ बुध नीरसेश हो तो चित्रविचित्र छींट आदि के वस्त्र और शंख चन्दन आदि सस्ते हों। **फलेशः रविस्तस्य फलम्**—द्रुमवती वरपुष्पवतीधरा प्रमुदिता फलभोगविशेषतः। बहुजलं जलदो भुवि मुञ्चति क्वचिदपि प्रमितं फलपो रविः ॥ सूर्य फलेश हो तो पृथिवी में अनेक प्रकार के वृक्ष और फल हों, फलों के भोगादि से आनन्द हो, और वर्षा बहुत हो। **धनेशो बुधस्तस्य फलम्**—द्रविणपो हिमरश्मिसुतो यदा विविधसंग्रहवस्तुफलार्यदा। द्विजवरा जपयज्ञसुसंयुताः कृषिविशेषविशेषितमानसाः ॥ बुध धनेश हो तो कई प्रकार की वस्तुओं का संग्रह लाभदायक हो, विद्वान् विप्र जप यज्ञादि करें और कृषक लोग खेती में विशेष दत्तचित्त रहें। **दुर्गेशः रविस्तस्य फलम्**—

नवविशेषकरस्तरणिस्तदा गतभया· नरराजपुरोगमाः । समधिको न तदा नृपजांन्यजं स्वपथजं व्रजतां न भयं क्वचित् ॥ सूर्य दुर्गेश हो तो राजा न्याय करें, राजद्वारमें जानेवाले निर्भय हों, राजवर्गी तथा अन्य सब समान रहें, और अपने नियत मार्ग में चलनेवालों को कुछ भी भय नहीं हो।

बैशाख-अधिमास का फल—वर्षा कम, प्रजामें धनधान्य की, वृद्धि और घृत तैल कपास सस्ता हो। नौ मेघों में से **नील नाम मेघ का** फल—वर्षा शीघ्र शुरू हो, कपास अधिक पैदा हो। इस वर्ष द्वादश नागों में **बासुकी नाग** है उसका फल—अच्छी खेती होने योग्य उत्तम वर्षा हो। इस वर्ष सप्त पवनोंमें वायु नाम पवन है फल—साधारण हवा चले वृक्षों की वृद्धि हो। इस वर्ष **रोहणी का निवास** पर्वत में है फल—वर्षाकी कमी, धान्य हानि। **वर्ष का निवास** कुम्भकार के घर में है फल—वर्षा की कमी रहे। संवत् की सवारी मृग की है शनि की दृष्टि पश्चिम में है.॥ इस वर्ष चन्द्रग्रहण २ हैं—पहला आषाढ़ शु. १५ को, दूसरा पौष शु. १५ को है। सोमवती अमावस्या १, बुधाष्टमी १। अथ वर्षादीनां विश्वामानम्—वर्षा विश्वे १३ धान्य ७ तृण ११ शीत ५ तेज ५ वायु १३ वृद्धि १५ क्षय १५ विग्रह ११ क्षुधा ९ तृषा ३ निद्रा १३ आलस्य ९ उद्यम १३ शान्ति ११ क्रोध ११ दम्भ ११ पाखण्ड ९ लोभ ७ मैथुन ९ रसनिष्पत्तिः १३ फल—निष्पत्तिः ११ उत्साह ३ उग्रता १३ पाप १७ पुण्य ११ व्याधिः १७ व्याधिनाशः ५ आचारः १३ अनाचारः ११ मृत्यु १ जन्म ३ देशोपद्रव ३ देशस्वास्थ्य ३ चौरभय ५ चौरनाश ११ अग्नि ५ अग्निशान्ति ५ टिड्डी ९ तोता ३ मूषक ३ सुवर्ण ३ ताम्र १३ स्वचक्र १३ परचक्र ३ अतिवृष्टि ११ अनावृष्टि ११ उद्भिज (वृक्षलता क्षुप आदि) ७ जरायुज (मनुष्य तथा गौ आदि पशु) ३ अण्डज (पक्षी तथा सर्पादि) १३ स्वेदज (पसीने से उत्पन्न जूं खटमल आदि) ९ संवत्-विस्वा १८।

वर्षस्तम्भ चतुष्टयविचार—इस वर्ष जल और तृण दोनों स्तम्भों का अभाव है, अतः इस वर्ष वर्षा की भारी कमी रहेगी। इसी कारण तृण की उत्पत्ति भी कम होगी जिससे कई प्रान्तों के कृषक लोगों में पशुओं के चारे की भारी चिन्ता बनी रहेगी। वायुस्तम्भ रुपये में ११ आने हैं। अतः वायु का सञ्चार अच्छा रहेगा। अन्न का स्तम्भ रुपये में १० आने हैं। अतः नदीमातृक देशों में अन्न की उत्पत्ति अच्छी हो जावेगी।

आर्षमान (वर्षरक्षा के ४ किले)—पहिला आर्ष गत पौष की अमावस मूलका ८ विश्वे है, और दूसरा आर्ष अक्षय तृतीया रोहिणीका, एवं तीसरा आर्ष श्रावण की पूर्णमासी को श्रवण का यह दोनों शून्य ० विश्वे हैं, चौथा आर्ष कार्तिक की पूर्णमासी को १३ विश्वे हैं। आर्ष मान देखते हुए यह वर्ष प्रजा के लिये मध्यम ही दीखता है बड़े शहरों की जनता में बेचैनी रहेगी।

अखै तीज रोहिणी नहि होई। राखी श्रवणों हीन विचारो। महीमाह खलबली प्रकाशे।
पौष अमावस मूल न जोई॥ कातिक पुण्यो कृतिका टारो॥ कहे भड्डली साख विनाशे॥

अथ नववर्षप्रवेशः—गत सं० २००९ वि. चै. कृ. ३० रविवार को इष्टघटी २४।५१ पर सिंहलग्न के ७ अंशपर नववर्ष का प्रवेश होगा। सो इस वर्ष जनता को अन्न की प्राप्ति सुलभ हो, वर्षा श्रेष्ठ पूर्वीय भारत में खड़ी फसल को कुछ हानि हो और दाख सेव बादामादि महँगे हों, बंबई गुजरात में रोगभय।

वर्षलग्नम्—सं. २०१० वि. प्रथम वै. कृ. ३० चन्द्रवार को इष्टघटी २०।१२ सिंह लग्न की १५ कला पर श्री सूर्यनारायण मेषराशि में प्रवेश करेंगे। यहां लग्न को गुरु त्रिपाद दृष्टि से तथा अन्य शुभाशुभ ग्रह अपूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं, और लग्नेश स्वयं अष्टम पहुंच रहे हैं अतः यह वर्ष प्रजा में रोग भय तथा कई प्रकार के आतंक से कष्ट देने वाला होगा। आषाढ़, आश्विन, मार्गशीर्ष, महीने शुभ नहीं हैं।

सूर्यका आर्द्रा प्रवेश सामयिक फल विचार—सं. २०१० वि. ज्येष्ठ शुक्ल ९ रविवार को इष्टघट्यादि ४४।४९ लग्न कुंभ अंश १२ पर श्रीसूर्य भगवान् आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश होंगे, उस समय तात्कालिक तिथि १० है फल—प्रजामें मंगल कार्य बहुत हों। वार रविफल—पशुओं की हानि हो। नक्षत्र चित्रा का फल—मूंग मोठ उड़द की उत्पत्ति अच्छी हो और प्रजा में शुभ फल। योग परिघ का फल—राजाओं को पीड़ा हो और प्रजा में धर्म अर्थ का नाश हो। समयफल—सुख शान्ति हो। लग्न कुम्भ फल—आर्द्रा प्रवेश लग्न से चन्द्रमा नवम और सूर्य पञ्चम है, चन्द्रमापर भृगु की दृष्टि है और सूर्य, मंगल से स्थान सम्बन्ध रखता है अतः सब प्रकार के धान्यों की उत्पत्ति रुपये में १२ आने होगी, कहीं अतिवृष्टि से और कहीं अनावृष्टि से भी कुछ हानि हो। मेष राशिस्थगुरुफल—इस वर्ष गुरु का मेष में भ्रमण वर्षारम्भ से केवल प्रथम वैशाख कृष्ण नवमी (९ अप्रैल) तक रहेगा जो मेवाड़ प्रान्त में पीड़ा और दक्षिण के किसी प्रान्त को समीपस्थ बड़ी सत्ता में विलीन करता है। वृषराशिस्थ गुरुफल—प्रथम वैशाख कृष्ण दशमी से भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी तक और उसके बाद फिर मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी से वर्षान्त तक गुरुग्रह वृषमें भ्रमण करेंगे जो उत्तर में अनावृष्टि, कहीं दुर्भिक्ष हाथी घोड़ों को रोग और उज्जैन प्रान्त में उत्पात, कहीं टिड्डी का आगमन भी करते हैं। मिथुन राशिस्थगुरुफल—अतिचार गति से गुरु भाद्रपद कृ. ५ से मार्गशीर्ष नवमीतक मिथुन राशिमें भ्रमण करेंगे जिसका निम्नलिखित फल होगा—तेल खण्ड धातुओं का भाव सस्ता, सिन्धु देश में रोग, प्रजा में चौरभय और बालकों को पीड़ा हो।

॥ अथ लाभव्ययचक्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८	लाभ
१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५	व्यय

लाभव्यय देखने की रीति—लाभ और व्यय के अंकों को जोड़ कर एक घटावे, और ८ का भाग देवें शेष १।२।६।७ बचे तो उस वर्ष में लाभ उत्तम होवे, और शेष ३।४।५।०० बचे तो लाभ बहुत कम होवे, और चिन्ता भी रहे।

श्रद्धेय श्री पं० नेहरू और ज्योतिश्शास्त्र

श्रद्धेय श्री पं० नेहरू और ज्योतिश्शास्त्र

आजकल कुछ पाश्चात्त्य शिक्षा से शिक्षित महानुभाव फलित ज्योतिष की सत्यता में सन्देह करके इस विषय में अनेक शंकाएँ उठा रहे हैं। जिसका प्रधान कारण देववाणी संस्कृत से सर्वथैव अपरिचित होना ही ज्ञात होता है। इस शास्त्र का जन्म सहस्रों वर्ष पूर्व भारत में ही मनुष्यमात्र के कल्याणार्थ हुआ था। जिसकी महानता व अद्‌भुत चमत्कार से सम्पूर्ण विश्व का सभ्य समाज परिचित है। पूज्य महर्षियों ने अपने अद्‌भुत यौगिक बल से निश्चय किया था कि हमारे सौर परिवार के जो आकाशस्थित चन्द्र भौमादि ग्रहपिण्ड हैं, वह ईश्वरप्रदत्त सत्ता द्वारा परस्पर आकर्षण करने से सब चलायमान होते हैं, और अपनी पृथक् २ गति के अवलम्बन से शून्याकाश में चक्र लगाते हैं। इन्हीं त्रिकालज्ञ महापुरुषोंके सतत परिश्रम से इन गगनविहारी पिण्डों की यथार्थगति का ज्ञान हुआ है। इनकी किस समय में कहाँ स्थिति होगी? और उस स्थिति से एक दूसरे पिण्ड पर क्या प्रभाव होगा? उस पिण्ड के प्राणीसमूह उस प्रभाव का क्या फल पावेंगे? और पृथक् २ व्यक्ति उस फल के कितने भाग का अधिकारी हैं? इन्हीं फलविचारों के चिट्ठे का नाम ज्योतिश्शास्त्र है। प्राय: समस्त आस्तिक भारतीय जन्मान्तरवाद पर श्रद्धा रखनेवाले 'अपने २ शुभाशुभ कर्मजन्य फल के कारण ही इस जन्म में अच्छा या बुरा फल होता है' सिद्धान्तरूप से ऐसा मानते हैं। उसी फल को ज्योतिश्शास्त्र ग्रहगति के विचित्र फल द्वारा निर्णय करके पहिले ही प्रकट कर देता है। वृहज्जातक में आचार्य वराहमिहिर जी ने स्पष्ट लिखा है कि---कर्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पङ्क्तिं समभिव्यनक्ति। यह शास्त्र प्राणियों के पूर्वजन्म में किये हुए पुण्य और पाप जो कुछ रहते हैं उनके फलभोग कालको (ग्रहगति द्वारा निश्चित करके) ठीक-ठीक बतलाता है।

विदेशीय शिक्षावशात् पूज्य त्रिकालज्ञ आचार्यों के वाक्योंपर विश्वास न हो तो यूरोप के क्लेयर नामक महान् ज्योतिषी का मत देख लें। इन्होंने लिखा है, कि "ग्रहों के योग व प्रतियोग का अनुभव शुभाशुभपरिणामों द्वारा मनुष्यको अवश्य मिलता है।"

इस शास्त्र के आधार पर बुद्धिमान् मनुष्य अपनी भविष्य जिन्दगी का अच्छा बुरा समय, यश, हानिलाभ एवं वर्षा सुभिक्ष-दुर्भिक्ष आदि सब बातें अच्छी तरह समझ कर सावधान रह सकता है, क्योंकि आगामी घटनाओं की सूचना पहिले ही दे देने की क्षमता यही शास्त्र रखता है, अन्य कोई नहीं। इसी अपने अनोखेपन के कारण चिरकाल से कट्टर विरोधियों के प्रहार को दूर फेंकता हुआ अपनी वैज्ञानिकता के आधार पर आज भी यह शास्त्र उत्तरोत्तर प्रगति के पथपर है। पूर्ण उन्नत व सभ्य गिने जाने वाले इङ्गलैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, अमरीका, जापान आदि देशों में आजकल ५० हजार से अधिक ज्योतिष के विद्वान् हैं और वह ज्योतिष के फलितादि विषयों पर नई २ पुस्तकें लिखकर वहाँ की जनता पर इस ज्योतिर्विज्ञान की सत्यता की छाप बिठा रहे हैं। सम्पूर्ण संसार के सर्व ग्रन्थों से अत्यन्त प्राचीन वेद भगवान् ने भी "ज्येष्ठघ्न्या जातो विचृतोर्यमस्य मूलवर्हणात्परियाहयेनम्" (अथर्व ६-११०-२) लिखकर फलित ज्योतिष की सत्ता को स्वीकार किया है। जैमिनि, पराशर, गर्ग आदि विश्ववन्द्य महर्षियों ने इस शास्त्र पर अलौकिक ग्रन्थ रचे जो जैमिनिसूत्र, पराशरी आदि नामों से विश्व में विख्यात हैं। तदनंतर वराह मिहिर, सत्याचार्य, ब्रह्मगुप्त, केशव दैवज्ञ कल्याणवर्मा आदि धुरन्धर ग्रन्थकार आचार्यों ने भी अभूतपूर्व ग्रन्थ लिखकर इस शास्त्र को चार चांद लगा दिये हैं। यदि इस शास्त्रमें सचाई की गन्ध न होती तो इतने बड़े २ पूज्य महर्षिगण एवं आचार्यप्रवर क्या इस विषय पर वृथा कलम उठा सकते थे? कदापि नहीं, सोचने की बात है कि क्या कभी प्रापञ्चिक मूल रहित कोई झूठी विद्या सहस्रों वर्ष तक स्थिर रह सकती थी? बिना सत्यता के इस वैज्ञानिक युग में तो इसका दो दिन जीवित रहना भी असम्भव था। मुझे खेद है कि वर्तमान भारत के सब से बड़े मान्य नेता भारत-महामन्त्री भारत-हृदय सम्राट् श्रद्धेय श्रीमान् पं० नेहरू जी ने गतवर्ष श्रीमार्तण्डपञ्चाङ्ग छपने के अनन्तर एक सार्वजनिक सभा में बोलते हुए ज्योतिषियों के विषय में कुछ ऐसे ही अपमान जनक शब्द कहे हैं, जिससे ज्योतिषियों के साथ २ ज्योतिश्शास्त्र का भी अपमान हुआ है। ज्योतिष जैसे विज्ञान को उसके स्वाध्यायादि के बिना ही मिथ्या एवं प्रपञ्च समझकर सहसा उस के विरुद्ध बोलना श्री पण्डित जी जैसे विचारशील उदारात्मा महापुरुष केलिए शोभाजनक नहीं है। हाँ! यदि समय की हालत अखबारी अफवाहों की गन्ध से अनुमानित भविष्य वाणियाँ लिखने वाले धूर्त प्रपञ्ची ज्योतिषी नामधारी मायावी पुरुषों के ही आप विरुद्ध हैं तो यह उचित ही है, क्योंकि—आ श्रावगन्धान्परवृत्तजातान् सन्धाय लोकान् बहुधा प्रपञ्चैः। प्रवर्तते यः फलिताभिमानी स साधुवाचाऽपि न पूजनीयः ॥ भावार्थ यह है कि---घटनेवाले समाचारों का गन्ध लेकर जो भविष्यवाणी व फलित बोल कर प्रपञ्च से लोगों को ठगते हैं, उनका, अच्छी वाणी से भी आदर न करें, अर्थात् उन्हें अपशब्द कहना भी बुरा नहीं। (जैमिनीपद्यामृत)।

ग्रहगति का विचार बड़ा ही सूक्ष्म है कदाचित् मनुष्य बुद्धिवश (भ्रान्तिर्मनुष्यधर्मः) समयेष्टग्रहगणितादिक के विचार में कोई न्यूनता रह जावे या अधूरे ज्ञान के कारण कोई फल न मिला सके तो इतने मात्र से इस शास्त्र पर मिथ्यात्व का कलंक नहीं थोपा जा सकता। जैसे कोई वैद्य ज्वर निवृत्त्यर्थ गुड़ूची (गिलोय) का या डाक्टर कुनैन का प्रयोग करते हैं, कदाचित् किसी ज्वराक्रान्त रोगी को गिलोय या कुनैन से ज्वर न जावे तो गिलोय या कुनैन का ज्वरनिवृत्ति गुण वा वैद्य डाक्टरों का वह मत मिथ्या नहीं कहा जा सकता, उसमें कारण यही समझा जावेगा कि ज्वरभेद से निदान में या ओषधी प्रयोग में कुछ त्रुटि अवश्य रह गई होगी।

श्रीमन्! मैं एक ज्योतिश्शास्त्रवेत्ताओं के घराने का तुच्छ जीव हूँ। हमारे पूर्वज ज्योतिष-विद्या के चमत्कारों के कारण सिक्ख सम्प्रदाय के कर्ता धर्ता श्री गुरुगोविन्दसिंह जी महाराज के यहाँ अन्य विद्वानों के साथ दरबारी ज्योतिषी के रूप में सम्मानपूर्वक रहते थे। आजतक भी सिक्ख सम्प्रदाय का इस घराने पर अतुल विश्वास है। मैं पूज्य श्री पं० नेहरू जी महोदय को बड़े सम्मानपूर्वक बतला देना चाहता हूँ कि यह ज्योतिश्शास्त्र यथार्थ में सत्य है, परन्तु वर्तमान में अन्य विज्ञान डाक्टरी आदि विद्याओं की तरह राज्याश्रय के बिना इस शास्त्र का गम्भीर अध्ययन पर्यालोचन जैसा होना चाहिये वैसा नहीं हो रहा है। यदि आप इस शास्त्र की ठीक ठीक परीक्षा ही करना चाहते हैं तो अब स्वतन्त्र भारत में इसके रिसर्च का एक विभाग खोलिये। उसमें इस शास्त्र के अच्छे २ नये पुराने सभी विद्वानों को गृहचिन्ता से मुक्त कर रिसर्च के लिये नियत कीजिये और साथ ही इस शास्त्र के अभ्युदय के लिये रेखासान्निध्य-वर्ती कुरुक्षेत्रादि स्थानों में भारतीय प्रकारानुसार वेधशालाएँ स्थापित कराकर अपना शास्त्रप्रेम प्रदर्शित कीजिये, फिर देखिये इस शास्त्र की भविष्यवाणी आदि का चमत्कार। यदि ऐसा करने पर भी यह शास्त्र ढोल की पोल ही दीखे तो हमारे ज्योतिष व्यवसाय को बन्द करा देने आदि का आपको पूर्ण अधिकार है। कृपया देखिये सन् १९३४ ईस्वी की जन्त्री (पञ्चाङ्ग) में हमने बिहार के भूकम्प का स्पष्ट उल्लेख मय तारीख के ८ मास पूर्व ही लेखबद्ध करके छाप दिया था, तदनन्तर गत महायुद्ध में जिस समय कन्धे से कन्धा भिड़ाकर रूस, जर्मनी अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ रहे थे, उसी समय हमने इनकी मैत्री टूटने और शत्रु बनकर परस्पर सर्वनाश की तैयारी में जुट जाने का संकेत लिखकर १ वर्ष पहिले छपा दिया था, इसी तरह १ वर्ष पहिले युद्ध के विषय में पूर्व से भी भय लिखकर जापान के युद्ध में कूदने का

संकेत कर दिया था, जिसका किसीको स्वप्नमें भी ख्याल न था क्या यह ग्रहगति से जायमान फलित ज्योतिष का कम चमत्कार था ? यदि ऐसा चमत्कार किसी गुणग्राही यूरोपादि देशों में कोई दिखा देता तो उसे गृहचिन्ता से मुक्त कर इस विद्या के रिसर्च विभाग का अध्यक्ष बना दिया जाता, परन्तु धर्ममार्तण्ड श्री बघाटनरेश के अतिरिक्त अन्य किसी ने भी अपनी गुणग्राहकता का परिचय देकर हमारे उत्साह को नहीं बढ़ाया।

ज्योतिष की सत्यता की परीक्षा के लिये कुछ योग लिखता हूँ—

देखिये किसी पुरुष की निरयन शुद्ध जन्मकुण्डली में तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें नीच-नीचांश-रहित चारों स्थानों में पापरहित शुभग्रह बैठे हों तो वह पुरुष देश, जाति, कुलानुमान से महाधनी होता है। क्या कोई इस योगवाले पुरुष को निर्धन दिखा सकता है ? और भी किसी कुण्ड में पांच ग्रह उच्च के नीचांश व भङ्गयोग रहित (पञ्चादिभिरन्य जाताः) पड़े हो, उसे गरीब भिक्षुक दिखा दें तो मैं ज्योतिष को झूठा मानकर इस व्यवसाय को छोड़दूंगा।

शुभयोग रहित कन्या राशि के शनैश्चर जब भी आते हैं तब संसार में रुई की भारी कमी होकर महा तेजी आती है ऐसा ज्योतिश्शास्त्र से सिद्ध है। यह योग विक्रमी सं. १९४१–१९७८ और २००७—२००८ में बना था जिसका फल बराबर गोली की चोट मिला। फलित ज्योतिष को मिथ्या बतलानेवाले महानुभाव जवाब दें कि शनि तो आकाश में लाखों कोश की दूरी पर है फिर इस जड़ ग्रह का विश्वकी रुई पर यह प्रभाव क्यों हुआ ? और भी देखिये जब शनैश्चर और गुरु दोनों का तुला, वृश्चिक, धनुराशि में स्थान संबन्ध होता है, तब संसार में अनावृष्टि, दुर्भिक्ष कहीं तुगयानी (जलप्रलय) युद्ध, महामारी आदि दुर्घटनाओं से असंख्य प्राणियों का संहार हो जाता है। पीछे जब कभी भी यह योग आया तब तब बराबर फल मिला। विश्वास न हो तो पिछला रिकार्ड मिलाकर देख लें। जब फलित कुछ चीज नहीं, तो उपर्युक्त योग का प्रत्यक्षफल बराबर क्यों मिलता है ! फलित को मिथ्या कहनेवालों के पास इसका क्या उत्तर है ? इसी तरह प्रजापर सप्तग्रही योग का भी राष्ट्रपीड़ा दुर्भिक्षादि भयप्रद फलअवश्य होता देखा जाता है। इस विषय में फिरइसवेद भगवान् के नेत्र स्वरूप ज्योतिशास्त्र की सत्यता में सन्देह ही क्या है ?

अनुभूतिप्रदं नाम ज्यौतिषं शास्त्रमुत्तमम् ।
निगमान्निर्गतं लोके वन्द्यं विजयतेतराम् ॥ (पञ्चाङ्गकर्ता)

सं० २०१० में शनैश्चर की ढैया व साढेसती

इसवर्ष शनैश्चर कन्या तुला दोनों राशियों पर भ्रमण करेगा। वर्षारम्भ में तुलापर होगा, प्र. (अधिक) वैशाख शुक्ल १२ शनिवार को वक्रगति से कन्या में आकर फिर मार्ग गति से श्रावण शु. १० गुरुवार को तुला में आ जायगा जो कि वर्ष पर्यन्त तुला में ही रहेगा। जबतक कन्या में रहेगा तबतक मिथुन कुंभ राशिवालों को लघुकल्याणी (ढैया) और सिंह कन्या तुला राशिवालों को बृहत्कल्याणी (साढसती) रहेगी और जब तुला में रहेगा तब कर्क मीन राशिवालों को लघु-कल्याणी (ढैया) रहेगी और तुला वृश्चिक राशिवालों को साढ़सतीबृहत्कल्याणी साढसती रहेगी।

सूचना—जिनकी जन्मकुण्डली में चन्द्र शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध होवे अथवा महा-दशा शुभ चलती होवे तो ढैया साढसती का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र शनि जन्म में अशुभ ग्रह युक्त होवे तो फिर साढ़ सती ढैया महा अशुभ, चिन्ता, धनहानि, कार्य में विघ्न, वृथा झगड़ा रोगादि उत्पन्न करता है शान्त्यर्थ—इष्टमन्त्र जप या शनिवार को श्रीमहावीरजी पर सिन्दूर तैल चढ़ावे ॥

आकाशी कौंसिल का विचार

स्वतन्त्र भारत के जन्म की चलित कुं.

ता. १५ अगस्त १९४७ इष्ट ४५–२०

विमृश्य ग्रहसद्गतिं मुनिवचः
सिद्धान्तयित्वा स्फुटम् ।
शास्त्रं शाकुनकं विचार्यनित-
रामालोच्य सत्संहिताः ॥
राष्ट्रे राजसमाजधर्मविषये
ह्य द्भाविनी या स्थितिः ।
सा शम्भोः कृपया यथामति
मया प्रागेव निर्णीयते ॥

स्वतन्त्र भारत के सप्तम वर्ष प्रवेश की कुं.

९ | ७ चं. | १० | ८ | ६ श. | ११ | ५ | के. | १२ | गु. २ | मं.बु. ४सू. | १ | ३

ता. १५ अगस्त सन् १९५३ इष्ट १८।२९

सर्वतो भद्रसे भविष्य

पूर्व

अ	कृ.	रो	मृ	आ	पुन	पु.	श्ले	आ
भ	उ	अ	व	क	ह	ड	ऊ	म
अ	ल	लृ	वृष	मिथु	कर्क	लृ	मं	पू
रे	च	मेष	ओ	सू मं नंदा	औ	सिंह	ट	उ
उभा	द	मीन	शुक्र रि.	शनि पूर्णा	बुचं भद्रा	कन्या	प	ह
पूभा	स	कुंभ	अः	गुरु जया	अं	तुला	र	चि
श	ग	ऐ	मक	धन	वृ.	ए	त	स्वा
ध	ॠ	ख	ज	भ	य	न	ॠ	वि
ई	श्र	ऽभि	उषा	पूषा	मू	ज्ये	ऽनु	इ

उत्तर — दक्षिण

पश्चिम (बृहस्पति)

यस्मिन् ऋक्षे स्थितः खेटस्तो वेधत्रयं भवेत् ।
ग्रहदृष्टिवशात् वामसम्मुखदक्षिणे ॥

यस्मिन्भागेसंस्थितापापखेटा,स्तद्भागस्थानाभाग्यान्विदेशाः।
वेधस्थानं पीड़यन्तीह नूनं, तत्रस्था वै सत्फलं दद्युरिष्टाः ॥

अखिल ब्रह्माण्ड में जगत्पिता की अलौकिक शक्ति का परिज्ञान करानेवाले जो अनन्त कोटी तारे आकाशमण्डल में हमको दीखते हैं, उनमें जिन तारों (ग्रहों) का हमारी पृथ्वी से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। उन्हीं की उच्च नीच स्थानादि स्थिति एवं वक्रमार्गादि, अष्टधा गतिओं के भ्रमणवशात् इस पृथ्वी के राष्ट्रों में सुभिक्ष दुर्भिक्ष कभी युद्धविग्रह वा रोग महामारी भय फूट परस्पर विद्वेष कभी शान्त कभी अशान्त वातावरण आदि अचिन्तित अकल्पित परिवर्तन सदैव हुआ करते हैं यह बात ज्योतिःशास्त्रज्ञ भली प्रकार जानते हैं।

(ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावरा: सृष्टिरक्षणसंहारा: सर्वे चापि ग्रहानुगा:) जिस तरह इस भूमण्डलपरलोकतन्त्र राज्य का शासन करने के लिए शासन मण्डल में प्रधान मंत्री आदि कौंसिल के अधिकारियों की मत प्रदान (चुनाव) के अनन्तर तीन या पाँच वर्ष के लिए नियुक्ति होती है और उन अधिकार प्राप्त व्यक्तियों की योग्यता अयोग्यता सच्चरित्रता दुश्चरित्रता नि:स्वार्थता एवं स्वार्थपरायणताआदि गुणावगुणोंकेअनुसार जैसे शासनयन्त्रपर अच्छा बुरा असर पड़ता है उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में प्रतिवर्ष संसारचक्र को चलानेके लिए एक दिव्य एवं अद्भुत शक्ति मति आकाशीय-कौंसिल का निर्माण होता है। इस आकाशीय-कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उल्ट फेर तथा अघटित घटनाएं घटित होती हैं वह त्रिकालज्ञ महर्षियों, के निर्मित ज्योतिर्विज्ञान के ग्रन्थों के आधार से अच्छी तरह जानी जा सकेनी हैं। अब हम इस वर्ष आकाशी कौंसिल का धार्मिक सामाजिक तथा राजकीय स्थिति पर जैसा भी शुभाशुभ प्रभाव पड़ेगा वह अपनी तुच्छ मति के अनुसार और प्रभुकृपावशात् जो स्फुरित हो रहा है लिख रहे हैं। इस वर्ष आकाशी कौंसिल (ग्रहपरिषद्) के राजामन्त्री आदि दशाधिकारियों तथा आर्षविचारपूर्वक भारत एवं अन्य राष्ट्रों के वर्षवर्षेशादि लग्नों और शकुनशास्त्र व सूक्ष्म ग्रहयोगों को ध्यान में रखते हुए तथा राष्ट्रनायकों की दशावर्ष प्रवेश आदि अनेक प्रकार की ऊहापोह के अनन्तर ज्ञात होता है कि यह वर्ष भारतीयों को चोर शत्रु खून खराबी अग्नि काण्ड आदि के उपद्रव तथा कहीं २ अराजकता के बीज अंकुरित होने से चिन्तित और पीड़ित करेगा। अन्न की समस्या अभी वैसी ही रहेगी। बंगाल आदि में तो जनता अन्नकष्ट से पीड़ित ही रहेगी राजा प्रजा दोनों की आर्थिक स्थिति चिन्ता जनक रहेगी। विश्व में कहीं प्रकृति के कोप से तथा कहीं देशद्रोही स्वार्थियों के स्वार्थमय हथकण्डों के कारण राज्यसत्ता व देशहित को हानि पहुंचेगी। भारतराज्य सत्ता के विरोधी लोग कहीं मजदूरों की मांगें बढ़ाकर हड़तालादि करायेंगे। तथा कहीं व्यापारी वर्ग की तर्फ से सरकारी नियन्त्रण भंग होगा और इनके दिलों में सरकारी प्रतिष्ठा कम होगी। इस वर्ष संसार के प्राय: सब राष्ट्रों के प्रधान परस्पर शङ्कित हृदय रहेंगे और विरोधी पक्षों में परस्पर आन्तरिक गुटबन्दी होगी। गुरुगतिवशात् कहीं युद्ध से जनसंहार हो और कोई नेता जनता का कोपभाजन बने। प्रजा अपने पर करों का भार बढ़ता हुआ देख कर भारी कष्ट का अनुभव करेगी। जनता द्वारा किसी राज्य सत्ताधारी की नीति का कड़ा विरोध होगा। १३ जून के आसन्न भारत के पड़ौसी देशों में शत्रु दौड़-धूप करेंगे। भारत भी यहां समयोचित नीति का वर्ताव करेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में उत्तर पूर्वीय प्रदेशों में कम्युनिष्ट नीति से हिंसात्मक उपद्रव तथा गृह युद्ध भी हो। भारत में साम्यवाद अपना वर्तमान रूप खोकर ही नवीन रूप में शनै-शनै: सामने आवेगा। इस वर्ष मध्यमवर्ग की जनता मानसिक व आर्थिक दु:ख का पूरा अनुभव करेगी।

धार्मिक संस्थाओं के विषय में निर्धारित सरकारी नीति से जनता में घोर असन्तोष होवे। जनसमूह की कोई नई पार्टी धार्मिकता के आश्रय से अपना संगठन करेगी। वर्षांग में शनि उच्च का होकर पराक्रम स्थान में पड़ा है अत: इस वर्ष औद्योगिक दृष्टि से भारत में अच्छी उन्नति होगी। नूतन लौह प्रधान अनेक कारखानों की स्थापना होगी।

तुला का शनि बढ़ती हुई बेकारी को कुछ रोकेगा। और स्व० भारत की वर्ष कुण्डली में मंगलनीच होकर नवम पड़ा है सो कंट्रोल ढीले होंगे। इसी कुंडली में गुरुग्रह पंचमेश

... भली प्रकार जानते हैं।

होकर केन्द्र में पड़े हैं जो देव वाणी संस्कृत की उन्नति के सूचक हैं राज्य... का ध्यान इस विद्या की ओर भी होगा नूतन महाविद्यालय विश्व विद्यालयादिशिक्षा संस्थाओं की वृद्धि की योजना बनेगी जो शीघ्रही कार्य रूप में सामने आवेगी कर्क के गुरु तक बहुत कुछ ठीक हो जायगा। इस वर्ष किसी भारतीय व्यक्ति को दूर विदेश में उच्च पदवी का सम्मान मिले। आश्विन शु. १२ बाद या फाल्गुण कृ० १ के अनन्तर तीस ३० दिन में किसी उच्चात्मा प्रसिद्ध जनप्रिय व्यक्ति की मृत्यु होवे। माघ के अनन्तर अथवा सं० २०११ वि० के मध्य में अन्यराष्ट्रों द्वारा दबाए हुए भारतीय प्रदेश अन्तर्राष्ट्रिय राजनीति से भारत में मिलेंगे जनमत से नहीं।

भारत सरकार—इस वर्ष भारत सरकार पूर्णरूपेण स्वावलम्बी होने का उत्तरोत्तर घोर प्रयत्न करती रहेगी। और प्रजा के लिए भी सर्व सुख प्राप्त्यर्थ अनेक सफल प्रयत्न करेगी। विदेशों में भारत सरकार का महत्व बढ़े। इस वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रधान राज सत्ता धारियों को गम्भीर चिन्ताप्रद रहेगा। क्योंकि स्वतन्त्रभारत की वर्ष प्रवेश कुण्डली में लग्नेश मगलनीच का और चन्द्रत्रिक में है। अत: प्रजा में असन्तोष, पड़ौसी देश की प्रवृत्ति तथा अन्तर्राष्ट्रिय परिस्थिति एवं भारत के उच्चव्यक्तियों में परस्पर मत भेदादि वशात देश में नई नई समस्याए उत्पन्न होंगी। वित्त मन्त्रियों के सुझाव से कई कल्पित योजनाएं अभी छोड़ देनी पड़ेंगी। वर्ष में चन्द्र स्थिति वश शासकों की बुद्धि बहुमत प्रजा की भावना के विपरीत रहेगी। प्रधान सत्ता अन्याय भ्रष्टाचार निर्मूल करने में दत्तचित्त रहे। फिर भी शनिचन्द्र के कारण अभी अन्याय व भ्रष्टाचार सर्वथा निर्मूल न होगा। स्वतन्त्र भारत के जन्मांग में धनेश के त्रिकस्थ होने के कारण भारत सरकार को आर्थिक संकट तो अभी बना ही रहेगा। परन्तु इस देश के अभ्युत्थान के लिए सवत के वर्ष लग्न में नवमस्थ गुरु के कारण कार्तिक के अनन्तर अन्य राष्ट्र की सहायता से परस्पर लाभ उठाने की और भी कई सफल योजनाए बनेंगी।

वर्षारंभ (मार्च अप्रेल मई) में ही आर्थिक बिकास—योजनाओं के विषय में अनेक रोड़े अटकते देख मुख्य व्यक्तियों में कुछ मतभेद हो जायगा। तदनन्तर शीघ्र ही कोई नया परस्पर समझौता होकर उन सब विघ्न बाधाओं के होते हुए भी योजनाओं को सफल बनाने का भगीरथ प्रयत्न चलता रहेगा। पैप्सराज मण्डल की शपथ ग्रहण-कुण्डली के प्रभाव से वहां स्वार्थ परता व आन्तरिक षडयन्त्र के कारण प्रधान मण्डल यशस्वी न रहेगा। इसके शासन में इस वर्ष केन्द्रीय सरकार का ध्यान तथा हस्तक्षेप होवे। ऐसा ज्ञात होता है। राजस्थान की सरकार का शासन ढीला रहे। भारत सरकार को नेपाल सरकार की फिर मदद करनी पड़ेगी।

भारत की वर्ष कुण्डली में मं.चं सू. की परिस्थिति ठीक नहीं अत: इस वर्ष भारत के साथ कोई न भूलने वाला अन्याय या आन्तरिक गड़बड उपद्रव भी हो, जिसे सरकार द्वारा सख्ती से दबाया जाय। पूर्वीय पश्चिमी प्रदेशों में परस्पर बहुत मतभेद बढ़ जायगा। कहीं मन्त्रि मण्डलों में अकस्मात हेर-फेर होगा। गुप्तचरों पर आपत्तियां आवें। भाद्रपद के आसन्न वैज्ञानिकों को अपने आश्चर्यजनक नवीन आविष्कारों का परिणाम प्रत्यक्ष अनुभव में आएगा। तथा इसी समय राष्ट्रप्रमुखों की गुप्त मन्त्रणा भी होगी। कहीं विभिन्न जातियों के संघर्ष में वहां की सरकार को झुकना पड़ेगा। आषाढ़ के आसन्न कोई सरकारी बड़ी उलझन सुलझने से खुशी हो।

कांग्रेस—इस वर्ष कांग्रेस की वर्ष कुण्डली से ज्ञात होता है कि जनता में कांग्रेस विरोधी

तत्व उत्पन्न होंगे। मजदूर दल के अतिरिक्त विरोधी [illegible] आक्षेप करेंगी। कांग्रेस कार्य क्रम की कल्पनाएं तो बहुत करेगी, परन्तु सामाजिक क्षेत्रों के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में इसे सफलता कम मिलेगी। रचनात्मक कार्य क्रम के समय विरोधी पार्टियों के सम्मानित व्यक्ति व नेता भी इसके साथ मिलकर कार्य करेंगे। अन्त में उनका विरोध भी शनैः २ शान्त हो जायगा। कांग्रेस के कुछ नियम ढीले होंगे। और मजदूर दल की ओर से यश प्राप्त होगा। अगस्त मास की ग्रह स्थिति कांग्रेस में परस्पर मत भेदादि विशेष उथल-पुथल करा के नई नई विचार धाराएं उत्पन्न करेगी। यहां कांग्रेस के अस्तित्व का भी भय हो।

काश्मीर—इस वर्ष ग्रहगति के प्रभाव से वर्ष के पूर्वार्द्ध में ही काश्मीर एवं उसके समीपवर्त्तिजनपदों में भय चिन्ता उद्वेग बढ़कर आतङ्कपूर्ण स्थिति उत्पन्न होगी। जिसके कारण भारत को भी शान्त्यर्थ शस्त्रमय संघर्ष के लिए सुसज्जित होना पड़ेगा। भारत की राज सत्ता के प्रभाव से वहां की जनता को शीघ्र ही शान्ति प्राप्त होगी। और दुष्ट आक्रान्ताओं को मुंह की खानी पड़ेगी। गुरु शुक्र की युति के बाद आषाढ़ के आसन्न या तुला राशिस्थ शनि मंगल की युति के बाद या वर्ष के उत्तरार्द्ध में काश्मीरी संघर्ष का परिणाम इस वर्ष अवश्य प्रत्यक्ष हो जायगा। पर इस परिणाम से पाक तथा भारत दोनों में से कोई भी सन्तुष्ट न होगा। परस्पर की विद्वेषाग्नि कुछ काल के लिए भस्म में दबी हुई अग्नि के सदृश तो हो जायगी, परन्तु पूर्णतया शान्त न होगी।

पाकिस्तान—इस वर्ष यहां राजकीय मण्डल में परस्पर आन्तरिक विवाद तू तू मैं मैं होवे। किसी बड़े पदाधिकारी को अपने पद से त्याग पत्र देने पर मजबूर होना पड़े। या अपघात हो। कानूनों में रद्दोबदल हो। नए कानूनों को प्रचलित करने में बाधा हो। जत्थेबन्दी में रुकावटें हों। लूटपाट खून खराबी की वारदातें अधिक हों। देश की आर्थिक स्थिति कमजोर हो, पूर्वी पाकिस्तान में अल्प संख्यकों को हानि। वर्ष के पूर्वार्द्ध में भारत से अनबन युद्ध संघर्ष से हानि पहुंचे। किसी प्रधान व्यक्ति को विश्वासघात का भय हो। मजदूर वर्ग में असन्तोष फैले, हड़तालें हों। उपद्रवियों द्वारा कुछ तोड़फोड़ भी हो। अमरीका से कुछ आन्तरिक वैमनस्य हो। किसी प्रकार की मशीनरी में विस्फोटक द्रव्य से अकस्मात हानि हो। पठानों से विरोध आगे और बढ़े। विद्यार्थीगण को सन्ताप और रुपये के मूल्य में परिवर्तन हो। क्रूरग्रह वेधवशात् अफगानिस्तान में भी इस वर्ष भय चिन्ता होगी।

इंग्लैण्ड—इस वर्ष यहां की आर्थिक स्थिति खराब रहेगी यहां के महत्वाकांक्षी साम्राज्यवादियों की चालें निरर्थक सिद्ध होंगी, किसी उच्च पदाधिकारी की मृत्यु या उसकी शारीरिक मानसिक असमर्थता के कारण प्रधानमंडल का एक स्थान खाली होगा। उस रिक्त स्थान पर किसी विशिष्ट व्यक्ति का पदारोपण होगा। इस देशको गुप्त शत्रुभय रहे। बिजली से हानि हो मजदूरवर्ग का प्रभाव बढ़े। किसी कारण यहां के प्रधान अमरीकापर दोषारोपण करेंगे।

फ्रान्स—इस देश में इस वर्ष मजदूर वर्ग असन्तोष में रहेगा। और साम्यवाद की भावना शनैः २ प्रवेश करेगी। किसी समीपवर्ति राष्ट्र के साथ मतभेद हो।

जर्मनी—यह वर्ष जर्मनी के लिए उन्नतिकारक है। विरोधी देश भी मदद करेंगे। उन्नति की योजनायें बनाने के लिए दृढ़ नियम बनेंगे। इस देश के किसी भाग में सैनिक हलचल और प्रजा में भय हो।

अमरिका—इस वर्ष किसी रोग के कारण मृत्युसंख्या में वृद्धि हो। राष्ट्रिय खर्च का [illegible] चिन्ता और अशान्त वातावरण बराबर बना रहे। शस्त्रोत्पादन में वृद्धि हो। शस्त्रागार में दुर्घटना से हानि होने का योग भी है। आश्विन के आसन्न रूस से किसी बात पर समझौता हो जिससे ब्रिटेन में कुछ निराशा हो।

रशिया—इस वर्ष एतद्देशीय सर्वोपरि प्रधान के विचारों में कुछ परिवर्तन आवेगा। और इनकी नीति से लोकप्रियता बढ़ेगी। कृषि विभाग में उत्पादन गतवर्ष की अपेक्षा कम रहे। यहां के कर्ताधर्ताओं के मनमें शत्रु की ओर से आन्तरिक भय विशेष हो। सामुद्रिक शक्ति बढ़ाने में दत्तचित्त रहे। चीन से नवीन समझौता लाभप्रद रहेगा।

जापान—इस वर्ष इस देशका सैनिक व्यय बढ़े। प्रकृति कोप से कहीं हानि हो। विदेशों से सम्बन्ध स्थापना फिर से प्रारम्भ हो। सम्राट् जापान की मानवृद्धि हो। देशकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो। वर्ष का पूर्वार्द्ध कुछ अशान्त वातावरण उत्पन्न करेगा। केवल कुछ रहस्यमयी बातों के कारण अभी इस देशपर कुछ नियन्त्रण रहेगा। जनता में कम्यूनिष्ट प्रभाव यहां दूसरे दरजे पर हो जायगा।

ब्रह्मा—इस वर्ष इस देश के प्रधान को लम्बी यात्रा का योग है। देश में व्ययाधिक्य से ऋण बढ़े। प्रजा में अव्यवस्थासी तथा बेचैनी रहे। राज्यसत्ता विरोधियों के संगठन से देश में चिन्ता का वातावरण रहे। राज्यद्रोही उपद्रवियों को दबाने का प्रयत्न भी जोर से हो। किसी खनिजपदार्थ की खोज से देशको लाभ पहुंचे।

चीन—सैनिकों की हानि हो, शत्रुओं का सामना करना पड़े। देश की एक चिन्ता निवृत्ति होते ही दूसरी चिन्ता खड़ी हो जावे। समीपवर्तिराष्ट्र से सम्बन्ध बिगड़े। खेती की फसल अच्छी रहे। खनिज पदार्थों का निकास उत्तम। वर्ष के पूर्वार्द्ध में विग्रह की स्थिति जापान से कुछ कटुता बढ़ेगी।

भारत की वर्षा वायु आदि—इस वर्ष प्रायः अनियमित और असामयिक वर्षा होगी। क्योंकि ग्रहगति कई प्रदेशों के लिये अनुकूल न बैठेगी। इसलिये कई प्रान्तों में नहर कूप नूतन बोरिंग तालाब आदि से जलसाधनों की आवश्यकता पड़ेगी। राजस्थान व दक्षिण भारत में वर्षा की तंगी रहेगी। और फसल को हानि पहुचेगी। गर्मी का खासा जोर चैत्र शुदि से ही होना प्रारम्भ होजायगा। वैशाख मास में दक्षिण भारत में कुछ वृष्टि होगी, बाद में वहां भी भयंकर गर्मी होगी। द्वितीय वैशाख के प्रारंभ से ही सर्वत्र विशेष गर्मी होगी। फिर भी गतवर्ष की अपेक्षा तापमान कम रहेगा। प्रथम वैशाख शुदि में कहीं २ वर्षा हो तथा कहीं २ ओले भी गिरे। द्वि० वैशाख शु. १२ से ही कहीं २ अच्छी वर्षा होगी, परन्तु यह वर्षा जहां २ होगी, वहां आगे की वर्षा में कई दिन तक रुकावट पैदा करेगी। आ. कृ. ९ से श्रा० कृ. ८ तक वृष्टि अच्छी होगी। विशेषकर आषाढ़ शु० १० से १४ तक तथा श्रावण शुदि में भी ति० १० से वर्षा श्रेष्ठ होगी। श्रावण शु० १२ से एक मास के अन्दर मध्यम वृष्टि या खण्ड वृष्टि के योग है। यहाँ पर्वतासन्न प्रान्तों के दूर कुछ जंगलादि देशों में वर्षा की भारी कमी का अनुभव होगा प्रजा में कष्ट हो। भाद्रपद शु० के पक्षान्त में वर्षा बहुत जगह श्राद्धान्त में कहीं २ होकर कृषकों को प्रसन्न करेगी। कार्तिक शुदि में कहीं २ मेघों की गड़गड़ाहट बूंदाबादी हो तथा पक्षान्त में प्रचण्ड वायु के तूफान से भारी हानि हो, वृक्ष टूटे, मकानों के छप्पर उड़े। पौष शु० व माघ कृ० में कहीं २ उपलवृष्टि ओले पड़े। वैशाख में तूफानों से कृषकों के खलिहानों को हानियाँ पहुंचे। आषाढ़ श्रावण में किसी रेडियो स्टेशन के यन्त्र को प्रकृति द्वारा बाधा पहुंचेगी।

भारत का वाणिज्य व्यवसाय—इस वर्ष व्यापारिक स्थिति पूर्णरूप [illegible] सुधरने की

हलचल और प्रजा में भय हो।

अमरिका—इस वर्ष किसी रोग के कारण मनुष्यमन्त्र ...

... इस वर्ष व्यापारिक स्थिति पूर्णरूप ... सुवर्ण का

आशा नही क्योंकि व्यापारेश बुध वर्षलग्न में सूर्य से पीड़ित होकर त्रिक में पड़ा है जो व्यापार में कुछ नयी अचिन्तित घटनाओं से वा विरुद्ध राजकीय वातावरण से फिर व्यापारी जनों को एक बार उत्साह हीन सा करेंगे। परन्तु गुरु भौम की स्थिति तुम्हें उठाये बिना न रहेगी। बड़े व्यापारियों का विदेशों से व्यापार अच्छा चलेगा। छोटे व्यापारी भी वर्ष के मध्य में गतवर्ष की अपेक्षा अच्छा लाभ उठा लेंगे। भा० कृ० ६ से आश्विन शु. ९ के अंदर व्यापारिक क्षेत्र में भारी घटाबढ़ी चलेगी। ज्ये. कृ० ३० के करीब जौ, मूंगी वस्त्रों के स्टाक से सातमास में लाभ उत्तम हो। वर्षारंभ से ही गेहूं उड़द, चावल तेज रहेंगे, खासकर दक्षिण भारत राजपूताना में, इस वर्ष चने के स्टाकिष्ट कमा लेंगे विशेषकर श्रावण में। गेहूं की फसल वर्षारम्भ में निकलती ही कुछ तेजी में रहेगी। द्वि० वैशाख शुक्ल से कुछ सस्ती होगी। श्रावण में भी अन्न तेज होकर बाद में मन्दा गिरे। भाद्रपद शुदि में फिर तेजी रहेगी। चित्राका शनि धान्योत्पत्ति बाद कहीं अतिवृष्टि कहीं अनावृष्टि से धान्य का कुछ नाश करता है। ज्येष्ठ शु० ९ से एक मास तक अन्न तेज होकर फिर सस्ते का वातावरण बनेगा। का० शु० में तुला में शनि का उदय गेहूं में तेजी करता है। पौष कृ. ६ से १० दिन के अन्दर गवारा मटर में तेजी रहे।

रूई बिनौला—द्वि० वैशाखबदी १२ से ज्येष्ठ शु० ९ तक बिनौला में तेजी खासी आवेगी। चैत्र शु० ४ के बाद रूई में १ मास के अन्दर खासी तेजी रहेगी। वायदा पहले ही खरीदे, लाभ होगा। आषाढ़ शुदि से श्रा० कृ० ३० तक रूई में भारी मन्दी रहेगी ध्यान रखें। का० शु० में रूई मन्दी होगी व्यापारी सावधान। पौष कृ० में रूई खास तेज होकर बाद में पौष शुदि आने पर मन्दी भी उससे ज्यादा गिरेगी मन्दी में खरीदें, तेजी आतेही बेचें लाभ होगा।

सोना चान्दी—ज्येष्ठ मास में सोना चान्दी जवाहरात जरीमाल और कृषि के औजारों तथा मशीनरी व सीमेन्ट में भी तेजी रहेगी, ज्ये० शुदि प्रतिपदा या तीज को सोना चांदी ऊंचे भाव में बेचना और आषाढ़ कृ० ३० के करीब नीचे भाव में डबल खरीदना लाभप्रद रहेगा अच्छा नफा मिलते ही सौदा साफ कर दें। श्रा० शुक्ल ४ बाद चान्दी में मन्दी का ख्याल करके लाभ उठावें। आश्विन शु० ५ बाद सोना चान्दी तेज होकर बाद मन्दा चलेगा, भा० कृ० १३ से प्रायः प्रत्येक धातु तेज रहे। आ० शु० ४ बाद ऊनीवस्त्रों में तेजी आने का योग है उस तेजी से शीघ्र लाभ उठा लेना ठीक होगा। चैत्र शुदि में घी, तैल, तिल, सूत्र संग्रह करे, तो दो मास बाद लाभ होवे ऐसे ही फिर पौष से पहले घी, तेल तिल का स्टाक करने वालों को लाभ होवे। वैशाख शु० ८ से व्यापारिक क्षेत्र में तेजी का वातावरण बनेगा। इससे पहलेही घटे भाव की प्रायः प्रत्येक वस्तु खरीदने से लाभ होगा। आ. शु. ७ के अनन्तर व्यापारियों से सम्बन्धित कई बैंक मुसीबत में पड़ें। इस वर्ष की दीपमाला स्टाकिष्टों को भयप्रद है। गरीबों को शुभप्रद है।

आश्विन में पशु मंहगें हों। फाल्गुण में रेशमी सूत्र भारी तेज माघ शु. में सुगन्धित द्रव्य और भैंस खरीदने वालों को दूसरे या पांचवें मास लाभ होगा। इस वर्ष श्वेत रंग के पदार्थों की उत्पत्ति ज्यादा होगी। विदेशीय वस्तुओं के भाव घटेंगे।

सूचना—व्यापार में हानि उठाये हुए व्यापारियों को चाहिये कि अपनी परिस्थिति लिखकर हमसे पूछें कि हमारी हानि कैसे पूरी होगी उत्तरार्थ जवाबी लिफाफा भेजें।

युद्ध भय रोगोत्पात—इस वर्ष द्वि० वैशाख शु १० व ज्येष्ठ कृ० ५ के करीब (२६ मई व २ जून) किसी राष्ट्र के उग्रव्यक्ति की वाणी से व लेख से संसार में चिन्ता व्यापे। यदि द्वि. वैशाख शुदि १० से (२३ मई से १८ जून तक) ज्ये० शु. ७ तक शान्तिप्रिय व्यक्तियों के प्रयत्न सफल हुए, तो संसार का भय दूर होकर कुछ देर प्रजा में सुख का साम्राज्य होगा। वहां शान्ति के इच्छुक महापुरुष शान्ति का पूर्णप्रयत्न करेंगे। वह विश्व के कुछ भाग को छोड़कर अन्यत्र सर्वत्र सफल भी होंगे। क्योंकि शान्ति के बाधक योग अर्थात् एक वर्ष में गुरु के तीन राशि में स्पर्श होने से विश्व में शान्ति भंग होती है यदि इसके साथ भौम की स्थिति भी अशुभ हो तो। (प्रेतपूर्णा वसुंधरा) परन्तु यहां मंगल देवता की इच्छा कुछ और ही है। जो कहीं युद्ध की चिन्गारी के बाद शान्तिपूर्ण प्रयत्नों से सम्पूर्ण विश्व पर आने वाली आफत को इस समय टला देगी। ज्ये० कृ १३ (९ जू०) के अनन्तर उत्तर में भय प्रजा में करुण क्रन्दन हो। ज्ये. शु. १ (१२ जून) बाद पाकिस्तान थाईलेण्ड चीन में कहीं भय हो। कार्तिक से विशेषकर मार्ग शु० ३ से माघ कृ० १० के अंदर कहीं कोई उत्पात, युद्ध, या. युद्ध के प्रयत्न हों। इसी अरसे में वायु का जोर अग्निकांड की वारदातें हों। आषाढ़ कृ० ४ से श्रा० कृ० ३ तक तथा भाद्रपद कृ. ८ से आश्विन कृ १० तक भी कहीं युद्ध या किसी उत्पात की खबरें सुनने में आवें। इस वर्ष दैवी प्रकोप से किसी द्वीप (टापू) का नाश हो तथा प्रजा में ज्वर खांसी जुकाम की बीमारी व गले के रोग हों। चतुष्पदों में भी रोग से हानि और कहीं टिड्डी से फसलों को भय होगा। कई प्रदेशों में तृण जल की कमी से पशु तथा जंगली जीव मरें। बालकों में शीतला का प्रकोप हो। पौष माघ में शीत रोग से कष्ट मृत्यु तथा जहाजों का नाश हो। जहाजों की हानि विशेषकर मई मास में होगी। तुला का शनि बंगाल में विग्रह प्रजापीड़ा रोगभय करेगा। वायु के तूफानों से महाभय देगा। वैशाख ज्येष्ठ में अग्नि लगने तथा कारखानों में बिजली से हानि होगी।

आषाढ़ शु. ३ को शुक्र रोहिणी शकट को भेद करेगा जिसके फल से विश्व में इस वर्ष कहीं मनुष्यों की खोपड़ियों के इधर उधर बिखरने का भयानक दृश्य उपस्थित होगा। बृहत्संहिता में लिखा है कि—"प्राजापत्ये शकटे भिन्ने कृत्वेव पातकं वसुधा। केशास्थि शकलशबला कापालमिव व्रतं धत्ते॥"

शान्त्यर्थं चण्डी महायज्ञ एवं प्रत्येक पर्व में अखंड प्रभुकीर्तन होना चाहिये। आषाढ़ श्रावण में आकाशीय बिजली गिरने से बहुत जगह हानि होने के योग हैं।

प्रथम वैशाख शुक्ल या द्वि. वै. कृ. में कोई राजकीय घटना से वा नृपों के विग्रह से जनता में आश्चर्य वा भय उत्पन्न हो तथा व्याधिकारी भय हो। आषाढ़ शु० ८ से भाद्र. कृ० १२ तक यात्रा में भय रेलमोटरादि की दुर्घटनायें होंगी। दूर विदेश की यात्रा के लिए तो यह वर्ष भारी भयप्रद है। इस वर्ष राजस्थान व दक्षिण भारत में बहुधा उपद्रव हों। १७ अप्रैल से ३ मई तक (प्रथम वैशाख शु. ४ से द्वि० वैशाख कृष्ण ८ तक) विश्व में कहीं विस्फोटक द्रव्य तथा धूम्र से हानि हो। वैशाख तथा आश्विन में स्त्रियों तथा घोड़े घोड़ियों को बहुधा रोग कष्ट हों। दक्षिण भारत में सर्पों से भय विशेष हो।

महोदयो! ज्योतिः शास्त्र दृष्टया और श्री प्रभु कृपावशात जो मुझे विश्व का शुभाशुभ फल दीख पड़ा वह अपनी अल्पमति के अनुसार लिख दिया है। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ श्री प्रभुही हैं। उनकी प्रबल माया के सन्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ व्यक्ति क्या भविष्य लिख सकते हैं। तत्वं वाग्देश्वरो वेत्ति नाहं वेधि कदाचन।

शुभेच्छु:—श्रीवघाटनरेशाश्रितो मुकुन्दवल्लभ: कुराली २४।४।५२

प्रयागराज कुम्भमहापर्व

मकरे च दिवानाथे वृषराशिस्थिते गुरौ प्रयागे कुम्भयोगो वै माघमासे विधुक्षये ॥

धर्म ग्रन्थों में लिखा है, कि—जब समुद्र का मन्थन हुआ और उसके भीतर से अमृत से भरा हुआ कुम्भ लेकर धन्वन्तरि भगवान् प्रकट हुए, तब उस समय देवताओं के इशारे से इन्द्र का बेटा जयन्त उस घड़े को लेकर चल दिया। जब राक्षसों ने देखा, कि अमृत का घड़ा तो देवता का पुत्र ले जा रहा है, तब वह उसके पीछे दौड़े, इसपर देवताओं और दैत्यों में भारी युद्ध हुआ। बारह दिन रात तक बराबर युद्ध होता रहा। इसी बीच अमृत के घड़े को सुरक्षित रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। तब यह कुम्भ प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और गोदावरी इन चार स्थानों पर गुप्त रक्खा गया: इसीलिए इन्हीं स्थानों पर कुम्भ पर्व मनाया जाता है। इस कुम्भ को फूटने से सूर्य भगवान् ने बचाया, और इसकी रक्षा गुरुदेव ने की। अत: इन दोनों ग्रहों के योग से ही कुम्भ का पर्व होता है: मकर राशि में जब सूर्य देव और गुरुदेव वृष राशि में हों तब प्रयागराज में कुम्भ होता है। वर्तमान कुम्भ प्रयागराज में आया है और यह पर्व विक्रम संवत् २०१० माघ कृ. ३० बुधवार (३ फरवरी १९५४) को होगा। इस महापर्व में प्रयाग त्रिवेणी स्नान का शास्त्रों में बड़ा माहात्म्य बतलाया है—

> सूर्यग्रहे कुरुक्षेत्रे कार्तिक्याञ्च त्रिपुष्करे ।
> माघमासे प्रयागे च य: स्नायात्सोऽति पुण्यवान् ॥

अर्थ स्पष्ट है—इस शास्त्रीय वाक्य के अनुसार प्रयाग में प्रत्येक वर्षीय माघ स्नान जब अति पुण्यजनक है तब माघमासीय कुम्भ महापर्व के स्नान का माहात्म्य स्वत: एवं अनुपम तथा अनिर्वचनीय है। यह वही तीर्थराज है जिसके त्रिवेणी तट पर बड़े बड़े महर्षि और राजर्षि पूर्ण ब्रह्म पद पाने के लिए सैकड़ों वर्ष समाधि लगाते थे। आशा है कि धर्मप्राण सज्जन अधिक संख्या में वहां पधारकर स्नानादि से महापुण्योपार्जन करेंगे।

ग्रहण निर्णय

ज्योतिषे ग्रहणं सारं गारुडे विषभक्षणम् । शैवे षटवती दीक्षा कौलके ग्रहनिग्रहौ ॥

सं० २०१० विक्रमी में इस भूमण्डल पर ४ ग्रहण होंगे जिसमें २ सूर्य के और २ चन्द्रमा के जिनका संक्षेप में विवरण निम्नलिखित है—

(१) ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण—आषाढ़ शु. १५ रविवार (ता० २६ जुलाई १९५३ ई०) को होगा यह सर्वग्रास ग्रहण है परन्तु सम्पूर्ण भारत ब्रह्मा मलाया चीन में ग्रस्तोदय अर्थात ग्रहण स्पर्शानन्तर चन्द्रोदय होगा। भारत में कहीं भी इस ग्रहण का स्पर्श होता हुआ नहीं दीखेगा। श्री जगन्नाथपुरी, त्रिचनापल्ली गया, पटना, और कलकत्ता के आसन्न स्थानों में सर्वग्रास होकर चन्द्रमा उदय होगा और वहां मोक्षपर्यन्त ग्रहण दीखता रहेगा। गढ़वाल, हरद्वार, लखनऊ, देहली बनारस झांसी ग्वालियर नागपुर, हैद्राबाद दक्षिण, बैंगलौर आदि तथा पूर्वी पंजाब पेप्सू में उन्मीलन अर्थात् चन्द्र की उपरली कोर दीखने पर उदय होगा और मोक्षपर्यन्त दीखता रहेगा। [illegible] देश के [illegible] स्थान में नहीं दीखेगा।

[illegible]

काल	स्पर्श दिन में	संमीलन	मध्य	उन्मीलन	सूर्यास्त बाद मोक्ष
घं	४	५	५	६	७
मि०	१	१	५३	४०	३८

पंजाब में ग्रस्तोदय समय ग्रहणाकृति
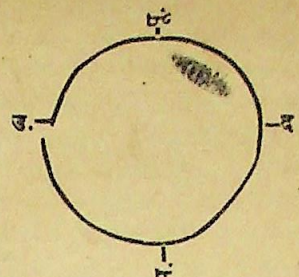
ग्रहणफल—यह ग्रहण उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मकर राशि में होगा अत: उ. षा. नक्षत्र मकर राशि वालों का यहां अशुभ है, मिथुन तुला कुम्भ राशि का भी भयशोकादि अशुभ फल कारक है। सिंह, वृष, धनु मीन राशि वालों का मध्यम, और मेष कन्या वृश्चिक राशिवालों को शुभ फलकारक है। अशुभफल वाले ग्रहण न देखें दान करें। इस ग्रहण के प्रभाव से पूंजीपति और मजदूरों में संघर्ष होगा रूस और यूरोपीय देशों में हानि होगी।

(२) सर्वग्रास ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण—पौष शु. १५ भौमवार (ता० १९ जनवरी सन् १९५४ ई.) को सूर्योदय से पहिले (सुबह) अर्थात् सोमवार मंगलवार की मध्य वाली रात को स्पर्श होकर पूर्णिमा मंगलवार को दिन में मोक्ष होगा। भारत में यह ग्रहण लगा हुवा ही अस्त हो जावगा, और मोक्ष नहीं दिखाई देगा। ग्रस्तास्त होने के कारण बाल, वृद्ध, रोगी, असमर्थ-पुरुषों को छोड़कर अन्य धार्मिक साधु-पुरुषों को उपवास करना चाहिये, एवं शाम को चन्द्र का शुद्ध बिम्ब देखकर भोजन करें। पुत्रवान् गृहस्थी उपवास न करें॥

ग्रहणफल—यह ग्रहण पुष्य नक्षत्र एवं कर्कराशि में होगा। अत: पुष्य नक्षत्र एवं कर्कराशि वालों के लिये महा अशुभ है। सिंह, वृश्चिक, धनु, मकर, मीन, मेष, मिथुन राशि वालों को यह ग्रहण अशुभ है। अन्य राशिवालों के लिये शुभ है।

स्पर्शादि काल अर्द्धरात्रोत्तर				
काल	स्पर्श प्रात:	मध्य	मोक्ष दिनमें	सर्व
घं.	६	८	९	३
मि.	२६	६	४५	१९

ग्रहण मध्यकाले ग्रासस्वरूपम्
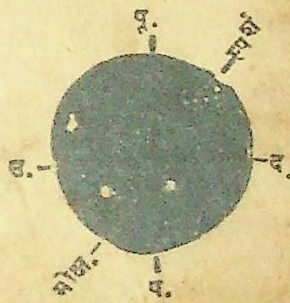
दृश्यग्रहणे कृत्यम्—ग्रहण के स्पर्श होने पर स्नान करके जपादि कर, मध्य में हवन, मध्य के बाद दान जप और मोक्ष के बाद पुन: स्नान करना चाहिये।

(३) खण्डग्रास सूर्यग्रहण—श्रावण कृ. ३० रविवार (ता. ९ अगस्त १९५३ ई०) को होगा. यह ग्रहण दक्षिण अमेरिका में दीखेगा भारत में नहीं।

संवत् २०१० शकः १८७५ चैत्रशुक्लपक्षः १

(१६मार्चसे३०मार्च१९५३ई. उत्त सा.मेषा. उ. गो. ग्र. द.—मं. गु. शु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और शनि वसन्तर्तु पूर्व में दीखेगा। ति. १० से बुध पूर्व में उदित होगा।

ति.घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	बं.	मु.	चन्द्रचारः	सू.उ.		सू.अ.		निरयणसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२९	४०	१	चं.	१९	७	उभा.	२८	१०	शु ग	३२	१५	व.	१९	७	४	१६	२९	मीने	६	१८	६	२९	११	२	२	१०
२९	४५	२	मं.	१३	४५	रे.	२५	२०	ब्र.	२५	३	कौ.	१३	४५	५	१७	१	मे २५।२०	६	१७	६	३०	११	३	१	१३
२९	५०	३	बु.	८	५१	अ.	२२	२६	ऐं.	१८	२२	.	८	५१	६	१८	२	मेषे	६	३५	६	३०	११	४	१	३४
२९	५५	४	गु.	४	४९	भ.	२०	२६	वै.	१२	२०	बि.	४	४९	७	१९	३	वृ.३५।८	६	१५	६	११	११	५	१	१४
३०	००	५	शु.	१	३८	कृ.	१९	१४	वि.	७	१	वा.	१	३८	८	२०	४	वृषे	६	३३	६	१२	११	६	०	५२
अ	वम्	६	शु.	५७	५५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	.	७	श.	५८	३९	रो.	१९	१२	प्री	५९	३७	ग.	२९	६	९	२१	५	मि ४९।४५	६	११	६	३२	११	७	०	२७
३०	९	८	र.	५९	३	मृ.	२०	१९	सौ.	५६	४१	वि	२८	५१	१०	२२	६	मिथुने	६	१०	६	३३	११	७	५९	५९
३०	१४	९	चं.	६०	००	आ.	२२	४६	शो.	५५	१६	बा	२०	५६	११	२३	७	मिथुने	६	३०	६	३४	११	८	५९	२९
३०	१८	९	मं.	०	५०	पुन.	२६	२८	अ.	५४	४	कौ.	०	५०	१२	२४	८	क.२०।३३	६	२९	६	३५	११	९	५८	५६
३०	२३	१०	बु.	३	४०	पु.	३१	१५	सु.	५५	२	ग.	३	४०	१३	२५	९	कर्के	६	२७	६	३५	११	१०	५८	२१
३०	२८	११	गु.	७	४१	श्ले.	३६	५०	धृ.	५५	५९	वि.	७	४१	१४	२६	१	सि ३६।५९	६	२५	६	३७	११	११	५७	४८
३०	३२	१२	शु.	१२	२७	म.	४३	१९	शू.	५७	२१	बा.	१२	२७	१५	२७	११	सिंहे	६	२३	६	३७	११	१२	५७	७
३०	३७	१३	श.	१७	४२	पू.फा	४९	५५	गं.	५८	५३	तै.	१७	४२	१६	२८	१२	सिंहे	६	२२	६	३८	११	१३	५६	२३
३०	४२	१४	र.	२२	५९	उ.फा	५६	२०	वृ.	६०	००	व.	२२	५९	१७	२९	१३	क.६।२१	६	२१	६	३९	११	१४	५५	३८
३०	४६	१५	चं.	२७	५१	ह.	६०	००	वृ.	०	११	ब.	२७	५१	१८	३०	१४	कन्यायाम्	६	२०	६	४०	११	१५	५४	५१

चन्द्र दर्शनम् । चान्द्रसंवत्सरारम्भ, नवरात्रा, घटस्था वर्ष §
उ भा. रविः १८।२२, रज्जब मु. ७. §फल श्र. निम्बपत्र भ.
भ. १५।५० उ.
भ. ४।४९ या., व. पू. भार्यां बुध ५३।५४,
सा. मेषेभानु ८।७, मेलामाईसरखाना
षष्ठिक्षय।
भ. ५८।३९ उ., अव. २ राहुः, पुष्य ४ केतुः २९।९
भ. ५८।५१ या., वक्री शुक्रः १८।०८, श्रीदुर्गा ८ मेलाश्रीमन†
व कुम्भे बुधः ५६।४२, श्रीराम ९ व्र. † सादेवी
कृत्ति. १ गुरुः ६ १६,
भ. ३५।४० उ., पूर्वोदयो बुधः ४८।५४,
भ. ७।४१ या.,
प्रदोष व्र.
श्रीजैन महावीर जयन्ती
भ. २२।५९ उ., ५५।२५ या., भरि. भौमः १२।२, सत्यव्र.
रेवत्यां रविः ४५।४५,

चैत्रशुक्लपक्ष ८ रवाविष्टम् ०।० दिवगणः ६५६१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	११	०	०	६	९	३
७	८	१	२६	८	२	१६	१६
५९	६	२३	१५	१६	३३	३७	३७
५९	५	५९	२१	४५	४३	५८	५८
५९	४४	४९	११	३	४	३	३
३३	४३	५१	२६	५	५६	११	११
कीर.	मा.	व	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा.	कृत्तिका	मृग.	भ.	कृत्तिका	चि	श्र.	पू.
२	३	४	२	३	३	२	४

१गु.म.शु.
११
१२
सू. बु.
१०
रा.
२
३ चं.
९
४के
६
८
५
७श

इस पक्ष में मूंग मोठ चना आदि अनाज में तेजी और सोना चान्दी तिल तेल के भाव में मन्दी आवे। उत्तर या पश्चिम में रोग होवे, और कहीं से जहाज डूबने का समाचार मिले। ति. १० से बिनौला और सरसों में तेजी आवे। व्यापारी जनता में किसी सरकारी कानून से विरोध पैदा हो। ति. २, ३, ४, १०, ११, १४, १५, को कहीं आकाश में बादल चाल और हवा के साथ बूंदाबांदी भी हो। श० वि०—यदि द्वितीया को चन्द्र श्याम रंग बादलोंसे ढका हुआ हो और अस्त समय फिर दृष्टिगोचर हो जाए तो घृतादि वस्तुकी कीमत बढ़े। चैत्रशुदि जो पंचमी दक्षिण पूर्व वायु, वर्षा भी होवे कुछ मादों

चैत्रशुक्ल १५ चन्द्र-विष्टम् ०।० दिवगणः ६५६९

१म.गु.शु.
११
११
सू.बु.
२
१०
रा.
३
९
४के.
६चं.
८
५
७श.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	१०	०	०	६	९	३
१५	१३	२७	२७	७	२	१६	१६
५४	५४	१	५०	१७	०	१२	१२
५१	३०	१८	४७	२	३६	३३	३२
५९	४१	१४	१२	१५	४	३	३
१३	२६	२७	११	४१	१८	११	११
मा.मीर.	मा	व.	मा	व.	व.	व.	व.
	उ	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रेवती	भ.	कृत्तिका	कृ	अ.	चि.	श्र.	प.
४	१	३	१	३	३	२	४

तेज विकाय। चैत्रशुदि जो त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान, आगे वर्षा हो नहीं ऐसा तो तुमं जान। चैत्र मास में दूध दही और मिष्टान्न स्वयं न खाकर ब्राह्मणदम्पतिको पूजा कर बारीक वस्त्र और मिठाई उनको देवे; यह व्रत कल्याण कारक है ॥ यदि कोई रामनवमी का व्रत न रखकर अन्य व्रत रखता है तो उसे उनका भी फल नहीं मिलता क्योंकि यह व्रत सर्वश्रेष्ठ है।

संवत् २०१० शका १८७५ प्र. वैशाखकृष्णपक्षः २

ति. घा.		ति. वा.		न. घ.	प.	न.	यो. घ.	प.	यो	क. घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. ता.	अं. ता.	मु. ता.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		मिश्रसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
१०	५०	१	मं.	३१	५८	ह.	२	९	ध्रु.	१	४	कौ.	३१	५८	१९	३१	१५	तु ३०।३८	६	१८	६	४०	११	१६	५४	४
२०	५४	२	बु.	३५	००	चि.	७	७	व्या.	१	१६	तै.	३	२९	२०	अ१	१६	तुलायाम्	६	१७	६	४१	११	१७	५३	१४
२०	५८	३	गु.	३६	५५	स्वा	११	०	ह	० ५८	३१ ५३	व.	५	५७	२१	२	१७	वृ.५८।०	६	१६	६	४१	११	१८	५२	२२
३१	३	४	शु.	३७	२७	वि	१३	४०	सि.	५६	१३	ब.	७	११	२२	३	१८	वृश्चिके	६	१५	६	४१	११	१९	५१	२८
३१	७	५	श.	३६	४१	अनु.	१५	२	व्य.	५२	३६	कौ.	७	४	२३	४	१९	वृश्चिके	६	१४	६	४२	११	२०	५०	३२
३१	१२	६	र.	३४	४२	ज्ये.	१५	११	व.	४८	३	ग.	५	४१	२४	५	२०	ध.१५।११	६	१३	६	४३	११	२१	४९	३३
३१	१६	७	चं.	३१	३९	मू.	१४	१६	प.	४२	३०	वि.	३	१०	२५	६	२१	धनुषि	६	१२	६	४३	११	२२	४८	३३
३१	२०	८	मं.	२७	४२	पू.षा	१२	१८	सि.	३६	३२	कौ.	२७	४२	२६	७	२२	म.२६।३६	६	१०	६	४३	११	२३	४७	२९
३१	२४	९	बु.	२२	५२	उ.षा	९	३२	स.	२९	४७	ग.	२२	५२	२७	८	२३	मकरे	६	९	६	४४	११	२४	४६	२३
३१	२८	१०	गु.	१७	२८	श्र.	६	६	सा.	२२	३२	वि.	१७	२८	२८	९	२४	कुं.३४।११	६	८	६	४४	११	२५	४५	१४
३१	३२	११	शु	११	४१	ध.	२ १८	२६ १०	शु.	१४	४८	बा.	११	४१	२९	१०	२५	कुम्भे	६	६	६	४४	११	२६	४४	३
३१	३६	१२	श.	५	४०	पू.भा	५३	१९	शु.	७ ५९	६ २४	तै.	५	४०	३०	११	२६	मी.४०।२	६	५	६	४५	११	२७	४२	४९
अ	वम	१३	श.	५३	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	४१	१४	र.	५३	४०	उ.भा	२०	००	ऐं.	५१	५९	वि.	२६	४४	३१	१२	२७	मीने	६	४	६	४६	११	२८	४१	३३
३१	४५	३०	चं.	४८	२०	रे.	४६	२५	वैं.	४४	४४	च.	२१	४	वैं.	१३	२८	मे.४६।२५	६	३	६	४७	११	२९	४०	१६

(३१ मार्च से १३ अप्रैल १९५३ ई.) उत्त. गो. वस.

प्र. द.–मं. गु. सूर्यास्त बाद पश्चिम में और शनिः पूर्व में दीखेगा। बु.सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा। शु. ति.१२ से पश्चिम में+

मार्गी बुधः १।२४, अप्रैल ४·ता० ३० + अस्त होगा।
भ. ५।५७ उ. २६।५५ या.,
†होता है। स्नान संकल्प-देशकालौ संकीर्त्य मम वाङ्मनः =
= कायजाशेषपापक्षयद्वारा श्रीमधुसूदन-देवताप्रीत्यर्थं वैशाख ÷
भ. ३४।४२ उ.
भ. ३।१० या.
÷ स्नानमहं करिष्ये।
भ. ५०।१० उ.
भ. १७।२८ या., कृत्ति. २ वृषे गुरुः २१।३५ पञ्चक प्रा. ३४।११
मीने बुधः २।११ वरू'थनि ११ व्र. स.
भ. ५९।३८ उ. पश्चिमास्तः शुक्रः १२।२२, |शु अ| शनि!
त्रयोदशीक्षयः ! प्रदोष व्र. ø पञ्च. स. ४६।२६
भ. २६।४४ या., ‡ सोमवती वैशाखीव. रेव. मीने शुक्रः ३३।५९.ø
सं. मषेऽर्कः २०।१२ मु. ३० पुण्यकाल घ. ५।१२ उ. मेलापंजोर‡

प्र. वैशाखकृष्ण ८ भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ६५७७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	०	१०	०	०	६	९	३
२१	१९	२८	२९	३	१	१५	१५
४७	४०	१४	२९	४७	२४	४७	४७
२९	१५	५३	५१	३७	१९	९	९
५८	४३	२५	१२	३०	४	३	३
२६	२	४६	३७	५७	३१	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ	उ	अ.	अ.
रे	भ.	पू.फा	कृ.	रोहि	चि.	श्र	पुष्य
३	२	३	१	२	३	२	४

१.म.गु.शु. | ११ बु. | १०रा. | २ | १२ सू. | ९ | ३ | चं. | ४के. | ६ | ८ | ५ | ७ श.

इस पक्ष में रुई तिल तेल अलसी सण और शेयरों के भाव में तेजी रहे। सोना चांदी उड़द काले रंग की वस्तुओं और लोहे के शेयरों में मन्दी होवे ति. २ से १०. तक गेहूं जौ चणा आदि अनाज में तेजी आवे। अलसी गुड़ बिनौले मूंगफली आदि में मन्दी आवे। ति. ११ से रुई में मन्दी, चान्दी और अनाज में तेजी आवे। किसी बिजली के कारखाने में दुर्घटना हो। बड़े २ बादशाहों की नीति में उलझन पैदा हो। ति. ४, ५, १३, १४, ३०, को बादल चाल का योग है। वैशाख वदी आठ दिना बिजली गर्जन होय। संवत् अच्छा जानिये संशय करो न कोय॥ वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत मान॥

प्र. वैशाखकृष्ण ३० चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगण ६५८१

१ मं शु. | ११ | १०रा | २गु. | १२सू बु.चं | ३ | ९ | ४के | ६ | ८ | ५ | ७ श.

सू	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
११	०	११	१	०	६	९	३
२९	२३	२	०	०	०	१५	१५
४०	५७	१३	४७	२१	५७	२८	२८
१६	२५	१९	२७	२४	३६	५	५
५८	४२	४८	१३	३६	४	३	३
४१	४४	१८	१२	४८	३७	११	११
	मा	मा	मा.	व	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रे	भ.	पू.फा	कृ	रोहि	चि	श्र	पुष्य
४	४	४	२	१	३	२	४

वैशाख मासमें प्याऊ (छबील) लगानी चाहिये और भगवत्प्रीत्यर्थ अभिषेकपात्र शिवजी पर देना तथा जूता पंखा, छतरी, कारीक कपड़े चन्दन, जलपात्र (घड़ा) ... आदि ... चैत्र शुक्ल १५ अथवा मेष संक्रान्ति से वैशाख स्नान आरम्भ।

संवत् २०१०शकः१८७५प्र. अधिक वैशाखशुक्लपक्षः ३ (१४अप्रै.से२६अप्रै.१९५३ई) उ.गो.सा.वृषार्कादवस.

दि.मा. घ.	दि.मा. प.	ति.	वा.	न. घ.	न. प.	नक्षत्र	यो. घ.	यो. प.	योग	क. घ.	क. प.	करण	च. घ.	च. प.	दिनांक हिं.	अंग्रेजी अं.	मुसलमानी मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. देहली घ.	सू. उ. देहली प.	सू. अ. देहली घ.	सू. अ. देहली प.	नित्यलग्नस्पष्टः उदयकाले			
३१	५०	१	मं.	४३	२३	अ.	४३	२४	वि.	३७	५९	क.	१५	२१	२	१४	२९	मेषे	६	१	६	४७	०	०	३८	५७
३१	५५	२	बु.	३९	१६	भ.	४१	१२	प्री.	३१	५२	बा.	११	१८	३	१५	३०	वृ.५५।५१	६	१	६	४८	०	१	३७	३६
३२	०	३	गु.	३६	३	कृ.	३९	४८	आ.	२६	२७	तै.	७	३९	४	१६	१	वृषे	६	०	६	४९	०	२	३६	१३
३२	४	४	शु.	३४	५५	रो.	३९	२९	सौ.	२१	५२	व.	४	५८	५	१७	२	वृषे	५	५९	६	५०	०	३	३४	४६
३२	९	५	श.	३३	१७	मृ.	४०	२३	शो.	१८	१३	व.	३	३६	६	१८	३	मि.९।५६	५	५७	६	५०	०	४	३३	१८
३२	१४	६	र.	३३	२०	आ.	४२	११	अ.	१५	३५	कौ.	३	१८	७	१९	४	मिथुने	५	५६	६	५१	०	५	३१	४८
३२	१९	७	चं.	३५	१	पुन.	४५	५८	सु.	१३	५७	ग.	४	१०	८	२०	५	क.३०।६	५	५५	६	५२	०	६	३०	१६
३२	२४	८	मं.	३७	४८	पु.	५०	३२	धृ.	१३	१८	वि.	६	२९	९	२१	६	कर्के	५	५४	६	५३	०	७	२८	४१
३२	२८	९	बु.	४१	४५	श्ले.	५६	४	शू.	१३	३२	बा.	९	४६	१०	२२	७	सि ५६।४	५	५३	६	५४	०	८	२७	४
३२	३१	१०	गु.	४६	२३	म.	६०	००	गं.	१४	२८	तै.	१४	४	११	२३	८	सिंहे	५	५२	६	५४	०	९	२५	२५
३२	३५	११	शु.	५१	३६	म.	२	१७	वृ.	१५	५१	व.	१८	५९	१२	२४	९	सिंहे	५	५१	६	५४	०	१०	२३	४५
३२	३९	१२	श.	५६	४७	पू.फा	८	५२	ध्रु.	१७	२९	ब.	२४	११	१३	२५	१०	क.२५।२८	५	५०	६	५५	०	११	२२	२
३२	४२	१३	र.	६०	००	उ.फा	१५	२१	व्या	१८	१७	कौ.	२९	१०	१४	२६	११	कन्यायाम्	५	४९	६	५६	०	१२	२०	१६
३२	४६	१३	चं.	१	१३	ह.	२१	२०	ह.	२०	३	तै.	१	३३	१५	२७	१२	तु.५३।५६	५	४८	६	५६	०	१३	१८	२७
३२	५०	१४	मं.	५	३४	चि.	२६	३२	व.	२०	२८	व.	५	३४	१६	२८	१३	तुलायाम्	५	४७	६	१६	०	१४	१६	३६
३२	५३	१५	बु.	८	२९	स्वा.	३०	३६	सि.	२०	३	व.	८	२९	१७	२९	१४	तुलायाम्	५	४६	६	५७	०	१५	१४	४५

प्र. द.—मं.गु. सूर्यास्तबाद पश्चिम में और शनि पूर्व में दीखेगा।
बु. सूर्यो से पहिले पूर्व में दीखेगा। ति. २से शु. पूर्व में उदित होगा॥

उ. भा. यां बुधः १६।२४, पुरुषोत्तम (मलिमास) मासारम्भः
चन्द्र दर्शनम्, पूर्वोदयः शुक्रः १७।४८,
कृ. भौमः ४८।५८, सावन मु. ८
भ. ४।५८ उ. ३३।५५ या.,

सा. वृषे भानुः ३८।९, ग्रीष्मर्तुः, अगस्त्योस्तः २३।१५
भ. ३५।१ उ.
भ. ६।२९ या., वृषे भौमः ३१।४९,

भ. १८।५९ उ. ५१।१६ या, कृ. ३ गुरुः २५।५३, पुरुषोत्तमा }
रेवत्यां बुधः ४१।४६, व. चि. २ कन्यायां शनिः १४।४ ✗
प्रबोध व्र. } ११ व्र. ✗ निम्बार्का. ११ व्र.
भरिण्यां रविः १।३६, सत्यव्र.
भ. ५।३४ उ. ३७।१ या.,
सब्बरात महोत्सवः यवनानाम्

प्र वैशाखशुक्ल ८ भौम-इष्टम् ०।० दिनगणः ६५९१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	०	११	१	११	६	९	३
७	२६	१०	२	२५	०	१५	१५
२८	३७	२९	३३	२७	२०	२	२
४१	३३	४२	४७	१८	३०	१९	१९
५८	४२	७१	१३	११	४	३	३
२३	२२	११	१९	३४	१३	११	११
क्रान्तिः	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	ब.	ब.	उ.	उ.	उ.	ब.	ब.
कृत्तिका	कृ.	[illegible]	कृ.	रे	चि.	श्र.	पू.भा.
१	१	१	२	१	३	२	४

२ गु. | १२ शु.बु. | १ सू. मं. | ११ | ३ | ४ चं.के. | १० रा. | ५ | ७ श. | ९ | ६ | ८

इस पक्ष में रूई कपास का भाव घटे। ति. ९ सोना और रूई में तेजी आवे। अलसी अनाज और तृण के भाव में तेजी आवे। केसर और चन्दन महंगा, और वस्त्रों के भाव में मन्दी आवे। इस पक्ष में भारतवर्ष का दूसरे देशों के साथ प्रेम बढ़े। योरुप में नाजी पक्ष के लोगों का उपद्रव बढ़े, पड़ोसी देश भारत की आलोचना करें। जल की कमी और आग का उपद्रव होवे। ति. १, २, ३, ७, ८, १२, १३, १५, को बादल चाल और कहीं २ बूंदाबांदी भी होवे। श. वि.—बिन बादल हो गर्जना जिस दिशि गर्जन जाय। करे भंग उस देश का ऐसा योग बताय।

प्र. वैशाखशुक्ल १५ बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः ६५९९

२ गु.मं. | १२ शु बु. | १ सू. | ३ | ११ | ४ के. | १० रा. | ५ | ७ चं. | ९ | ६ श. | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
०	१	११	१	११	५	९	३
१५	५	२१	४	२२	२९	१४	१४
१४	१५	२३	२२	२०	४४	१७	३७
४५	१	४६	४७	२८	५४	१४	१४
५८	४२	८९	१३	१६	४	३	३
९	२	७	५१	५९	२३	११	११
क्रान्तिः	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	द.	द.
भ.	कृ.	रे.	कृ.	रे.	चि.	श्र	पू.भा.
१	३	२	३	२	२	२	४

मलमास में व्रत विधान—हेमाद्रि में लिखा है कि जब पुरुषोत्तम मास प्राप्त हो तब ३३ देवताओं के निमित्त गुड गोधूमचूर्ण घी के ३३ माल पूड़े प्रतिदिन देने से भूमि दान के समान फल होता है। स्वर्ण कांस्य पात्र दान मलमास के अन्त में एक दिन करने से व्रत सफल होता है। यदि अशक्त हो तो पूर्णमासी और अमावस्या द्वादशी इन तिथियों को दान करे॥

संवत् २०१० शाकः १८७५ द्वि. अधिक वैशाख कृष्णपक्ष ४ | (३० अप्रैल से १३ मई १९५३ ई.) उत्त. गो. ग्रीष्मर्तु

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दिनांक	अं.	मु.	चन्द्र: सञ्चार:	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट: उदयकाले			
३२	५७	१	गु.	१०	१८	वि.	३३	३२	व्य.	१८	४३	कौ.	१०	०८	१८	३०	१५	वृ १७।४८	५	४५	६	५८	०	१६	१२	१२
३३	१	२	शु.	१०	४६	अनु	३५	११	व	१६	०१	ग.	१०	४६	१९	म १	१६	वृश्चिके	५	४५	६	५८	०	१७	१०	५७
३३	४	३	श.	९	५४	ज्ये.	३५	३७	प.	१३	०	वि.	९	१४	२०	२	१७	ध. ३५।३७	५	४४	६	५९	०	१८	९	०
३३	८	४	र.	७	५१	मू.	३४	३२	शि.	८	३९	बा.	७	५१	२१	३	१८	धनुषि	५	४३	७	०	०	१९	७	१
३३	१२	५	चं.	४	४७	पू.षा	३३	७	सि.	३/५७	२२/३२	तै.	४	४७	२२	४	१९	म. ४७।२८	५	४२	७	०	०	२०	४	५९
३३	१५	६	मं.	०	४३	उ.षा	३०	३१	शु.	५०	५७	व.	०	४३	२३	५	२०	मकरे	५	४२	७	१	०	२१	२	५४
अवम्		७	बु.	५५	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	१९	८	बु.	५०	५२	अ.	२७	१३	शु.	४३	५०	बा.	२३	५	२४	६	२१	कुं ५५।२०	५	४१	७	२	०	२२	०	०९
३३	२३	९	गु.	४४	२८	ध.	२३	२७	ब्र.	३६	२२	तै.	१७	२५	२५	७	२२	कुंभे	५	४०	७	२	०	२२	५८	४३
३३	२७	१०	शु.	३८	३५	श	१९	२०	ऐ.	२८	४१	व.	११	२६	२६	८	२३	कुंभे	५	३९	७	३	०	२३	५६	३४
३३	३०	११	श.	३२	१८	पू.भा	१०	१३	वै.	२१	१	ब.	५	२१	२७	९	२४	मी १।६	५	३८	७	३	०	२४	५४	२४
३३	३४	१२	र.	२६	२२	उ.भा	११	१२	वि.	१३	३	तै.	२६	०२	२८	१०	२५	मीने	५	३७	७	४	०	२५	५	१२
३३	३८	१३	चं.	२०	५०	रे.	७	३१	प्री.	५२	२५/५७	व.	२०	५०	२९	११	२६	मे. ७।३१	५	३६	७	५	०	२६	४९	५९
३३	४१	१४	मं.	१५	४८	अ.	४	०१	सौ.	५३	१५	श.	१५	४८	३०	१२	२७	मेषे	५	३६	७	५	०	२७	४७	४३
३३	४०	३०	बु	११	३७	भ.	१	५५	शो	४७	४२	ना.	११	३७	३१	१३	२८	वृ. १६।३१	५	३५	७	६	०	२८	४५	२५

प्र. द.–नि. १२ से, भौम ति. ३० से बुध गुरु अस्त होंगे । शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और शनि सूर्यास्त बाद पूर्व में दीखेगा।

भ. ४०।२० उ., मई ५ ता० ३१
भ. ९।५४ या., श्रीगणेश ४ व्र.
मार्गी शुक्र: ३७।८,
मेषेऽश्विन्यां बुधः २४।२१
भ. ०।४१ उ. २८।१३ या., रोहि. भौमः ४८।३२,

पञ्चकप्रा. ५५।२०

भ. ११।२६ उ. ३८।२५ या., कृत्ति. ४ गुरुः ५२।१७,
कमला ११ व्र. स.
कृत्ति. रविः ४९।३८, अस्तो भौमः १०।३५, प्रदोष व्र.
भ. २०।५० उ. ४८।१९ या., भरि. बुधः ४९।५७, पञ्चकस. ‡
; (मलिमास) मास समाप्तिः ‡ ७।३१,
पूर्वास्तो बुधः १०।४९, अस्तो गुरुः ५५।१२, गु., अ पुरुषोत्तम;

द्वि. वैशाखकृष्ण ८ बुध–इष्टम् ०।० दिनगण: ६६०६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	१	११	५	९	३
२२	१०	२	६	२१	२९	१४	१४
०	७	४२	०	०२	१५	१५	१५
४९	१८	३५	२२	३३	१०	०	०
५७	४१	१०४	१३	५	४	३	३
५५	४२	०३	४७	३५	४	११	११
क्रां.	मा.	मा.	मा.	मा.	ब.	ब.	ब.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भ.	रो.	अश्वि.	कृ.	रे	चि.	अ.	पू.फा.
३	१		४	२	२	२	४

२ मं. गु. | १२ शु.
१ सू. बु. | ११
३ | ४ के. | १० रा. श.
५ | ७ | ९
६ श. | ८

इस पक्ष में प्रजा में सुख हो, दूसरे देशों के साथ व्यापारिक वस्तुओं का आदान प्रदान बढ़े। ति. ८ से रूई मन्दी, सोना चान्दी तेज हों। यहां अनाज घी गुड़ संग्रह करने से आगे अच्छा लाभ हो। उत्तर भारत में कहीं वर्षा व बूंदाबांदी हो। आंधी और वायु के उपद्रव से हानि हो। लाल वस्त्र गुड़ तेल का भाव तेज हो। किन्हीं गुप्त षड्यन्त्र कारियों पर आपत्ति आवे। अनाज पर कंट्रोल कुछ कमजोर होवे। ति. १, २, ३, १०, ११, १२, १४, ३०, को बादल चाल और हवा के साथ कहीं २ बूंदाबांदी भी होवे। मलमास में देवालय बगीचा तालाबादि की प्रतिष्ठा उपनयन विवाह गृहारंभ

द्वि. वैशाखकृष्ण ३० बुध–इष्टम् ०।० दिनगण. ६६१३

२ गु मं. | १२ शु.
१ सू. चं. बु. | ११
३ | ४ के. | १० रा.
५ | ७ | ९
६ श. | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	१	११	५	९	३
२८	१४	१५	७	२३	२८	१३	१३
४५	५८	३४	३७	८	०८	५२	५२
२५	४६	३०	३३	१७	०	४५	४५
५७	४१	१०४	१३	१७	३	३	३
०२	२५	२८	०७	१४	४०	११	११
क्रांति	मा.	मा.	मा	मा	ब.	ब.	ब
	अ	उ.	उ.	उ	उ	अ.	अ.
कृ	रो.	भ.	कृ.	रे.	चि.	अ.	पू.फा.
१	२	१	४	३	२	२	४

मुण्डन प्रथम तीर्थयात्रा अपूर्वदेव दर्शन राज्याभिषेकादि कर्म नहीं करना चाहिये। मनुस्मृती–तीर्थश्राद्ध दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सपिंडनम्। चन्द्रसूर्यग्रहे स्नान मलमासे विवर्जयेत ।। पराशरः— गर्भे वार्धुषिके भृत्ये प्रेतकर्मणि मासिके। सपिंडीकरणे नित्ये नाधिमास विवर्जयेत ।। विद्यादानमाहात्म्य–यद्दवापि समा कन्या भूमिदानञ्च तत्समम् । भूमिदानात् गुणं विद्यादानं विशिष्यते ।।

(मई १४ से २८ मई ई०. १९५३) उ.गो. ग्रीष्मर्तुः।

मुण्डने प्रथम ... [illegible]
गर्भे चावं षिके भृत्ये प्रेतकर्मणि मासिके । सपिंडीकरणे नित्य... त्समम् । अभिदानाद्यगर्ण विधानं विधियते ॥

संवत् २०१० शकः १८७५ द्वि (शुद्ध) वैशाख शुक्लपक्षः ५

(मई १४ से २८ मई ई० १९५३) उ.गो. ग्रीष्मर्तुः।

ग्रहदर्शन—मं बु. गु. अस्त है। शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिजमें देखें। शनि सूर्यास्तबाद पूर्वसे खमध्यको आता दीखेगा।

दि.मा		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. उप	अं. मई	म.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३३	४९	१	गु.	८	१७	कृ.	०/५९	२०/४७	अ.	४३	०	व.	८	१७	१	१४	२९	वृषे	५	३४	७	७	०	२९	४३	५
३३	५२	२	शु.	६	३	मृ.	६०	००	पु.	३९	१२	कौ.	६	३	२	१५	१	मि३०।१६	५	३४	७	८	१	०	४०	४४
३३	५६	३	श.	४	५९	मृ.	०	२५	व.	३६	२५	ग.	४	५९	३	१६	२	मिथुने	५	३३	७	८	१	१	३८	२
३४	००	४	र.	५	१५	आ.	२	१९	शु.	३४	३६	वि.	५	१५	४	१७	३	क.४९।४३	५	३२	७	९	१	२	३५	१८
३४	३	५	चं.	६	४९	पुन.	५	३०	गं.	३३	४९	बा.	६	४९	५	१८	४	कर्के	५	३१	७	१०	१	३	३३	३२
३४	७	६	मं.	९	३०	पु.	९	४४	वृ.	३३	५६	तै.	९	३०	६	१९	५	कर्के	५	३१	७	१०	१	४	३१	४
३४	११	७	बु.	१३	१९	श्ले	१५	८	ध्रु.	३४	४७	व.	१३	१९	७	२०	६	सि१५।१८	५	३०	७	११	१	५	२८	३४
३४	१४	८	गु.	१७	५४	म.	२१	३	व्या	३६	१०	ब.	१७	५४	८	२१	७	सिंहे	५	३०	७	१२	१	६	२६	२
३४	१७	९	शु.	२३	००	पूफा.	२७	४२	ह.	३७	५३	कौ.	२३	०	९	२२	८	क.४४।२१	५	२९	७	१३	१	७	२३	२९
३४	१९	१०	श.	२८	६	उफा.	३४	१८	व.	३९	२६	ग.	२८	६	१०	२३	९	कन्यायाम	५	२९	७	१३	१	८	२०	५५
३४	२१	११	र.	३२	४९	ह.	४०	२७	सि.	४०	३८	ब.	०	२६	११	२४	१०	कन्यायाम्	५	२९	७	१४	१	९	१८	२
३४	२२	१२	च	३६	४७	चि.	४५	४९	व्य.	४१	१६	ब.	४	४८	१२	२५	११	तु.१३।८	५	२९	७	१५	१	१०	१५	४६
३४	२४	१३	मं.	३९	४२	स्वा.	५०	८	व.	४१	७	कौ.	८	१४	१३	२६	१२	तुलायाम्	५	२८	७	१५	१	११	१३	३
३४	२५	१४	बु.	४१	२९	वि.	५३	२१	प.	४०	४	ग.	१०	३५	१४	२७	१३	वृ.३७।३३	५	२८	७	१६	१	१२	१०	२३
३४	२७	१५	गु	४१	५४	अनु.	५५	१७	शि.	३७	५९	वि.	११	४१	१५	२८	१४	वृश्चिके	५	२८	७	१६	१	१३	७	४२

सं. वृषेऽर्कः १७।१४ मु. ४५ पुण्यकाल ११।१४ उ. चन्द्रदर्शनम्
रमजान मु. ९ श्रीपरशुराम जन्म
भ. ३५।१७ उ., अक्षया ३ त्रेतायुगादि
भ. ५।१५ या.
कृत्तिकायां बुधः २८।१३

भ. १३।१९ उ. ४५।३६ या. वृषे बुधः १।३५ सा †
+घटं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विप्राय तुभ्यमहं सम्प्रददे" इसी तृतीया को भगवान् श्रीपरशुरामजी का जन्मदिवस है ।
रोहि. १ गुरुः ८।२९ श्रव. १ राहुः पुष्य ३ केतुः । १८।१३
भ. ०।२६ उ. ३२।४९ या. मोहिनी ११ व्र. रोहि. रविः ‡
मृगे भौमः १०।४७ † मिथुने भानुः ४२।९
भौमप्रदोष व्र. ‡ ४३।३४ रोहि. बुधः ३६।३५
भ. ४१।२९ उ अश्वि. मेषे शुक्रः ५।३५
भ. ११।४१ या. कूर्मजयन्ती वै. स्ना. स. यमाय जलकुंभदानम्

द्वि वैशाख शु. ८ गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	११	५	९	३
६	२०	२	९	२६	२८	१३	१३
२६	२८	६	२९	२७	२१	२७	२७
२	४३	२७	५४	१७	१०	२०	२०
५७	४१	[illegible]	१४	३०	३	३	३
२८	५	५३	५	५३	८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ	रो	कृ.	कृ.	रे.	चि.	ध.	[illegible]
४	४	२	४	४	२	२	४

३ — १ — ४ शु. — सू.मं.बु.गु. २ — १२श — ५ चं. — ११ — ६ श. — ८ — १०रा. — ७ — ९

इस पक्षमें खांड गुड के भाव में तेजी । गेहूं अलसी के भाव में घटा बढ़ी होकर फल मन्दा होवे । करियाने का भाव मन्दा होवे। नये काम शुरु करनेवालोंको कठिनाइयों का सामना करना पड़े । इस पक्षमें किसी समद्री टापू में तूफान से हानि हो। सट्टे की चीजों में एकदम मन्दा आने से तेजी वालों को हानिहो। पक्षके अन्तमें अनाज तेज होवे।
ति. १, १०, ९ को बादल चालका योग है ।
वा० वि०—वैशाख सुदी सातेदिनाबाजे पूर्वबाय। बादलहो बिजली दिखे और बूंद पड़जाय। घाघ एकट्ठे तुम करो सुनलो ध्यान लगाय। भादों मासमें लाभ हो इसमें संशय नाय। शुक्लपक्ष वैशाखकी तिथिदशमी दिन देख, बादल हो श्रावण विषै जल नहिं पडे बिशेष ।

द्वि वैशाख शु १५ गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६२८

१ — १श — २ — सू.मं.बु. गु. — १२ — ४के. — ५ — ११ — ६ श. — ८ चं. — १०रा. — ७ — ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	०	५	९	३
१३	२५	१७	१[illegible]	०	२८	१३	१३
७	१५	३	८	३५	१	५	५
४२	११	११	५	३	२६	५	५
५७	४०	[illegible]	१४	३८	[illegible]	३	३
१९	४८	४७	१	३९	३५	११	११
[illegible]	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.	व
[illegible]	अ	अ.	अ.	उ	उ.	अ	अ.
रो	मृ.	रो	रो.	[illegible]	चि	अ	[illegible]
२	१	३	१	१	२	१	४

बादल हो श्रावण विषै जल नहिं पडे बिशेष । वैशाख शुक्ल ३ को यदि गंगास्नान, देवदर्शन किया जाय तो वह अक्षय फल देता है । इस पक्षमें, सभी रस, सुवर्ण, अन्न के साथ पानी के घडे, जौ गेहूं चनेके सत्तू, दही चावल पंखा छत्री और जूता पितृ तथा देवताओं के निमित्त ब्राह्मणों को दान दें । दान का संकल्प—"नामगोत्रमुच्चार्य—सर्वौतदन्नं शीतलोदकपूर्ण+

संवत् २०१० शक: १८७५ द्वि. अधिक वैशाख कृष्णपक्ष ४ (३०अप्रैल से १३ मई १९५३ई.) उत्त. गो. ग्रीष्मर्तु

दि. मा.		ति.वा.		न. घ.		न	घ. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		ई. तारीख	अं. मई	मु. सावन	चन्द्र: सञ्चार:	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट: उदयकाले			
३२	५७	१	गु.	१०	१८	वि.	३३	३२	व्य.	१८	४३	कौ.	१०	०८	१८	३०	१५	वृ १७।४८	५	४५	६	५८	०	१६	१२	१२
३३	१	२	शु.	१०	४६	अनु.	३५	११	ह.	१६	०१	ग.	१०	४६	१९	म १	१६	वृश्चिके	५	४५	६	५८	०	१७	१०	५७
३३	४	३	श.	९	५०	ज्ये.	३५	३७	प.	१३	०	वि.	९	१४	२०	२	१७	ध. ३५।३७	५	४४	६	५९	०	१८	९	०
३३	८	४	र.	७	५१	मू.	३४	३२	शि.	८	३९	बा.	७	५१	२१	३	१८	धनुषि	५	४३	७	०	०	१९	७	१
३३	१२	५	चं.	४	४७	पू.षा.	३३	७	सि.	३ ५७	२ ३२	तै.	४	४७	२२	४	१९	म. ४७।२८	५	४२	७	०	०	२०	४	५९
३३	१५	६	मं.	०	४३	उ.षा	३०	३१	शु.	५०	५७	व.	०	०३	२३	५	२०	मकरे	५	४२	७	१	०	२१	२	५४
अ	वमू	७	बु.	५५	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३०	१९	८	बृ.	२०	५२	श्र.	२७	१३	शु.	४३	५०	बा.	२३	५	२४	६	२१	कुं ५५।२०	५	४१	७	२	०	२२	०	०९
३३	२३	९	शु.	४४	२८	ध.	२३	२७	ब्र.	३६	२२	तै.	१७	२५	२५	७	२२	कुंभे	५	४०	७	२	०	२२	५८	४३
३३	२७	१०	श.	३८	२५	श	१९	२०	ए.	२८	४१	व.	११	२६	२६	८	२३	कुंभे	५	३९	७	३	०	२३	५६	३४
३३	३	११	र.	३२	१८	पू.भा	१९	१३	वै.	२१	१	ब.	५	२१	२७	९	२४	मी १।६	५	३८	७	३	०	२४	५४	२४
३३	३४	१२	चं.	२६	२२	उ.भा	११	१२	वि.	१३	३	तै.	२६	०२	२८	१०	२५	मीने	५	३७	७	४	०	२५	५	१२
३३	३८	१३	मं.	१०	५०	रे.	७	३१	प्री.	५९ ६	२७ १५	व.	१०	५०	२९	११	२६	मे. ७।३१	५	३६	७	५	०	२६	४९	५९
३३	४१	१४	बु.	१५	४८	अ.	४	२१	सौ.	५३	१५	श.	१५	४८	३०	१२	२७	मेषे	५	३६	७	५	०	२७	४७	४३
३३	४५	३०	बृ.	११	३७	भ.	१	५५	शो.	४७	४२	ना.	११	३७	३१	१३	२८	वृ. १६।३१	५	३५	७	६	०	२८	४५	२५

प्र. द.–नि. १२ से, भौम ति. ३० से बुध गुरु अस्त होंगे । शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और शनि सूर्यास्त बाद पूर्व म दीखेगा ।

भ. ४०।२० उ., मई ५ ता० ३१

भ. ९।५४ या., श्रीगणेश ४ व्र.

मार्गी शुक्र: ३७।८,

मेषेऽश्विन्यां बुध: २४।२१

भ. ०।४१ उ. २८।१३ या., रोहि. भौम: ४८।३२,

पञ्चकप्रा. ५५।२०

भ. ११।२६ उ. ३८।२५ या., कृत्ति. ४ गुरु: ५२।१७,

कमला ११ व्र. स.

कृत्ति. रवि: ४९।३८, अस्तो भौम: १०।३५, प्रदोष व्र.

भ. २०।५० उ. ४८।१९ या., भरि. बुध: ४९।५७, पञ्चकस. ‡

; (मलिमास) मास समाप्ति: ‡ ७।३१,

पूर्वास्ता बुध: १०।४९, अस्तो गुरु: ५५।१२, गु., अ पुरुषोत्तम;

द्वि. वैशाखकृष्ण ८ बुध-इष्टम् ०।० दिनगण: ६६०६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	१	११	५	९	३
२२	१०	२	६	११	२९	१४	१४
०	७	४२	०	४२	१२	१५	१५
४९	१८	३५	२२	३३	१०	०	०
५७	४१	०	१३	५	४	३	३
५९	४२	४३	४७	३५	४	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	उ	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	रो	[illegible]	कृ.	रे	वि	अ.	पु.
३	१	[illegible]	४	२	२	२	४

२मं. गु. | १२ शु. | १ सू. बु. | ११ | ३ | ४ के. | १० रा. च. | ७ | ९ | ५ | ६ श. | ८

इस पक्ष म प्रजा में सुख हो, दूसरे देशों के साथ व्यापारिक वस्तुओं का आदान प्रदान बढ़े। ति. ८ से रूई मन्दी, सोना चान्दी तेज हों। यहां अनाज घी गुड़ संग्रह करने से आगे अच्छा लाभ हो। उत्तर भारत में कहीं वर्षा व बूंदाबांदी हो। आंधी और वायु के उपद्रव से हानि हो। लाल वस्त्र गुड़ तेल का भाव तेज हो। किन्हीं गुप्त षड्यन्त्र कारियों पर आपत्ति आवे। अनाज पर कंट्रोल कुछ कमजोर होवे। ति. १, २, ३, १०, ११, १२, १४, ३०, को बादल चाल और हवा के साथ कहीं २ बूंदाबांदी भी होवे। मलमास में देवालय बगीचा तालावादि की प्रतिष्ठा उपनयन विवाह गृहारंभ

द्वि. वैशाखकृष्ण ३० बुध-इष्टम् ०।० दिनगण ६६१३

२ गु म. | १२शु. | १ सू चं. बु. | ११ | ३ | ४ के. | १० रा. | ७ | ९ | ५ | ६श. | ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	१	११	५	९	३
२८	१४	१५	७	२३	२८	१३	१३
४५	५८	३४	३७	८	०८	५२	५२
२५	४६	३०	३३	१७	०	४५	४५
५७	४१	०	१३	१७	३	३	३
०७	२५	२८	०७	१४	४०	११	११
सौम्य	मा.	मा.	मा	मा	व.	व.	व
	अ	उ.	उ.	उ	उ.	अ.	अ.
कृ	रो.	भ.	कृ.	रे.	चि.	श्र.	पु.
१	२	१	४	३	२	२	४

मुण्डन प्रथम तीर्थयात्रा अपूर्वदेव दर्शन राज्याभिषेकादि कर्म नहीं करना चाहिये। मनुस्मृती–तीर्थश्राद्ध दर्शश्राद्धं प्रेतश्राद्धं सपिंडनम्। चन्द्रसूर्यग्रहे स्नान मलमासे विधीयते ॥ पराशर:— गर्भे वार्धुषिके भृत्यें प्रेतकर्मणि मासिके। सपिंडीकरणे नित्ये नाधिमास विवर्जयेत ॥ विद्यादानमाहात्म्य–[illegible]

(मई १४ से २८ मई ई०. १९५३) उ.गो. ग्रीष्मर्तु:।

संवत् २०१० शकः १८७५ द्वि (शुद्ध) वैशाख शुक्लपक्षः ५

दि.मा.	ति.वा.	घ. प.	न.	घ. प.	यो.	घ. प.	क.	घ. प.	हि. ज्य	अं. मई	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे	सू. अ. रेल्वे	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले
३ ४९	१ गु.	८ १७	कृ.	० २० / ५२ ४७	अ.	४३ ०	व	८ १७	१	१४	२९	वृषे	५ ३४	७ ७	० २९ ४३ ५
३ ५२	२ शु.	६ ३	मृ.	६० ००	पु.	३९ १२	कौ.	६ ३	२	१५	१	मि३०।१६	५ ३४	७ ८	१ ० ४० ४४
३ ५६	३ श.	४ ५९	मृ.	० २५	व.	३६ २५	ग.	४ ५९	३	१६	२	मिथुने	५ ३३	७ ८	१ १ ३८ २
४ ००	४ र.	५ १५	आ.	२ ११	सु.	३४ ३६	वि.	५ १५	४	१७	३	क.४९।४३	५ ३२	७ ९	१ २ ३५ १८
४ ३	५ सो.	६ ४९	पुन.	५ ३०	गं.	३३ ४०	बा.	६ ४९	५	१८	४	कर्के	५ ३१	७ १०	१ ३ ३३ ३७
४ ७	६ मं.	९ ३०	पु.	९ ४४	वृ.	३३ ५६	तै.	९ ३०	६	१९	५	कर्के	५ ३१	७ १०	१ ४ ३१ ४
४ ११	७ बु.	१३ १९	श्ले	१५ ८	ध्रु.	३४ ४७	व.	१३ १९	७	२०	६	सि१५।१८	५ ३०	७ ११	१ ५ २८ ३४
४ १४	८ गु.	१७ ५४	म.	२१ ३	व्या	३६ १०	ब.	१७ ५४	८	२१	७	सिंहे	५ ३०	७ १२	१ ६ २६ २
४ १७	९ शु.	२३ ००	पूफा.	२७ ४२	ह.	३७ ५३	कौ.	२३ ०	९	२२	८	क.४४।२१	५ २९	७ १३	१ ७ २३ २९
४ १९	१० श.	२८ ६	उफा.	३४ १८	व.	३९ २६	ग.	२८ ६	१०	२३	९	कन्यायाम्	५ २९	७ १३	१ ८ २० ५५
४ २१	११ र.	३२ ४९	ह.	४० २७	सि.	४० ३८	ब.	० २६	११	२४	१०	कन्यायाम्	५ २९	७ १४	१ ९ १८ २
४ २२	१२ सो.	३६ ४७	चि.	४५ ४९	व्य.	४१ १६	ब.	४ ४८	१२	२५	११	तु.१३।१८	५ २८	७ १५	१ १० १५ ४२
४ २४	१३ मं.	३९ ४२	स्वा.	५० ८	व.	४१ ७	कौ.	८ १४	१३	२६	१२	तुलायाम्	५ २८	७ १५	१ ११ १३ ३
४ २५	१४ बु.	४१ २९	वि.	५३ २१	प.	४० ४	ग.	१० ३५	१४	२७	१३	वृ.३७।३३	५ २८	७ १६	१ १२ १० २३
४ २७	१५ गु.	४१ ५४	अनु.	५५ १७	शि.	३७ ५९	वि.	११ ४१	१५	२८	१४	वृश्चिके	५ २८	७ १६	१ १३ ७ ४२

(मई १४ से २८ मई ई०. १९५३) उ.गो. ग्रीष्मर्तुः।

ग्रहदर्शन—में बु. ग. अस्त है। शुक्र सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिजमें देखें। शनि सूर्यास्तबाद पूर्वसे खमध्यको आता दीखे गा।

सं. वृषेऽर्कः १७।१४ मु. ४५ पुण्यकाल ११।१४ उ. चन्द्रदर्शनम्
रमजान मु. ९ श्रीपरशुराम जन्म
भ. ३५।१७ उ., अक्षया ३ त्रेतायुगादि
भ. ५।१५ या.
कृत्तिकायां बुधः २८।१३

भ. १३।१९ उ. ४५।३६ या. वृषे बुधः ११३५ सा †
+घटं विष्णुप्रीतये अमुकगोत्रायामुकशर्मणे विप्राय तुभ्यमहं सम्प्र-ददे" इसी तृतीया को भगवान् श्रीपरशुरामजी का जन्मदिवस है।
रोहि. १ गुरुः ८।२९ श्रव. १ राहुः पुष्य ३ केतुः । १८।१३
भ. ०।२६ उ. ३२।४९ या. मोहिनी ११ व्र. रोहि. रविः ‡
मृगे भौमः १०।४७ † मिथुने भानुः ४।१९
भौमप्रदोष व्र. ‡ ४३।३४ रोहि. बुधः ३६।३५
भ. ४१।२९ उ अश्वि. मेषे शुक्रः ५।३५
भ. ११।४१ या. कूर्मजयन्ती वै. स्ना. स. यमाय जलकुंभदानम्

द्वि वैशाख शु. ८ गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६२१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	११	५	९	३
६	२०	२	९	२६	२८	१३	१३
२६	२८	६	२९	२७	२१	२७	२७
०	४३	२७	५४	१७	१०	२०	२०
५७	४१	८	१४	३०	३	५	३
२८	५	५३	५	५३	८	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
कृ.	रो.	कृ.	कृ.	रे.	चि.	अ.	पु.
४	०	२	४	४	२	२	४

३ — १ — ४ क्षे. — सू. मं. बु. गु. २ — १२ शु. — ५ चं. — ११ — ६ श. — ८ — १० रा. — ७ — ९

इस पक्षमें खांड गुड के भाव में तेजी। गेहूं अलसी के भाव में घटा बढ़ी होकर रुख मन्दा होवे। करियाने का भाव मन्दा होवे। नये काम शुरु करनेवालोंको कठिनाइयों का सामना करना पड़े। इस पक्षमें किसी समद्री टापू में तूफान से हानि हो। सट्टे की चीजों में एकदम मन्दा आने से तेज़ी वालों को हानिहो। पक्षके अन्तमें अनाज तेज होवे। ति. १, १०, ९ की बादल चालका योग है।

घा० वि०—वैशाख सुदी सातेदिनाबाजे पूर्ववाय। बादलहो बिजली दिखे और बूंद पड़जाय। धान्य इकट्ठे तुम करो सुनलो ध्यान लगाय। भादों मासमें लाभ हो इसमें संशय नाय। शुक्लपक्ष वैशाख की तिथिदशमी दिन देख, बादल हो श्रावण विषे जल नहिं पडे विशेष।

द्वि वैशाख शु. १५ गुराविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६२८

१ — १ शु. — २ — सू. मं. बु. ग. — १२ — ४ के. — ५ — ११ — ६ श. — ८ चं. — १० रा. — ७ — ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	१	०	५	९	३
१३	२५	१७	१४	०	२८	१३	१३
७	१५	३	८	३५	१	५	५
४२	११	११	५	३	२६	५	५
५७	४०	[illegible]	१४	३८	[illegible]	३	३
१९	४८	७	१	३९	३५	११	११
मार्गी	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	अ	अ.	अ	उ	उ.	अ	अ
रो.	मृ.	रो.	रो.	पु.	चि.	अ.	पु.
२	१	३	१	१	२	१	३

वैशाख शुक्ल ३ को यदि गंगास्नान, देवदर्शन किया जाय तो वह अक्षय फल देता है। इस पक्षमें, सभी रस, सुवर्ण, अन्न के साथ पानी के घड़े, जौ गेहूं चनेके सत्तू, दही चावल पंखा छत्री और जूता पितृ तथा देवताओं के निमित्त ब्राह्मणों को दान दें। दान का संकल्प —"नामगोत्रमुच्चार्य—यवैतदन्नं जीवनादकयुतं+

संवत् २०१० शका १८७५ ज्येष्ठकृष्णपक्षः ६

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. उर्दू	अं. मई	मु. रमजान	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३४	२९	१	शु.	४१	१	ज्ये.	५५	५६	सि.	३४	५३	बा.	११	२७	१६	२९	१५	ध. ५५।५६	५	२८	७	१६	१	१४	४	५९
३४	३१	२	श.	३८	५९	मू.	१५	२५	सा.	३०	४८	तै.	१०	००	१७	३०	१६	धनुषि	५	२८	७	१६	१	१५	२	१६
३४	३२	३	र.	३५	४३	पू.षा	५३	५३	शु.	२५	५१	व.	७	२३	१८	३१	१७	धनुषि	५	२८	७	१७	१	१५	५९	३२
३४	३४	४	चं.	३१	४२	उ.षा	५१	२९	शु.	२०	७	ब.	३	४४	१९	जू.	१८	म. ८।१७	५	२८	७	१७	१	१६	५६	४५
३४	३६	५	मं.	२६	४६	श्र.	४८	१९	ब्र.	१३	४१	तै.	२६	४६	२०	२	१९	मकरे	५	२८	७	१७	१	१७	५३	५७
३४	३८	६	बु.	२१	१४	ध.	४४	३६	ऐं.	५९	२३	व.	२१	१४	२१	३	२०	कुं. १६।२७	५	२८	७	१८	१	१८	५१	७
३४	३९	७	गु.	१५	१९	श.	४०	२६	वि.	५१	५०	ब.	१५	१९	२२	४	२१	कुम्भे	५	२७	७	१९	१	१९	४८	१६
३४	४०	८	शु.	९	१०	पू.भा.	३६	६	प्री.	४४	३१	कौ.	९	१०	२३	५	२२	मी. २२।२९	५	२७	७	१९	१	२०	४५	२५
३४	४२	९	श.	३	००	उ.भा.	३२	२१	आ.	३६	१०	ग.	३	००	२४	६	२३	मीने	५	२७	७	१९	१	२१	४२	३०
अवम		१०	श	५४	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	४३	११	र.	११	२२	रे.	२८	३२	सौ.	२९	२२	ब.	२८	११	२५	७	२४	मे. २८।३२	५	२७	७	२०	१	२२	३९	३८
३४	४५	१२	चं	४६	१८	अ.	२५	१३	शो.	२२	२९	कौ.	१८	५०	२६	८	२५	मेषे	५	२७	७	२१	१	२३	३६	४४
३४	४६	१३	मं.	४२	३	भ.	२२	३३	अ.	१६	९	ग.	१४	१०	२७	९	२६	वृ. ३७।६	५	२७	७	२१	१	२४	३३	४९
३४	४८	१४	बु.	३८	३६	कृ.	२०	५	सु.	१०	२८	वि.	१०	१९	२८	१०	२७	वृषे	५	२६	७	२२	१	२५	३०	५२
३४	४९	३०	गु.	३६	१४	रो.	१९	५७	धृ.	५	३८	च	७	२५	२९	११	२८	मि. ५०।८	५	२६	७	२२	१	२६	२७	५४

(२९ मई से ११ जून १९५३ ई०) उ. गो., ग्रीष्मर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। ति. ७ से बु. प. में, ति. १२ से गुरु पूर्वमें उदित होगा। शु. सूर्या. से पहिले पूर्वमें, शनि सूर्यास्त पीछे खमध्य ∅

†मिट्टीकी) मूर्ति बनाकर फलपुष्प व धूप दीप नैवेद्य हल्दी ‡

मृगे बुधः ४०।२३ ‡ कंठसूत्र और कुंकुम केसर आदि से +

भ. ७।२३ उ. ३५।४७ या. श्रीगणेश ४ व्र.

जून ६ ता. ३० +विधिपूर्वक पूजनकर और 'ओंकारपूर्विका =

मिथुने बुधः ५१।३७ = देवी वीणापुस्तक धारिणी। वेद—

भ. २१।१४ उ. ४८।६ या. पंच. प्रारम्भ १६।२७

मिथुने भौमः ०।२६ पश्चिमोदयो बुधः ६३।१५

—मार्तनमस्तेस्तु अवैधव्यं प्रयच्छ मे ॥" इस मन्त्रसे अर्घ्य ÷

भ. ३०।० उ. ५७।०या. आर्द्रा बुधः १२।१८ रोहि. २ गुरुः २५।१८

÷ देकरबादमें "सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ×

मृगे रविः ४२।२४ पञ्चक स. २८।३२ अपरा ११ व्र. (भद्रकाली)

गुरोरुदयः ६१।४८ गु. उ. निम्बार्का ११ व्र.

भ. ४२।२ उ. भौमप्रदोष व्र. ∅ को आता दीखेगा।

भ. १०।१९ या.

श्रीवटसावित्री ३० व्र. ×ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।" इस मन्त्रसे मूर्ति ब्राह्मण को देवें।

ज्येष्ठकृष्ण ८ शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६६१६

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	१	०	५	९	३
२०	०	४	१२	६	२७	१२	१२
५५	४०	१८	५९	२५	४३	३९	३९
२५	१२	१५	५९	४४	५२	३९	३०
[illegible]	४०	०	१४	४७	१	३	३
[illegible]	३०	२८	१	६	५५	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.	व.
कृ.	अ.	उ.	अ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रो	पू.	मृ.	रो	पू.फा.	चि.	श्र	पुन.
४	३	४	१	३	२	१	३

३ म. बु. | १ शु. | २ सू. गु | १२ | ४ के. | ५ | ११ चं. | ६ श. | ८ | १० रा. | ७ | ९

इस पक्ष में गर्मी का जोर बहुत होगा, सख्त धूप पड़े। ति. ७ से रूई में मन्दी, चाँदी में घटा बढ़ी होकर रुख तेज होवे। चावल गेहूं रस घी तेल विनौला और सरसों में तेजी आवे। हैजे आदि की शिकायत होवे। कहीं जल और घास की कमी का अनुभव होवे। सरकार और प्रजा में पारस्परिक भेद भाव बढ़े। चोरी लूट खसूट और आग की वारदातें भी हों। ति. १, ४, ५, ८, ९, ११, १२, १३, को कहीं २ थोडी वर्षा होवे। शकुन विचार— ज्येष्ठ वदी जो पंचमी बाजे दक्षिण वाय। घृत, तैल, तिल, लाभ दे आसो जाके माय। ज्येष्ठ वदी मावस दिना मेघ घटा होजाय। अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो ऐसा योग बताय।

ज्येष्ठकृष्ण ३० गुराविष्टम् ०।० दिनगणः ६६४२

३ बु. म. | १ शु. | ४ के. | सू. चं. गु. २ | १२ | ५ | ११ | ६ श. | ८ | १० रा. | ७ | ९

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	२	१	०	५	९	३
२६	४	१५	१४	११	२७	१२	१२
२७	४२	२३	२३	२१	३४	२०	२०
१४	२३	२९	३४	१७	२८	३४	३४
५७	४०	०	१३	५०	१	३	३
२	२०	४४	५२	४१	११	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
क्रां.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ.	मृ.	आ	रो.	पू.फा.	चि	श्र	पुन.
२	४	३	२	४	२	१	२

संवत् २०१० शका १८७५ ज्येष्ठशुक्लपक्षः ७

दि. मा.		ति. वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि	अं. जून	मु. मुहर्रम	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३४	५१	१	शु.	३५	३	मृ.	२०	१९	शू.	५८	४०	कि.	५	३८	३०	१२	२९	मिथुने	५	२६	७	२२	१	२७	२४	५५
३४	५२	२	श.	३४	१०	आ.	२१	५४	वृ.	५६	४५	बा	४	३६	३१	१३	३०	मिथुने	५	२६	७	२३	१	२८	२१	४
३४	५३	३	र.	३६	३८	पुन.	२४	४५	ध्रु.	५६	१७	तै.	५	२१	अ	१४	१	कर्के ९।३	५	२६	७	२४	१	२९	१८	५३
३४	५५	४	सो.	३९	१०	पु.	२८	४७	व्या.	५५	४२	व.	८	१०	२	१५	२	कर्के	५	२६	७	२४	२	०	१५	५२
३४	५७	५	मं.	४२	१३	श्लि.	३३	५५	ह.	५६	२८	ब.	११	१	३	१६	३	सिं ३३।५५	५	२०	७	२४	२	१	१२	५०
३४	५८	६	बु	४७	२१	म.	३९	५२	व.	५७	४६	कौ.	१५	७	४	१७	४	सिंहे	५	२६	७	२५	२	२	९	४६
३५	००	७	गु.	५२	२०	पूफा	४६	१८	सि.	५९	२५	ग.	१९	५०	५	१८	५	सिंहे	५	२६	७	२६	२	३	६	४२
३५	१	८	शु.	५७	२६	उफा	५२	५३	व्य.	६०	००	वि.	२४	१६	६	१९	६	क २।५७	५	२६	७	२६	२	४	३	३७
३५	३	९	श.	६०	००	ह.	१९	४	व.	१	५०	बा.	२१	४७	७	२०	७	कन्यायाम्	५	२६	७	२६	२	५	०	३०
३५	४	९	र.	२	५	चि.	६०	००	व.	२	२४	कौ.	२	८	८	२१	८	तु. ३१।५१	५	२५	७	२७	२	५	५	२७
३५	६	१०	सो.	६	४	चि.	४	३८	प.	३	१४	ग.	६	४	९	२२	९	तुलायाम्		२५	७	२७		६	५४	२२
३५	८	११	मं.	८	५५	स्वा.	९	११	शि.	३	१३	वि.	८	५९	१०	२३	१०	वृ ५६।४८	५	२६	७	२८	२	७	५१	१७
३५	३	१२	बु.	१०	५१	वि.	१२	४	सि	२	२३	वा.	१०	५१	११	२४	११	वृश्चिके	५	२७	७	२८	२	८	४८	११
३५	१	१३	गु.	११	१८	अनु.	१४	५०	सा.	२७	३५	तै.	११	१८	१२	२५	१२	वृश्चिके	५	२७	७	२७	२	९	४५	५
३५	००	१४	शु.	१०	२७	ज्ये	१५	४४	शु.	५३	४२	व.	१०	२७	१३	२६	१३	ध १५।४४	५	२७	७	२७	२	१०	४१	५८
३४	५८	१५	श.	८	२५	मू.	१५	२९	ब्र.	४८	५६	व.	८	२५	१४	२७	१४	धनुषि	५	२८	७	२७	२	११	३८	४९

(१२ जून से २७ जू. ५३ ई.) उत्त गो.सा कर्का. द.

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। बु. सूर्यास्तबाद प. क्षितिज में और श. मध्याकाश दीखेगा। गु.श. सूर्यो. से पहिले पूर्व में दीखेंगे।

अयनं वर्षर्तु

पुन बुध: ४५।३७ आर्द्राभौमः ५५।३४ मरि. शुक्रः १७।२१ च. द. सं. मिथनेऽर्कः ४३।२० मु. ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर सन्ध्याल †

भ. ८।१० उ. ३९।१० या. † मु. १० मु. ३०

भ. ५२।२० उ उ. फा. ॥॥॥ऽ॥ ल. १ अंश १३ या.

भ. २४।५३ या. b शुक्रस्य पादवेधाद्वेधाभावः। ‡ शनि ४०।०

कर्के बुधः ३५।१९ रो. ३ गुरुः ५४।४४ ह. ।ऽ।।।ऽ।।। ल. २ भू.दा.

आर्द्रायां रविः ४४।४९ सा. कर्के भानुः १२।४ दक्षिणायनं ×

भ. १७।३१ उ. श्री गंगादशहरा × वर्षर्तुः प्रा.

भ. ८।५९ या. निर्जला ११ व्र. पुष्ये बुधः १५।५५ मार्गी ‡

प्रदोष व्र. अनु. ऽसू ऽ।ऽ भू. ।।।।। ल. २ चं. शु. दानात् b

भ. १७।२७ उ. ३९।२६ या. सत्य व्र. मू. ।।।।ऽ अ. ऽऽ। ÷

कृत्तिकायां शुक्र ३०।४५ ÷ गणितेन क्रांतिसाम्याभावः ल. १

{नदी में ही स्नान करके गंगा की पूजा करें। यदि गंगा में न जा सके तो सतलज आदि}

+सेवन. कटु तथा मिथ्याभाषण, चुगली, निन्दा, व्यर्थ. भाषण ∅

∅ पराई वस्तुको चाहना, दूसरे का बुरा सोचना' ये १० पाप —दूर हो जाते हैं।

ज्येष्ठशुक्ल ८ शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगणः

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	२	२	१	०	५	९	३
४	१०	२७	१६	१८	२७	११	११
३	३	५१	१३	३०	२७	५५	५५
३७	१२	३६	५७	५	३०	८	८
५६	३९	८४	१३	५५	०	३	३
५९	५८	२४	४४	४५	३१	११	११
—	मा	मा.	मा	मा.	व.	व.	व.
—	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मृ	आ.	पु	रो	भ.	चि.	श्र	पुन
४	२	३	३	२	२	१	३

४ के. | २ गु. | ३ सू मं बु. | ५ चं. | १ शु. | ६ श. | १२ | ७ | ९ | ११ | ८ | १० रा.

इस पक्षमें सोना चान्दी पीतल कांसा आदि धातुओं में अच्छी तेजी आवे। ति. ९ रविवार से आगे रुई में २०-२५ टका की मन्दी होवे। चान्दी में करीब दो टका की तेजी. सफेद वस्तुओं में कुछ सस्तापन हो। रुई अलसी सण और खांड का भाव कुछ मन्दा रहे। इस पक्ष के आरम्भ में सरसों बेचने का सौदा करे तो लाभ होवे। लकड़ी कोइले के भाव में तेजी आवे। कहीं हवाई जहाज की दुर्घटना से हानि होवे। ति ८, ९, १०, ११, १२, १५, की थोड़ी वर्षा का योग है। घा० वि०—ज्येष्ठ मासमें आर्द्रासे चित्रातक जोय नभ में चमके बिजली अथवा बादल होय।

ज्येष्ठशुक्ल १५ शनौइष्टम् ०।० दिनगणः

४ बु. के. | २ गु. | ३ सू. मं. | १ शु. | ५ | ६ श. | १२ | ७ | ९ चं. | ११ | ८ | १० रा

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
२	२	३	१	०	५	९	३
११	१५	७	१८	२६	२७	११	११
३८	२१	२१	२	९	२६	२९	२९
४९	४३	४९	१३	४३	५१	४१	४१
५६	३९	६०	१३	६२	०	३	३
५१	४३	२३	२५	४२	१६	११	११
—	मा	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आ.	अ'.	पु	रो.	कृ.	चि.	ध.	पु
२	३	२	३	१	२	१	३

ज्येष्ठसुदी सप्तमदिने बिजुरी मे निहार। दक्षिणदिशि वायु चले तिल से लाभ अपार ॥ ज्येष्ठ चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाय। जितना भी यह योग हो उतना जल टपकाय : दशहरा दशमी को संवत्सरका पक्ष माना है इसलिये उसदिन विशेष स्नान और दान करनेसे बिना दी हुई वस्तुपर अपना हक जमा लेना, तीनों प्रकार की अवैध हिंसा और परस्त्री +

संवत् २०१० शकः १८७५ आषाढ़कृष्ण पक्षः ८ (२८ जूनसे ११ जुलाई १९५३ ई०) द. उ.गो.वर्षर्तुः

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. ता.	अं. ता.	मु.	चन्द्र. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		मिश्रमानसूर्यस्पष्टः [illegible]			
३४	५७	१	र.	५	१८	पू.षा	१४	४	इं	४३	२४	कौ.	५	१८	१५	२८	१५	म.२८।३१	५	२९	७	२६	२	१२	३५	४०
३४	५५	२	सो.	१	१४	उ.षा	११	२४	वै.	३७	५	त.	१	१४	१६	२९	१६	मकरे	५	२९	७	२७	२	१३	३२	३२
क्षयः		३	मं.	५६	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५४	४	बु.	५०	४७	श्र.	८	५१	वि.	१०	१२	व.	२३	१२	१७	३०	१७	कु.३७।३	५	३०	७	२६	२	१४	२९	२४
३४	५२	५	बृ.	४४	५२	ध.	५	१६	प्री.	२२	५६	कौ.	१७	४९	१८	जु.१	१८	कुम्भे	५	३०	७	२६	२	१५	२६	१६
३४	५०	६	शु.	३८	४१	श.	५७	६	आ.	१५	२४	ग.	११	४६	१९	२	१९	मी. ४१।८	५	३१	७	२७	२	१६	२३	८
३४	४९	७	श.	३२	२७	उ.भा.	५२	२७	सौ.	७	४५	वि.	५	३४	२०	३	२०	मीने	५	३१	७	२७	२	१७	२०	००
३४	४७	८	र.	२६	२२	रे.	४९	३	शो.	५२	५०	कौ	२६	२२	२१	४	२१	मे.४९।३	५	३२	७	२६	२	१८	१६	५२
३४	४६	९	सो.	२०	४२	अ.	४५	३४	तु.	४५	४८	त.	२०	४२	२२	५	२२	मेष	५	३२	७	२६	२	१९	१३	४४
३४	४४	१०	मं.	१५	३२	भ.	४२	४७	सु.	३९	२२	वि.	१५	३२	२३	६	२३	वृ.५७।२७	५	३२	७	२६	२	२०	१०	३६
३४	४२	११	बु.	११	८	कृ.	४०	४७	श.	३३	३३	बा.	११	८	२४	७	२४	वृषे	५	३३	७	२६	२	२१	७	२८
३४	४१	१२	गु.	७	३६	रो.	३९	४२	गं.	२८	३४	तै.	९	३६	२५	८	२५	वृषे	५	३४	७	२६	२	२२	४	१९
३४	४०	१३	शु.	५	१०	मृ.	३९	४७	वृ.	२६	२४	व	५	१०	२६	९	२६	मि. ९।४४	५	३४	७	२६	२	२३	१	१०
३४	३८	१४	श.	३	५५	आ.	४१	१	ध्रु.	२१	१४	श	६	१५	२७	१०	२७	मिथुने	५	३५	७	२६	२	२३	५८	२
३४	३६	३०	र.	४	११	पुन.	४३	३५	व्या	१९	१३	ना.	४	११	२८	११	२८	क.३०।२७	५	३५	७	२५	२	२४	५४	५६

ग्रहदर्शन—मं० अस्त है । ब. सूर्यास्तबाद पश्चिम में और शनि खमध्य में दीखेगा । गु. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेगा ।

भ. २८।४६ उ. ५६।१८ वा.

† जूता छत्री लूण आंवला आदि देने चाहिये और भगवान् ‡

वृषे शुक्रः ५२।४५ पंचकारम्भः ३७।३ श्रीगणेश ४ व्र. घ. +

जुलाई ७ ता. ३१ ।+ ।।।।ऽचौ. घ. ४१ उ. ऽऽ।। ल. १ वा. २

भ. २८।४१ उ.

भ. ५।३४ या. रे. ।।।।।ऽऽ।ऽ आवश्यके जपदानात् ल. २

पुनः भौमः १।२२ पंचकसमाप्तिः ४९।३

भ. ४८।७ उ. पुनः रवि. ४८।५१ रो. ४ गु. ५५।३३

भ. १५।३२ या. ÷ चन्द्र लग्नमें भयप्रद नहीं)

योगिनी ११ व्र. रो. ।ऽऽ गु. ।।।।ऽ।। ल. २ (वृष कर्क का ÷

प्रदोष व्र. ‡ की पूजा करें । इस मास में प्याऊ (छबील) †

भ. ५।१० उ. ३४।३२या. † लगानेसे सब पाप दूर होजाते हैं ।

रो. शुक्रः ३५।४२ पितृकार्येऽमा

वक्रीबुधः १।१३ देवकार्येऽमा

आषाढ़कृष्ण ८ शनौ वष्टम् ०।० दिनगण: ६६६५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	३	१	१	५	९	३
१८	१९	१२	१९	३	२७	११	११
१६	५९	४४	१४	११	३१	७	७
५२	६	४१	२०	१	३४	२६	२६
५६	३९	३४	१३	६१	०	१	३
५२	३५	४०	७	१७	९	११	११
	मा	मा	मा.	मा.		व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.		अ.	अ.
आ.	आ.	पुष्य	भ.	रो.	~	श्र	पूभा.
४	४	३	२	३	२	१	३

४ के.बु.
२ शु. गु.
५
३ सू. मं.
१
६ श.
१२ चं.
७
९
११
८
१० रा.

इस पक्ष में बालकों को शीतला आदि रोग का भय हो । जिस्त सण और दवाइयों के भाव में तेजी हो । सोना चांदी के भाव कुछ सुधरें । ति.—५ से रूई में कुछ मन्दी अनाज में कुछ तेजी होवे । चांदी में खासी मन्दी आवे । मिर्च और सरसों में भी कुछ तेजी का रुख बने । गर्मी ज्यादा बढ़े । कहीं मोटर और हवाई जहाज की दुर्घटना का भय होवे : और राज्य के प्रधान को अपने विरुद्ध जनता की ओर से बहुत कुछ सुनना पड़े । ति. १, २, ३, ४, ६, ७, ११, १२, १३, को वर्षा के योग हैं, किन्तु मंगलके कारण सन्तोषप्रद वर्षा न हो

शकुनविचार—आषाढ़वदी जो अष्टमी

आषाढ़ कृष्ण १० शनाविष्टम् ०।० दिनगण: ६६७२

४ के.
२ गु. शु
५
३ सू. मं. बु.
१
६ श.
१२
७
९
११
८
१० रा.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के
२	२	३	१	१	५	९	
२४	२४	१४	२१	१०	२७	१०	१
५४	३४	५१	५	२७	४१	४५	४
५६	५८	४४	१८	११	१	१०	१
५६	३९	४	१२	६३	१	३	
५४	१९	५२	४४	००	३८	११	१
	मा.	मा.	मा	मा.	मा	व.	व
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ
पुन	पु.	पुष्य	रो	रो.	वि.	श्र	पूभा
२	२	४		४	२	१	३

[illegible] ला निश्चय पड़े दुकाल । आषाढ़ बदी नामी दिना बिजली

बादल उगे छन्द । वर्षा अच्छी होवतो मिटे सभी दुखद्वन्द ॥ १॥ काला बादल करबरी धौली कर सुकाल । [illegible] इस मास में वामन भगवान के लिये

बादल उगे चन्द । वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दुख द्वन्द ॥ ८ ॥ काला बादल करवरा धौला करे सुकाल । चन्दा ऊग निर्मला निश्चय पड़े दुकाल । आषाढ़ बदी नामी दिना बिजली

... इस मास में वामन भगवान के लिये ...

संवत २०१० शकः १८७५ आषाढ़शुक्ल पक्षः १[illegible]

दि. घ.		ति. वा.		न. घ.		न.	घं. प.		यो.	घ. प.		क.	घ. प.		आकाश	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३४	३५	१	र.	५	५८	पुन	४७	२३	हृ.	१७	५६	व.	५	५८	२९	१२	२९	कर्के	५	३५	७	२५	२	२५	५१	५०
३४	३३	२	सो.	९	१	श्ले.	१२	१७	वै.	१७	४१	कौ.	९	३	३०	१३	१	सि५२।१७	५	३६	७	२५	२	२६	४८	४५
३४	३२	३	मं.	१३	२२	म.	१८	००	सि.	१८	१८	ग.	१३	२२	३१	१४	२	सिंहे	५	३६	७	२५	२	२७	४५	४०
३४	३२	४	बु.	१८	३०	पू.फा	६०	००	व्य.	१९	३०	वि	१८	३०	३२	१५	३	सिंहे	५	३७	७	२५	२	२८	४२	३५
३४	२९	५	गु.	२१	६	पू.फा	०	२३	व	२१	६	बा.	२१	६	श्र	१६	४	क. २१।११	५	३८	७	२५	२	२९	३९	३१
३४	२७	६	शु.	२९	२३	उ.फा	१०	५७	प.	२२	४६	तै.	२९	२३	२	१७	५	कन्यायाम	५	३८	७	२५	३	०	३६	२९
३४	२६	७	श.	३४	६	ह.	१७	१६	शि.	२४	१०	ग.	१	४६	३	१८	६	तु. ४९।३८	५	३८	७	२४	३	१	३३	२८
३४	२४	८	र.	३६	४०	चि.	२१	०	सि	२५	५	वि.	५	५४	४	१९	७	तुलायाम्	५	३९	७	२४	३	२	३०	२६
३४	२२	९	सो.	४०	३	स्वा.	२७	४६	सा.	२५	१६	बा.	८	५२	५	२०	८	तुलायाम	५	३९	७	२४	३	३	२७	२५
३४	२१	१०	मं.	४०	५४	वि.	३१	३०	शु.	२४	२०	तै.	१०	२८	६	२१	९	वृ. १५।३४	५	४०	७	२३	३	४	२४	२४
३४	१९	११	बु.	४०	१०	अनु	३३	५८	शु.	२२	१[illegible]	व.	१०	३४	७	२२	१०	वृश्चिके	५	४०	७	२३	३	५	२१	२३
३४	१७	१२	गु.	३८	८	ज्ये.	३५	७	ब्र.	२०	१०	ब.	९	११	८	२३	११	ध. २५ ७	५	४१	७	२२	३	६	१८	२३
३४	१[illegible]	१३	शु.	३७	९	मू.	३५	७	ऐं.	१६	१९	कौ.	७	३८	९	२४	१२	धनुषि	५	४१	७	२२	३	७	१५	२४
३४	११	१४	श.	३४	७	पू.षा	३३	५५	वैं.	११	३९	ग.	५	३५	१०	२५	१३	म. ४८।२५	५	४२	७	२१	३	८	१२	२६
[illegible]	७	१५	र.	३०	७	उ.षा	३१	५५	वि.	६ ५९	८ ५७	वि.	२	७	११	२६	१४	मक.रे	५	४२	७	२१	३	९	९	२९

(१२जु. से २६जु. १९५३ ई.) दक्षि.उ. गोलः वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन–मं अस्त है । ति. ५ से बु. पश्चिम में अस्त । गु. शु. सूर्योदय से पूर्व में देखे । श. सूर्यास्तबाद खमध्य से पश्चिममें ✕

✕ आता दीखेगा ।

चन्द्रदर्शनम्

जिल्काद मु. ११ श्रीजगदीश रथोत्सव

भ. ४५।५६ उ, = में निम्बू गलगल, राजमाष, मूली. +

भ. १८।३० या. + कद्दू, गला ये वस्तुएं छोड देवे ।

सं. कर्कार्कः २१।१६ मु. ४५ पुण्यकाल २१।३६ या. पश्चि- ‡

‡मास्तो बुधः ५४।११ मु. ४५

भ. ३४।६ उ.

भ. ५।५४ या. पुष्ये रविः ५२।१३ कर्के भौमः २७।३५ स्वा. §

§ ।।।।।।ऽऽ।। ल. १ वा. २ चन्द्रदा.

मू. १ गुरुः ५४।६

भ. १०।१४ उ. ४०।१४ या. देवशयनी ११ व्र. मृगे शुक्रः +

+५८।१३ सा. सिंहेभानु ४९।४५ चातुर्मास्य व्रतनियमाद्यारम्भश्च

पुष्ये भौमः २५।६ प्रबोध व्र.

भ. ३४।७ उ. उ. षाः ४ राहुः पुष्य २ केतुः ११।५६ सत्य व्र।

भः ३१. याः चन्द्रग्रहणम् श्रीगुरुव्यासयोः पूजा सायान्हे:वायुपरीक्षा

आषाढ़शुक्ल ८ रवाविष्टम् ०।०   दिनगणः ६६८०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	१	३	१	१	५	९	३
२	२९	१२	२२	१९	२७	१०	१०
३०	४८	५५	४४	०	५७	१९	१९
२६	३१	२७	५३	७	३६	४३	४३
५१	३१	२८	१२	६४	२	३	३
५८	६	८	१३	५६	२५	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	ब.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन.	पुन	[illegible]	रो.	रो.	चि.	श्र.	[illegible]
४	३	३	४	३	२	१	३

५ | ३ मं. | २ | ४ | गु. शु. | ६ श | सू. बु. के. | ७ चं. | १ | ८ | १० रा. | १२ | ९ | ११

इस पक्षमें रूई में १५–२० टके की तेजी आकर बाद में मन्दी आवे । चांदी में घटा बढ़ी होकर २–४ टका की तेजी आवे और शेयरों के भाव में भी तेजी होवे । घी गुड़ खांड शक्कर तिल तेल बिनौला मूंग फली और कपूर का भाव तेज होवे । गेहूं जौ चणा में कुछ मन्दा होवे । छोटे व्यापारियों को लाभ अच्छा होवे । वकील और दलालों पर कोई सरकारी कण्ट्रोल जैसा कानून बनने का विचार होवे । इस पक्षमें किसी बड़े आदमी की मृत्यु होवे । तिः ५, ६, ७, ९, १५ को वर्षा के योग हैं । इस पक्षमें कहीं ज्यादा वर्षा से भी कष्ट होगा, और वर्षा सब जगह होगी ।

आषाढ़शुक्ल १५ रवाविष्टम् ०।०   दिनगणः ६६८७

५ | ३ | ४ | सू. बु. मं. के | २ | ६ श | गु. शु. | ० | १ | ८ | १० चं. रा. | १२ | ११ | ९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	१	१	५	९	३
९	४	८	२४	२६	२८	९	९
९	२१	२३	८	४०	१७	५७	५७
२९	३३	५६	५९	७	७	२७	२७
५७	३८	३९	११	६६	३	३	३
६	५५	५८	४९	१३	२	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पु	[illegible]	[illegible]	स.	मू.	चि.	[illegible]	[illegible]
२	१	२	१	[illegible]	२	२	[illegible]

शकुनविचार—आषाढ़ सुदी नौमी दिना ना बादल ना बीज । हलफाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज । चातुर्मास्य व्रत के आरम्भ करते समय 'इद कार्य्य नियम निवेदन कुर्वे मेऽच्युतः । इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरतस्तव। गृहीतेऽस्मिन् व्रते देव पंचत्वं यदि वा भवेत् । तदा भवतु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ।" इस मन्त्र से प्रार्थना पूर्वक संकल्प कर चातुर्मास-

सवत् २०१० शकः १८७५ श्रावणकृष्णपक्षः १०

ति.	मा.	ति.	वा.	न.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ	प	क.	घ.	प.	हि. श्रावण	अं. जुलाई	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. वेल्वे		सू. अ. वेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाल			
३४	३	१	चं	२५	१७	प्र.	२९	२	मा.	५३	९	कौ.	२५	१७	१२	२७	१५	कुं.५७।१६	५	४२	७	२०	३	१०	६	३४
३४	००	२	मं	१९	५२	ध.	२५	३१	सौ	४५	५८	ग.	१९	५२	१३	२८	१६	कुंभे	५	४३	७	१९	३	११	३	४०
३३	५७	३	बु.	१३	५६	श.	२१	३६	शो.	३८	२२	वि.	१३	५६	१४	२९	१७	कुंभे	५	४४	७	१९	३	१२	०	४७
३३	५३	४	गु.	७	४६	पू.भा	१७	२६	अ.	३०	४०	बा.	७	४६	१५	३०	१८	मी. ३।२९	५	४५	७	१९	३	१२	५७	५६
३३	५०	५	शु.	१	३४	उ.भा	१३	१५	सु	२३	२	तै.	१	३४	१६	३१	१९	मीने	५	४५	७	१८	३	१३	५५	६
क्षयम्		६	शु.	१३	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	·	०	०	०	०	०
३३	४७	७	श	४२	४०	रे.	९	१४	वृ.	०५	३४	वि.	२२	३८	१७	अ॰	२०	मे. ९।१०	५	४६	७	१८	३	१४	५२	१७
३३	४३	८	र.	४४	३४	अ.	५	४०	शू.	८	२७	बा.	१७	१०	१८	२	२१	मेष	५	४७	७	१	३	१५	४	२८
३३	४०	९	चं.	४०	८	भ.	२	१८	ग.	९ ५५	४९ ५३	तै.	१२	२१	१९	३	२२	व.१७।६	५	४८	७	१५	३	१६	४६	४१
३३	३६	१०	मं.	३६	४	कृ.	० ५९	३० १०	ध्रु.	५०	३८	ब.	८	२५	२०	४	२३	वृष	५	४९	७	१४	३	१७	४३	५५
३३	३३	११	बु.	३४	०	मृ.	५८	५६	व्या.	४६	१५	ब.	५	२१	२१	५	२४	मि. २९।३	५	४९	७	१३	३	१८	४१	११
३३	३०	१२	गु.	३२	३९	आ.	५९	५३	ह.	४२	४९	कौ.	३	१९	२२	६	२५	मिथुने	५	५०	७	१३	३	१९	३८	२८
३३	२७	१३	शु.	३२	३३	पुन.	६०	००	व.	४०	२५	ग.	२	३०	२३	७	२६	क.४६।४१	५	५१	७	१२	३	२०	३५	४६
३३	२३	१४	श.	३३	४९	पुन.	२	८	सि.	३९	४	वि.	३	११	२४	८	२७	कर्के	५	५१	७	१२	३	२१	३३	७
३३	१	३०	र.	३६	१३	पुष्य	५	३८	व्य.	३८	२३	च.	५	१	२५	९	२८	कर्के	५	५१	७	१०	३	२२	३०	२९

(२७जुलाई ९अग. १९५३ ई०)द. अ.उ.गो.वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है । ति. ९ से बु. पूर्वमें उदय होगा । गु. शु. सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें । श. पूर्व रात्रिसे पश्चिम में दीखेगा ।

पञ्चक प्रारम्भः ५७।१६ + श्रावणमें प्रति सोमवार को ×
भ. ४६।५४ उ. × यदि समर्थ हो तो निराहार व्रत रखे ÷
भ. १३।५६ या. मिथुने शुक्रः ०।१९ श्रीगणेश ४ व्र.
उ. भा. ।।।।ऽनू. घ. ४८ उ. ।ऽ।। ल. २ वा ३
भ. ५५।३० उ. रे. ।।।।।ऽ।।। ल. २ (वा. ३ अंश २० या)आव.
‡अगस्त ८ ता० ३१ जन्मदिनलो. मा. तिलक पंचकसमाप्तिः ९।१४
भ. २२।३८ या. अश्वि. ऽनु. ।।।ऽ श. ऽचौ. ।ऽ।। ल २ वा. ३ ‡
आश्लेषायां रविः ५३।० b वान् प्रसन्न होते हैं ।
आर्द्रायां शुक्रः ५७।२५ पूर्वोदयो बुधः १२।२७
भ. ८।२५ उ. ३६।४३ या. मार्गी बुधः १९।७
कामदा ११ व्र. ÷ नहीं तो रात्रिको भोजन कर लेवें । =
प्रदोष व्र. =शिव तथा पार्वती की प्रतिमा बनाकर 'ॐनमः †
भ. ३२।३३ उ. † शिवाय' मन्त्रका जप करनेसे शिवलोककी —
— प्राप्ति होती है और अपुत्रको पुत्र, निर्धनको धन, मूर्खको ø
भ. ३।११ या. मृगे २ गुरुः ३०।६ हरियाली ३०
ø विद्या प्राप्त होता है. घी, दूध, बड़ा तिल, जौ, फल देनेसे भग-b

श्रावणकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	१	२	५	९	३
१५	८	४	२५	४	२८	९	९
४९	५३	३६	२९	२७	४०	३५	३५
२८	१३	५९	१७	५२	४५	१२	१२
५७	३८	११	११	६७	३	३	३
११	४४	९	१२	१३	३	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	पुष्य २	पुष्य १	पू. १	पू. ४	चि. २	पू.भा. ४	पुष्य २

५ — ३ शु.
४ — सू.मं.बु.के
२
६ श — गु.
७ — १ चं.
८ — १०रा. — १२
९ — ११

इस पक्षमें रूई कपास सूत कपड़ा और सण में काफी मन्दी होगी । अलसी में घटा बढ़ी होकर रुख तेज हो । अनाजका भाव समान रहें किन्तु बड़े शहरोंमें अनाज की तंगी होवे । विदेशों की हवा बिगड़े और वहीं आपसमें खून खराबी भी होवे। फौजियों को कष्ट होवे । नई २ सभा सोसाइटियां बनें । धार्मिक विचारों पर झगड़े हों । कहीं वर्षा ज्यादा हो कहीं कम समुद्रमें तूफान आवे । मजदूर पार्टी कष्ट का अनुभव करे । कहीं किसी देशान्तरमें ईश्वरीय कोपसे भारी उपद्रव द्वारा नाश होवे, और बिजली आदिसे भी हानि हो। ति. ३, ४, ९, १०, ११, को वर्षाके योगहैं।

श्रावणकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० — दिनगणः ६७०१

५ — ३ शु.
४ — सू.मं.बु.के. च — २
६श — गु.
७ — १
८ — १०रा. — १२
९ — ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	१	२	५	९	३
२२	१३	५	२६	१०	२९	९	९
३०	२३	१७	४५	२३	८	१२	१२
२९	३२	१२	१६	४	३५	५५	५५
५७	३८	२५	१०	६८	४	३	३
२२	३१	३९	१४	१७	१३	११	११
सौ.	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले २	पुष्य ४	पुष्य १	म २	आ. २	चि २	पू.भा. ४	पुष्य २

घा. वि०—श्रावण पहली पंचमी, बर्षे करे निहाल । पवन चले तो [illegible] नम बर्षा होय, अच्छा संबत होयगा, संशयकरा न कोय ।+

वा० वि०–श्रावण पहली पंचमी, बर्षे करे निहाल। पवन बले तो आन बुरी पड़े हलाहल काल। श्रावणवदी एकादशी, जो नम बर्षा होय, अच्छा संवत होयगा, संशयकरो न कोय।+

संवत् २०१० शाका १८७५ श्रावणशुक्लपक्षः ११

मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	श्रावण	अगस्त	जिल्हिज	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
	१५	१	च.	३९	४२	इले.	१०	१५	व.	३८	५८	कि.	७	५७	२६	१०	२०	सिं १०।१५	५	५२	७	९	३	२३	७	५३
	१२	२	मं.	४	११	म.	१५	४९	प.	४०	१	बा.	११	५६	२७	११	३०	सिंहे	५	५३	७	८	३	२४	२५	१७
	८	३	बु.	४९	७	पूफा	२२	२	शि.	४१	३१	तै.	१६	३२	२८	१२	१	क. ३८।४०	५	५४	७	७	३	२५	२२	४२
३	५	४	गु.	१८	१३	उफा	२८	३५	सि.	४३	९	व.	२१	४०	२९	१३	२	कन्यायाम्	५	१४	७	७	३	२६	२०	८
३	१	५	शु.	५८	५९	ह.	३४	५८	सा.	४४	३०	व.	२६	३६	३०	१४	३	कन्यायाम्	५	५५	७	६	३	२७	१७	३५
२	५७	६	श.	६०	००	चि.	४०	४२	शुभ	४५	३६	कौ	३१	३	३१	१५	४	तु. ७।५३	५	५५	७	५	३	२८	१५	६
१२	५६	६	र.	३	७	स्वा.	४५	२३	शु.	४५	५६	तै.		७	श्रा	१६	५	तुलायाम्	५	[illegible]	७	४	३	२९	१२	३९
१२	५०	७	चं.	६	१२	वि.	४९	५०	ब्र.	४५	१९	व.	६	१२	२	१७	६	वृ. ३३।५१	[illegible]	१६	७	३	४	०	१०	१४
३	४६	८	मं.	८	१६	अनु.	५२	३२	ऐं.	४३	५८	ब.	८	१४	३	१८	७	वृश्चिके	५	[illegible]	७	२	४	१	७	५०
३२	४२	९	बु.	८	५५	ज्ये.	५४	१	वै.	४१	२३	कौ.	८	५५	४	१९	८	ध. ५४।१	५	१८	७	१	४	२	५	२७
३२	३९	१०	गु.	८	१९	मू.	५४	१३	वि.	४६	४६	ग.	८	१९	५	२०	९	धनुषि	५	५८	७	०	४	३	३	५
३२	३५	११	शु.	६	०९	पू.षा	५६	२९	प्री.	३३	१४	वि.	६	२९	६	२१	१०	धनुषि	५	५८	६	५९	४	४	०	४
३२	३१	१२	श.	३	३३	उ.षा	५१	३१	आ.	२७	४३	बा.	३	३३	७	२२	११	म. ७।५४	५	५९	६	१८	४	४	१८	२७
अवम		१३	श.	५६	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	२८	१४	र.	५४	५४	श्र.	४८	४६	सौ.	२१	४६	ग.	२७	१६	८	२३	१२	मकरे	५	५९	६	५७	४	५	५६	१०
३२	२४	१५	च.	५९	३२	ध.	४५	२३	शो.	१५	००	वि.	२२	१२	९	२४	१३	कुं. १७।४	५	५०	६	५६	४	६	५३	५०

(१०अग.से २४ अग. १९५३ई.) दक्षि. गो. वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन–मं. अस्त, बु. शु. गु. पश्चिम रात्रि में पूर्व में दीखेंगे।
शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में देखें।

नवव्रतारम्भः ÷ दूर्वासे पूजाकरें और ब्राह्मण को पुष्पाद- ×
चन्द्रदर्शनम् × हारादिसे सन्तुष्ट करें ऐसा करनेसे सर्वभय ‡
जिल्हेज मु. १२ उ.फा. ।।।।।ऽ च. घ. ३८ उ. ऽ।।। ल. २ बा २
भ. २१।४० उ. ५४।११ या. ‡ नहीं रहता।
इलेषा, भौमः ६।१८ † जयहिन्द सं० ७ प्रा.
पुनः शुक्रः ३८।४४ भारते स्वतन्त्रोत्सवं (मेला आजादी) †
सं. मघा. सिंहेऽर्कः ४९।२२ मु. ४५ पुण्यकाल परदिने १ याम या.
भ. ६।१२ उ. ३७।१३ या.
श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी व श्रीचिन्तपूर्णी
आश्लेषा बुधः५८।२२
भ. ३७।२४ उ. चि. ३ तुलायां शनिः ७।८
भ. ६।२९ या. पवित्रा ११ व्र.
शनि प्रदोष व्र.
त्रयोदशी क्षय +तर्पणम् कर्के शुक्रः १५।२६ पंचक प्रारम्भः१६।१४
भ. ५४।१४ उ. सा. कन्यायां भानुः १३।३ शरदृतु प्रारम्भः
भ. २२।१२ या. रक्षाबन्धनम् रखड़ी (भद्रोत्तरम्) ऋषि +-

श्रावणशुक्ल ८ भौम–इष्टम् ०।० दिनमान: ६७।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	१	२	५	९	३
१	१९	१३	२८	२२	२९	८	८
७	९	४७	१४	४३	४९	४४	४४
५०	३८	४४	५७	९	३३	१८	१८
५७	३८	८०	९	६१	४	३	३
३६	२४	६	३०	२३	४९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म.	इले.	पु.	मृ.	पु.	चि.	पू.	पू.
१	१	४	२	१	२	४	२

६ श.
४ बु.म.के.
३ चं.
७
५ सू.
२
गु.
९
११
१
१० रा.
१२

इस पक्षमें खांड ऊन सूतका भाव तेजहो। सोना चान्दी और शेयरोंके भाव में मन्दी होवे। रुई में अच्छी तेजी चले। विदेशी वस्तुओंका भाव घटे। चन्द्रदर्शन सिंह राशि में मंगलवार को होगा। सो अनाज और सफेद वस्तुओं में तेजी होवे। गुड़ शक्कर के भाव में तेजी होवे। चौपायों में भैंस का भाव तेज होवे। प्रजा में रक्त विकार ज्यादा बढ़े। पूर्वी योरपमें अशान्ति ज्यादा बढ़े। ति. १२ के लगभग रुई की तेजी वालोंको सौदा सैटल कर लाभ उठा लेना चाहिये। ति. ३, ४, ५, ९, १०, १३, १४, १५ को अच्छी वर्षाके योग हैं।

श्रावणशुक्ल १५ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनमान: ६७।१६

६
४ बु.म.के.
७ श.
५ सू.
३ शु.
८
२ गु.
११
१
९
१० रा.च.
१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	१	२	६	९	३
६	२२	२३	२९	२९	०	८	८
५३	५१	२८	९	४१	१९	२५	२५
५५	१८	५६	३९	५६	५७	१३	१३
५७	३८	०	८	७०	५	३	३
४५	१३	१९	५६	४	१५	११	११
	मा	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	अ	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
म	इले.	इले.	मृ.	पु.	चि.	पू.	पू.
३	२	३	२	३	३	४	४

वा०वि०–श्रावणशुक्ला पंचमी और छटको जान। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्षपिछान॥ श्रावणशुक्ला पंचमी नागपंचमी होती है। इस दिन दर्वाजेके दोनों तरफ गोबरके सर्प बनाकर घी, दूध, जल, खिल्ला धूप, दही आर-

संवत् २०१० शकः १८७५ श्रावणकृष्णपक्षः १०

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ	प	क.	घ.	प.	हि. तारीख	अं. तारीख	मु. तारीख	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. वेलायें		सू. अ. वेलायें		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाल			
३४	३	१	चं	२५	१७	श.	२९	२	आ.	५३	९	कौ.	२५	१७	१२	२७	१९	कुं. ५७।१६	५	४२	७	२०	३	१०	६	३४
३४	००	२	मं	१९	५२	ध.	२५	११	सौ	४५	५२	ग.	१९	१२	१३	२८	१६	कुंभे	५	४३	७	१९	३	११	३	४०
३३	५७	३	बु.	१३	५६	श.	२१	२६	शो.	३८	२२	वि.	१३	५६	१४	२९	१७	कुंभे	५	४४	७	१९	३	१२	०	४७
३३	५३	४	गु.	७	४६	पू.भा	१७	२६	अ.	२०	४०	बा.	७	४६	१५	३०	१८	मी. ३।२९	५	४५	७	१९	३	१२	५७	५६
३३	५०	५	शु.	१	३४	उ.भा	१३	१५	सु	२३	२	तै.	१	३४	१६	३१	१९	मीने	५	४५	७	१८	३	१३	५५	६
क्षयम्		६	श.	१३	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३३	४७	७	श	४९	४७	रे.	९	१४	धृ.	०५	३४	वि.	२२	३८	१७	१	२०	मे. ९।१०	५	४६	७	१८	३	१४	५२	१७
३३	४३	८	र.	४४	३४	अ.	५	४०	शू.	८	२७	बा.	१७	१०	१८	२	२१	मेषे	५	४७	७	१	३	१५	४	२८
३३	४०	९	सो.	४०	८	भ.	२	१८	गं.	९/५५	४२/५३	तै.	१२	२१	१९	३	२२	वृ. १७।६	५	४८	७	१५	३	१६	४६	४१
३३	३६	१०	मं.	३६	४१	कृ.	०/५२	३०/१०	ध्रु.	५०	३८	व.	८	२५	२०	४	२३	वृषे	५	४९	७	१४	३	१७	४३	५५
३३	३३	११	बु.	३४	०	मृ.	५८	५६	व्या.	४६	१५	ब.	५	२१	२१	५	२४	मि. २९।३	५	४९	७	१३	३	१८	४१	११
३३	३०	१२	गु.	३२	३९	आ.	५९	५३	ह.	४२	४९	कौ.	३	१९	२२	६	२५	मिथुने	५	५०	७	१३	३	१९	३८	२८
३३	२७	१३	शु.	३२	३३	पुन.	६०	००	व.	४०	२५	ग.	२	३२	२३	७	२६	क. ४६।४१	५	५१	७	१२	३	२०	३५	४६
३३	२३	१४	श.	३३	४९	पुन.	२	८	सि.	३९	४	वि.	३	११	२४	८	२७	कर्के	५	५१	७	१२	३	२१	३३	७
३३	१०	३०	र.	३६	१२	पुष्य	५	३८	व्य.	३८	३३	च.	५	१	२५	९	२८	कर्के	५	५१	७	१०	३	२२	३०	२९

(२७जुलाई ९अग. १९५३ ई०) द. अ.उ.गो. वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. अस्त है। ति. ९ से बु. पूर्वमें उदय होगा। गु. शु. सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें। श. पूर्व रात्रिसे पश्चिम में दीखेगा।

पञ्चक प्रारम्भः ५७।१६ + श्रावणमें प्रति सोमवार को ✕
भ. ४६।५४ उ. ✕ यदि समर्थ हो तो निराहार व्रत रखे ÷
भ. १३।५६ या. मिथुने शुक्रः ०।१९ श्रीगणेश ४ व्र.
उ. भा. ।।।।ऽ नू. घ. ४८ उ. ।ऽ।। ल. २ वा ३
भ. ५५।३० उ. रे. ।।।।।ऽ।।। ल. २ (वा. ३ अंश २० या) आव.
‡ अगस्त ८ ता० ३१ जन्मदिनलो. मा. तिलक पंचकसमाप्तिः ९।१४
भ. २२।३८ या. अश्वि. ऽ शु. ।।।ऽ श. ऽचौ. ।ऽ।। ल २ वा. ३ ‡
आश्लेषायां रविः ५३।० b वान् प्रसन्न होते हैं।
आर्द्रायां शुक्रः ५७।२५ पूर्वोदयो बुधः १२।२७
भ. ८।२५ उ. ३६।४३ या. मार्गी बुधः १९।७
कामदा ११ व्र. ÷ नहीं तो रात्रिको भोजन कर लेवें। =
प्रदोष व्र. =शिव तथा पार्वती की प्रतिमा बनाकर 'ॐनमः †
भ. ३२।३३ उ. † शिवाय' मन्त्रका जप करनेसे शिवलोककी —
— प्राप्ति होती है और अपुत्रको पुत्र, निर्धनको धन, मूर्खको ∅
भ. ३।११ या. मृगे २ गुरुः ३०।६ हरियाली ३०
∅ विद्या प्राप्त होता है। घी, दूध, बड़ातिल, जौं, फल देनेसे भग-b

श्रावणकृष्ण ८ रवाविष्टम् ०।० — दिनगणः ६६९४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
३	३	३	१	२	५	९	३
१५	८	४	२९	४	२८	९	९
४९	५३	३६	२९	२७	४०	३५	३५
२८	१३	२९	१७	५२	४५	१२	१२
५७	३८	१२	११	६७	३	३	३
११	४४	९	१२	१७	२	११	११
	मा.	ब.	म.	मा.	मा.	ब.	ब.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य. ४	पुन. २	पुन. १	मृ. १	मृ. ४	चि. २	उ.षा. ४	पुष्य. २

५ ३ शु.
४
६श सू.मं.बु.के २ गु.
७ १ चं.
८ १०रा. १२
११
९

इस पक्षमें रूई कपास सूत कपड़ा और सण में काफी मन्दी होगी। अलसी में घटा बढ़ो होकर रुख तेज हो। अनाजका भाव समान रहें किन्तु बड़े शहरोंमें अनाज की तगी होवे। विदेशो की हवा बिगड़े और कहीं आपसमें खून खराबी भी होवे। फौजियों को कष्ट होवे। नई २ सभा सोसाइटियां बनें। धार्मिक विचारों पर झगड़े हों। कहीं वर्षा ज्यादा हो कहीं कम समुद्रमें तूफान आवे। मजदूर पार्टी कष्ट का अनुभव करे। कहीं किसी देशान्तरमें ईश्वरीय कोपसे भारी उपद्रव द्वारा नाश होवे, और बिजली आदिसे भी हानि हो। ति. ३, ४, ९, १०, ११, को वर्षाके योगहैं।

श्रावणकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० — दिनगणः ६७०१

५ ३ शु.
४ २
६श सू.मं.बु.के. गु.
च
७ १
८ १०रा. १२
९ ११

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
३	३	३	१	२	५	९	३
१२	१३	५	२६	१८	२९	९	९
३०	२३	१७	४५	२३	८	१२	१२
२९	३२	१२	१६	४	३५	५५	५५
५७	३८	२५	१०	६८	४	३	३
२२	३१	३९	१४	१७	१३	११	११
शी.	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्ले २	पुन. ४	पुन. १	म २	आ. २	चि २	उ.षा ४	पुष्य २

सु० वि०—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल। पवन बले तो आ... नम वर्षा होय, अच्छा संवत होयगा, संशयकरा न कोय।+

श॰ वि॰—श्रावण पहली पंचमी, वर्षे करे निहाल। पवन बहै तो आन बुरी पड़ै हलाहल काल। श्रावणवदी एकादशी, जो नभ वर्षा होय, अच्छा संवत होयगा, संशयकरा न कोय। +

संवत् २०१० शका १८७५ श्रावणशुक्लपक्षः ११

वे.मा.		ति. वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	क्रान्ति	अं.	म.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३३	१५	१	च.	३९	४२	श्ले.	१०	१५	व.	३८	५८	कि.	७	५७	२६	१०	२०	सिं १०।१५	५	५२	७	९	३	२३	७	५३
३३	१२	२	मं.	४	११	म.	१५	४९	प.	४०	१	बा.	११	५६	२७	११	३०	सिंहे	५	५३	७	८	३	२४	२५	१७
३३	८	३	बु.	४९	७	पूफा	२२	२	शि.	४१	३	तै.	१६	३२	२८	१२	१	क. ३८।४०	५	५४	७	७	३	२५	२२	४२
३३	५	४	बु.	१८	१३	उफा	२८	३५	सि.	४३	९	व.	२१	४०	२९	१३	२	कन्यायाम	५	१४	७	७	३	२६	२०	८
३३	१	५	शु.	५८	५९	ह.	३४	५८	सा.	४४	३७	ब.	२६	३६	३०	१४	३	कन्यायाम्	५	१५	७	६	३	२७	१७	३५
३२	५७	६	श.	६०	००	चि.	४०	४९	शुभ	४५	३६	कौ	३१	३	३	१५	४	तु. ७।५३	५	५५	७	५	३	२८	१५	६
३२	५४	६	र.	३	७	स्वा.	४५	५३	शु.	४५	५६	तै.	१	७	श्रा	१६	५	तुलायाम्	५	१०	७	४	३	२९	१२	३९
३२	५०	७	चं.	६	१२	वि.	४९	५०	ब्र.	४५	१९	व.	६	१२	२	१७	६	वृ. ३३।५१	५	१६	७	३	४	०	१०	१४
३२	४६	८	मं.	८	१६	अनु.	५२	३२	ऐं.	४३	५८	ब.	८	१४	३	१८	७	वृश्चिके	५	५	७	२	४	१	७	५०
३२	४३	९	बु.	८	५५	ज्ये.	५४	१	वै.	४१	२३	कौ.	८	५५	४	१९	८	ध. ५४।१	५	१८	७	१	४	२	५	२७
३२	३९	१०	गु.	८	१९	मू.	५४	१७	वि.	३७	४६	ग.	८	१९	५	२०	९	धनुषि	५	५८	७	०	४	३	३	५
३२	३५	११	शु.	६	२९	पू.षा	५३	२२	प्री.	३३	१४	वि.	६	२१	६	२१	१०	धनुषि	५	५८	६	५९	४	४	०	४
३२	३०	१२	श.	३	३३	उ.षा	५१	३१	आ.	२७	४७	बा.	३	३३	९	२२	११	म. ७।५४	५	५९	६	१८	४	४	५८	२३
अवम		१३	श.	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
३२	२८	१४	र.	५८	५८	श्र.	४८	४६	सौ.	२१	४६	ब.	२७	१६	८	२३	१२	मकरे	५	५९	६	५७	४	५	५६	१०
३२	२४	१५	च	०९	३२	ध.	४५	२३	शो.	१५	००	वि.	२२	१२	९	२४	१३	कुं. १७।४	५	५	६	५६	४	६	५३	५५

(१०अग. से २४ अग. १९५३ ई.) दक्षि. गो. वर्षर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. अस्त, बु. शु. गु. पश्चिम रात्रि में पूर्व में दीखेंगे। शनि सूर्यास्त बाद पश्चिम में देखें।

नक्तव्रतारम्भः ÷ दूर्वासे पूजा करें और ब्राह्मण को पुष्पाक्ष- ×
चन्द्रदर्शनम् × हारादिसे सन्तुष्ट करें ऐसा करनेसे सर्वभय ‡
जिल्हेज मु. १२ उ.फा. ॥॥ऽ च. घ. ३८ उ. ऽ॥ ल. २ बा ३
भ. २१।४० उ. ५४।१३ या. ‡ नहीं रहता।
श्लेषा. भौमः ६।१८ † जयहिन्द सं० ७ प्रा.
पुनः शुक्रः ३८।४४ भारते स्वतन्त्रोत्सवं (मेला आजादी) †
सं. मघा. सिंहेऽर्कः ४९।२२ मु. ४५ पुण्यकाल परदिने १ याम या.
भ. ६।१२ उ. ३७।१३ या.
श्रीदुर्गा ८ मेला श्रीनयनादेवी व श्रीचिन्तपूर्णी
आश्लेषा बुधः५८।२३
भ. ३७।२४ उ. चि. ३ तुलायां शनिः ७।८
भ. ६।२९ या. पवित्रा ११ व्र.
शनि प्रदोष व्र.
त्रयोदशी क्षय.+तर्पणम् कर्के शुक्रः १५।२६ पंचक प्रारम्भः१६।१४
भ. ५४।१४ उ. सा. कन्यायां भानुः १३।३ शरदृतु प्रारम्भः
भ. २२।१२ या. रक्षाबन्धनम् रखड़ी (भद्रोत्तरम्) ऋषि +-

श्रावणशुक्ल ८ भौम–इष्टम् ०।० दिनगणः ६७१०

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	१	२	५	९	३
१	१९	१३	२८	२२	२९	८	८
७	९	४७	१४	४३	४०	४४	४४
५०	३८	४४	५७	९	३३	१८	१८
५७	३८	८०	९	६९	४	३	१
३६	२४	६	३०	२३	४९	११	११
	मा.	मा	मा.	मा.	मा.	व	व
	अ.	उ.	ह.	उ.	उ.	अ	अ
म.	श्ले.	[illegible]	मृ.	[illegible]	चि.	[illegible]	[illegible]
१	१	४	२	१	२	४	२

६श. ४बु.म.के.
७ ५सू. ३
२
८ गु.
९ ११ १
१०रा. १२

इस पक्षमें खांड ऊन सूतका भाव तेज हो। सोना चान्दी और शेयरोंके भाव में मन्दी होवे। रुई में अच्छी तेजी चले। विदेशी वस्तुओंका भाव घटे। चन्द्रदर्शन सिंह राशि में मंगलवार को होगा। सो अनाज और सफेद वस्तुओं में तेजी होवे। गुड़ शक्कर के भाव में तेजी होवे। चौपायों में भैंस का भाव तेज होवे। प्रजा में रक्त विकार ज्यादा बढ़े। पूर्वी योरुपमें अशान्ति ज्यादा बढ़े। ति. १२ के लगभग रुई की तेजी वालोंको सौदा सैटल कर लाभ उठा लेना चाहिये। ति. ३, ४, ५, ९, १०, १३, १४, १५ को अच्छी वर्षाके योग हैं।

श्रावणशुक्ल १५ चन्द्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ६७१६

६ ४बु.मके.
७ ५सू. ३
श.
८ २गु.
९ ११ १
१०रा.च. १२

सू.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	३	१	२	६	९	३
६	२२	२३	२९	२१	०	८	८
५३	५९	२८	९	४१	१९	२५	२५
५५	१८	५६	३९	५६	५७	१३	१३
५७	३८	०	८	७०	५	१	
४५	१३	१९	५६	७	१५	११	१
	मा	मा.	मा	मा.	मा.	व.	व
	ब	उ.	उ.	उ.	त.	ब.	अ.
म	श्ले.	श्ले.	मृ.	[illegible]	चि.	[illegible]	[illegible]
३	२	३	२	१	१	४	[illegible]

व॰वि॰—श्रावणशुक्ला पंचमी और छटको आव। कुछ वर्षा पश्चिम पवन तो दुर्भिक्षपिछान ॥ श्रावणशुक्ला पंचमी नागपंचमी होती है। इस दिन दर्वाजेके दोनों तरफ गोबरके सर्प बनाकर घी, दूध, जल, खिलला धूप, बढ़ो बार-

संवत् २०१० शकः १८७५ भाद्रपदकृष्णपक्षः १२

दि.मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	भाद्र.	अगस्त	मु. जिल्हिज	चन्द्र सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		मिश्रसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३२	१९	१	मं.	४३	४१	श.	४१	३०	अ.	७	४७	बा.	१६	३४	१०	२५	१४	कुंभे	६	०	६	५५	४	७	५१	४२
३२	१५	२	बु.	३७	३६	पू.भा	३७	२३	सु.	०/११	५२/३३	तै.	१०	३८	११	२६	१५	मी२३।२५	६	१	६	५४	४	८	४९	३२
३२	१०	३	गु.	३१	२५	उ.भा	३३	८	शू.	४४	५१	व.	४	३०	१२	२७	१६	मीने	६	१	६	५३	४	९	४७	२५
३२	५	४	शु.	२५	२२	रे.	२९	४	गं.	३७	१७	बा.	२५	२२	१३	२८	१७	मे.२९।४	६	२	६	५२	४	१०	४५	१९
३२	००	५	श.	१९	४१	अ.	२५	२०	वृ.	३०	००	तै.	१९	४१	१४	२९	१८	मेषे	६	३	६	५०	४	११	४३	१४
३१	५५	६	र.	१४	२९	भ.	२२	९	ध्रु.	२३	१३	व.	१४	२९	१५	३०	१९	वृ.३६।३३	६	४	६	४९	४	१२	४१	१२
३१	५०	७	सो.	१०	४	कृ.	१९	४६	व्या	१७	४	व.	१०	४	१६	३१	२०	वृषे	६	४	६	४७	४	१३	३९	१०
३१	४६	८	मं.	६	२७	रो.	१८	११	ह.	११	३४	कौ.	६	७	१७	सि.१	२१	मि४७।५५	६	५	६	४६	४	१४	३७	१[illegible]
३१	४१	९	बु.	३	१३	मृ.	१७	४०	व	६	५५	ग.	३	५३	१८	२	२२	मिथुन	६	६	६	४५	४	५	३५	११
३१	३६	१०	गु.	२	३१	आ.	१८	१९	सि.	३	१५	वि.	२	३१	१९	३	२३	मिथुने	६	६	६	४४	४	१६	३३	१५
३१	३१	११	शु.	२	२४	पुन.	२०	१५	व्य.	०/१८	३४/५३	बा.	२	२४	२०	४	२४	क. ४।४६	६	७	६	४३	४	१७	३१	२३
३१	२६	१२	श.	३	३६	पु.	२३	२८	व.	५८	९	तै.	३	३६	२१	५	२५	कर्के	६	८	६	४२	४	१८	२९	३२
३१	२२	१३	र.	५	५९	श्ले.	२७	४७	श.	५८	२०	व.	५	५९	२२	६	२६	सि२७।४७	६	८	६	४०	४	१९	२७	४३
३१	१७	१४	सो.	९	३४	म.	३३	९	सो.	५९	११	श.	९	३४	२३	७	२७	सिंहे	६	८	६	३९	४	२०	२५	५५
३१	१२	३०	मं.	१४	००	पू.फा	३९	१३	सा.	६०	००	ना.	१४	००	२४	८	२८	कं.५५।५०	६	९	६	३८	४	२१	२४	९

(२५ अग. से ८ सितं. १९५३ ई०) द. उ. गो. शरद् ऋतुः

ग्रहदर्शन—ति. १ से बुध पूर्व में अस्त. ति. ७ को भौम उदय होगा। गु. श.प. रात्रिमें पूर्वमें दीखेंगे। शनिसूर्यास्तबाद पश्चिममें

पूर्वास्तो बुधः ०।१२
उ. भा. ।।।।।।।।। .ल. २ वा ३
भ. ४।३० उ. ३१।२५ या. श्रीगणेश ४ व्र. सि मघा च. बुधः‡
पंचकसमाप्तिः २९।४ ‡ २९।२४ पुष्ये शुक्रः ६।१२ कजली ३।
मृ. ३ मिथुने गुरुः ५८।८ चन्दन ६ व्र.
भ. १४।२९ उ. ४२।१६ या. पू फा. यां रविः ४०।१३
भौमोदयः ५९।३६ श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्र.
सितम्बर १ ता. ३० §लगता है लिखा है कि यदि कोई भी†
भ. ३३।१२ उ. गुग्गा ९ †स्त्री या पुरुष कृष्णाष्टमीका व्रत ×
भ. २।३१ या. पू. फा. यां बुधः १७।२
सिंहे मघायाञ्च भौमः १।२७ अजा ११व्र. अगस्त्योदयः २५।१२
शनिप्रदोष व्र. गोवत्स १२ पू.
भ. ५।५९ उ. ३७।१६ या.
आश्लेषायां शुक्रः २१।२ × न करे तो वह जंगलमें सर्प होता है।
कुशोत्पाटिनी ३० 'ॐ हूँ फट्" इति मन्त्रेण

भाद्रपदकृष्ण ८ भौम-इष्टम् ०।० दिनगणः ६७२४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	३	४	२	३	६	९	३
१४	२८	८	०	९	१	७	७
३०	४	५१	१५	६	४	५९	५९
१०	४९	५४	५८	४	६	४६	४६
५८	३८	०	७	७०	५	३	३
००	७	३८	४८	५२	४३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	व.
पू.फा.	श्ले.	म.	मृ.	पुष्य	वि.	उ.षा.	पुष्य
१	४	१	४	२	३	४	२

६ ४के.मं.गु.
७ श. ५ सू. बु. ३ शु.
८ २ चं.
९ ११ १
१० रा. १२

इस पक्षमें सोना चांदी का भाव तेज रहे। ऊन सूत्र के भाव में कुछ मन्दा रहे। भारत के सिक्के की कीमत कुछ बढ़े। इस पक्षमें साईन्स में नई २ खोजें होवें। सरकार को आमदनी अच्छी होगी। बड़े २ देशों के प्रधानों में आपस में गुप्त समझौते हों। नये २ कानून कार्यान्वित होवें। ति. ८ से रूई तेल तिल और उडद के भाव में तेजी हो। अनाज के भाव में कुछ मन्दी हो। ति. १० के बाद रूई चांदी सोना तांबा गेहूं अलसी और लालमिर्च के भाव में तेजी चले। ति. १, २, ७, ८, ११, १२, को वर्षाके योग हैं।

दा० वि०—भादोकारी तीजमें उत्तरदिशा

भाद्रपदकृष्ण ३० भौम-इष्टम् ०।० दिनगणः ६[illegible]३

६ ४के.शु.
७ श. ५ सू.मं.बु.चं. ३ गु.
८ २
१ ११ १
१० रा. १२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	४	२	३	६	९	३
२१	२	२२	१	१७	१	७	७
२४	३१	२४	६	२५	१५	३७	३७
९	६	१०	१८	५	४३	३०	३०
५८	३८	[illegible]	६	७१	६	३	३
१४	१	१८	४	३७	७	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा.	म.	पू.फा.	मृ.	श्ले.	चि.	उ.षा.	पुष्य
३	१	३	३	३	३	४	[illegible]

प्रदोष। बादल लख सुख मानिये मिट मिटाया दोष। संग्रह करलो अन्न का रुका रहे षटमास। लाभ होय उस मालमें कर लेना बिस्वास।। भादव की दायज दिना जा ना डाल चन्द।
धान्यसमृद्धि पशु बढे प्रजा में हो आनन्द ।। भाद्रपद में बदी [illegible]

संवत् २०१० शाके १८७५ भाद्रपदशुक्लपक्षः १३ | (९सित.से २३ सित. ५३ इं.) द.अय. उ.गा. शरदृतुः

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि / क्रान्ति	अं. / सित	मु. / मुहूर्त	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
३१	३	१	बु.	१९	००	उफा	४५	४२	सा.	०	३२	ब.	१९	००	२५	९	२९	कन्यायाम्	६	९	६	३६	४	२२	२२	२५
३१	२	२	गु.	२४	१२	ह.	१२	९	शु.	२	७	कौ.	२४	१२	२६	१०	३०	कन्यायाम्	६	१०	६	३५	४	२३	२०	४३
३०	५८	३	शु.	२९	३	च.	१८	१०	शु.	३	३५	ग.	२९	३	२७	११	१	तु. २५।९	६	११	६	३४	४	२४	१९	४
३०	५३	४	श.	३३	१७	स्वा	६०	००	ब्र.	४	३७	व.	१	१०	२८	१२	२	तुलायाम्	६	११	६	३२	४	२५	१७	२७
३०	४८	५	र.	३६	३२	स्वा	३	२६	ऐं.	५	३	ब.	४	५४	२९	१३	३	वृ. ५१।३३	६	१२	६	३१	४	२६	१५	५३
३०	४३	६	चं.	३८	४१	वि.	७	३५	वै	४	३२	कौ.	७	३६	३०	१४	४	वृश्चिके	६	१३	६	३०	४	२७	१४	२२
३०	३८	७	मं.	३९	३०	अनु.	१०	३६	वि	३	११	ग.	९	५	३१	१५	५	वृश्चिके	६	१३	६	२८	४	२८	१२	५४
३०	३३	८	बु.	३९	००	ज्ये	१२	२२	प्री.	०/५६	४४/२२	वि.	९	१५	अ'	१६	६	ध १२।२२	६	१४	६	२७	४	२९	११	२६
३०	२९	९	गु.	३७	१८	मू.	१२	५५	सौ.	५२	५७	बा.	८	९	२	१७	७	धनुषि	६	१४	६	२६	५	०	१०	००
३०	२४	१०	शु.	३४	२७	पूषा	१२	१४	शो.	४७	४३	तै.	८	४८	३	१८	८	म. २६।४८	६	१४	६	२४	५	१	८	३६
३०	१९	११	श.	३०	२८	उषा	१०	३२	अ.	४१	३२	ब.	२	३२	४	१९	९	मकरे	६	१४	६	२३	५	२	७	१४
३०	१४	१२	र.	२५	५७	श्र.	८	००	सु.	३५	४	वा.	२१	५७	५	२०	१०	कुं. ३६।२१	६	१५	६	२२	५	३	५	५४
३०	९	१३	चं.	२०	३८	ध.	४	४३	धृ.	२७	५१	तै.	२०	३८	६	२१	११	कुंभे	६	१६	६	२०	५	४	४	३७
३०	४	१४	मं.	१४	५८	श.	५६/५६	००/५३	शू.	२०	२०	व.	१४	५८	७	२२	१२	मी. ४२।५२	६	१७	६	१९	५	५	३	२३
३०	००	१५	बु.	८	५२	उभा	५२	३६	.	१२	३७	व.	८	५२	८	२३	१३	मीने	६	१७	६	१८	५	६	२	११

ग्रहदर्शन—मं. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और गु. अर्द्धरात्रि पीछे पूर्व में देखें। श. सूर्यास्तबाद पश्चिममें दीखेंगे बु.ति. १५कोपश्चिममें उदय

{सुकुमारकमारोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥इस मन्त्र को पूर्व अथवा∅
उ. फा. यां बुधः १६।५९ चन्द्रदर्शनम ह. ॥॥ऽचौ. च. ४०—
मोहर्रम मु. १ सन् १३७३ हिजरी हरितालिका ३ व्र. कलङ्क ४
भ. ॥१० उ. ३३।१७ या. कन्या यां बुधः ५।२१ स्वा. ॥॥ऽ?
उ. फा. यां रविः ६४।४५ ?रो. व. ४३ उ. ऽऽ॥ ल. १
सूर्यषष्ठी व्र. अनु. ॥॥॥॥ ल. गो. पू. —उ.ऽ॥ ल. १ मेला+
भ. ३९।३० उ. जन्मोत्सव श्री ५ बघाट नरेशजी, +श्रीगुसां‡
भ. ९।१५ या. सं. कन्यायामर्कः ४०।४७ मु: ३० पुण्यकाल=
हस्ते बुधः ४३।५७ श्रीचन्द्र ९ (उदासीन सम्प्रदायका महोत्सव)
सिंहे मघायाङ्च शुक्रः २९।४७ ‡ईयाणा कुराली
भ. २।३२ उ. ३०।३८ या. पद्मा ११ व्र. = मध्याह्नोत्तर
पञ्चकप्रारम्भः ३६।२१ प्रदोष व्र. वामन १२ मेला अंबाला
∅उत्तरकी तरफमुंह करके जपने सेदोषका परिहार होजाता है।
भ. १४।५४ उ. ४१।५२ या अनन्त १४ व्र. मेला छपार चि. ✕
प्रौष्ठपदी १५ महालयारम्भः पश्चिमोदयो बुधः ५७।१७ सा. ÷
÷तुला यां भानुः ६।३१ ✕ ४ शनिः ३१।५२ सत्य व्र.

भाद्रपदशुक्ल ८ बुध—इष्टम् ०।० दिवगणः ६७३९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
४	४	५	२	३?	६	९	३
२९	७	६	१?	२६	२	७	७
११	३५	५९	५५	५९	३६	१२	१२
२६	१०	१३	१	३५	१४	३	३
५८	३७	८६	५	७२	६	३	३
३२	५६	४१	११	८	२८	११	११
उ.फा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	व.	अ.
	म.	पू.फा.	मृ.	ह.	चि.	पू.षा.	पुन.
१	३	४	२	४	३	४	२

६ बु. ४ शु.के.
७ ५ सू.मं. ३
श. गु.
८ २
चं.
९ ११ १
१० रा. १२

इस पक्ष में प्रजा को अनाज की कमी का अनुभव हो। गेहूं चना बाजरा आदि अनाज के भाव में तेजी हो। सोना चान्दी और शेयरों के बाजार में मन्दी रहे। पीतल लोहा जिस्त के भाव में भी मन्दी रहे। ति० ८ से चांदी में लगभग तीन टका मन्दी होवे। लाल रंग की चीजें तेज रहें। कपड़े का भाव सस्ता रहे। चौपायों में कहीं रोग पैदा हो। पञ्जाब या मद्रास के मन्त्रि मण्डल में अदला बदली या विरोध बढ़े। पूर्वी बंगाल में किसी जाति के लिये कठिनाई उपस्थित होवे। ति० १०, ११, १२, १५, को बादल चाल और वर्षा के योग हैं। इस पक्ष में बहुत जगह वर्षा की कमी रहेगी। घा० वि—भादों सुदी जो पूर्णिमा बादल बिजली गाज। बादल चन्दा ऊगसी जल्दी बेचो नाज। जो चन्दा निर्मल उगे धन ना बिजली होय। गेहूं जौ संचय करो लाभ सवायाहोय भा.शु.४ को चन्द्रदर्शन करने से कलक लगता है। अतः इस दिन चन्द्र का दर्शन न करें और यदि हो जाय तो "ॐ सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवताहतः}

भाद्रपदशुक्ल १५ बुधा—इष्टम् ०।० दिवगणः ६७४६

७श. ५ शु.मं.
८ ६ सू. बु. ४ के.
९ गु. ३
१० रा. १२ चं. २
११ १

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	४	५	२	४	६	९	३
६	१२	१८	२	५	३	६	६
२	०	५२	२८	२६	२२	४९	४९
११	१६	२७	५५	५२	३८	४७	४७
५८	३७	९९	४	७२	२	३	३
४८	४७	१	२१	४५	४५	११	११
उ.फा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	व.	अ.
	म.	ह.	मृ.	म.	चि.	पू.षा.	पुन.
४	४	३	३	२	४	४	२

संवत् २०१० शकः १८७५ आश्विनकृष्णपक्षः १४ (२४ सितं से ७ अक्टू. १९५३ ई.) दक्षि. गो. शरदृतुः

ग्र. द.–मं. शु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और गु. अर्द्धरात्रि के पीछे पूर्व में दीखेंगे। बु.श. सूर्यास्त पीछे पश्चिम में देखेंगे। ति. ४ से श. अस्त

वे.घ	वे.प	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	क्रान्ति	मि.	मु.	लग्न	सू.उ. घ	सू.उ. प	सू.अ. घ	सू.अ. प	स्पष्ट				विवरण
२९	५५	१	ग.	२	४६	रे.	४८	२९	वृ.	४६	४८ ३८	कौ.	२	४६	९	२४	१४	वृ ४८।२९	६	१०	६	१२	५	७	१	१	पञ्चक समाप्तः ४९।२९ पितृपक्षः
क्षय		२	गु.	५४	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षयः
२९	५०	३	शु.	५१	८	अ.	४४	४०	व्या.	४९	४०	व.	२४	२७	१०	२५	१५	मेषे	६	१९	६	१५	५	७	५९	५३	भ. २४।५७ उ. ५२।८ या. चित्रायां बुधः ४५।२४ पू. फा. ✕
२९	४६	४	श.	४६	००	भ.	४१	२१	ह.	३२	४२	ब.	१९	४	११	२	१६	वृ.५५।४२	६	२०	६	१३	५	८	५	४७	उ. षा. ३ राहुः पुष्य १ केतुः ४।२४ श्रीगणश ४ व्र.
२९	४०	५	र.	४१	३७	कृ.	३८	४४	व	३६	१२	कौ.	१३	८	१२	२७	१७	वृषे	६	२१	६	१०	५	९	५७	४४	हस्ते रविः २।१९ ✕ भौमः ६।४४
२९	३७	६	चं.	३८	५	रो.	३६	५७	सि.	३०	३	ग.	९	५१	१३	२८	१८	वृषे	६	१	६	११	५	१०	५६	४३	भ. ३८।५ उ.
२९	३२	७	मं.	३५	३३	मृ.	३६	११	व्य.	२५	३९	वि.	६	४५	१४	२९	१९	मि६।३४	६	२२	८	१०	५	११	५	४५	भ. ६।४९ या. तुला. बुधः ५८।२९ पू. फा. यां शुक्रः २९।१६
२९	२८	८	बु.	३४	१३	आ.	३६	३४	व.	२१	३९	बा.	४	५३	१५	३०	२०	मिथुन	६	२३	५	९	५	१२	५४	४८	
२९	२३	९	गु.	३४	१०	पुन.	३८	१२	प.	१९	३७	तै.	४	१०	१६	अ१	२१	क.२२।४८	६	२३	६	८	५	१३	५३	५३	अक्टूबर १० ता. ३१ सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
२९	१९	१०	शु.	३५	२५	पु.	४१	२	शि.	१६	३५	व.	४	४७	१७	२	२२	कर्के	६	२	६	६	५	१४	५३	०	भ. ४।४७ उ. ३५।२५ या.
२९	१५	११	श.	३७	५२	श्ले.	४५	८	सि.	१५	३५	ब.	६	३८	१८		२३	सि०५।१८	६	२४	६	५	५	१५	५२	१०	न्दिरा ११ व्र. स.
२९	१०	१२	र.	४१	२७	म.	५०	१९	सा.	१५	३०	कौ.	९	३९	१९	४	२४	सिंहे	६	२४	६	४	५	१६	५१	२३	स्वात्यां बुधः २४।५२
२९	५	१३	चं.	४५	५५	पू.फा	५६	१२	शु.	१६	५	ग	१३	४१	२०	५	२५	सिंहे	६	२५	६	३	५	१	५०	३९	भ. ४५।५५ उ. सोमप्रदोष व्र.
२९	१	१४	मं.	२१	२	उ.फा	६०	००	शु.	१७	१५	वि.	१८	२८	२१	६	२६	क.१२।५०	६	२६	६	१	५	१८	४९	५५	भ. १८।२८ या. अस्तः शनिः ४१।३९ शस्त्राग्नि विषादि +
२८	५	३०	बु.	५६	१९	उ.फा	२	४०	ब्र.	१८	४४	च.	२३	४०	२२	७	२७	कन्यायाम्	६	२७	६	०	५	१९	४०	१४	अज्ञातमृततिथीनां श्राद्धं सर्वपितृणाञ्च गजच्छाया पर्वः २।४० उ.

+ हतानां श्राद्धम्

५०

आश्विनकृष्ण ८ बुध-इष्टम् ०।० दिनगणः ६७१३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	२	४	६	९	३
१२	१६	०	२	१३	४	६	६
४	२४	२	५४	५७	१०	२७	२७
४८	३	२३	८	२७	३६	३१	३१
५९	३७	९३	६	७३	६	३	३
३	३६	५५	१	७	५६	११	११
प्र.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
क्री	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
ह.	पू.फा	चि.	पू.	पू.फा	चि.	उ.भा	पू.भा
१	२	३	३	१	४	४	२

इस पक्ष में सरकारी खजाने की हालत सुधरे मूंग मोठ गेहूं चना रस कस घी नमक तेज हों। सोना चान्दी रूई बिनौला तेज हों। और घी का भाव मन्दा हो। ति. ८ से रूई म तेजी, चान्दी अलसी सरसों और मूंगफली में मन्दी होवे। सोना में १ टका की तेजी होवे। गुड़ खांड और अफीम के भाव में तेजी होवे। व्यापारियों को भय और कष्ट होवे। प्रजा में कहीं वायु का विकार व दर्द आदि रोगों से कष्ट होवे। ति. १, ३, ४, ८, ९, ११, १२, १३, को बादल चाल और कहीं २ कुछ बूंदा बांदी भी होवे। श्राद्ध समय निर्णय–एकोद्दिष्ट श्राद्ध मध्याह्न में, वृद्धिनिमित्तक

आश्विनकृष्ण ३० बुध-इष्टम् ०।० दिनगण ६७६०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	६	२	४	६	९	३
१९	२०	१०	३	२२	४	६	६
४९	४७	२२	१०	३१	५९	५	५
१	२८	१	४	०	५८	१५	१५
५९	३७	८५	१	७३	७	३	३
१९	४०	१५	४३	३३	८	११	११
क्री.प्र.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ह	पू.फा	म.	पू.	पू.फा	चि.	उ.भा	पू.भा
३	३	२	४	३	४	४	२
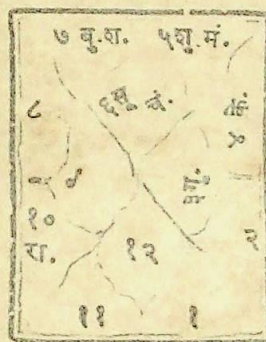
प्रातःकाल में, दैविक पूर्वाह्न में और पार्वणश्राद्ध अपराह्न में करना चाहिये। दिनमान के पांच भाग करने पर पहिले भाग को प्रातः, द्वितीय को संगव, तीसरे को मध्याह्न, चौथे को अपराह्न और पांचवें को सायाह्न कहते हैं। जो उचित विधिपूर्वक ...

संवत् २०१० शका १८७५ आश्विनशुक्ल पक्षः १५ (८ अक्टू. से २५ अक्ट. १९५३ ई.) दक्षि गो. शरदृतुः

दि.घा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	इ.	घ.	हि.	अं.	मु.	चन्द्रचार:	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट: उदयकाले			
२८	५२	१	गु.	६०	००	ह.	९	१०	ऐं	२०	११	क.	२८	४७	२३	८	२८	तु.४२।१४	६	२७	६	०	५	२०	४८	३७
२८	४७	१	शु.	१	१६	च.	१५	१८	वै.	२१	१२	व.	१	१६	२४	९	२९	तुलायाम	६	२८	५	५८	५	२१	४८	१
२८	४२	२	श.	५	३६	स्वा.	२	४७	वि.	२१	४१	कौ.	५	३६	२५	१०	१	तुलायाम	६	२९	५	५७	५	२२	४७	२७
२८	३७	३	र.	८	५८	वि.	२५	१४	प्री.	२१	२२	ग.	८	५८	२६	११	२	वृ.९१७	६	२९	५	५७	५	२३	४६	५५
२८	३२	४	चं.	११	१२	अन.	२८	३८	आ.	२०	१२	वि.	११	१२	२७	१२	३	वृश्चिके	६	२९	५	५६	५	२४	४६	२६
२८	२८	५	मं.	१	७	ज्ये.	३०	४१	सौ.	१८	००	बा.	१२	७	२८	१३	४	ध.३०।४१	६	३०	५	५५	५	२५	४५	५८
२८	२३	६	बु.	१	३	मू.	३१	१०	शो.	१४	४७	तै.	११	४३	२९	१४	५	धनुषि	६	३०	५	५३	५	२६	४५	३४
२८	१९	७	गु.	१०	६	पू.षा	३१	९	अ.	१०	३५	व.	१०	६	३०	१५	६	म ४५।४७	६	३१	५	५२	५	२७	४५	१०
२८	१४	८	शु.	७	२१	उ.षा	२९	४०	सु.	५९	५०	ब.	७	२१	३१	१६	७	मकरे	६	३२	५	५०	५	२८	४४	५२
२८	९	९	श.	३	३५	श्र.	२७	२६	धृ.	५३	१६	कौ	३	३५	का	१७	८	कु.५५।५२	६	३३	५	४८	५	२९	४४	३३
क्ष	वय	१०	र.	५५	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	५	११	र.	५३	४६	ध.	२४	१९	गं.	४६	१०	व.	२६	२३	७	१८	९	कुम्भ	६	३४	५	४७	६	०	४४	१६
२८	००	१२	चं.	४८	५	श.	२०	४०	वृ.	३८	३१	ब.	२०	५५	३	२०	१	कुम्भे	६	३५	५	४६	६	१	४४	५
२७	५५	१३	मं.	४२	८	पू.भा	१६	३८	ध्रु.	२७	५६	कौ.	१५	६	[illegible]	२०	११	मी.२।३९	६	३६	५	४५	६	२	४३	५१
२७	२०	१४	बु.	३६	७	उ.भा	१२	२४	व्या	२३	०	ग.	९	६	५	२१	१२	मीने	६	३७	५	४४	६	३	४३	४२
२७	४५	१५	गु.	१०	१२	रे.	८	१५	ह.	१५	१५	वि	३	९	६	२२	१३	मे ८।१५	६	३७	५	४३	६	४	४३	३५

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदय से पहिले पूर्व में और ब. सूर्यास्तबाद पश्चिममें दीखेगा। गु. अर्ध रात्रि में पूर्वमें उदय हो. बी. श. अस्त है

शारदनवरात्रारम्भः घटस्था. ९।१० या. मातामहश्राद्धम् चन्द्रदर्शनम् ?युद्धके लिये क्षत्रिया, धनके लिये वैश्या,सुख के लिये! चि. रविः ३२।५० उ. फा. यां शुक्रः २२।५१ सफर मु. २ भ. ४०।५ उ. अन् ।।।।ऽचौ.।।।। ल. २ चं. दा. वा. अन्यगोधक्री भ.११।१२या.! शूद्रा और दारुण कार्यकी सिद्धि के लिये अन्त्यज- § कन्यायां शुक्र५।५२म् ।।।।ऽगु.ऽरो.।।।।ल.२गु.दा. §कन्याकी विधि० विशा. बुधः ३।५६ श्रीसरस्वत्यावाहनम् मला शाईसरखाना भ. १०।६ उ. ३८।४१ या. वक्री गुरुः ३०।० श्रीसरस्वती पू. श्री दुर्गा८ स. बलिदानं मेला ज्वालाजी व तारादेवी उ. फा. † सं. तुलायामर्कः ०५।३२ मु. ३० पुण्यकाल ०।३२ पल उ. ।× दशमीक्षयः ×विजया १० बसैरा सर विस. पञ्चकप्रारम्भः+ भ. २६।२३ उ. ५३।४६ या. पापाङ्कुशा ११ व्र. †यां भौमः २२।१८ वैष्णवानां ११ व्र. =सत्यव्र.पञ्चकस ८।१५ +५१।५२ मु०३० स्वा. १ शनिः ५२।० भौम प्रदोष व्र. उ. भा. ।।।।ऽमं. ।।।।। ल. २ वा१ भ.३६।७उ.कन्यायां भौम ४२।५७हस्ते शुक्रः१२।२ ०पूर्वक पूजा करे। भ. ३।९ या. कोजागरी व्र. वृश्चिके बुधः ३३।५१ शरद १५=

आश्विनशुक्ल ८ शुक्रः-इष्टम् ०।० दिनगण ६७६९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
५	४	६	२	५	६	९	३
२८	२६	२२	३	३	६	५	५
४४	२६	२७	१६	१४	४	३६	३६
५२	४	१३	५०	१३	४२	३७	३७
५९	३७	७५	०	७३	७	३	३
४०	११	२६	३	५३	१३	११	११
मा	मा	मा.	व	मा	मा	व.	व.
[illegible]	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
चि.	[illegible]	वि.	मृ.	[illegible]	स्वा	[illegible]	[illegible]
२	१	१		३	१	३	१

इस पक्ष में रूई चायर और सोना में मन्दी तथा गुड़ खांड घी अनाज में तेजी आवे। ज्वार चावल चना भी तेज हों। करियाने की चीजों में सस्तापन हो। ति. ६ से रूई के भाव में एकदम मन्दी आवे और चान्दी में घटाबढ़ी आकर दब तेज हो। घास का भाव भी तेज हो। ति २ शनिवार को चान्दी खरीदने से १० रोज के अन्दर लाभ होगा। पाकिस्तान के मन्त्रिमण्डल में आपस में मतभेद हो। किसी बड़े आदमी को भय का योग भी है। ति. ११ से १४ तक बादल चाल और हवा चले। श. वि.—सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों
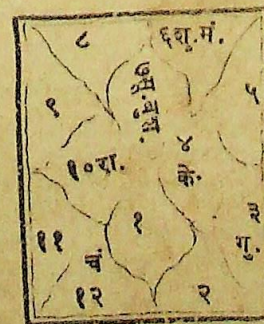
आश्विनशुक्ल १५ गुरा-इष्टम् ०।० दिनगणः ६७७५

८
६शु.मं.
९
५
सू.बु.
४
१०रा.
के.
१
३
११
गु.
चं.
१२
२

सू.	मं.	बु	गु	श	शु	रा	के.
६	५	६	२	५	६	९	३
४	०	२९	३	१०	६	५	५
४३	४०	२५	१२	५	४८	१७	१७
३५	३७	१२	१४	७	५	३२	३२
६०	३७	६४	१	७४	७	३	३
२३	४१	९	१७	२०	१५	११	११
[illegible]	मा	मा	व.	मा.	मा	व.	व.
[illegible]	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	वि	मृ.	ह.	स्वा	[illegible]	[illegible]
४	२	३	४	१	१	२	१

सुखी सब संशय मिट जाय ।।१।। कन्यापूजनविधि—प्रत्येक दिन एक २ कन्या की पूजा करे, अथवा ९।९ की, या प्रतिदिन एक एक बढ़ावे, अथवा द्विगुण या त्रिगुणित बढ़ाता जावे। नित्य ९ कन्याओं की पूजा करने से भूमि और द्विगुणित करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। एक वर्ष की कन्या का पूजन न करे। और भी विशेष नियम है कि सर्व कार्यों की सिद्धि के लिये ब्राह्मणी,?

संवत् २०१० शक: १८७५ कार्तिककृष्णपक्ष: १६

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. कार्ति	अं. अक्टू	मु. सफर	चन्द्रचार:	सू. उ.		सू. अ.		नित्यसूर्यस्पष्ट: उदयकाले			
२७	४१	१	शु.	२४	४१	अ.	४	१९	व.	७	४१	कौ.	२४	४१	७	२३	१४	मेषे	६	३७	५	४२	६	५	४३	३०
२७	३६	२	श.	१९	३६	भ.	५८	१	सि.	५४	४९	ग.	१९	३६	८	२४	१५	वृ. १५।८	६	३८	५	४१	६	६	४३	२७
२७	३२	३	र.	१५	१८	रो.	५६	४	व.	४८	२९	वि.	१५	१८	९	२५	१६	वृषे	६	३९	५	४०	६	७	४३	२७
२७	२८	४	च	११	५१	मृ.	५४	५९	प.	४३	३६	बा.	११	५१	१०	२६	१७	मि.२५।३१	६	४०	५	३९	६	८	४३	२९
२७	२४	५	मं.	९	२५	आ.	५५	४	सि.	३९	१२	तै.	९	२५	११	२७	१८	मिथुने	६	४०	५	३८	६	९	४३	३३
२७	२१	६	बु.	८	१२	पुन.	५६	२३	सि.	३५	४९	व.	८	१२	१२	२८	१९	क. ४१।३	६	४१	५	३७	६	१०	४३	३८
२७	१७	७	गु.	८	१३	पु.	५८	५७	मा.	३३	२५	ब.	८	१३	१३	२९	२०	कर्के	६	४२	५	३६	६	११	४३	४५
२७	१३	८	शु.	९	३६	श्ले.	६०	००	शु.	१२	४	कौ.	९	३६	१४	३०	२१	कर्के	६	४२	५	३६	६	१२	४३	५६
२७	९	९	श.	१२	८	श्ले.	२	४४	शु.	३१	३४	ग.	१२	८	१५	३१	२२	सि. २।४४	६	४३	५	३५	६	१३	४४	८
२७	५	१०	र.	१५	५१	म.	७	३७	ब्र.	३१	५४	वि.	१५	५१	१६	नं १	२३	सिंहे	६	४४	५	३४	६	१४	४४	२४
२७	२	११	चं.	२०	२५	पू.फा	१३	२२	ऐं.	३१	४६	बा.	२०	२५	१७	२	२४	क.२९।५७	६	४४	५	३३	६	१५	४४	४१
२६	५८	१२	मं.	२५	३४	उ.फा	१९	४२	वै.	३३	२	तै.	२५	३४	१८	३	२५	कन्यायाम्	६	४६	५	३२	६	१६	४५	०
२६	५४	१३	बु.	३०	५५	ह.	२६	१३	वि.	३४	२५	व.	३०	५५	१९	४	२६	तु ५९।२२	६	४७	५	३१	६	१७	४५	२०
२६	५०	१४	गु.	३५	५७	चि.	३२	३१	प्री.	३५	३१	शि.	३	२६	२०	५	२७	तुलायाम्	६	४८	५	३१	६	१८	४५	४३
२६	४६	३०	शु.	४०	२१	स्वा.	३८	९	आ.	३६	११	च.	८	९	२१	६	२८	तुलायाम्	६	४९	५	३०	६	१९	४६	८

(२३अक्टू.से६नवं.१९५३ई) दक्षिणायनगोलोहेमन्तर्तु

ग्र. द.—शु. मं. सूर्योदयसे पहिले पूर्वमें बु. सूर्यास्तके बाद पश्चिम में दीखेगा। गु. अर्धरात्रिसे पहले पूर्वमें दीखेगा। शनि अस्त है

स्वात्यां रविः ५६।११ सा. वृश्चिके भानुः २४।५७ हेमन्तर्तु प्रा.
भ. ४७।२७ उ.
भ. १५।१८ या. करक ४ व्र. (करवा ४)
अनु. बुधः ३।१३
‡पापों से छूट जाता है। स्नान संकल्प—"मम वाङ्मनः कायजा ?
भ. ८।१२ उ. ३८।१२ या.
अहोई ८ [सायंकाल व्यापिनी होने से]
?शेषपाप-क्षयद्वारा श्रीराधादामोदरप्रीत्यर्थम् अमुकतीर्थे कार्तिकø
भ. ४३।५९ उ. चित्रायां शुक्रः ५५।४६
भ. १५।५१ या. नवम्बर ११ ता० १०
रमा ११ व्र. सर्वेषाम् øस्नानमहं करिष्ये।
वक्रीबुधः ३५।४
भ. ३०।५५ उ. प्रदोष व्र. श्रीहनुमज्जन्म दिनम् धन १३ +
भ. ३।२६ या. रूप १४ नरकहरा १४ चन्द्रोदये स्नानादि
श्रीमहालक्ष्मी पूजनम् (दीपमाला) विशाखायां रविः १३।४४÷
÷ हस्ते भौमः ५।२४ तुलायां शुक्रः १६।३० +यमायदीप दानम्

कार्तिककृष्ण ८ शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगण: ६७८१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	७	२	५	६	९	३
१२	५	६	२	२०	७	४	४
४१	८	१०	५४	५५	४६	५२	५२
५६	४२	५९	४६	४८	१८	५	५
६०	३७	३५	२	७४	७	३	३
११	१३	१	५१	३९	१८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	व.	व.	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा. २	उ.फा. ३	[illegible] २	मृ.	ह. ४	स्वा. १	[illegible] १	[illegible] १

८ बु. | ६ मं. शु. | ५
९ | ७ सू. श. | ४ चं. के.
१० रा. | १ | ३ गु.
११ | १२ | २
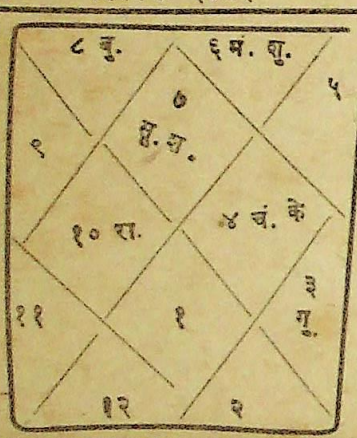
इस पक्ष में कई जगह बच्चों के लिये शीतला और बुखार आदि रोगों से कष्ट ज्यादा हो। नाचने गाने वाले और कलाकारों के लिये भी यह पक्ष कष्टदायक है। सोना चान्दी का भाव मन्दी में रहे और अलसी में घटाबढ़ी ज्यादा होवे। विदेशी अमेरिका आदि का माल भी मन्दा होगा ति. १२ से रूई और चान्दी के भाव में तेजी आव। गहूं जौ चना के भाव में मन्दी हो। क्योंकि यह दिवाली शुक्रवार को आई है इसलिये निर्धन प्रजा के लिये शुभ है किन्तु माल भरने वाले व्यापारियों के लिये भय देने वाली है। गूड़ तेल शक्कर और चावल का भाव तेज रहे। चौपायों में गाय बकरी भी तेज हो। ति. ४ [illegible] को [illegible] सफेद बादलों की [illegible] आवेगी। शकुन विचार—कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय। आसाढ़

कार्तिककृष्ण ३० शुक्र-इष्टम् ०।० दिनगण: ६७९०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	७	२	५	६	९	३
१९	९	७	२	२९	८	४	४
४६	२८	१४	२९	३९	३६	२९	२९
८	४९	४	२९	२४	३८	४९	४९
६०	३७	१६	४	७४	७	३	३
२५	७	४९	११	५३	७	११	११
[illegible]	मा.	व.	व	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	[illegible]	उ.	अ.	अ.	अ.
स्वा. ४	उ.फा. ४	अनु. २	मृ. ३	चि. २	स्वा. १	[illegible] ३	[illegible] १

८ बु. | ६ शु. मं. | ५
९ | ७ सू. श. चं. | ४ के.
१० रा. | १ | ३ गु.
११ | १२ | २

...का भाव तेज रहे। चौपायों में गाय बकरी भी तेज हो। नि. ... बादलों की ... आवेगा। शकुन विचार—कार्तिक बदी एकादशी वर्षा बादल होय। आसाढ़

संवत् २०१० शका १८७५ कार्तिकशुक्लपक्षः १७

दि.मा. घ.	प.	ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं. कार्तिक	अं. नवम्बर	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२६	४३	१	श.	४३	४७	वि.	४२	५२	सौ.	३६	४	कि.	१२	४	२२	७	२९	वृ.२६।४१	६	५०	५	२९	६	२०	४६	३४
२६	३९	२	र.	४६	५	अनु.	४६	३२	शो.	३५	५	बा.	१४	५६	२३	८	३०	वृश्चिके	६	५१	५	२८	६	२१	४७	२
२६	३५	३	सो.	४७	४	ज्ये.	४८	५६	अ.	३३	१०	तै.	१६	३४	२४	९	१	ध.४८।५६	६	५१	५	२८	६	२२	४७	३०
२६	३१	४	मं.	४६	४३	मू.	५०	१	सु.	३०	१५	व.	१६	५३	२५	१०	२	धनुषि	६	५०	५	२७	६	२३	४८	०
२६	२७	५	बु.	४५	९	पू.षा	४९	५६	धृ.	२६	१७	व.	१५	५६	२६	११	३	धनुषि	६	५२	५	२७	६	२४	४८	१३
२६	२४	६	गु.	४२	२८	उ.षा	४८	४४	शू.	२१	२७	कौ.	१३	४८	२७	१२	४	म. ४।३८	६	५३	५	२६	६	२५	४९	८
२६	२०	७	शु.	३८	४६	श्र.	४६	३८	ग.	१५	४५	ग.	१०	१७	२८	१३	५	मकरे	६	५४	५	२५	६	२६	४९	४५
२६	१६	८	श.	३४	१४	ध.	४३	४२	वृ.	९	२२	वि.	६	३०	२९	१४	६	कुं १५।८	६	५४	५	२४	६	२७	५०	२२
२६	१२	९	र.	२९	६	श.	४०	८	ध्रु.	२ ५४	२६ ५५	बा.	१	३८	३०	१५	७	कुम्भे	६	५५	५	२४	६	२८	५१	१
२६	८	१०	सो.	२३	२३	पू.भा	३६	११	ह.	४७	११	ग.	२३	२३	मा	१६	८	मी २२।१०	६	५६	५	२४	६	२९	५१	४२
२६	५	११	मं.	१७	२९	उ.भा	३२	१	व.	३९	१८	वि.	१७	२९	२	१७	९	मीने	६	५८	५	२३	७	०	५२	२६
२६	१	१२	बु.	११	२९	रे.	२७	४८	सि.	३१	२७	बा.	११	२९	३	१८	१०	मे.२७।४८	६	५९	५	२२	७	१	५३	११
२५	५७	१३	गु.	५	३८	अ.	२३	४७	व्य.	२३	४४	तै.	५	३८	४	१९	११	मेषे	७	०	५	२१	७	२	५३	५८
२५	५३	१४	शु.	००	१०	भ.	२०	१२	व.	१६	२१	व.	०	१०	५	२०	१२	वृ.३४।२७	७	१	५	२१	७	३	५४	४७
अयम		१५	श.	५५	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

(७नव. से २०नव. १९५३ई.) दक्षिणायनगोलोहेमन्तर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदयसे पहिले पूर्व में, और गु. पूर्वरात्रि में पूर्व में दीखेंगे। ति. २ से बुध पश्चिम में अस्त होगा। ति. ३ से श. उदय होगा।

अन्नकूटम् गोवर्द्धन पू, वष्टिका कर्षणम् (रस्सा कशी)
चन्द्रदर्शनम्। पश्चिमास्तो बुधः ३५।० भाई टिक्का २ †
शनेरुदयः ५५।१४ रविस्तुलाबल मु. ३ † बलराज कलम दवात पू.
भ. १६।५३ उ. ४६।४३ या.
वक्री विशा. बुधः १।४८ स्वात्यां शुक्रः ६६।३७

भ. ३८।४६ उ. वक्री तुला. बुधः ४०।२७
भ. ६।३० या. पञ्चकप्रारम्भः १५।८ गोपालाष्टमी (सायंकाले ‡
परिक्रमा ९ स्वर्णगर्भ कूष्माण्डदानम् ‡ गवां पूजालङ्कारादि=
भ. ५०।२६ उ.सं. वृश्चिके ऽर्कः ८।१० पुण्यकाल ८।१० या. मु:३०
भ. १७।२९ या. स्वा. २ शनिः ४८।५२ तुलसीविवाह भीष्म †
पञ्चकस. २७।४८ प्रदोषव्र. † पञ्चाकारम्भः प्रबोधिनी ११ व्र.
अनु. रविः २५।४२ =धारणम्)
भ. ०।१० उ. २७।४१ या. का. ला. स. सत्यव्र. श्री गुरुनानक ⌀
पूर्णिमाक्षयः ⌀ देव जयन्ती मेला पुष्कर वा रामतीर्थ

कार्तिकशुक्ल ८ शनि वि'टम् ०।० दिनगण: ६७९८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	२	६	६	९	३
२१	१४	२९	१	९	९	४	४
५०	२५	३५	४९	३९	३३	४	४
२२	२७	५६	३४	२३	१९	२१	२१
६०	३७	७१	५	७५	६	३	३
३७	३	५०	३३	५	५७	११	११
	मा.	व.	व	मा.	मा.	व.	व.
	[illegible]	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
वि	ह.	वि	मू.	स्वा	स्वा		
३	२	३	३	१	१	४	१

८ — ६ मं. — ७ — सू. बु. शुक्र. — ५ — ९. — १० चं. रा. — ४ के. — ११ — १ — ३ — १२ — २

इस पक्ष के अन्त में वायु के तूफान से कई जगह हानि हो। रुई में १५-२० टके मन्दी आवे और चान्दी में तेजी आवे शेयर रेशम अलसी सरसों विनौला और मूंगफली के भाव में मन्दी आवे। लोहा जिस्त सीसा कली आदि काली रंग की चीजें और घास लकड़ी गुड़ खांड़ में तेजी आवे। इस पक्ष में ज्यादा हवा चलने से सर्दी ज्यादा हो और कहीं ओले भी पड़ें। ति. ६—१० तक कहीं २ बादल चाल व गड़गड़ाहट होवे।

शकुन:—कार्तिकशुदी एकादशी वर्षा बादल होय चार मास वर्षा अधिक संशय करो न कोय

भाईदूज के दिन अपनी बहन के घर जाकर वहीं पर उसके हाथ से प्रेम पूर्वक भोजन कर और उसे यथाशक्ति अनेक प्रकार के दान देवे। कार्तिक मास में आंवले के नीचे ब्राह्मणों को भोजन करावे और बाद में आप भी उसी वृक्ष के नीचे भोजन करे, आंवले की छायामें श्राद्ध एवं उसके पत्र फलोंसे विष्णु की पूजा करनेसे बड़ा भारी पुण्य होता है, क्योंकि सभी देव महर्षि यज्ञ और तीर्थोंका आंवलेके नीचे निवास होता है।

कार्तिकशुक्ल १४ शुक्र—इष्टम् ०।० दिनगण: ६८०४

९ — ७ बु. शु. श. — १० रा. — ८ सू. — ६ मं. — ११ — ५ — १२ — २ — ४ के. — १ चं. — ३ गु.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	६	२	६	६	९	३
३	१८	२२	१	१७	१०	५	३
५४	७	५८	१३	१०	१५	४५	४५
४७	२५	१३	९	१८	२	१६	१६
६०	३६	५२	६	१५	६	३	३
४९	५६	४०	२८	१३	५२	११	११
	मा.	व	व	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	[illegible]	उ.	अ.	अ.	अ.
	ह	वि.	मू.	स्वा	स्वा		
१	३	१	३	४	२	६	१

संवत् २०१० शाकः १८७५ मार्गशीर्षकृष्ण पक्षः १८

(२१ नवं. से ६ दिस. १९५३ ई.) दक्षि. गो. हेमन्तर्तुः

वि.घ.		ति.वा.		घ.प.		न.	घ.प.		यो.	घ.प.		क.	घ.प.		मार्ग	अं.	मु.	चन्द्रः सञ्चारः	सू.उ. रेल्वे		सू.अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	४९	१	श.	५१	१	कृ	१७	१२	प.	९	२७	बा.	२३	६	६	२१	१३	वृष	७	२	५	२१	७	४	५५	३८
२५	४६	२	र.	४७	४१	रो.	१५	२	शि.	३ ५७	१२ ४०	तै.	१९	२१	७	२२	१४	मि४४।२२	७	२	५	२०	७	५	५६	३१
२५	४३	३	चं.	४५	२२	मृ.	१३	४३	सा.	५२	५७	व.	१६	३१	८	२३	१५	मिथुने	७	३	५	२०	७	६	५७	२५
२५	४०	४	मं.	४४	१८	आ.	१३	३०	शु.	४९	११	व.	१४	५०	९	२४	१६	क.५९।१४	७	३	५	२०	७	७	५८	२१
२५	३९	५	बु.	४४	२८	पुन	१४	२८	शू.	४६	२५	कौ.	१४	२३	१०	२५	१७	कर्के	७	४	५	२०	७	८	५९	१८
२५	३७	६	गु.	४६	००	पु.	१६	४४	ग.	४३	३९	ग.	०५	१४	११	२६	१८	कर्के	७	५	५	२०	७	१०	०	१६
२५	३५	७	शु.	४८	४०	श्ले.	२०	१४	वृ.	४३	५१	वि.	१७	२०	१२	२७	१९	सि२०।१४	७	५	५	२०	७	११	१	१६
२५	३४	८	श.	५२	३२	म.	२४	५४	ध्रु.	४३	५३	बा.	२०	३६	१३	२८	२०	सिंहे	७	६	५	२०	७	१२	२	१७
२५	३२	९	र.	५७	१५	पू.फा	३०	२६	व्या.	४४	३४	तै.	२४	५३	१४	२९	२१	क. ४६।५७	७	७	५	२०	७	१३	३	२०
२५	३०	१०	चं.	६०	००	उ.फा	३६	४०	ह.	४५	४५	व.	२९	५२	१५	३०	२२	कन्यायाम	७	७	५	२०	७	१४	४	२४
२५	२८	१०	मं.	२	२९	ह.	४३	१२	व.	४७	५	वि	२	२९	१६	द्वि	२३	कन्यायाम	७	८	५	२०	७	१५	५	२९
२५	२६	११	बु.	७	५३	चि.	४९	३४	सि.	४८	१८	बा.	७	५३	१७	२	२४	तु. १६।२३	७	९	५	२०	७	१६	६	३५
२५	२५	१२	गु.	१२	५५	स्वा.	५५	२५	व्य.	४९	४	तै.	१०	५५	१८	३	२५	तुलायाम	७	१०	५	२०	७	१७	७	४२
२५	२३	१३	शु.	१७	४२	वि.	६०	००	व.	४९	१३	व.	१७	४२	१९	४	२६	वृ. ४५।११	७	११	५	२०	७	१८	८	५१
२५	२१	१४	श	२०	४५	वि.	००	२६	व.	४८	३१	श.	२०	४५	२०	५	२७	वृश्चिके	७	११	५	२०	७	१९	१०	००
२५	१९	३०	र.	२३	५	अनु.	४	१९	प.	४६	५५	ना.	२३	५	२१	६	२८	वृश्चिके	७	११	५	२०	७	२०	११	१०

ग्र. द.--मं. शु. श. सूर्योदय से पहले पूर्व में, और गु. सूर्यास्तबाद पूर्व में दीखेंगे ति. १ से ब. पूर्व में उदय होगा।

पूर्वोदयो बुधः १।१० रो. ।।।ऽ।।ऽ।। ल. ३ बा. ५ भू. दा.
विशा. शुक्रः १५।१८ सा. धनुषि भानुः ११।३८
भ. १६।३१ उ. ४५।२२ या.
मार्गी बुधः २७।३२ श्रीगणेश ४ व्र.
? को भी फल मिलता है।
भ. ४६।० उ.
भ. १७।२० या. म.ऽगु गु. ।।।।।ऽ।। ल. ३ वा गोधू. उ. था.†
चित्रायां भौमः २९।० श्रीमहाकाल भैरवजयन्ती ८ † २ राहुः‡
उ. फा.ऽ।।।।ऽनू. ।ऽ।। ल. ३ अंश १२ उ. ‡ पुनः ४ केतुः ५६।५२
भ. २९।५२ उ. वृश्चि शुक्रः १२।४५ व क्रग. मृ.२ वृषे गुरुः ८।५२
भ. २।२९ या. दिसंबर १२ ता. ३१ ह. ।।।।ऽचौ.ऽऽ।। ल. गोधू.
ज्येष्ठा. रविः ३२।४९ अनु. शुक्रः ५१।५६ उत्पन्ना ११ व्र.
मल्ल १२ प्रदोष व्र.
भ. १७।४२ उ. ४६।१३ या.
वृश्चि. बुधः २८।११ मेला पुरमण्डल देविकास्नानम्

मार्गशीर्षकृष्ण ८ शनाविष्टम् ०।० दिनगणः ६८१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	६	२	६	६	९	३
१२	२३	२२	०	२७	११	३	३
२	२	३८	१६	१२	८	१९	१९
७	१४	००	१६	५२	४४	५०	५०
११	३६	३६	७	७५	६	३	३
१	४८	१६	३०	२७	३८	११	११
मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये.	वि.	वि.	मृ.	वि.	स्वा	उ.षा.	पुन.
३	१	१	३	३	२	३	१

इस पक्ष में रूई पहिले मदी होकर बाद में १५।२० टके की तेजी होवे। विनौला अलसी जौ चना तिल घी लाल मिर्च तेज हों। ति. ५ से गुड़ अलसी मूंगफली आदि चीजों का भाव मन्दा हो और सोने में भी मन्दे का असर हो। ति. १० से सब तरह के अनाज के भाव में तेजी का असर हो। शेयर अफीम में कुछ पहिले मन्दी आकर बाद में तेजी आवे, रूई के कारखाने वालों को लाभ अच्छा होगा, गिरी हुई अवस्था में सुधार हो। ति. १, ४, ५, ११, १२, १३ को बादल चाल और कहीं उत्तर में बूंदाबांदी हो। श. नि.--ति. १४।३० को सूर्य बादलों से ढंका रहे तो तृण धान्य महंगा होवे। मार्गकृष्णा-

मार्गशीर्षकृष्ण ३० रवाविष्टम् ०।० दिनगणः ६८२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	१	७	६	९	३
२०	२७	०	२९	७	११	२	२
११	५६	४०	१४	१६	५९	५४	५४
१०	१	१४	२५	३३	४७	२२	२२
६१	३६	७५	७	७५	६	३	३
१	४२	५२	२४	२८	१२	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये.	चि.	वि	मृ.	ज्ये.	स्वा	उ.षा.	पुन.
२	२	४	२	२	२	२	४

ष्टमी को कालभैरव के मन्दिर में जाकर व्रत रखने और जागरण करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। यदि किसी ने व्रत करने का प्रतिज्ञा का हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश उस समय यह व्रत न रख सकें तो किसी अपने प्रतिनिधि से रखा लेवे [illegible] माने गये हैं। पित्रादि के उपदेश से व्रत करते हुए पुत्रादि?

...दशी को कालभैरव के मन्दिर में जाकर व्रत रखने और जागरण करने से सभी पाप दूर हो जाते हैं। यदि किसी ने व्रत करने का प्रतिज्ञा की हुई हो किन्तु रोग आदि कारणवश उस समय यह
...न कर सके तो किसी अपने प्रतिनिधि से करा लेवे। व्रत में पुत्र, पत्नी, भाई, पति, पुरोहित और मित्र ये प्रतिनिधि माने गये हैं। विवादि के उपदेश से व्रत करते हुए पुत्रादि?

संवत् २०१० शकः १८७५ मार्गशीर्षशुक्लपक्षः १९ (७ दिसं. से २० दिसं. १९५३ ई.) दक्षिणगो. हेमंततु.

दि.मा		ति.वा.		घ.	प	न.	घ.	प	यो.	घ	प.	क.	घ.	प	हि.	अं	मु.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट उदयकाले			
२०	१८	१	सं.	२४	४	ज्ये.	७	३	शू.	४४	१७	व.	२४	४	२१	७	२१	ध. ७।३	७	१२	५	२०	७	२१	१२	२१
२५	१६	२	मं.	२३	४२	मू.	८	२९	ग.	४०	४०	कौ.	२३	४२	२३	८	२०	धनुषि	७	१३	५	२०	७	२२	१३	३४
२५	१५	३	बु.	२२	९	पू.षा	८	४१	वृ.	३६	५	ग.	२२	९	२४	९	१	म. २३।२७	७	१४	५	२०	७	२३	१४	४९
२५	१३	४	गु.	१९	२८	उ.षा	७	४६	ध्रु.	३०	३९	वि.	१९	२८	२५	१०	२	मकरे	७	१४	५	२०	७	२४	१६	४
२५	११	५	शु.	१५	४८	श्र.	५	५१	व्या	२४	२९	बा.	१५	४८	२६	११	३	कु. ३४।२९	७	१५	५	२०	७	२५	१७	२०
२५	१०	६	श.	१२	१७	ध.	[illegible]	[illegible]	हृ.	१७	४१	तै.	११	१७	२७	१२	४	कुम्भे	७	१६	५	२०	७	२६	१८	३७
२५	८	७	र.	६	९	पू.भा	५५	४९	व.	१०	१९	ब.	६	९	२८	१३	५	मी ४१।४७	७	१७	५	२०	७	२७	१९	५६
२५	७	८	चं.	०	३०	उ.भा	५१	४२	सि.	५४	४८	ब.	०	३२	२९	१४	६	मीने	७	१८	५	२०	७	२८	२१	१६
अ	वम	९	चं.	५४	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	५	१०	मं.	४८	४७	रे	४६	२९	व.	४६	५१	तै.	२१	४४	पौ. १	१५	७	मे ४७।२९	७	१८	५	२०	७	२९	२२	३६
२५	३	११	बु.	४३	३	अ.	४३	२०	प.	३९	३	ब.	१५	५४	२	१६	८	मेषे	७	१९	५	२०	८	०	२३	५७
२५	[illegible]	१२	गु.	३७	३८	भ.	३९	४५	शि.	३१	३१	ब.	१०	२०	३	१७	९	वृ ५३।८	७	२०	५	२१	८	१	२५	१८
२५	०	१३	शु.	३२	४६	कृ.	३६	३७	स.	२४	२५	कौ.	५	१२	४	१८	१०	वृष	७	२१	५	२१	८	२	२६	४
२४	५९	१४	श.	२८	४०	रो.	३४	१८	सा.	१७	५४	ग.	०	४३	५	१९	११	वृषे	७	२१	५	२१	८	३	२८	२९
२४	५७	१५	र.	२५	२६	मृ.	३२	४६	शु.	१२	३	ब.	२५	२६	६	२०	१२	मि. ३।२२	७	२२	५	२२	८	४	२९	२४

प्र. द.—मं. शु. श. बु. सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखेंगे
गु. सूर्यास्त बाद पूर्व में दीखेगा

! आश्विनमें तवकर और कार्तिकमें हविष्यभक्षण करे। स्कन्द ६!
अनु. बुधः ३।७ चन्द्रदर्शनम्
भ. ५०।४८ उ. तुलायां भौमः २२।५५ रविउलाखर मु. ४
भ. १९।२८ या. श्र.ऽश. ॥ऽधौ. घ. ४४ या.।ऽ। ल. ६ शु. †
पञ्चकप्रारम्भः ३४।२९ ध. ॥ऽरो. ध. ४३ उ. ॥ ल. ५ ‡

भ. ६।९ उ. ३३।२० या. ज्येष्ठा. शुक्रः २७।४७ † दा.वा गोधू.
! को कार्तिकेय का पूजन रात्रि के प्रथम प्रहर में करना चाहिए।
नवमीक्षयः ‡ चं. दा. वा गोधू.
सं. मूलेधनुष्यर्कः ३६।३५ मु. ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर—
भ. १५।५५ उ. ४३।३ या. श्रीगीताजयन्ती मोक्षदा ११ व्र.
ज्येष्ठाया बुधः २५।३७ — पञ्चकस. ४७।२९
प्रदोष व्र.
भ. २८।४० उ. ५७।३ या. स्वा. ३ शनिः ४८।२ पिशाच +
स्वात्यां भौमः २३।३ सत्य व्र. श्रीदत्तात्रेयज. +मोचन श्राद्धम्,

मार्गशीर्ष शु. ८ चन्द्र-इष्टम् ०।० दिनगणः ६८२८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	६	७	१	७	६	९	३
२८	२	११	२८	१७	१२	२	२
२१	४८	३५	९	२०	४७	२८	२८
१६	५३	५१	१०	३६	२१	५५	५५
६१	३६	८८	८	७५	५	३	३
२०	२१	३	१८	३७	५१	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये	चि.	[illegible]	मू.	ज्ये.	स्वा	[illegible]	[illegible]
४	१	३	२	१	२	४	४

७श.मं ८ ८ सू.बु.शु. ९ ११ ५ ४ १२ चं. ३ के. गु. १ २

इस पक्ष में सोना घी अफीम तेल और अनाज के भाव में कुछ मन्दी रहे। रुई में काफी घटा-बढ़ी होवे चौपायों का भाव महंगा। उड़द गुड़ के भाव में तेजी हो। लाल चन्दन, लाल कपड़े, केसर कस्तूरी का भाव तेज हो। जिन व्यापारियों ने पहिले गल्ला खरीद रक्खा है उनको ति. ११ के बाद अच्छा नफा होगा। कहीं देशान्तरों में झगड़े और फिसाद हो और मामूली युद्ध की समाचार मिले। बड़े २ अफसरों में आपस में विरोध बढ़े। ति. ३, ४, ५, ६ को बादल चाल और कहीं बूंदाबांदी भी होवे। शकुन वि.–मगशिर शुक्ला पक्ष में तिथिकी होवे हान रोग दोष दुर्भिक्ष हो

मार्गशीर्ष शु १५ रवा-विष्टम् ०।० दिनगणः ६८३४

१०श ८बुशु ७ ११ सू.९ श. म. १२ ६ १ ३ ५ गु.चं. ४के.
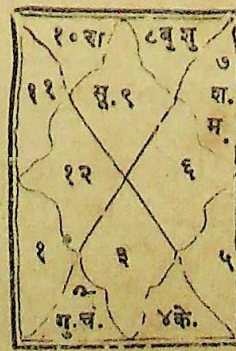
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	७	१	७	६	९	३
४	६	२०	२७	२४	१३	२	२
२९	२६	३०	२०	५४	२१	९	९
२४	८	४२	२६	११	५	५०	५०
६१	३६	८९	८	७५	५	३	३
२२	७	५५	०	३५	२६	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
[illegible]	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ	अ.
मू.	स्वा	ज्ये.	मू.	ज्ये.	स्वा	[illegible]	[illegible]
२	१	२	२	३	३	२	४

यह तुम निश्चय जान ॥ मार्गशीर्ष के काम्य-रविवार व्रत में अदयपादार्थ लिखते हैं–मार्गशीर्ष में ३ तुलसी के पत्ते खावे, पौषमें ३ पल घी (१ पल-३ तोले ४ माशे का होता है)। माघमें ३ मुट्ठी तिल, फाल्गुन में ३ पल दही, चैत्र में ३ पल दूध, वैशाखमें गोबर, ज्येष्ठमें ३ अञ्जली पानी, असाढ़ में ३ कालीमिर्च, श्रावणमें ३ पल सत्तु, भाद्रपद में गोमूत्र के ३ गण्डूष, ?

संवत् २०१० शका १८७५ पौषकृष्णपक्षः २०

दि. मा.		ति. वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हिं.	अं.	प्र.	चन्द्र. संचारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२४	५६	१	चं	२३	१७	आ.	३२	१९	शु.	७	१	कौ.	२३	१७	७	२१	१३	मिथुने	७	२२	५	२२	८	५	३०	४७
२४	५६	२	मं.	२०	१९	पुन.	३३	१	ब्र.	२ / १२	५३ / ४४	ग.	२२	१९	८	२२	१४	क.१९।२०	७	२४	५	२२	८	६	३२	११
२४	५६	३	बु.	२२	३९	पु.	३५	१	ऐं.	५७	३३	वि.	२२	३९	९	२३	१५	कर्के	७	२४	५	२२	८	७	३३	३५
२४	५७	४	गु.	२४	१७	श्ले.	३८	१८	वि.	५६	२६	बा.	२४	१७	१०	२४	१६	सिं ३८।१८	७	२४	५	२३	८	८	३५	०
२४	५९	५	शु.	२७	७	म.	४२	४०	प्री.	५६	११	तै.	२७	७	११	२५	१७	सिंहे	७	२४	५	२४	८	९	३६	२६
२५	००	६	श.	३१	६	पू.फा.	४८	५	आ.	५६	१८	व.	३१	६	१२	२६	१८	सिंहे	७	२५	५	२५	८	१०	३७	५३
२५	२	७	र.	३५	५४	उ.फा.	५४	११	सौ.	५७	४०	वि.	३	३०	१३	२७	१९	क.४।३६	७	२५	५	२६	८	११	३९	२०
२५	४	८	चं.	४१	१३	ह.	६०	००	शो.	५९	००	बा.	८	४३	१४	२८	२०	कन्यायाम्	७	२५	५	२७	८	१२	४०	४७
२५	५	९	मं.	४६	३९	ह.	०	४३	अ.	६०	००	तै.	१३	५९	१५	२९	२१	तु.३३।५७	७	२६	५	२८	८	१३	४२	१४
२५	७	१०	बु.	५१	४२	चि.	७	११	सु.	००	१८	व.	१९	९	१६	३०	२२	तुलायाम्	७	२६	५	२९	८	१४	४३	४०
२५	९	११	गु.	५६	४	स्वा.	१३	१२	धृ.	१	१५	ब.	२३	५३	१७	३१	२३	तुलायाम्	७	२६	५	३०	८	१५	४५	६
२५	११	१२	शु.	५९	२१	वि.	१८	२९	शू.	००	४१	कौ.	२७	४२	१८	ज१	२४	वृ.२।१५	७	२६	५	३०	८	१६	४६	३२
२५	१२	१३	श.	६०	००	अनु	२२	३९	गं.	१	१६	ग.	३०	२८	१९	२	२५	वृश्चिके	७	२६	५	३१	८	१७	४७	५८
२५	१४	१३	र.	१	३६	ज्ये.	२५	४४	वृ.	० / ५७	२ / ४७	व.	१	३६	२०	३	२६	ध.२५।४४	७	२६	५	३२	८	१८	४९	२३
२५	१५	१४	चं	२	२८	मू	२७	२९	ध्रु.	५४	२९	श.	२	२८	२१	४	२७	धनुषि	७	२७	५	३३	८	१९	५०	४८
२५	१७	३०	मं	२	१	पू.षा.	२८	२	व्या.	५०	१३	ना.	२	१	२२	५	२८	म.४३।११	७	२७	५	३३	८	२०	५२	१४

(२१ दिसं से ५ जन १९५४ ई०) उ.द., गो शिशिरर्तुः

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदय से पहिले पूर्वमें और गुरु भी सूर्यास्त बाद पूर्वमें दीखेगा। ति. २से बुध और ति. १२से शुक्र भी पूर्वमें अस्त होगा।

सा. मकरे भानुः ३६।१८ उत्तरायणं शिशिरर्तु प्रा.
भ. ५२।२९ उ. पूर्वास्तो बुधः २४।३१
भ. २२।३९ या.
धनु मूले शुक्रः २।४५
व. मृग १ गुरुः ९।५
भ. ३१।६ उ. व. मूले बुधः १४।३६
भ. ३।३० या. मेला बाबा हरवल्लभ जालंधर
पू. षा. रविः १८।१८

भ. १९।९ उ. ५१।४२ या.
सफला ११ व्र.
पूर्वास्तः शुक्रः ४२।० [शु. अ.] जनवरी १ ता. ११ सं. १९५४ ई.
शनि प्रदोष व्र.
भ. १।३६ उ. ३२।२ या. पू. षा. यां बुधः ४७।१६ पू. × × षा. शुक्रः ३ ७।४९
पितृ कार्येऽमा
देव कार्येऽमा

पौष कृष्ण ८ चन्द्र—इष्टम् ०।० दिनगणः ६८४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	१	८	६	९	३
१२	११	२	२६	४	१४	१	१
४०	१३	४२	१८	५८	२	४४	४४
४७	४६	१७	१४	४९	११	२३	२३
६१	३५	९२	७	७५	४	३	३
२७	५०	३१	३६	३४	५४	११	११
प.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क्रां.	द.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मू.	स्वा	मू.	मृ.	मू.	स्वा	उ.षा.	पुन.
४	२	१	२	२	३	२	१

१०रा. ८
११ ९सू.बु.शु. ७ मं. श.
१२ ६ चं.
१ ३ ५
२ गु. ४ के.

इस पक्षमें सोना हल्दी तांबा और लोहे का भाव समान रहे। अरहर मूंग मटर और चने का भाव सस्ता रहे। ति० ६ से रूई चांदी के भाव में मन्दी हो और अनाजों का रुख तेज होवे। ति. १२ से रूई में और अनाज में मन्दी होवे। सोना तांबा पीतल जिस्त हींग पारा और केसर में तेजी हो। तिल तेल आदि चीजों में भी तेजी का असर हो। ति. २, ३, ९, ११, १२, को कहीं २ उत्तर में बादल चाल और बूंदाबांदी भी हो।

शकुन विचार—पौ कृ. ८ को जो पूर्व दिशा में बादल हों और गर्जना भी सुनाई दे तो आगे तृण और अनाज तेज होवेगा।

पौषकृष्ण ३० भौम—इष्टम् ०।० दिनगणः ६८५०

१० रा. ८
११ ९ सू.चं.बु.शु. ७ मं. श.
१२ ६
१ ३ ५
२ गु. ४ के.

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	१	८	६	९	३
२०	१६	१५	२५	१५	१४	१	१
५२	०	१५	२१	३	३८	१८	१८
१४	८	१०	४१	२१	१६	५७	५७
६१	३५	९५	६	७५	४	३	३
२६	४१	३	४२	३३	१३	११	११
प.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क्रां.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
पू.षा.	स्वा	पू.षा.	मृ.	पू.षा.	स्वा	उ.षा.	पुन.
३	४	१	१	१	१	२	४

तेरस-चौदश-मावस पौष वदी में जान। तीन दिनों में गर्भ हो श्रावण वर्षा मान॥ चतुर्दशी व अमावस के दिन जिस देश में प्रातः सूर्योदय बादलों में से हो तो वहां पशुओं के चारे की दिक्कत होगी। पौष मास में घर, महल, बंगला, कोठी, नगर ग्राम आदि [illegible]

हानि। पौष मास में घर, महल, बंगला, कोठी, नगर ग्राम आदि दान करने से बड़ा भारी पुण्य होता है और ... बादलों में से हो तो वहां पशुओं के चारे की दिक्कत

संवत् २०१० शका १८७५ पौषशुक्लपक्ष २१

दि. मा.		ति.	वा.	घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि.	अं.	मु.	चन्द्र सञ्चार	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	१९	१	बु.	०	२२	उ.षा	२७	२२	वृ.	४५	६	व.	०	२२	२३	६	२९	मकरे	७	७	५	३४	८	२१	५३	४०
अ	त्रम	२	बु.	१७	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२५	२०	३	गु.	५३	५५	श्र.	२५	४३	ध्रु.	३९	११	तै.	२५	४६	२४	७	१	कुं.५४।२६	७	२६	५	३५	८	२२	५५	५
२५	२२	४	शु.	४९	२१	ध.	३	११	सि.	३२	३६	व.	२१	३८	२५	८	२	कुंभे	७	२७	५	३६	८	२३	५६	३०
२५	२४	५	श.	४४	१०	श.	१९	१८	व्य.	२५	२७	व.	१६	४५	२६	९	३	कुंभे	७	२८	५	३६	८	२४	५७	५५
२५	२५	६	र.	३८	३३	पू.भा	१६	१२	व.	१०	४९	कौ.	११	२१	२७	१०		मी.२१९	७	२८	५	३७	८	२५	५९	२०
२०	२६	७	चं.	३२	४२	उ.भा	१२	६	प.	१०	२	ग.	५	३७	२८	११	५	मीने	७	२८	५	३८	८	७	०	४४
२५	२८	८	मं.	२६	४८	रे.	७	५	शि.	२ ५४	१ १४	व.	२६	४८	२९	१२		मे.७।५५	७	२८	५	३९	८	२८	२	८
२५	३०	९	बु.	२१	६	अ.	३	५०	सा.	४६	५	कौ	२१	६	१	१३	७	मेषे	७	२८	५	३९	८	२९	३	३
२५	३२	१०	गु.	१५	४७	भ.	० ५२	४ ४९	शु.	३९	१५	ग.	१५	४७	२	१४	८	वृ.१४।१५	७	२८	५	४०	९	०	४	५४
२५	३३	११	शु.	१०	५८	रो.	५४	१५	शु.	३२	३६	वि.	१०	५८	३	१५	९	वृषे	७	२८	५	४१	९	१	६	१७
२५	३५	१२	श.	६	५९	मृ.	५२	३१	ब्र.	२६	३०	बा.	६	५९	४	१६	१०	मि.२३।२३	७	२८	५	४२	९	२	७	३८
२५	३७	१३	र.	३	५४	आ.	५१	४९	ऐं.	२१	१३	तै.	३	५४	५	१७	११	मिथुने	७	२८	५	४२	९	३	८	५८
२५	३८	१४	चं.	१	५१	पुन.	५२	१९	वै.	१६	४६	व.	१	५१	६	१८	१	क.३७।१२	७	२७	५	४३	९	४	१०	१६
२५	४०	१५	मं.	१	१	पु.	५४	२	वि.	१३	२०	व.	१	१	७	१९	१२	कर्के	७	२६	५	४४	९	५	११	३४

(६ जन से २१ जन. १९५४ ई.) उत्त. दक्षि. गो. शिशि.

ग्रहदर्शन—श. मं. सूर्योदय से पहिले और गु. सूर्यास्तबाद पूर्व में दीखेंगे। श. बु. अस्त हैं।

चन्द्रदर्शनम्

जयादि उत्सावल मु ५ पञ्चकप्रा: ५४:२६
भ. २१।३८ उ. ४९।२१ या.

उ. षा. रवि: ३१।४१
भ. ३२।४२ उ. ५९।४५ या. त्रिशा. भौमः ४५।१० जन्मदिन ∅
उ. षा. यां बुध: ७।१९ पञ्चकस: ७।५५ लोहड़ी (महोत्सव: †
सं. मकरेऽर्कः ५५।१३ मु: १५ पुण्यकाल: परदिने † पंजाब देशे)
भ. ४१।७ उ. मकरे बुध: ७।१६ उ. षा. यां. शुक्र: १३।०९
भ. १०।५८ या. पुत्रदा ११ व्र. स. ∅ सिक्ख गुरु श्रीगोविंदसिंहजी
मकरे शुक्र: ५२।२८ शनिप्रदोषव्रतम्

भ. १।५१ उ. ३१।२६ या. सत्यव्र. ÷ नियमाद्यारम्भश्च
सा कुम्भे भानु: ५५।३० खग्रासचन्द्रग्रहणम् माघस्नानव्रत ÷

पौषशुक्ल ८ भौम-इष्टम ०।० दिनगण ६८५७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	१	८	६	९	३
२८	२०	२६	२४	२३	१५	०	०
२	८	२७	३८	५१	५	५६	५६
८	४५	४४	५२	५७	४२	४२	४८
६१	३५	९८	५	७५	३	३	३
२४	२४	४४	४२	२९	४२	११	११
पू.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क्रां.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा.	वि.	उ.षा.	मृ.	उ.षा.	स्वा.	उ.भा.	पुन.
१	१	१	१	४	३	२	४

इस पक्ष में देशान्तर से राजाओं के आपस में झगड़े और मतभेद के समाचार आवें। मंग मोठ मूंग उड़द का भाव मंहगा हो। गुड़ खांड शक्कर आदि रसों के भाव में मन्दी आवे। ति. १० से घी और चावल के भाव में सस्तापन रहे। इस पक्ष में घी खरीदकर वैशाख महिने में बेचने से अच्छा लाभ हो। ति. १२ से रुई चांदी अफीम गुड़ खांड और अनाज के भाव में तेजी रहे। ति. ४, ५, ६, ७, १०, ११, १२ को उत्तर भारत में वर्षा बूंदाबांदी के योग हैं। शा. वि.—पौष सु. चौदश दिना बिजली का घनघोर। शुभ वर्षा आपइयां बोलें दादुर मोर। ति. ७।८।९ को जल बर्षे तो आगामी चौमासा उत्तम रहे। यदि ति. १३ को जल बरसे तो गेहूं भाव तेज हो, रोकने में लाभ होवेगा। पौष मासमें स्नान दानादि कर्मोंके लिए नर्मदा श्रेष्ठ मानी गई है। व्रत वाले दिन दातुन नहीं करनी चाहिए, क्योंकि लिखा है "जो पुरुष श्राद्ध वाले दिन काष्ठ की दातुन करता है उसके सात कुल नष्ट हो जाते हैं।"

पौषशुक्ल १५ भौम-इष्टम ०।० दिनगण ६८६४

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	९	१	९	६	९	३
५	२४	८	२४	२	१५	०	०
११	१५	७	१	४०	२८	१४	३४
३४	२	५७	३८	२६	५५	२६	२६
६१	३५	०	४	७५	३	३	३
१८	२	५७	२९	२९	१	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क्रां.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
उ.षा.	वि.	उ.षा.	मृ.	उ.षा.	स्वा.	उ.भा.	पुन.
३	२	४	१	२	३	२	४

संवत् २०१० शका १८७५ माघकृष्णपक्षः ११ (२० जन. से ३ फर्व. १९५४ ई.) उत्त. द. गो. शिशिरर्तुः

दि. मा.		ति. वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	हि. माघ	अं. जन.	मु. ज.छ.	लग्न. सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्टः उदयकाले			
२५	४३	१	बु.	१	२८	श्ले.	५७	१	प्री.	१०	५२	कौ.	१	२८	८	२०	१४	सि. ५७।१	७	२७	५	४४	९	६	१२	५१
२५	४६	२	गु.	३	१७	म.	६०	०	आ.	९	२९	ग.	३	१७	९	२१	१५	सिंहे	७	२७	५	४५	९	७	१४	७
२५	४९	३	शु.	६	१३	म.	१	१०	सौ.	८	५५	वि.	६	१३	१०	२२	१६	सिंहे	७	२७	५	४६	९	८	१५	२३
२५	५३	४	श.	१०	२०	पूफ	६	२२	शो.	९	१२	बा.	१०	२०	११	२३	१७	क. २२।५२	७	२७	५	४७	९	९	१६	३८
२५	५७	५	र.	१५	१२	उफा.	१२	२२	अ.	१०	८	तै.	१५	१२	१२	२४	१८	कन्यायाम्	७	२६	५	४८	९	१०	१७	५२
२६	१	६	चं.	२०	३४	ह.	१८	५१	सु.	११	२५	व.	२०	३४	१३	२५	१९	तु. ५२।८	७	२५	५	४९	९	११	१९	४
२६	५	७	मं.	२६	१	चि.	२५	२५	धृ.	१२	४८	व.	२६	१	१४	२६	२०	तुलायाम्	७	२५	५	५०	९	१२	२०	१५
२६	८	८	बु.	३१	००	स्वा.	३१	३५	शू.	१३	५५	कौ.	३१	०	१५	२७	२१	तुलायाम्	७	२४	५	५१	९	१३	२१	२६
२६	१२	९	गु.	३५	१८	वि.	३७	३	ग.	१४	३७	तै.	३	९	१६	२८	२२	वृ. २०।४१	७	२४	५	५२	९	१४	२२	१५
२६	१६	१०	शु.	३८	३१	अनु	४१	३०	वृ.	१४	१३	व.	६	५४	१७	२९	२३	वृश्चिके	७	२३	५	५२	९	१५	२३	४३
२६	२०	११	श.	४०	३८	ज्ये.	४४	५१	ध्रु.	१३	३६	ब.	९	३४	१८	३०	२४	ध. ४४।५१	७	२२	५	५३	९	१६	२४	५०
२६	२४	१२	र.	४१	२२	मू	४६	५५	व्या.	११	४२	कौ.	११	००	१९	३१	२५	धनुषि	७	२१	५	५४	९	१७	२५	५५
२६	२७	१३	चं	४०	४८	पूषा.	४७	४३	ह.	८	४९	ग.	११	५	२०	फ १	२६	धनुषि	७	२१	५	५६	९	१८	२६	५९
२६	३१	१४	मं	३९	००	उ.षा	४७	२१	व.	४	५३	वि.	९	५४	२१	२	२७	म. २।३७	७	२१	५	५७	९	१९	१८	१
२६	३५	३०	बु	३६	७	श्र.	४५	५०	सि.	० ५४	३ २४	च.	७	३१	२२	३	२८	मकरे	७	२०	५	५८	९	२०	२९	२

ग्रहदर्शन—मं. श. सूर्योदयसे पहिले ख मध्यमें दीखेंगे। शु. अस्त है ति. १४से बु. पश्चिममें उदय, गु. सूर्यास्तबाद पूर्वसे ख मध्य‡ ‡की ओर आता दीखेगा।

अभि. प्र. र विः २६।२७ श्रव. बुधः ६।१५
भ. १४।४५ उ.
भ. ६।१३ या. श्रीगणेशजन्म ४ (संकष्ट हरणी)
श्रवणे रविः ४२।३०
अभि. नि. रविः १४।४५ श्रवणे शुक्रः ४९।४७
भ. २०।१४ उ. ५१।१७ या
अनन्त श्रीजगद्गुरुरामानन्दाचार्य जयन्ती
धनि. बुधः ४७।५५ † स्नानकरोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।
वृश्चि. भौमः ५५।१९
भ. ६।५४ उ. ३८।३१ या. उ.षा. १ धनु. राहुः पुनः ३ मिथु+
षट्तिला ११ व्र. स. +केतुः ४९।५७
कुम्भे बुधः ३५।६
भ. ४०।४८ उ. फर्वरी २ ता. २८ सोम प्रदोष व्रत
भ. ९।५४ या. व. रो. ४ गुरुः १३।९ पश्चिमोदयो बुधः१२।४
अनु. भौमः४४।४ मौनी ३० कुम्भमहापर्व प्रयागराज प्रयाग? ? त्रिवेणी स्नाने महत्फलम् महोदय पर्व ०।३ उ.

५८

माघ कृष्ण ८ बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः ६८७२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा	के.
९	६	९	१	९	६	९	३
१३	२८	२१	२३	१२	१५	०	०
२१	५३	५३	३४	४३	४९	९	९
२६	३२	५९	१९	२८	१८	०	०
६१	३४	७०	३	७५	२	३	३
११	४०	२५	२	१९	१२	११	११
व.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
ध.	वि.	श्र.	मृ.	श्र.	स्वा	हि.	पुन.
२	३	४	१	१	३	२	४

११, ९, १०, सू.बु.गु.रा, ८, १२, १, ७, ४ के., ६, २, ५, ३

इस पक्ष में रूई कपास सुपारी गेहूं अलसी आदि में तेजी रहेगी। ति. ६ से रूई तिल तेल में तेजी रहे। चांदी सोना गुड़ शक्कर और गल्ले के भाव में मन्दी होवे। लौंग इलायची जावित्री हल्दी सस्ती होकर एकदम तेज हो। ति.१०से चांदी में घटावढ़ी चलकर अन्त में तेजी आवे। हरेक धातु के भाव में तेजी का असर हो। इस पक्ष के अन्त में विनौला सरसों आदि वस्तुओं में तेजी हो। टिड्डी आदि जन्तुओं से फसल को हानि हो। ति. ४,५,६,७,८,९,१४,३० को कहीं २ वर्षा व बूंदाबांदी होगी।

श. वि—माघ वदी जो पंचमी बादल होवे जान। वर्षा कछु होवे नहीं भादों वर्षा जान।

माघकृष्ण ३० बुध—इष्टम् ०।० दिनगणः ६८७९

११ बु., ९ रा., १०, सू. गु. मं., ८, १२, १, ७ श., २ ग, ४, ६, ३ के., ५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के
९	७	१०	१	९	६	८	२
२०	२	४	२३	२१	१६	२९	२९
२९	५४	१	१८	३०	२	४६	४६
२	४९	३४	४०	२६	८	४५	४५
६१	३४	९९	१	७५	१	३	३
१	१९	५३	३६	१५	३३	११	११
०.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
क्रि.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
श्र.	वि.	ध.	मृ.	श्र.	स्वा	हि.	पुन.
४	४	४	१	४	४	१	३
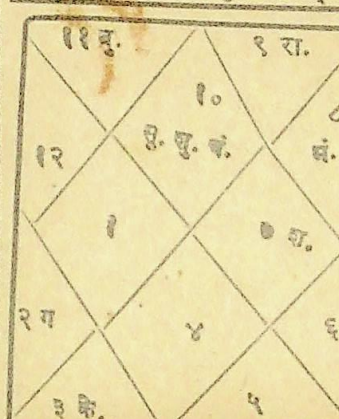
माघवदी जो ६को निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजै नहीं कपास॥ माघमें मूली छोड़ देनी चाहिये। जो पुरुष माघ में प्रातः सूर्योदय के समय किसी सुन्दर नदीमें स्नान करता है वह अपने सात कुल और माता पिताके साथ देवजीवी धारण कर स्वर्गमें आनन्द से रहता है। स्नान का मन्त्र यह है—दुःखदारिद्रयनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः †

करता है वह अपने सात कुल और माता पिताके साथ दे[illegible] ... [illegible] श्रीविष्णोस्तोषणाय च । प्रातः +

संवत् २०१० शकः १८७५ माघ शुक्लपक्षः २३

(४फर्व. से १७फर्व. १९५४ई.) उत्त. दक्षि. गो. शिशिरर्तुः

ग्र. द.–मं. सूर्योदय से पहले खमध्यके आसन्न और श. खमध्य में दीखेगा. श. अस्त है. ग. सूर्यास्तके अनंतर पूर्व से खमध्य की ओर!

इं.मा.		ति.वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.	दि.मान	अं.कुं.	सू.अं.	चन्द्र सञ्चारः	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेलवे		नित्यसूर्यस्पष्ट उदयकाले			
२६	३१	१	गु.	३२	१९	ध.	४३	३५	व.	४८	४	कि.	४	१२	२३	४	२९	कुं.१४।४२	७	१९	५	५९	९	२१	३०	१
२६	४३	२	शु.	२७	३८	श.	४०	२८	प.	४१	६	कौ.	२७	३८	२४	५	३०	कुम्भ	७	१९	५	५९	९	२२	३०	५९
२६	४६	३	श.	२२	२५	पू.भा	३६	५१	शि	३३	३९	ग.	२२	२५	२५	६	१	मी.२२।४५	७	१९	६	००	९	२३	३१	५७
२६	५०	४	र.	१६	४५	उ.भा	३२	५२	सि.	२५	५०	वि.	१६	४५	२६	७	२	मीने	७	१८	६	१	९	२४	३२	५३
२६	५४	५	चं.	१०	५३	रे.	२८	३८	सा.	१८	४	बा.	१०	५३	२७	८	३	मे.२८।३८	७	१७	६	२	९	२५	३३	४७
२६	५८	६	मं.	४	५८	अ.	२४	३४	शु.	१०	१२	तै.	४	५८	२८	९	४	मेषे	७	१६	६	२	९	२६	३४	३९
[illegible]	वम	७	मं.	[illegible]	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०
२७	२	८	बु.	५३	५८	भ.	२०	४२	शु.	५५	३२	बि.	२६	१७	२९	१०	५	वृ.३४।५१	७	१५	६	३	९	२७	३५	३०
२७	५	९	गु.	४९	१२	कृ.	१७	२०	ऐं.	४८	१८	बा.	२१	४२	३०	११	६	वृषे	७	१५	६	४	९	२८	३६	२०
२७	९	१०	शु.	४५	१५	रो.	१४	३५	वै.	४२	७	तै.	१७	१३	फा.१	१२	७	मि.४३।४०	७	१४	६	५	९	२९	३७	१०
२७	१३	११	श.	४२	१३	मृ.	१३	४५	वि.	३६	३७	ब.	१३	४४	२	१३	८	मिथुने	७	१३	६	५	१०	०	३७	५७
२७	१७	१२	र.	४०	१४	आ.	११	४७	प्री.	३१	५७	ब.	११	१३	३	१४	९	क.५६।५७	७	१२	६	६	१०	१	३८	४३
२७	२१	१३	चं.	३९	३०	पुन.	१२	००	आ.	२८	१५	कौ.	९	५२	४	१५	१०	कर्के	७	११	६	७	१०	२	३९	२९
२७	२४	१४	मं.	४०	१	पू.	१३	२६	सौ.	२५	३२	ग.	९	४०	५	१६	११	कर्के	७	११	६	८	१०	३	४०	१२
२७	२८	१५	बु.	४१	५५	श्ले.	१६	९	शो.	२३	४९	वि.	१०	५८	६	१७	१२	सि.१६।९	७	१०	६	८	१०	४	४०	५२

शते बुधः ३५।२६ वनि. शुक्रः २७।२३ श्रीवल्लभज. पञ्चकप्रा. †
चन्द्रदर्शनम् वनि. रविः ४८।१४ † १४।४२
भ. ४९।३५ उ. जमादिउलाखर मु ६
भ. १६।४५ या. ! बाता दीखगा, बुधपश्चिम में देखें।
पञ्चकस. २८।३६ बसन्त ५
भ. ५९।१७ उ. कुंभे शुक्रः ४६।३३ रथ ७ अरुणोदयस्नाने +
==सप्तमी । भीष्माष्टमी–माघशुक्लाष्टमीको जो मनुष्य भीष्मको §
भ. २६।१७ या, मार्गी गुरुः ५०।० श्रीभीष्माष्टमी (भीष्माय–
§जल देते हैं उनके एक वर्षके सब पाप नष्ट हो जाते हैं।
सं. कुंभेऽर्कः २२।३४ मुः ३० पुण्यकाल ६।३४ उ. जया ११ व्र.
भ. १३।४४ उ. ४२।१३ या. +महत्फलम् मन्वादि।
भ. पू. भा. यां बुधः १२।२३
शते शुक्रः ६।४ सोमप्रदोष व्र. —जलदानम्)
भ. ४०।१ उ. वक्री शनिः ५१।२६
भ. १०।५८ या. सत्यव्र. माघस्नानसमाप्तिः

माघ शु. ८ बुध –इष्टम ०।० दिनगणः ६८८६

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	१०	१	१०	६	८	२
२०	६	१५	२३	०	१६	२९	२९
१५	५०	९	१३	१६	१०	२४	२४
१०	२६	२४	७	५१	००	३१	३१
६०	३१	८४	०	७५	००	३	३
११	१८	१७	११	१०	४८	११	११
[illegible]	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
कि	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.
ध.	[illegible]	श.	पू.	ध.	स्वा	[illegible]	[illegible]
२	२	१	१	१	४	१	३

इस पक्ष में रुई में घटावढ़ी होकर २५-३० टका की तेजी होवे और चांदी में घटा-बढ़ी होकर ३-४ टका की तेजी आवे। चावल चना उड़द गेहूं और तिल में तेजी आवे। ऊन में १५-२० टके की मन्दी आवे। ति. ९ से ८ दिन के अन्दर अलसी गुड़ सरसों में अच्छी तेजी और चांदी में कुछ मन्दी आवे। सण जूट का भाव समान रहे और सफेद कपड़ा लाल चन्दन का भाव कुछ तेज हो। भारत के सिक्के की कीमत कुछ गिरे। ति. ३, ४, ५, १०, ११ को कहीं २ वर्षा बूंदाबांदी के योग हैं। (श. वि.) माघ सुदी सप्तमी बादल बिजली होय। पूर्व उत्तर वायु चले सम्वत् अच्छा होय।।

माघ शु १५ बुध–इष्टम् ०।० दिनगणः ६८९३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१	१०	६	८	२
४	१०	२२	२३	९	१६	२९	२९
४०	४१	३	१७	२	१२	२	२
५२	१०	७	३३	३१	३६	१७	१७
६०	३२	३४	१	७५	०	३	३
४०	४८	५०	१५	३	५	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व
कि	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ	अ.
ध.	[illegible]	[illegible]	मू.	श.	स्वा	[illegible]	[illegible]
४	१	१	१	१	४	१	३

माघ उजाली दूज वा तीज दसो जल धार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार।। माघशुक्ला सप्तमीको सूर्योदयके समय स्नान करनेसे सूर्यग्रहण स्नानके तुल्य फल होता है, स्नान मन्त्र यह है–यदा जन्मकृतं पापं यदा जन्मांतरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताऽज्ञाते च ये पुनः।। इति [illegible] पापं स्नानान्मे सप्त सप्तिके। सप्तव्याधिसमायुक्ते हर माकरी—

संवत् २०१० शक: १८७५ फाल्गुनकृष्णपक्षः २४ (१८ फर्व. से ५ मार्च १९५४ ई.) उत्त.दक्षि.गो वस.

ति. घ.		ति. वा.		न. घ.		न.	यो. घ.		यो.	क. घ.		क.	घ.	प.	फा.	फ.	मा.	चन्द्रचार:	सू. उ. वेलायां		सू. अ. वेलायां		नित्यसूर्यस्पष्ट: उदयकाले			
२७	१२	१	गु.	४४	५२	म.	२०	४	अ.	३	४	बा.	१३	२३	७	१८	१३	सिंहे	७	९	६	९	१०	५	४१	३०
२७	३६	२	शु.	४९	००	पू.फा	२५	६	सु.	२३	१२	तै.	१६	५६	८	१९	१४	क. ४१।३४	७	८	६	१०	१०	६	४२	७
२७	४१	३	श	५३	५३	उ.फा	३०	५८	धृ.	२३	५९	व.	२१	२६	९	२०	१५	कन्यायाम्	७	७	६	११	१०	७	४२	४३
२७	४६	४	र.	५९	१०	ह.	३७	२५	शू.	२५	१६	ब.	२६	३१	१०	२१	१६	कन्यायाम्	७	६	६	१२	१०	८	४३	१७
२७	५१	५	च	६०	००	चि.	४३	५९	ग.	२६	४२	कौ.	३१	५१	११	२२	१७	तु १०।४२	७	५	६	१३	१०	९	४३	४८
२७	५६	५	म	४	३	स्वा.	५०	१७	वृ.	२८		तै.	४	३३	१२	२३	१८	तुलायाम्	७	२	६	१४	१०	१०	४४	१६
२८	१	६	बु.	९	२९	वि	५५	५७	ध्रु	२८	५३	व.	९	०९	१३	२४	१९	वृ ३९।३०	७	२	६	१४	१०	११	४४	४३
२८	६	७	गु.	१३	४१	अनु.	६०	००	व्या.	२९	९	व.	१३	४१	१४	२५	२०	वृश्चिके	७	१	६	१४	१०	१२	४५	६
२८	११	८	शु	१६	४०	अनु.	००	४०	ह.	२८	३२	कौ.	१६	४४	१५	२६	२१	वृश्चिके	७	०	६	१५	१०	१३	४५	२८
२८	१६	९	श.	१८	४२	ज्ये.	४	१८	व.	२७	२	ग.	१८	४२	१६	२७	२२	ध. ४।१८	६	५९	६	१६	१०	१४	४५	४८
२८	२१	१०	र.	१९	१८		६	३९	स.	२४	३०	वि.	१९	१८	१७	२८	२३	धनुषि	६	५८	६	१७	१०	१५	४६	७
२८	२५	११	चं.	१८	३७	षा	७	४३	व्य.	२०	२८	बा.	१८	३	१८	मा	२४	म. २२।४१	६	५५	६	१८	१०	१६	४६	२५
२८	३०	१२	मं.	१६	४२	उषा	७	३६	व.	१६	२७	तै.	१६	४२	१९	२	२५	मकरे	६	५३	६	१९	१०	१७	४६	४०
२८	३५	१३	बु.	१३	४४	श्र.	६	२१	प.	११	७	व.	१३	४४	२०	३	२६	कुं ३५।१९	६	५२	६	२०	१०	१८	४६	५४
२८	४०	१४	गु.	९	४८	ध.	४	१८	शि.	५८	१८	श.	९	४८	२	४	२७	कुंभे	६	५१	६	२१	१०	१९	४७	६
२८	४२	३०	शु.	४	५९	श.	१	१२	सा.	५१	२	ना.	४	५९	२	५	२८	मी ४३।४१	६	४९	६	२१	१०	२	४	१६

ग्र. द.–म. सूर्योदय से पहिले खमध्य में दीखेगा । ति. ४ को बु. पश्चिममें अस्त । और ति. ५से शु. उदय होगा । गु. सूर्यास्तवाद – खमध्य से पश्चिम में आता दीखेगा । श. पूर्वरात्रिमें पूर्वमें ✕ दीखेगा

शते रविः ५७।५३ मृग १ गुरुः १८।१६ सा. मीने भानुः ‡

‡ २६।२१ वसन्तर्तुप्रा.

भ. २१।२६ उ. ५३।५१ या. वक्री बुधः ६।३

पश्चिमास्तो बुधः ५४।३८ श्रीगणेश ४ व्र.

पश्चिमोदयः शुक्रः ४८।० |शु. उ.|

भ. ९।२९ उ. ४१।३५ या.

पू. भा. यां शुक्रः ४६।१९ श्री सीताजन्म ८ (अर्द्धरात्रि व्यापिनी? होने से ∅ चाहिये । क्योंकि उसदिन रात्रिमें जागरण! करना होता है ।

व. शते बुधः २०।२८

भ. ४९।० उ. ∅

भ. १९।१८ या. ज्येष्ठा. भौमः ७।४६ !

मार्च ३ ता० ३१ विजया ११ व्र.

भौमप्रदोषव्रतम्

भ. १३।४८ उ. ४१।४६ या. श्रीमहाशिवरात्रिव्रतं पञ्चकप्रा. † ३५।१९

उ. भा. यां रविः १२।५० मेलाशिव १४ †

मीने शुक्रः ४७।३९

फाल्गुनकृष्ण ८ शक्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ६९०२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१	१०	६	८	२
३	१५	२०	२३	२०	१६	२८	२८
५	३२	१७	२७	१७	८	३३	३३
८	१४	५५	२८	५	२६	४१	४१
०	३१	४३	२	७४	०	३	३
२	५८	३२	५९	५३	५२	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
	अनु.	उ.भा	मृ.	पू.भा	स्वा.	उ.षा.	पुन.
१	४	१	१	२	४	१	३

१२ १० ११ सू.बु.शु. ९ १ रा २ गु ८ मं. चं. ३ के. ५ ७ श. ४ ६

इस पक्षमें रुई म घटाबढ़ी चलकर ४०-५० टका की मन्दी आवे । सेरों के भाव में और सीसा कली गेहूं जवार चावल घी तेल सरसों तमाखू और कपड़े के भाव में तेजी होवे । व्यापारीयों के लिये यह पक्ष खतरनाक है इसलिये व्यापारी सावधानी से काम करें । पृथ्वी पर वर्षा की कमी के कारण कहीं दुर्भिक्ष हो । युद्ध महामारी आदि रोगों से जीवों का सहार होवे । ति. ४,५,६,१४, ३० को कहीं रवादल चाल और कहीं बूंदा बांदी भी हो । वायु के उत्पात से वृक्षों का नाश हो । श. वि.–फाल्गुण बदी तीज को जान । दीखे पवन मेघ प्रमान ॥ असोज बदीमें वर्षा होय । रात दिन वर्षे मन मोय ।

फाल्गुनकृष्ण ३० शुक्र–इष्टम् ०।० दिनगणः ६९०९

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	१०	१	१०	६	८	२
२०	१९	१३	२४	२९	१५	२८	२८
४७	१३	२१	३	०	५९	११	११
१६	३	२	३७	४०	३३	२६	२६
६०	३१	५९	४	७४	१	३	३
१०	५	४८	१६	४३	१६	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
	उ.	अ.		उ.	अ.	अ.	अ.
पू.भाद्र.	ज्ये.	श.	म.	पू.भा.	स्वा.	उ.षा.	पुन.
१	१	३	१	३	३	१	३

१२ १० ११ सू.बु.शु.चं. ९ रा १ २ गु. ८ मं. ३ के ७ श. ५ ४ ६

फाल्गुण कारी दूजदिन निर्मल रहे अकास । श्रावणभादों जल बहु सुखर जाय चौमास । फाल्गुन कृष्णमें शिवरात्रि व्रत अवश्य करना चाहिये इससे मनुष्य का कल्याण होता है । चाहे सौर हो अथवा वैष्णव या किसी और देवताके मानने वाला हो क्यों नहीं वह शिवरात्रि व्रतके बिना किसी देवता की पूजाके फलको प्राप्त नहीं करपाता । शिवरात्रि की चतुर्दशी प्रदोषव्यापिनी ही ग्रहण करनी ∅

संवत् २०१० शकः १८७५ चैत्रकृष्णपक्षः २ (२८ मार्च से ३ अप्रैल. १९५४ ई.) उत्त. गो. वसन्तर्तुः

ग्र. द.—बु. सूर्योदयसे पहिले पूर्व में और मं.ख मध्यमें दीखेगा। शु. गु. सूर्यास्तबाद पश्चिममें दीखेंगे। श. पूर्व रात्रि में पूर्व में दीखेगा

दि. मा.		ति. वा.		घ.	प.	न.	घ.	प.	यो.	घ.	प.	क.	घ.	प.				लग्नादि	सू. उ. रेल्वे		सू. अ. रेल्वे		नित्यसूर्यस्पष्ट उदयकाले				
३०	०	१	शु.	३०	५३	ह.	५६	१३	वृ.	४०	५९	कौ.	३०	५३	७	२०	१४	कन्यायाम्	६	३३	६	३२	११	५	४५	२७	सा. मेषे भानुः २२।५४ होला १ मेला श्रीआनन्दपुर सा.
३०	४	२	श.	३६	१०	चि.	६०	००	ध्रु	४२	३२	तै	३	३०	८	२१	१५	तु.२९।३१	६	३१	६	३२	११	६	४५	३	
३०	९	३	र.	४१	२५	चि.	२	४९	व्या.	४३	५६	व.	८	४७	९	२२	१६	तुलायाम्	६	३०	६	३३	११	७	४४	३६	भ. ८।४७ उ. ४१।२५ या.
३०	१४	४	सो.	४६	१३	स्वा.	९	१३	ह.	४५	१	ब.	१३	४९	१०	२३	१७	वृ.५८।३६	६	३०	६	३४	११	८	४४	६	श्रीगणेश ४ व्र.
३०	१८	५	मं.	५०	१६	वि.	१५	६	व	४५	३३	कौ.	१८	१४	११	२४	१८	वृश्चिक	६	२९	६	३५	११	९	४३	३४	
३०	२३	६	बु.	५३	१२	अनु.	२०	००	सि.	४२	१४	ग.	२१	४४	१२	२५	१९	वृश्चिक	६	२७	६	३५	११	१०	४३	१	भ. ५३।१२ उ. मेला श्रीशीतला माता कुराली
३०	२८	७	गु.	५५	१	ज्ये.	२४	५२	व्य.	४४	७	वि.	२४	६	१३	२६	२०	ध.२४।५२	६	२५	६	३७	११	११	४२	२७	भ. २४।६ या. श्रीशीतला ७
३०	३३	८	शु.	५५	२८	मू.	२६	३१	व.	४१	५४	बा.	२५	१४	१४	२७	२१	धनुषि	६	२३	६	३७	११	१२	४१	४८	धनु मूले भौमः ११।३९
३०	३७	९	श.	५४	४०	पूषा.	२७	५३	प.	३८	४३	तै.	२५	४	१५	२८	२२	म.४२।५५	६	२२	६	३८	११	१३	४१	५	
३०	४२	१०	र.	५२	३६	उ.षा.	२८	२	शि.	३४	३१	व.	२३	३८	१६	२९	२३	मकरे	६	२१	६	३९	११	१४	४०	२०	भ. २३।३८ उ. ५२।३६ या. मेषेऽश्विन्याञ्च शुक्रः ५८।१ मृग‡
३०	४६	११	सो.	४९	३१	श्र.	२७	००	सि.	२९	२८	ब.	२१	३	१७	३०	२४	कु.५६।३	६	२०	६	४०	११	१५	३९	३४	पापमोचनी ११ व्र. ‡२ गुरुः ३५।२०
३०	५०	१२	मं.	४५	२९	ध.	२५	७	सा.	२३	३६	कौ.	१७	२५	१८	३१	२५	कुम्भे	६	१८	६	४०	११	१६	३८	४७	रेवत्यां रविः १।१६ + प्रदोष व्र. अप्रैल ४ ता. ३०
३०	५४	१३	बु.	४०	३७	श.	२२	२१	शु.	१७	६	ग.	१३	३	१९	अ	२६	कुम्भे	६	१७	६	४१	११	१७	३७	५७	भ. ४०।३७ उ. वारुणी पर्व, उ. भा यां बुधः १।३ +
३०	५८	१४	गु.	३५	११	पू.भा	१८	५५	शु.	१०	०	वि.	७	५४	२०	२	२७	मी.४।४७	६	१६	६	४१	११	१८	३७	६	भ. ७।५४ या. मेला पहोवा पू षा. ४ राहुः पुनः २ केतुः ४७।७
३१	३	३०	शु.	२९	२१	उ.भा	१५	३	ब्र.	२/१४	३४/५४	च.	२	१६	२१	३	२८	मीने	६	१५	६	४१	११	१९	३६	१२	मन्वादि चान्द्र संवत्सर समाप्तिः

चैत्रकृष्ण पक्ष ८—शनाविष्टम् ०।० दिनगण: ६९३१

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	१०	१	११	६	८	२
२	२९	१४	२६	२६	१५	२७	२७
१	५४	५५	१९	१९	२	१	१
८	४७	२६	१९	४४	५६	३२	३२
९	२७	५२	८	७४	३	३	३
१	५	५९	४	१७	२४	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	ज्ये.	श्र	मू.	रे.	स्वा.	उ.षा.	पु.
१	४	१	२	४	३	१	३

इस पक्ष में घी तैल आदि रसकस में तेजी, अलसी कुछ मन्दी हो। ति. ७ से बाद घटाबढ़ी होकर तेजी चले और चान्दी में भी तेजी का असर रहे। कपास सूत कपड़ा विनौला घास लकड़ी घी और चौपाये पशुओं के भाव में तेजी हो। ति. ११ से अलसी और ऊन के भाव में मन्दी आवे। अनाज और चान्दी में काफी तेजी चले। ति. ११से तेल में तेजी और चान्दी में२-३ टका की मन्दी आवे। ति.७,८,१३,१४को कहीं २ बादलचाल और हवा का जोर रहे। शकुन विचार—चैत्र बदी प्रतिपदा को गर्जे मेघ अपार, श्रावण भादवके विषे अनावृष्टि निरधार। चौथ पञ्चमी चैत्र वदि, वर्षे और चले वाय। पड़े काल उस देश में ऐसा योग बताय॥ मंगला—चन्द्रमौलि शंकर चरण बार २ शिर नाय। संवत् यह पूर्ण कियो गिरा गणेश मनाय॥ चैत्र कृष्ण १ भृगुवार को "चाम्रमपत्रं वसन्तस्य माकन्दकुसुमन्तथा। सचन्दनं पिबाम्यद्य सर्वकामार्थसिद्धये" इस मन्त्र से आम्रकी मञ्जरी खाने और [illegible] स्पर्श करने का बड़ा माहात्म्य है।

चैत्रकृष्ण ३० शनाविष्टम् ०।० दिनगण: ६९३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	१०	१	०	६	८	२
१९	२	२२	२७	४	१४	२६	२६
३६	५८	१७	१७	५९	३७	३९	३९
१२	९	३०	२१	१३	१२	२०	२०
५९	२५	७०	८	१४	३	३	३
६	३२	३५	४३	१०	५३	११	११
[illegible]	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
[illegible]	उ.	[illegible]	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
रे	मू.	श्र	मृ.	अ.	स्वा.	पू.षा.	पु.
१	१	१	२	२	३	१	[illegible]

स्वरशास्त्र का चमत्कार

घण्टात्मक स्पस्ट स्वदेशीय (लोकल) टाइम से घट्यादिक इष्ट निकालने की रीति

यदि प्रश्न वा जन्म समय का लोकल टाइम दिन के १२ बजे से पहिले हो तो जन्म वा प्रश्नकाल के लोकल घण्टे मिन्टों में से सूर्योदय के लोकल घन्टे मिन्टों को घटाकर जो घंटे मिन्ट शेष बचें, उनकी घड़ी पल बना लो, बस वही सूर्योदयात् शुद्धेष्ट होगा। यदि दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजेतक जन्म व प्रश्न काल हो तो घण्टे मिनटों के घड़ी पल बना कर दिनार्द्ध में जोड़ने से सूर्योदयगत् इष्टकाल आता है। यदि रात के १२ बजे से पीछे आर्द्धोदय पर्यन्त का इष्ट काल अपेक्षित हो तो १२ बजे के अनन्तर जितने घण्टे मिनट हो गये हों उनकी घड़ी पल बना कर उस दिन के मिश्रमान (दिनार्द्ध में से ३० घड़ी जोड़े हुए अंक) में जोड़ देने से सूर्योदयात् शुद्धेष्ट काल होगा।

अथवा जेब घडी द्वारा अभीष्ट दिन को अपने ग्राम का सूर्योदय पहिले मिला कर नोट कर रक्खें, या दूसरे दिन मिला ले, फिर जितने घन्टे मिनट सूर्योदय से जन्म अथवा प्रश्न पर्यन्त व्यतीत हो चुके हों उनकी घडी पल बना लेने से भी सूर्योदयात् शुद्धेष्ट आता है। इसमें स्टैंडर्ड लोकल टाइम का अन्तर जोड़ने घटाने की कोई आवश्यकता नहीं।

नोट---१ घडी मे २४ मिनट, एक मिनट, मे २॥ पल और एक सैकिण्ड मे २॥ विपल होते हैं।

द्वादशांगुल शंकु पर से इष्ट साधन

यदि किसी स्थान पर अंगरेजी घडी न मिले तो ज्योतिषी को चाहिए कि सूक्ष्मेष्ट ज्ञानार्थ आर्यभट्टोक्तद्वादशांगुलशंकु (गाजर सदृश ऊपर से पतला नीचे से मोटा गोलाकार) से इष्टकाल साधन करे--परद्युमानं दिनमानवर्जितं नगघ्नमक्षाप्तमहस्तु मध्यभा। भावार्थ-परमदिनमान (स्वदेशीय सब दिनमानों से बड़ा दिनमान) जो सूर्य की सायन कर्क संक्रांति के दिन होता है, उसमें से इष्ट दिनमान को हीन करे, शेष को सात गुणा करे फिर ५ से भाग दें जो लब्ध मिले सो इष्ट दिन में उसी देश की मध्यभा (मध्याह्न छाया) होती है, अर्थात् बारह अंगुल के शंकु की छाया होती है। द्युमध्यभोना दशयुङ्निजेष्टभा शराहताह र्मितिभुद्विरेलया। क्रमान्मतापूर्वपराह्णखण्डयोर्द्वयोरवाप्ता गतगम्यनाडिका ॥ जिस समय का इष्टकाल जानना हो उस समय शंकुकी अंगुल व्यंगुलात्मक छाया (इष्टभा) को दश १० में युक्त करें फिर स योग मे पूर्व सिद्ध मध्यभा को घटा दे, जो शेष बचे वह भाजक (जिस का भाग देना है) होता है, अपने घटी पलात्मक दिनमान को पांच गुणा कर देने पर भाज्य (जिस अंक में भाग देना है) होता है, भाज्य में भाजक का भाग देकर जो फल लाना जो फल आवे वह घटी पलात्मक इष्ट काल आता है। परन्तु इसमें यह स्मरण रखें कि यदि मध्याह्न से पहले नापा हो तो इतने घटी पल गत और मध्याह्न से पीछे नापा हो तो, इतने घटी पल शेष दिन है ऐसा जानना।

शुक्रोपासित मृत सञ्जीवनी मन्त्र:

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे भर्गोदेवस्य धीमहि सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं धियोयोनः प्रचोदयात् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात्।

स्वरशास्त्र का चमत्कार

(१) प्रातः जागते समय जिस नथने से श्वास चल रहा हो उसी ओर के हाथ को देखकर श्वास अन्दर खींचे, पुनः देखे, भगवान् को स्मरण कर हाथ चूमे। चलते श्वास वाली ओर का पाद प्रथम पृथ्वी पर रखे। सदैव ऐसा ही करें। सदा सफलता व प्रसन्नता प्राप्त होगी, सभी दुःख दूर होंगे। (२) दिन को बायां और रात को दायां स्वर चलाया करें। भोजन करने के बाद आधा घंटा बाईं करवट लेटे, पाखाना करते और नहाते समय दायां स्वर चलाया करें जल पीने बाद बाईं करवट लेटे और पेशाब करते समय बायां स्वर चलाया करें। रोग पास न फटकने पायेंगे। (३) जिस से कार्य लेना हो उसे चलते श्वास की ओर रख कर बातचीत करें, काम निकल आयेगा। (४) पीड़ा आरम्भ होते समय जो स्वर चल रहा हो उसे बन्द कर दें, दूसरा स्वर चलायें, पीड़ा भाग जाएगी। (५) शत्रु, रूठे मित्र, या क्रोधित अफसर के पास जाने से पहले शनैः शनैः श्वास अन्दर खेंच कर नाभी में ठहरायें, उस पुरुष की मूर्ति नाभि में देखें फिर शनैः शनैः श्वास बाहर निकालें, नाभि में बैठी उसकी मूर्ति का ध्यान फिर धरें, श्वास अन्दर खेंचते हुए उस रूठे पुरुष के विचार मन में लिए उसके पास जायें, उसे बन्द नथने की ओर करके बातचीत करें, इच्छाएं पूर्ण होंगी। (६) रोग सरदी से हो तो दायां और गर्मी से हो तो बायां स्वर चलाने से आराम होगा। (७) शुक्ल पक्ष के पहले रविवार को दायां स्वर चलते समय दृढ़निश्चयपर्वक पत्र लिखें अवश्य आशा पूर्ण होगी। (८) रात के पिछले पहर पुरुष का दायां और स्त्री का बायां स्वर चलते समय भोग हो तो स्त्री-पुरुष में अटूट प्रेम बढ़े व स्वास्थ्य ठीक रहे। (९) दोनों नथने चलते समय सर्व कार्य छोड़ ईश्वराराधन से इच्छाएं पूर्ण होंगी।

॥ अथ योगिनीदशाकृतारिष्टशमनाय जपार्थमंगलादीनां मन्त्राः ॥

मंगलामन्त्रः	पिंगलामन्त्रः	धान्यामन्त्रः	भ्रामरीमन्त्रः
ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा	ॐ ग्लौं पिंगले वीरकारिणीप्रसादे फट् स्वाहा	ॐ श्रीधनदे धन्ये स्वाहा	ॐ भ्रामरिजगतामधीश्वरि भ्रामरि क्लीं स्वाहा
भद्रिका मन्त्रः	**उल्कामन्त्रः**	**सिद्धामन्त्रः**	**संकटामंत्रः**
ॐ भद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय	ॐ उल्के मम रोगं नाशय जंभय स्वाहा	ॐ ह्रीं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय	ॐ ह्रीं संकटे मम रोगं नाशय स्वाहा

प्रहरवशात् भूकम्पफलज्ञानाय चक्रम्

दिने प्र. प्रहर	दिने द्वि. प्रहर	दिने तृ. प्रहर	दिने च. प्रहर	रात्रौ प्र० प्रहर	रात्रौ द्वि० प्रहर	रात्रौ तृ० प्रहर	रात्रौ च० प्रहर
राजा मृत्यु	मंत्रीभय	पशुभय	अन्नका नाश	अन्नवृद्धि	राज्यभय	प्रजापीड़ा	राजयुद्ध

अथ तेजी मन्दी निकालने की ध्रुवा।

अथ दिन ध्रुवा ॥ १ ॥

सूर्य १३७	चन्द्र ९४	मंगल ८०९
बुध ७०२	बृहस्पति ७१३	शुक्र ८०८
शनि ८५	०	०
पृथ्वी भर का ध्रुवा		२०८५

अथ तिथि ध्रुवा ॥ २ ॥

प्रतिपत ६१०	द्वितीया ७१०	तृतीया ४८१	चतुर्थी ३५७
पंचमी ६३४	षष्ठी ३०४	सप्तमी ८१२	अष्टमी १११
नवमी ५६५	दशमी ३०५	एकादशी २३३	द्वादशी २६१
त्रयोद० ५२४	चतुर्दशी ५५२	पूर्णिमा ६३०	अमावा १६६

अथ नक्षत्र ध्रुवा ॥ ३ ॥

अश्वि १७६	भरणी ६८३	कृत्ति ३७०	रोहि० ७७५	मृग ६८२	आर्द्रा १४६	पुन ५४०
पुष्य ६३४	अश्ले १७०	मघा ७३	पू.फा ८५	उ.फ १४८	हस्त ८१०	चित्रा ३०५
स्वाती ८६१	विशा ७३४	अनु ७१२	ज्येष्ठा ७१६	मूल ६४३	पू० षा ६१४	उ.षा ६२३
अभि ६८३	श्रव ६५७	धनि ५००	शत० ५६४	पूभा ३३६	उभा १८३	रेवती ७२०

अथ मास ध्रुवा ॥ ४ ॥

चैत्र ६१	वैशा० ६३	ज्येष्ठ ६५
आषा ६७	श्राव ६९	भाद्र ७१
आश्वि ७३	कार्ति ५१	मार्ग ५३
पौष ५५	माघ ५७	फाल्गु ६५

अथ सूर्य राशि ध्रुवा ॥ ५ ॥

मेष ५२०	वृष ७६२	मिथुन ५१०
कर्क २१८	सिंह ८३०	कन्या २६०
तुला ५०३	वृश्चिक ७११	धनु ५२४
मकर ५५४	कुम्भ २७०	मीन ५८६

अथ देश तथा ग्रामों की ध्रुवा ॥ ६ ॥

कलकत्ता २४७	नागपुर १६६	आसाम ७९१	इटावा ८९०
हरद्वार २७२	बिकानेर २१३	अजमेर १६७	बम्बई १९८
मध्य प्र० १६८	नेपाल १५४	चीन ६४२	पंजाब ४१९
रंगून १६७	सूरत १२८	युरोप ९७६	अमेरिका ३३२

अथ पदार्थों की ध्रुवा ॥ ७ ॥

सोना २५३	चांदी ७६०	ताम्बा ५६३	पीतल २५८	लोहा ९१५	कांशा २४९	पत्थर १६३	मोती १८२
रूई ७१७	कपड़ा १२७	पाट ४७६	हैसिअन ७३८	सुता १०३	तमाकू २४०	सुपारी २५२	लाह ८८
मरिच २६८	घृत ४६४	तेल १६९	अतर ७५	गुड २५६	चीनी ३२८	ऊन ११२	शाल ८११
धान ७१२	गेहूँ २३२	मूंग ८०१	चावल ७७४	तीसी ३८६	सरसो ८५८	राहर ९३३	नीमक ३१७
सोरा १५६	अफीम २६३	गौ १३२	बैल १६२	महिषी ६१२	भेडा ६१८	हाथी ८३०	घोड़ा ८३५

अथ तेजी मन्दी देखने का चक्र ८

सूर्य १ तेज	चन्द्र २ अतिमन्द	भौम ३ तेज
राहु ४ अतितेज	बृहस्पति ५ मन्द	शनि ६ तेज
बुध ७ सम	केतु ८ तेज	शुक्र ९ तेज

॥ अथ तेजी मन्दी निकालने की रीति ॥

जिस देशकी जिस वस्तुकी, जिस दिन तेजी मन्दी निकालना हो उस देश, वस्तु, तिथि, वार, नक्षत्र, मास, राशि इन सबके ध्रुवाओंका योग (जोड़) कर नौ ९ का भाग देकर शेषसे जिस दिनका विचारना है उस दिनसे शेष तुल्य कोष्ठमें ८ आठवें चक्रमें देखकर तेजी मन्दी ज्ञान कर लेना।

उदाहरण—जैसे कलकत्तेमें वैशाख सुदी तृतीया ३ गुरुवारको कृत्तिका नक्षत्रमें चांदीकी तेजी मन्दी जाननी है। तो कलकत्तेकी ध्रुवा २४७ वैशाखकी ६३ तृतीया ध्रुवा ४८१ गुरुवार ध्रुवा ७१३ कृत्तिका नक्षत्र ध्रुवा ३७० चांदीकी ७६० सूर्य मेष राशिका ध्रुवा ५२० सबका जोड़ ३१५४ इसमें ९ का भाग देनेसे शेष बचा ४ [illegible] तेज

सर्वशुभ कार्यों के लिये वर्जित काल—जन्ममास, जन्मतिथि जन्मनक्षत्र, व्यतिपात, भद्रा, वैधृति, अमावस्या, माता पिता के श्राद्ध का दिन, तिथि-वृद्धि, तिथिक्षय, अधिक तथा क्षयमास, गुरु, शुक्र का अस्त तथा इनका बाल वृद्धत्व, १३ दिन का पक्ष, कुलिकयोग, अर्द्धयाम, महापात, विष्कुम्भ और वज्रयोग के आदि की ३ घड़ियां परिघयोग का आधा भाग, शूलयोगके आदि की ५ घड़ियां, गण्ड और अतिगण्ड के आदिकी ६ घड़ियां और व्याघातयोग के आदि की ९ घड़ियां ये सब शुभकार्यों में वर्जित हैं। मध्याह्न या मध्य रात्रि से पहले और पीछे के दस दस पलका पापग्रह, नवांशक ग्रहण के पहले के तीन दिन उत्पात और ग्रहण के पीछे के सात दिन (किसी के मत से ५ दिन, ३ दिन या ५ मुहूर्त) वर्जित हैं; स्वराशि से ४।८।१२ वां चन्द्रमा तथा पाप ग्रह से युक्त चन्द्र व लग्न और नवांश के भी वर्जित हैं। सब शुभ कार्यों के लिये साधारणतः शुभमुहूर्त—अपने जन्मलग्न या जन्मराशि से ३।६।१०।११ वीं राशि लग्न में हों, शुभग्रह से युक्त व दृष्ट हों, लग्न से ८।१२ स्थान में कोई ग्रह न हो तो सब शुभकार्यों का आरम्भ सिद्धिदायक है ॥

गुरु शुक्र के अस्त में वर्जित कर्म—बावली, बगीचा, तालाब, कूप, मकान; इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ और व्रतोद्यापन, महादान, गोदान, प्रथमश्रावणीकर्म, नीलवृषयाग, मुंडनसंस्कार, देवतास्थान, दीक्षा, यज्ञोपवीत विवाह, अपूर्वदेवतीर्थदर्शन, संन्यास अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ; इन कर्मों को गुरु शुक्र के अस्त में तथा इनके बाल्य-वार्धक्य में नहीं करना चाहिये ॥ सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि च। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः ॥

गुरु शुक्र का बाल्यवृद्धत्व—शुक्र पश्चिमोदय के बाद १० दिन, पूर्वोदय के बाद ३ दिन बाल्य होता है। इसी प्रकार अस्त प्रथम पश्चिम में ५ दिन और पूर्व में १५ दिन वृद्धत्व होता है गुरु का बाल्य तथा वृद्धत्व १५ दिन का ही होता है। एक आचार्य का मत है कि आवश्यक कर्म में गुरु शुक्र के बाल्य-वृद्धत्व का ३ दिन ही दोष मानना। इसी प्रकार चन्द्रमा का बाल्य आधे दिन, वृद्धत्व दोष ३ दिन मानना।

जन्मचन्द्रप्रशंसा—कृषिभवनविवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादिकृत्ये। पट्टविधिमभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्तः, इति वदति वराहः क्षौरयात्रां विहाय ॥ द्वादशचन्द्रप्रशंसा—गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषेके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ॥

किस कार्य में किस ग्रह का बल देखना

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	एषां बलम्
नृप दर्शने	सर्वसकार्ये	संग्रामे	विद्याभ्यासे	विवाहेचोत्सवे	यात्रायां	दीक्षायां	पापकर्मणि	क्रूरकृत्ये	एतत् कृत्येषु

भद्रायां कार्याकार्यनिर्णयः—

वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादि कर्मविष्ट्यां तु सिद्धयति ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्ट्यां जीवितार्थी कदाचन। कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत् सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ आवश्यके परिहारः—दिवापरार्द्धजा विष्टिः पूर्वार्द्धोत्था यदा निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम् ॥

भद्रायां मुखपुच्छघटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	आसां तिथीनाम्
.	आ.	उ.	.	ई.	द.	वा.	पू.	आसु दिग्विदिक्षु
५	२	७	४	८	३	६	१	एषु यामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघटी ५ कृष्णे शुभम्
८	१	६	३	७	२	५	४	एषु यामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयं पुच्छं शुक्ला शुभम्

गुर्वादित्यविचारः—एकर्क्षे गुर्वर्के व्रतबन्धोद्वाहकादयः सर्वे। न शुभफलदाश्च गदिता अस्तमितेज्येऽनर्थदः प्रोक्तः, (भृगुः) एकराशौ गुरुसूर्यौ न विवाहः कदाचन। ऋक्षान्तरे गुरुसूर्यौ तदा दोषो विनश्यति। सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहे कदाचन। मेषस्थिते दिवानाथे सिंहेज्ये च शुभप्रदः ॥ आवश्यके परिहारः—मघादि पञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः। गंगा-गोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ नीचराशि (मकर) गतो जीवः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषु नीचता ॥ यात्रोद्वाहो प्रतिष्ठाञ्च गृहचूड़ाव्रतादिकम्। वर्जयेद्यत्नतश्चैव जीवे वक्रातिचारगे। अपवादः—अतिचारे सप्तदिनं वक्रे द्वादशमेव च। नीचस्थितेऽपि वागीशे मासमेकं विवर्जयेत् ॥ अन्यच्च—वक्रे सुरेज्ये स्वगृहे द्विमत्रयम्। वर्ज्यं मुनीन्द्रैरखिलेषु कर्मसु (मुहूर्तकल्पद्रुमे) ॥

ताराबलविचारः—कृष्णाष्टम्यूर्ध्वतो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबलं ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु ॥ ताराऽपवादः—पर्याये प्रथमे वर्ज्यः विपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वंशका वर्ज्याः तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्यंशो विपदि त्याज्यः प्रत्यरे चरमोऽशुभः। वधस्त्याज्यस्तृतीयोंऽशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभ-ताराज्ञानाय चक्रम्

जन्म नक्षत्रं से दिन नक्षत्र तक गिनें। गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	९।१८।२७
जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मित्र	परममित्र
शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ

आवश्यक मुहूर्त

गर्भाधानसंस्कार का मुहूर्त

शुभ तिथियां—१,२,३,५,७,१०,११,१२,१३। शुभ नक्षत्र—तीनों उत्तरा. मृ. ह. अनु. रो. स्वा. श्र. ध. श.। शुभ लग्न—जब लग्न और ४,५,७,९,१० स्थानों में शुभग्रह हों, ३,६,११ स्थानों में पापग्रह हों सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो रजोदर्शनकाल समरात्रि है ॥

चित्रा पुन. पुष्य. अश्विनी नक्षत्र गर्भाधान के लिये मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिये अशुभ काल

भद्रा, ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्राति का दिन, संध्याकाल, मंगल, रवि शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहिली चार रात्रियां. ज्येष्ठा रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी, मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी, ४, ८, १२, लग्नों के अन्त की आधी घड़ी, ५. ९, १ लग्नों के आदि की आधी घड़ी, ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी, ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक घड़ी, निधनतारा, जन्म नक्षत्र मूल, भरणी अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र, ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृतियोग, माता पिता के श्राद्ध का दिन, दिन का समय, परिघयोग का आधा भाग, उत्पात से हत नक्षत्र, जन्मराशि से अष्टमलग्न, पापग्रहयुक्त लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी		मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमयका लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिये और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिये, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त—गर्भाधान से तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १, २, ३,५,७,१०,११,१३,१५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं॥

सीमन्तसंस्कार का मुहूर्त—गर्भाधान से छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ

गर्भरक्षा के लिये विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिये ॥

मेधाजननसंस्कार—बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहिले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिला के "ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा २ चार बार मधु घृत चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान्और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त—रिक्तामा भद्रा व्यतिपात वैधृति को छोड़ कर शुभ तिथियां हों, वार चं. बु. गु. श. हों, नक्षत्र मृग. पुन. पु. ह. श्र. रे. मृ. हों तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिका पथ्य शुभ है॥

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त—रेवती तीनों उत्तरा रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में, रवि गुरु और भौम वारों में, १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं ॥

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध गुरु या चन्द्र वार की ४, ९, १४ तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जल पूजन उत्तम है; परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र पौष या अधिक मास पूरा होने पर भी जल पूजन न करना चाहिये।

जातकर्म और नामकर्म का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन भद्रा और व्यतिपात को छोड़ कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ तिथियों में जन्म काल से ११वें या १२वें दिन सोम बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा रो. ह. अश्विनी पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है ॥

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
नैरुज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म दिन से १०।१२।१६।१८।३२वें दिन, शुभवार में, मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन से रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर (१।४।५।६।७।९।१०।११ वें शुभग्रह हों ३।६।११ पापग्रह हों तो) उत्तम होता है ॥

निष्क्रमणमुहूर्त—स्वा. अश्वि. पुष्य. ह मू. पुन. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में, भौम, शनि को छोड़ कर अन्य वारों में, रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभदिन में, तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२ वें दिन बालक का निष्क्रमण करे, इसी दिन सूर्य और नक्षत्र

ली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ

भूम्युपवेशनमुहूर्त--पाचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन कर, भौम क पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर स्थिरलग्न में शुभ दिन में बालक के कर्धनी (कटिसूत्र) बाध कर पृथ्वी पर बिठलावें।

तत्र मन्त्रः--रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयु:प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये! इति॥ इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र. स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रक्खें, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है॥

अन्नप्राशन का मुहूर्त--जन्म मास से ६. ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें कन्या का भद्रादिदोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध गुरु और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १. ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३. ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह रहित हो, १, ६, ८ स्थानों में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी २ के मत से जन्मनक्षत्र अनु. शततारका और स्वाती अशुभ हैं॥

कर्णवेध का मुहूर्त--चैत्र पौष देवशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़ कर जन्म से १२ वें दिन या १६वें दिन या ६वें, ७वें. ८वें, मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्विनी पुष्य अभिजित नक्षत्रों में, जब लग्न से अष्टमस्थान शुद्ध हो, १, ४, ५, ७, ९, १० स्थान में शुभग्रह हों. ३, ६, ११ स्थानों में पाप ग्रह हों, तुला वृष धन या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है॥

कन्या का नासिकाछेदन मुहूर्त--कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत. स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम पहर के समय नासिकावेध शुभ है।

मुण्डन का मुहूर्त--गर्भाधानकाल से या जन्म काल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़ कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र बुध गुरु और शुक्रवार लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टमलग्न को छोड़, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, तिथियों में संक्रान्ति के दिन को छोड़, जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, ज्ये, मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध.. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है। लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिये निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिये॥

मुण्डनकर्म में विशेष--स्वकुलशिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुद्ध समय में अपने २ इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो--"यथाकुलधर्मतः" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है॥

क्षौर बनवाने का मुहूर्त--मुण्डन के लिये जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गये हैं वेही हजामत बनवाने के लिये शुभ हैं। वर्जित काल--शनि, रवि, भौमवार हजामत से नौवें दिन, सन्ध्याकाल, ४, ८, ९. १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्ति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवा कर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है॥

विशेष फल--यज्ञ, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है॥ किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे और रूपजीवी जैसे नट, भाड़ इत्यादि वह किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं॥ वर्णभेद से क्षौर का वार--ब्रा ण रविवार को, क्षत्रिय भौमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त--जन्म से ५वें या ७ वें वर्ष में उत्तरायणसूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम बुध गुरु और शुक्र वार को, ह० अश्विनी पुष्य अभि० श्र० स्वा० रे० पुन० आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रों में, बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष कर्क तुला और मकर राशियां न होनी चाहियें॥

विद्यारम्भ का मुहूर्त--उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़ कर) रवि बुध गुरु और शुक्रवार को, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में, मृ० आर्द्रा पुन० हस्त चि० स्वा० श्र० ध० शत० अश्विनी मू० तीनों पूर्वा० तीनों उत्तरा, रो० पुष्य आश्ले० अनु० रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५. ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है॥

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त--सू० भौम शनिवार हों, ४।९।१४ तिथि हों, ज्ये० आश्ले० म०, तीनों पूर्वा० भ० कृ० वि० आर्द्रा उषा० शत० नक्षत्र शुभ हैं॥

सीने पिरोने (सूचीकर्म) का मुहूर्त--अश्वि० पुन० चि० अनु० ध० ये नक्षत्र सूर्य बुध चन्द्र बृ० शु० ये वार १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं॥

यज्ञोपवीतसंस्कार का मुहूर्त--यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है, देवताओं की पूजा संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत के अर्थ हैं पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत तन्तु-(धागा)-विशेष यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु चन्द्र शुद्धि देख कर जन्म से वा गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११ वें, वैश्य १२ वें इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उस के बाद सावित्रीपतितव्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि. पुष्य. अभि. ३ उत्तरा. रो. आश्ले. स्वा. श्र. ध. मृ. मृ. रे. चि. अनु. तीनों पूर्वा. आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिये पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य है) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढशुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२ को और संक्रान्ति दिन को तथा रोगबाण को छोड़ कर मध्याह्न के पहिले शुभ है। शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८वें स्थान में चं. शु. १२ वें स्थान में और १।५।८ पापग्रह अशुभ हैं। शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में पापग्रह ३।६।११ स्थानों में वृष या कर्क का पूर्णचन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु शुक्र के बाल वृद्ध अस्त के समय को छोड़ कर उपनयन शुभ है।

योनिनाड्यादिज्ञानचक्रम्

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाड़ी	गणः	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध	विष घटीके म. ध्रु.
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	अश्वमुख	३	पूफा	पूफा.	५०
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	योनि	३	अनु.	म.	२४
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.	३०
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि.	४०
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदु मैत्र	मृगमुख	३	उषा.	उषा.	१४
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा.	पूषा.	२१
पुन.	मार्जार	मषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.	३०
पु.	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये.	ज्ये.	२०
आश्ले.	मार्जार	मषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.	३२
म.	मषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्र क्रूर	गृह	५	श्र.	भ.	३०
पूफा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्र क्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.	२०
उफा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे.	१८
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्र लघु	कर	५	उभा.	उभा.	२१
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदु मैत्र	मुक्ता	१	पूभा.	पूभा.	२०
स्वा	महिष	अश्व	अन्त्य	दव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.	१४
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मिश्रसाधा.	तोरण	४	कृ.	ध.	१४
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	बलिनिभ	४	भ.	आश्ले	१०
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.	१४
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन.	पुन.	५६
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्र क्रूर	गजदंत	२	आ.	आ.	२४
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.	२०
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.	०
श्र.	वानर	मे	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.	१०
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले	वि.	१०
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.	१८
पूभा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चि.	चि.	१६
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.	२४
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा.	३०

नामाक्षरों के वैर वर्ग देखने का कोष्ठक स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह

इस चक्र के नक्षत्र जानने पर ही योनि नाड़ीगण आदि मालूम हो सकते हैं, पञ्चशलाका व सप्तशलाका वेध भी ज्ञात हो सकता है, जिस नक्षत्र का तारा आकाश में देखना है तो उसके समीप कितने तारे हैं उसका रूप कैसा है यह भी इस चक्र से जान सकते हैं ॥

मेलापकसारिणी देखने की रीति

मुहूर्तशास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ में मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उसमें गुणों की संख्या दी हुई है। बस उतने ही गुण मिलते हैं। गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिन्ह भी हैं। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ीदोष की जगह (३), गणमहादोष की जगह (१), भकूट महादोष षडष्टक में (६), नवपञ्च में (५), द्विर्द्वादश में (४), और योनिवैर में (२), जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहिले है वहां शून्य (०) रक्खा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−) और जहां अधिक समझा गया वहां धनका चिन्ह (+) दिया गया है। गुणों की संख्याके नीचे कोई अंक वा चिन्ह नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिये। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरणमें हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते हैं वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है, जिससे यह समझना चाहिये कि ३६ गुणों में केवल १२ गुण मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इस लिये सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो २० गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिये। शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिये विचार न करना चाहिये। क्योंकि अशुभ है, एक नक्षत्र में पादभेद हो तो नाड़ीदोष नहीं माना जाता।

आवश्यके दोषदानम्——द्रकें ताम्रसुवर्णमष्टरिपुकेगोयुग्मम-र्धीकके। रौप्यं कांस्यमथैकनाड़ियुजि गोस्वर्णादि दत्वोद्वहेत् ॥

अपवाद——न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा-विरुद्धे नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥

कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र दूसरा हो तो वर का नाशक है, यह मैत्री और योनि मिलती हों तो इसका भी दोष नहीं।

ग्रहमेलापकविचार:—वर की कुण्डली में जन्मलग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद—वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो, और कन्या की जन्म कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। एवं एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय, तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जानें। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न से ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिये और दोनों का पञ्चम भाव विशेषता से देखना चाहिये। और कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा वैधव्यादिदोषजां कन्यामच्युतविवाहादिशान्तिं विधाय दारहायोगजायायुष्मते वराय दद्यात्।

विवाहार्थ वर के गुण—कुल, शील स्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन-सहायता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिये।

वर के दोष—दूरदेश द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन, नास्तिक, आजीविका से रहित, अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा, ऐसे २ दोषों से युक्त वर को कन्या नहीं देनी चाहिये।

विवाहार्थ कन्या के दोष—अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल लम्बी व पतली, झगड़ालू, अन्धी तथा बहिरी बोली ऐसे दस दोषों में से किसी भी दोष वाली कन्या को सुखार्थ वर्जित करें।

वाग्दान—कुड़माई—सगाई से पहिले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है—सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष शास्त्र में कहे हुए षडष्टकादि मेलापक सारणी से विचार कर लेना और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्न पूर्वक वर्जित करने चाहियें—(१) दारिद्रय, (२) मृत्यु:, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार, (५) संतान का अभाव।

वर वरण मुहूर्त—उ. ३ रो. कृ. पू. ३, रिक्ता अमावस्या को छोड़ कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देख कर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठ कर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगावे, तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत कर और वर के मुख में एक छुहारा या मीठा (गुड़, बताशा) देकर यह मन्त्र पढ़े—"तस्मिन् काले-ऽग्निमान्निध्ये स्नातः स्नातं हुयरोगिणं। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्यं प्रदास्यति॥' यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्यं प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्यं प्रदास्यति" कहे।

कन्यावरण मुहूर्त—उ. षा. स्वा. श्र. पूर्वा. ३. अनु. ध. कृ. विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फल पुष्पों से कन्यावरण सगाई करना चाहिये।

विवाहकालनिर्णय—२० वर्ष से पहले पुरुष का और आठ वर्ष से पहिले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अत: रजोदर्शन से पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान करे) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्व सम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देख कर विवाह कर देवे। तद्यथा "मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिप्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्या:॥" द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को न कोई दोष लगता है और न प्रायश्चित्त कर्तव्य है। "वसिष्ठ:—दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्या शुद्धिविवर्जिता। तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मत:॥"

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो—विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवे जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिये यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिये यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह से पहले कन्या का नाम बदलना—यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिये मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (–) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्यधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार—आगे देखो पृष्ठ ७२

प्रयोगचक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना करें।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धि:
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धि:
कंठे	३	मृत्युदायक:
हस्ते	४	शत्रुभीति:
हृदि	४	इष्टाप्ति:
उदरे	३	धनहानि:
कट्यां	३	साधनादर्थ:
चरणे	४	साधनाद्वित्त:

मन्त्रदीक्षामुहूर्त—अधिकमासरहित वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. मा. फा. इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१० ११।१३ तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवार में वृष. मि. सि. कं. तु. ध. मी. लग्न हों, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों, तबमन्त्र-दीक्षा लेना उत्तम है।

विशेष—सत्तीर्थ पर, सूर्य-चन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मन्त्रदीक्षा लेते समय मास तथा तिथ्यादि पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये॥

अनुष्ठानारम्भमुहूर्तम्—वै. श्रा. आश्वि. का. मार्ग. माघ, फा. २।६।७।१०।१३।१५ तिथि, (अथवा तिथिर्यस्य-देवस्य तस्यां वा) र. सो. गु. शु. अ. रो. मृ. पुन:, पु. उ. ३. ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. ध. श. रे. (स्वस्वामिनक्षत्रं वा) चन्द्रतारानुकूले; गुरुशुक्र के उदय में शुभे लग्न से १८ वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुमन्त्रे स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गाया: द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है। सूर्यनक्षत्र से महाप्रयोगारम्भ दिन नक्षत्र ३ तक अशुभ, ६ तक शुभ, १२ तक अशुभ, १७ तक शुभ, २० तक अशुभ, २७ तक शुभ जाने।

"राश्यभिधानकल्पलता" ग्रन्थ देखकर निर्दोष शुद्ध सुन्दर नाम रख लेना चाहिये। बहुत से विद्वान् कन्या-संकल्प के समय पर ही "वरस्य पञ्चमे कन्या कन्याया नवमे वरः" बोलते हुए शीघ्रता से नाम बदल देते हैं जिस में अनेक दोष रह जाते हैं। नाम बदलने का फल कुछ नहीं होता। एतदर्थ लग्न से पहले ही अच्छी तरह सारणी आदि देखकर बदलना चाहिए।

अथ विवाहमासः—विवाहशुद्धौ-मीनार्कञ्च विना प्रोक्तमुत्तरायणमुत्तमम्। वर्ज्योऽर्को धनुषश्चान्ये मध्यमाः स्युः करग्रहे॥ वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे तथा यत्र तथैव तत्र॥१॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥२॥

अथ जन्ममासादिषु निषेधः—सब से जेठ लड़के अथवा सब से बड़ी लड़की (जेठी) के जन्म मास, जन्म नक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शु नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं। अत्यावश्यके परिहारः—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं त्वत्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ मण्डप गाड़ कर और जो पुरोहित पहिला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य न करावे, दूसरे आचार्य से करावे। इसी प्रकार जिस गृह में पहिला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठविचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ ह, अत्यावश्यकता में कृत्तिका सूर्य को छोड़ कर दानादि पुर्वक करे।

षट् मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छे मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या वा पुत्र के विवाह के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहिले कर ले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध तिलतर्पणभी न करे और मुंडन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पल्टने पर फिर भले ही शुभ कार्य कर ले वहां छः मास का विचार नहीं है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुंकुमपत्रिका) आने पर, विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण में १ साल, स्त्री के मरण में ३ मास, भाई व पुत्र के मरण में १॥ मास, कुल वालों के मरण में २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के मुहूर्त प्रथम ही शुद्ध कर चुके हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त देख कर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य चन्द्र शुद्ध देखिये और वधू की राशि से चन्द्र गुरु देखिये, बस इसी को त्रिबल शुद्धि कहते हैं। यह त्रिबल शुद्धि जिस उत्तम विवाह लग्न के दिन मिले वही विवाह दिन उत्तम है। यदि रवि गुरु पूज्य हों तो मध्यम है। यदि सूर्य गुरु नेष्ट हों तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु० सू० चं०) शुद्धि प्रथम देखें॥ "स्वपचापकुलीरस्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु" (बृह०)। तुलाराशौ अपूज्यरविः—धर्मधीधनगतो दिवाकरस्तौलिराशिजनितस्य शोभनः। आवश्यके पूज्यरविपरिहारः—गार्ग्याङ्गिरोवत्सवशिष्ठगौतमपराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु० प्र० मा०)।

विवाहादौ त्रिबलशोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—९।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—१।२।५।७।९
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८ पूज्यचन्द्र—१२
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।९।१०।११

{ ध. मी. कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्यावरयोः तैलादिलापने (बन्न) दिनसंख्या

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैलादि ला.	७	५	९	९	५	७	७	९	५	९	५	[illegible]

अथ विवाह तिथिवारनक्षत्राणि—रो. मृ. उत्तरा ३. म. ह. स्वा. अनु मू. रे. एतद्वेधरहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षयरहिततिथिषु शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भमुहूर्तः—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहले ३।६।९ इन दिनों को छोड़ कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्द हाथ दलना पीसना कूटना मंगल-कलशादि स्थापन करना घर लीपना आंगन सफाई भूषण गढ़ाना वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना गणेशादि पूजन नान्दीश्राद्ध मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाहमुहूर्त में दश दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धा तिथि इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त अलग दिये हुए हैं। इन दस दोषों में जो जिस मुहूर्त में हैं वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१ लत्तादोषज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बंधुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयं	मरणं	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो. उ. फा. १२वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ; इत्यादि सब जानें।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

१० दग्धा तिथिः

२ पातदोषज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
श्ले	मृ	अ	कृ	भ	कृ	अ	रो	भ	भ	अ
पुन	आ	मृ	आ	मृ	अ	आ	ज्ये	पुन	श	ज्ये
श	ज्ये	ज्ये	वि	श	ध	उषा	ध	श	वि	ध
पूफा	ध	पुष्य	पूफा	पूभा	पुष्य	पूभा	श्ले	वि	उफा	म
चि	म	ह	श	स्वा	ह	पूषा	मू	अनु	चि	पूफा
मू	ह	रे	पूभा	म	रे	पूफा	उभा	उषा	मू	स्वा

विवाहन. हर्षण, वैधृति, साध्य—व्यतिपात, गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इस नक्षत्र में विवाह करने से पात दोष होता है।

३ युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. मं. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है ॥

४ वेधदोषचक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ऊपर के नक्षत्रका विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिये।

५ जामित्रदोषचक्रम्

रो.	मू.	म.	उ.	ह.	स्वा	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	न.
अनु	ज्ये	ध	पू भा.	उ भा.	अ	कृ	मृ.	पुन	उ फा.	ह	अ. न.

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है, ऊपर वैवाहिक नक्षत्र हैं और नीचे ग्रह नक्षत्र है, याने १४वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

७ एकार्गलदोषः—

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कुम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है ॥

८ उपग्रह—

सूर्य के नक्षत्र से ५वें ७वें ८वें १०वें १४वें १५वें १८वें १९वें २१वें २२वें २३वें २४वें और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

९ क्रांतिसाम्यदोषचक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	कं०	तु०
सिंह	म०	ध०	वृश्चि	मी०	कुं०

नीचे या ऊपर की राशि पर सूर्य हो या चन्द्रमा हो तो स्थल क्रांतिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में।

६ बाणज्ञानाय सुलभचक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	५ कर्म वर्ज्याः	वार-समयपरत्वेन वर्ज्याः	वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

१० दग्धा तिथयः

सूर्य राशयः	९ / १२	२ / ११	४ / १	६ / ३	५ / ८	१० / ७
तिथयः	२	४	६	८	१०	१२

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं सो विवाह में वर्जनीय हैं।

भुजंगं क्रांतिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनविवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

लत्तादिदोषाणां परिहारवाक्यानि—लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे बांगर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त) एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् ॥ उपग्रहर्क्षं कुरुवाह्लिकेषु (आगरा प्रान्त अवस्थान) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: (उज्जैन प्रान्त) च लत्ताभं त्यजेत् विद्धं किल सर्वदेशे ॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः ॥

विशेषपरिहारः—चित्रांगते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः ॥

युतिपरिहारः—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ अत्यावश्यके वेधपरिहारः—पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः) ॥ अतोऽन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयको द्वितीयकं चतुर्थगस्तु चादिमः ॥ भिनत्ति वेधकृद्ग्रहो नचान्यपादमादरात् (वसिष्ठः) ॥ अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः—भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥ अस्यापवादः—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरभुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण भुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते ॥ जामित्रपरिहारः—(व्यवहारसमुच्चये)—स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्र वर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्। मुहूर्तचिंतामणावपि—एकार्गलोपग्रहपातलत्ता जामित्रकर्तर्युदयास्तदोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपन्ना लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः ॥

विवाहे लग्नशुद्धिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पापः	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श. चं	त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं कान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	८		विद्धभञ्च			गोधूली त्याज्या।

सर्वथा लग्नभंगयोगाः—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ रिपौ मृतौग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जागुरु समौ) ॥ वर्गोत्तमं विनात्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः ॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नं त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः ॥ पंग्वन्धादि लग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः, बादरायणः—मासशून्यायह्वास्तारा राशयो बधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः ॥

कर्तरी दोषः—लग्नस्य पृष्ठाग्रयोः खाध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्तरी। दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्षष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न ॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवहः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह ॥ अपवादांतरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा ॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांशग्रहोद्भवाः। ये दोषान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी ॥ अब्दायनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे। लग्नाधिपौ यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये ॥ सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत् ॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। धूनं विहाय दैयेज्य सहस्रं लक्षमंगिरा ॥ स्मरण रहे कि पुर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	च.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के. ग्रहाः	मुहूर्तगणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३		
६	३	६	२	२	२	६	६	३	
८	११	११	३	३	४	८	८	८	
१			४	४	५	११	११	११	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दशविशोपकाधिकम्
			५	५	९				
			६	६	१०			स्थानानि	
			९	९	११				
			१०	१०					
			११	११					
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥	विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्नविचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा ...

वदन्ति। लग्नं विशुद्धं सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विचत्ते ॥ मार्ग माघ फाल्गुन संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टि गोचर होने पर चै. वै. में गौओं की धूली से आकाश आच्छादित होने पर ज्ये. आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर श्रा. भा. आश्वि का. में सूर्य पूर्ण अस्तहोने पर गोधूली लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्यदोषः—कुलिकं क्रांतिसाम्यञ्च लग्ने षष्टेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पञ्चदोषस्तु दूषितः ॥ "अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार कोसुर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालाद्विजातीनां विवाहमुहूर्तः—कृष्णपक्षे भानु-भौमार्कजानां, वारे योगे चापि धिष्ण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं, प्रीत्यर्थायुःप्राप्तये शौनकाद्याः ॥

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	२	३	३	३	३	२	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फलम्

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजित्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेधभृगुर्वस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः ॥

वधूप्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहिले पहल आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर समदिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे, ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधूप्रवेश शुभ है। वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्। रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा. ३ पुष्य अनु. इन नक्षत्रों में और चं. बु. बृ. शु. श. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में ५।८।११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह—वधू प्रवेशो न दिवाप्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः, सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥

विवाहतः प्रथमवर्षे वधूनिवासफलम्—विवाह के बाद आषाढ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या ५वें वर्ष वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम, बुध. गुरु वा शुक्रवार को २, ३, ६, ७, या १२ वीं

... राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित. तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मृ. मू.

... (वराजी)—मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः दुर्घटार्थ रोहादिक ज्ञानम्

राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्, तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. और अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः—द्विरागमे षोडशवासरान्तरे एकादशाहे समवासरेषु। नचात्र ऋक्षं न तिथिर्न-योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम् ॥

शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीड़ा आदि उपद्रव तथा दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवं विवाह-सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं क्योंकि तब तक शुक्र अंधा होता है।

विशेषः—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे संमुखेऽस्तगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वा प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः—राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेततण्डुलपूरिते ॥ निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ताफलान्वितम्। महाश्वेतगवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्। तत्रार्घ्यमन्त्रः—ॐ नमस्ते सर्वलोकेश नमस्ते भृगुनन्दन! मम सर्वार्थसिद्ध्यर्थं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥

प्रथम स्त्री-संगममुहूर्तः—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यंत ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर प्रथमदिन स्त्री सङ्गम करे।

नववध्वा पाककर्ममुहूर्तः—द्विरागमनोत्तरं मृ. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. चि. रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, २।५।८। ११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे, सप्तमभावे च बलान्विते सति पाककर्म शुभम्।

नववास्त्रीणां वस्त्रसुवर्णरत्नभूषणादिधारणमुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावास्यारहिततिथिषु, नूतनवस्त्रसौवर्णरत्नरजतदन्तादिभूषणानां धारणं प्रशस्तम् ॥

वस्त्रचक्रम्—सूर्यनक्षत्र गणना ८ अशुभ। ३ शुभ। ४ शुभ। ७ अशुभ। २ अशुभ। १ शुभ। २ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः—विप्रादेशाद्राज्योद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम्। निन्द्येऽपि धिष्ण्यवारादौ धारयेच्च नवाम्बरम् ॥

नवकर्णघट्टनमुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहिततिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।

दुकान खोलने का मुहूर्तः—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३. पुष्य. अनु. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इन तिथियों को छोड़ कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़ अन्य वारों में, कुम्भ लग्न को छोड़ कर अन्य लग्नों में, २।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३।६ में पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र शुक्र लग्न में हों तो अत्यंत शुभ है ॥

भर्तृगृहात्पितृगृहागमनमुहूर्तः—पूर्वा. ३. भ. मू. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु भेषु. चं. बु. शु वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

द्वयंग—(दरोजा)—मुहूर्तः—जाते द्विरागमे पत्न्या पुनः पतिगृहे गमः। पितृगेहे स्थिता या च स द्वयंग इति कीर्तितः ॥ ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. ध. पुन. रे. एषु नक्षत्रेषु, सत्तिथौ सुलग्ने विवाहोक्तमासेषु राहोर्दक्षिण-पृष्ठगे च सति स्त्रीणां द्वयंगः शुभः ॥

द्वयंगार्थं राहुदिक् ज्ञानम्

सूर्य राशि	राहु दिशा
१।५।९	पूर्व
२।६।१०	दक्षिण
३।७।११	पश्चिम
४।८।१२	उत्तर

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३, ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड़ कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र से दुकान खोलने के दिन नक्षत्र तक गिन कर, चक्र से शुभा-शुभ फल जाने ॥

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सन्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवा कर्म (नोकरी) मुहूर्त—अ. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. एषु भेषु रिक्ताभारहिततिथौ, र. बु. बृ. शु. वारेषु शुभग्रहे लग्नस्थे, १०।११ सूर्ये भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीशयोनि मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा. ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भे. रिक्तामारहिततिथौ, सू. च. बु. बृ. शु. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः सत् ॥

द्रव्यप्रयोगमहूर्तः :—पुन. स्वा. मृ. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभ-ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिये वर्जित काल—मंगलवार, संक्रांतिदिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्र-युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिये। कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथमते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य. पूभा. अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा. ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य्य क्रयविक्रयाणां कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि. वारों में बुध, रवि श्रेष्ठ माना गया है। वस्तु बेचने क नक्षत्र—पूफा. पूषा. पूभा. वि. कृ. श्ले. भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये हैं।

नोट—बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों म बेचनेवालों को ९५ फी-सदी नुकसान रहेगा इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचन के नक्षत्र दिखलाये गये हैं परन्तु संप्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये बात कहां तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करनेवाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहाँ तक सत्य हैं।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्तः—४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो, कृ. आर्द्रा. म. अ. श्ले. म.ज्ये. म. वि. पूर्वा. ३. नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार—

ग्रामभात् वासकर्तुर्नक्षत्र यावद् गणना कार्या स्थाननक्षत्रफलम्		
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गदभ ७ हस्ति, ८(०)। इसमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो चार आदि सम संख्या की अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिये और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और नहीं चार द्वार वाले घर में। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती हैं। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है॥

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान—

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुण कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को आठ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ विचारः—

नई बस्ती में गृहादि बनवाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा एक हाथ लम्बा एक हाथ गहरा गड्ढा बना कर उसको जल से भर देवें, प्रातःकाल उसको देखें यदि जल युक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, विजल फटा हुआ हो तो अशुभ है॥

मकान बनवाने के लिये पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा—

मकान की नींव को इतना गहरा खोदे कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक न निकले अथवा ३॥ साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़; राख, बाल निकलें तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो। गृहारम्भ मुहूर्तः—वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारंभ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं. बु. बृ. शु. श. वारों में, रो. मृ. चि. ह. स्वा. अनु. उत्तरा ३. ध. श. रे. वेधरहित नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वृषभचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम् सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ-नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें		
स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीडा असत्

विशेषः—पुष्य. उ. ३. रो. मृ. श्र. आश्ले. पूषा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो इस नक्षत्र में और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्ति दायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। चि. अ. चि. ध. श. आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्—"संक्रान्ति मिति दिन पांचवे, सप्तम नव जोय। दश इक्कीस चौ'इस में षट् दिन पृथ्वी सोय। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्ज्जनीयाः। अन्यच्च—सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार :—

मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्रविचारः।

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चूल्हा बनावे तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतनगृहप्रवेशे मुहूर्त :—

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य-(गार्ग) कार्तिक-मासयोः॥ यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा ३ अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में, चं. बृ. श. इन वारों में २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्नों में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर हों १।६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो, ४था ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वीं राशि लग्न में न हो चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमालायुक्त कलश शंखध्वनि मंगलगान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण वा तृण कुटीर अथवा अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी व. श्रा. का. और मार्गशीर्ष, फा. मास में [illegible]

स्थान में पापग्रह, तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल ... इत्यादि के भय में बनवाये हुए नए घर में भी ब. श्रा. का. और मार्गशीर्ष, फा. मास में

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागः शुभदो भवेत

राहुमुख	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्याम्	आग्नेयां
देवालयारम्भे सूर्य	मी. मेष. वृष	मि. क. सिं.	कर्क तुला वृश्चिक	धन मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्य	सिं. कं. तु.	वृश्चि. ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कन्या
जलाशयारम्भे सूर्य	म. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धन
खात दिशा ज्ञान	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम् ॥

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

रोहिणीभात् वापीचक्रम्

ईशान	पूर्व.	आग्नेय
श्र. भ. कृ. मध्यजल	पुन. पु. श्ले. जलाभावः	म. पूफा. उफा. मध्यजलम्
उत्तर	मध्य	दक्षिण
पूभा. उभा. रे. मिष्टजलम्	रो. मृ. आर्द्रा. शीघ्रजलम्	ह. चि. स्वा. जलाभावः
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्य.
श्र. ध. श. क्षारजलम्	मू. पूषा. उषा अमृतजलम्	वि. अनु. ज्ये. बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्तः

देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे । माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिने। मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमा । महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने ॥

अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. उत्तरा ३. रे. एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २।३।५।७।८।१०। ११।१२।१३ एतत्तिथौ शुक्ले १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११। स्थानेषु शुभैः, ६।११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्णे देवप्रतिष्ठा कार्या ।

देवताविशेषणलग्नम्—सिंहे सूर्यो शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः । कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः । यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठामुहूर्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः ॥

वास्तुशान्तिमुहूर्तः— . ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३. पुन. पु. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम् ।

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु. ह. तीनों उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों, वा चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध. मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १६ वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूपचक्रम्

ईशान ३ क्षारजल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तमजल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्र जल	दक्षि. ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृतजल

गणना क्रमः— मध्यपूर्व–आग्नेय दक्षिणादि क्रमेण बोध्यम् ॥

सूर्यभात्तड़ागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाविषय
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	न. २ अमृतजल

शेष ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिम् । गणनाक्रमः—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई० मध्य वारिवाहः ।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़ कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना, यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानि कारक, शेष दो बचने पर पाताल में धन हानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करना। इसके बाद आहुति चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेषः—यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु । दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम् ॥ महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा । नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत् ॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने । केतूनामुदये शांतौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ । देवखातभवने सुरालये अग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः ॥ दुर्गभंगगृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे । शान्तिकर्मनृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षते ॥

पापग्रहमुखहवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे । शान्ति विधाय

…य । दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । आयसीं प्रतिमां कृत्वा [illegible] गोमूत्र-
न धुयन्धाद्यैरचितां प्रतिमां ततः । कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार—स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ।

अर्थ—अपने वर्ग को दूना कर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगना करके अपना वर्ग जोड़ना फिर ८ का भाग देना; जिसका भग्न शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना।

हलप्रवहणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा. ३. ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु भेषु रिक्तामाषष्ठ्यष्टमी रहितसत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११लग्नेषु भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्
सूर्यभुक्तनक्षत्र से दिननक्षत्र तक गिनें

३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहुचक्रम्
राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्तः—ह० अश्वि० पुष्य. उत्तरा ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. म. मू. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः ॥

विशेषः—रवौ रौद्रा (आर्द्रा)-द्यपादस्थे संजायते रजः ।

तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत् ॥

नवान्नभक्षणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्तातिथियों और पौष चैत्र को छोड़ कर सू. चं. बु. गु. शुक्रवार शुभ है ॥

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्तः—अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पु. पूर्वा ३, ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिनें, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ, (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक फिर दो दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौनक्षत्रगणना क्रमसे शुभाशुभफल सूर्यनक्षत्र तक गिनें (नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र संख्या
उत्तमपाक शुभ	धान्यदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	स्वाथकर्म नेष्ट	सुखं शुभ	फलम्

लतावृक्षाधारोपणमुहूर्तः—मृ. रे. चि. अनु. उत्तरा ३, रो. ह. पुष्य अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तामारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. बृ. शु. वार हों, शुक्ल पक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है ॥ तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः—तृण काष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ मीन के चन्द्रमा में नहीं करना चाहिए ।

औषध का मुहूर्तः—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल, जन्म नक्षत्र को छोड़ कर इन नक्षत्रों में, ४।९।१४ को छोड़ कर शुभतिथियों में, भौम शनि को छोड़ अन्य वारों में शुभ हैं ।

अथ यात्रा मुहूर्तः—

ह. म. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या; भ. कृ. आर्द्रा. आश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. एतद्भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकेऽपि

दिग्द्वारलग्नानि

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	दिशा
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	भयम्
१ १	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	महाभयं

यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमनकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांशक में यात्रा कदापि न करे। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभग्रह और ३।६।१०।११। वें पाप ग्रह हों । अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा, १० वें शनि, ७ वें शुक्र, १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च—यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशेश अस्त हों वा मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे, प्रथम तीर्थ-यात्रा वा देवदर्शन गुरुशुक्रास्त में वर्जित है ॥

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम् | नक्षत्रशूलचक्रम्

पूर्व	आ.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	दिशा	पू.	द.	प.	उ.
चं.श.	चं. बृ	गुरु	सू. शु.	सू. शु.	भौम	मं.	बु. श.	वारा	ज्ये.	पूभा.	रोहि.	उफा.

दिक्शूलपरिहारः—न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः ॥ १ ॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्रवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि । माषान्भक्त्वा शनिवारे शूले गच्छन्न दोषभाक् ॥ २ ॥

शुभ | नेष्ट | नेष्ट | शुभ | नेष्ट ... ॥ २ ॥

कालज्ञानम्	
नो	पूर्वे
क्रे	आग्नेयां
रौ	दक्षिणे
वे	नैर्ऋत्ये
मे	पश्चिमे
न्द्रे	वायव्ये
वौ	उत्तरे
म्मुखे नष्ट	

योगिनीवासचक्रम्

पू.	अग्नि.	दक्षि.	नैऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तरे.	ईशा.	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बायें की शुभ, युद्ध यात्रामें बायें ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल उषाकाल में पूर्व को, गोधूलिमें पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अंगिरा मुहूर्त—गर्गजी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे, अंगिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाय। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उषःकालः सप्तपञ्चा (५७) रुणोदयः। अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रातः शेषं सूर्योदयो भवेत् ॥

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यक-घटयात्मकचन्द्रवासचक्रम्

पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४	घटी

घटयात्मक चन्द्रवास जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए।

कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

चन्द्रफलम्—सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥ इति ॥ सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—करण-भगणदोषं, वारसंक्रांति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम्। कुजशनिरवि दोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः ॥

सर्वांकसिद्धि योगः—शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त्य में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादिमुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायाँ स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को और दायाँ चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्—यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय तो उसी मुहूर्त में ब्राह्मण जनेऊ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधुघृत, वा रुपया शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध किसी के घर में या नगर से बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान रक्खे। अथवा सब से मन की प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा के पहले त्याज्य वस्तु—यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दे, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन, समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्त्तम्

घटि	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
३॥।	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ल
७॥	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ
११।	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.
१५	रो.	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ
१८॥।	का	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं
२२॥	ला	शु.	चं.	का	उ.	अ	रो
२६।	उ.	अ.	रो.	ला	शु.	चं.	का
३०	शु.	चं.	का	उ.	अ.	रो.	ला.

सूचना यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी पल ज्ञात होंगे।

यात्रायां शुभशकुनानि—मृग बायें ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन धन लक्ष्मी बहु-मिले चलते प्रातःकाल ॥ विप्र २ अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गो, दधि, सर्षप कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुतस्त्री गौरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धिवाक्य, सजल पूर्णघट यात्रा पश्चाद्रिक्तघट यात्रा समय देखने शुभ है। अशुभशकुनानि—वन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट अंगहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

रामदैवज्ञोक्त आवश्यक यात्रा मुहूर्तचक्रम्

पा.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्य.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्रय	दारिद्रय	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना, अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाओं आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े कार्य सिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त––चि. ह. पु. मृ. पूर्वा. ३. अनु. श्र. ध. एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र-तारानुकूले सति शुभः।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेशमुहूर्तः—मृ. रे .अनु. रो. उ. ३. ह. अ. पुष्य. स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु चं. बु. बृ. शु. श. वारेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु; ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु; १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः४।८।शुद्धौ शुभः। वि. कृ. पू. ३. भ. म. मू. ज्ये. आर्द्रा. आश्ले. नक्षत्राणि; ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः; सू. मं. वारौ; १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेषः—प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनं। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशयः
मे.		कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मि.	सिं	ध.	कुं.	घातचन्द्र
र.		चं.	बु.	श.	श.	बृ.	श.	शु.	मं.	बृ.	श.	घातवार
म.	ह.	स्वा.	ऽनु	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	श्ले.	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वश्चि.	मी.	ध.	कं.	वृश्चि.	मि.	मे.	स्त्रीचन्द्रघा.
का.	मा.	पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	घातमास
वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	ऽगं	बृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

युद्ध, विवाद, राजसेवा, वाहन, रोगादि कार्यों में घात चक्र देखना और तीर्थ यात्रा तथा विवाहादि शुभकार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं है। "घाततिथिर्घातवारघातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।"

वाम दक्षिण निर्देश––

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना; पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा वही सरठ (गिरगट) के चढ़ने का जाने। सरठ के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्गविभागे पल्ली––(छिपकली, कोढ़किरली) पतनफलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभ	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंध	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधि	वामकर्णे	बहुलाभ	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभय	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानुद्वये	शुभागम	हस्तयोः	वस्त्रलाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभ	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्टान्नभोजनं
ललाटे	बन्धुदर्शन	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यक्षाणि––यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्वि. रो. मृ. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इतोऽन्यद्भेषु निंद्याः॥

पल्लीपाते कर्तव्यकर्म—पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धदिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्तलग्न में तथा अष्टमचन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शांति के लिये जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्––छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है, गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा—छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं; पीनस सरदी घांस फल हीनी। छींक पीठि की कुशल उचारे; बाईं कारज सबै सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भाषै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी॥ अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वेश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का––आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्काः शुभावहाः॥ एक नाक दो छींक; काम बने सब ठीक॥

तीर्थ में मुण्डन विचार—मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनी) गिरिजां गयाम्।

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अंग और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षःस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधः	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्र पक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्ववृद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल लसन मस्सा हो वा खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पातफलचक्रम्

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूमिकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रह अतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध, महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा को भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटे	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमी के पशु हों	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अन्धेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओं में विग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्र मंद पड़े	देशक्षय	बनपशु गांव बसे	मनु.शून्य हों
श्वेतमंडल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज्य नाश	उल्लू बोले	गृह शून्य हो
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थर पड़े	बांबी कबूतर-	गृहस्वा.नाश
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमिगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब-	रोगभय
स्त्रीवध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्र बालकवध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्व ग्रास	सब वस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भौमादिक वक्र	दुर्भिक्ष पड़े	१३ दिनका पक्ष	प्रजानाश

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं विधिश्च

वाराः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
फलम्	तापम्	सुकांति	मृति	श्रीः	वित्तहानि	विपत्ति	सुख सुभोग
पातन	पुष्पं	०	मृति	०	दूर्वा	गोमय	०

तैलाभ्यङ्गे वर्ज्यानि

तदाऽऽह—
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांति वैधृतावपि। षष्ठचष्टम्योश्च विष्टयां च, तैलाभ्यंगो न पर्वसु ॥

विशेषः—यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो, अथवा उत्सव के दिन वा वात-रोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित, औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल, सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काकस्पर्शादौ फलम्—मस्तक पर काकस्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है, कमर, कन्धे पर भी अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है ॥ काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इच्छित कार्य नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मयपात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा का नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करावे) घृत-छाया-पात्र दान पञ्चगव्य से स्नान भी करे, इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं ॥

अथ काकवचनफलविचारः—काकस्य वचनं श्रुत्वा पादच्छायां तु कारयेत्। त्रयोदशपदं दत्वा षड्भिर्भागं समाहरेत् ॥ लाभच्छेदस्तथा सौख्यं भोजनं च धनागमम्। निश्शेषमरणं व्याधिरेतत्काकस्य लक्षणम् ॥

कपोतः (कबूतर)—सिर पर गिरे वा स्व पालतू कबूतर के बिना अन्य कबूतर वा उल्लू गृह में चला जावे तो मृत्यु व मान स्थान हानि होती है, तद्दोष—निवृत्यर्थं दुर्गापाठ, होम सप्तधान्य दानादि करने से शान्ति हो।

मुष्टिचक्र

गगनदेवा ८ · १२ दे.दो. · पितृदोष १ · शाकिनी ४ · चंडिका १० · क्षेत्रपाल · ७

अंक प्रश्न तथा फल वर्णन

प्रश्नकर्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध होवे। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्यनाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि. २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२(०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचारः

स्वप्न ७ प्रकारका होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना), द्वितीय श्रुत (सुने हुए का सुनना), तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई बातों को स्वप्न में देखना), चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्थामें इच्छाकी हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

(दिन में कल्पना की हुई वस्तु को देखना), षष्ठ भाविक (न देखी न सुनी उससे विलक्षण), सप्तम दोषज (वात, पित्त, कफ के दोष से)।। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत, प्रार्थित, कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है कि बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञजन देखकर पुनः स्नानादिसे शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल, पुष्प, दक्षिणा रक्खे, फिर स्वस्थ चित्त से स्वप्न का वर्णन कर शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न :—राजा विप्र, देवता, गुरु, श्वेत वस्त्रवाली स्त्री इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना। महल, पर्वत, सिंह अश्व इन पर चढ़ना व दर्शन करना, रक्त से स्नान, रथ शय्यादि का ज्वलन, स्व शिर का छेदन, अपना मरण, वेदध्वनि श्रवण रक्त पीत. पुष्प-दर्शन. दर्पण, प्राप्ति, दही चावल भोजन, जूआ, रण विवाद में अपनी जय, इन्द्र धनुष का देखना, मठा कपास इन दो वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखें कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में बहुत गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश वा तरक्की मिलेगी।

यदि स्वप्न में फल पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट खाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्रवाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी, पैरों में जंजीर का बन्धन पड़ना, तरुण नारी के हाथ से जूती व खड़ाऊँ, छत्र, तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना, अपने पैर व भुजा के मांस को खाना, अगर कपूर पान का मिलना ऐसे स्वप्न दीखें तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना, राज्य लाभ करता है, गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना सूर्यमण्डल का दीखना अपना मरना दीखें तो रोगी पुरुष का रोग-नाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगुला, मुर्गी, कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना, विप्र को उत्तम विद्यालाभ क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस, चरबी का खाना, विष्ठा अपने अंग में लगाना श्वेत, चन्दन, श्वेत वस्त्र श्वेत पुष्पों से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर आकर दे जाय तो भी लाभ हो। नदी समुद्र में तैरना, तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना, कष्टनिर्वृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है राजा गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना, पर्वत, वृक्ष, बगीचे, हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिगड़े काम सिद्ध होंगे ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों, तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दूकानदार स्वप्न देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाय बिना भाग गया हो तो उसको समझ लेना चाहिये हमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे। यदि किसी की वस्त्र युत स्वप्न देखें कि [illegible]

जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जावेगा, और यदि वह विवाहिता है तो उसके घर में सर्व प्रकार से सुख शांति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोवे नहीं।

अशुभ स्वप्न :—लाल वस्त्र पहिरना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना, तारों का टूटना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना, नीम पलास के वृक्ष पर चढ़ना रूई कपास, तेल लोहा मिलना, इनसे संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना, द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। घरें मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि वा कष्ट करता है। तैलपक्व गुलगुले तथा तांबे के पैसे मिलना रोग-कष्टसूचक हैं। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ, नाक का काटना, कीच (पंक) में फंसना, ऊंट, गधे भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह गीत मंगल सुनना, अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्तवस्त्रवाली स्त्री का आलिंगन करना बन्दर, सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत, प्रेत, चाण्डालों के साथ मिलना अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्युकारक होते हैं नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना, बाघ रीछ, गीदड़, बिलाव, भैंस, सर्प, मक्खी का दर्शन, पर्वत शिखा का तथा बड़े, महल ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव, विप्र, इनके बिना सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक होती है। अगर "विधवा" स्त्री यह स्वप्न देखे कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे, या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूद कर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा।

स्वप्न का फल कब मिलेगा ?

रात्रि के प्रथम प्रहर का १ वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में, तृतीय का तीन मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में, अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहिले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप, होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान, अश्वत्थपूजन, विष्णुसहस्रनाम, गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ, ब्राह्मण-भोजनादि करवाना चाहिये। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दु॰ स्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

आयुर्निर्णय—१—लग्नेश अष्टमेश से तथा जन्मलग्न और चन्द्र पर से आयुष्य का निर्णय करे दोनों से एकवाक्यता न मिले तो जन्म लग्न होरा लग्न से आई आयु ठीक समझे चरे चरे, स्थिरे-द्विस्वभावे-दीर्घायुः। द्विस्वभाव-द्विस्वभावे, चरे-स्थिरे मध्यायुः। स्थिरे स्थिरे। चरे-द्विःस्वभावे-अल्पायुः।

२—११, १, ४, ७, १०, ५, ९. इन स्थानों में लग्नेश, अष्टमेश और दशमेश के पड़ने से दीर्घायु होती है ३।४ में पापग्रह हो; पणफर में भी यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु। [illegible]

देना चाहिये इमको रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा ... यदि पापग्रह हो तो मध्यायु इसके अतिरिक्त अल्पायु ।

प्रश्न–जन्मवर्षादौ कार्यसिद्धिज्ञानम्

लग्नं कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ । मित्रमथौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ॥१॥ एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यमन्यथा सन्देहः ।

कार्य सिद्ध होगा कि नहीं ?

शुभवार में वाम स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्धि होता है । शुक्ल पक्ष में विशेष सिद्धि जाने । अशुभ बार मे दक्षिण स्वर चलते समय प्रश्न हो तो कार्य सिद्ध होता है यदि कृष्ण पक्ष भी हो तो विशेष सिद्धि होता है । विपरीत हो तो कार्य सिद्धि नहीं कहनी ।

क्रय विक्रय प्रश्न—प्रश्नलग्न का स्वामी क्रेता (खरीदने वाला), ग्यारहवें घर का स्वामी विक्रेता (बेचने वाला) और लग्न क्रयाणक (खरीदने योग्य वस्तु) है ऐसा जानो । यदि लग्न बली हो अर्थात् उसको स्वामी या शुभ ग्रह देखें या शुभ ग्रह उसमें पड़े हों अथवा केन्द्र में शुभ ग्रहों का योग हो तो वस्तु के खरीदने वाले को लाभ रहेगा । यदि ग्यारहवाँ भाव पूर्ववत् बली हो तो बेचने वाले को लाभ जानो । कितना लाभ होगा ? इसके जानने के लिये लाभेश का बल विचारो; यदि वह अपने घर में रहे तो दुगना, शत्रु के घर में हो तो सवाया, सम घर का हो तो ड्योढ़ा और मित्र का हो तो चतुर्थांश लाभ होगा; इसी प्रकार खरीदने वाले को भी जानना चाहिये । प्रश्न का उत्तर देने में योगों पर विशेष ध्यान देना चाहिये ॥

क्या यह बात सत्य है ?—प्रश्न काल के बार तात्कालिक नक्षत्र और योग के अंकों को जोड़ कर वर्तमान तिथि से गुणा दो, फिर उसे ४ से भाग देना, शेष १ । ३ बचे तो बात सच्ची, शेष २ बचे तो झूठी जानो ॥

स्त्री पुरुष में प्रथम किस की मृत्यु होगी ?

स्त्री पुरुष के नामकी मात्रा को ४से गुणा करें, जो अक्षर होवें उनको दुगुना कर जोड़ देवे फिर ३ का भाग देवे यदि २ शेष रहे तो प्रथम स्त्री की मृत्यु और १ या ० बाकी रहे तो प्रथम पुरुष की मृत्यु जानना । किन्तु मात्रा जोड़ने में भूल न करें ॥

प्रवासी प्रश्न—प्रश्नकर्ता के उच्चारण किये हुए अक्षरों को (वा फल का नाम लेवे तो फलाक्षरों को) ६ से गुणा करके उसमें १ जोड़ दे फिर सात का भाग देने से एक से आदि लेकर जो अंक बचे उससे फल कहे । १ शेष रहे तो प्रवासी आना चाहता है । २ शेष रहे तो मार्ग के अर्द्धभाग में है । ३ बचे तो ग्राम के निकट आ गया है । ४ बचे तो घर में लाभ सहित आ गया है । ५ बचे तो रोगी है । ६ बचे तो पीड़ित है । ७ बचे तो आने का यत्न करता है । धनेश वक्री न हो तो प्रवासी कल्याणपूर्वक है ।

देशांतर से पत्र आवेगा कि नहीं ?—प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभग्रह युक्त अथवा दृष्टि हो तो जल्दी आवेगा मार्ग में है । स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले । द्विस्वभाव लग्न में प्रश्न हो तो पत्र नहीं मिले । प्रश्न लग्न में बुध चंद्र हों और शुभग्रह देखता हो तो पत्र आवेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा ॥

अमुक मनुष्य से रुपया मिलेगा कि नहीं ?

साहूकार (जिस से नया लेन देन करना है) के नाम के अक्षरों को तीन गुणा करके उसमें अपने नाम के अक्षरों को जोड़ दें, फिर उसी संख्या में तीन का भाग देवें, शेष १ रहे तो रुपया मिले । २ शेष रहे तो न मिले । तीन (०) शेष रहे तो मुद्दत बाद फिरने से मिले ॥

इस वस्तु से लाभ होगा कि नहीं ?

इस की केवल गत घटिकाओं को तीन से गुणा करके उसमें उस वस्तु के अक्षर युक्त कर पांच और जोड़ना फिर चार का भाग देकर शेष विषम रहे तो लाभ हो, सम शेष रहे तो लाभ नहीं होवे ॥

पुत्र लाभ होगा कि नहीं ?—तात्कालिक तिथि की संख्या को ४ गुणा करके दो से भाग देना जो लब्धि आवे उसको तीन गुणा करके ४ से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें । १ शेष बचे तो विलम्ब से सन्तान पुत्र लाभ होगा चिरंजीविता के लिये पार्थिव-शिवपूजन करना चाहिए । २ शेष रहे तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंशपुराण का नवाह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवा लक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे । ३ शेष बचे तो शीघ्र लाभ होगा किसी गरीब की कन्या को विवाह दें या उसके विवाह में गुप्तदान से मदद कर ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा । ४ (०) शेष बचे तो सन्तान सुख शीघ्र होगा ॥

विवाह होगा कि नहीं ?—यदि लग्न से २।३।६।७। १०।११ इन स्थानों में चन्द्रमा को बृहस्पति देखे तो विवाह हो जायगा यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा । यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध, बृहस्पति इन में से कोई देखे अथवा व्ययेश लग्न में और लग्नेश व्यय में हो यद्वा लग्नेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७। इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा वा शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जावेगा ।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम्

तृतीय नवम द्वादश षष्ठ स्थान में प्रश्नलग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष जल शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना । यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता । यदि बारहवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष, चन्द्रमा के होने से कुलदेवी का दोष, सूर्य के होने से देवी दोष, अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहे, शनि के होने से अपने गोत्र की देवी (सती का दोष) और बुध व्यय तथा अष्टम स्थान में हो तो भूतदोष जानना । व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जल देवी का दोष होता है । परंच जो मनुष्य स्वधर्मनिष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते हैं, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते हैं । दोषसूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो बलवान् हो तो उक्त दोष साध्य यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोषसूचक ग्रह भी नीच शत्रुक्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होता है । बलवान् पापग्रह केन्द्र में हों तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते हैं यदि शुभ ग्रह केन्द्रस्थान में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उसका दोष दूर हो जाता है ।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्—तिथि वार नक्षत्र लग्न प्रहर इनको जोड़े और ८ का भाग देवे शेष ३।७ बचें तो देवता की २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना, १।५ बचें तो ग्रहपीड़ा जानना । उदयाद् घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता । भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ॥१॥ राम (३) बाण (५) रसा (६) ष्टौ (८) च नन्द (९) रुद्रा (११) च जीवति, क (१) पक्ष (२) युगा (४) सप्त (७) दशा (१०) र्का: (१२) नात्र जीवति ॥२॥

अथ महर्षिपराशरोक्तविंशोत्तरीमहादशा चान्तर्दशा ज्ञानचक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६.				चन्द्रदशा वर्ष १०				भौमदशा वर्ष ७			
कृ.उ.फा.उ.षा				रो. ह. श्रवण				मृ. चि. ध.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	१	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहुदशा वर्ष १८				गुरुदशा वर्ष १६				शनिदशा वर्ष १९			
आ. स्वा. श.				पुन. वि. पूभा.				पु. ऽनु. उ. भा			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुधदशा वर्ष १७				केतुदशा वर्ष ७				शुक्रदशा वर्ष २०			
श्ले ज्ये रे				म. मू. अ.				पूफा.पूषा. भ.			
तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्				तन्मध्येन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	१०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

शिवोक्तयोगिनीदशाऽन्तर्दशयोर्ज्ञानार्थचक्रमिदम्

मंगला व.१			पिंगला व. २			धान्या व. ३			भ्रामरी व. ४		
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल		
आर्द्रा चि.श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य वि. श.			अ.श्ले.ऽनुपूभा		
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि	२	०	धा.	४	०

भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			सङ्कटा व. ८			दशा तथा वर्ष दशेश ग्रहाः जन्म नक्षत्र
बुध			शनि			शुक्र			केतु			
भ.म.ज्ये.उभा			कृ पूफा मू रे.			रो.उफा.पूषा.			मृ. ह. उषा.			
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०	शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	नष्टदशा—पि. भ्रा. उ. सं.
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
पि.	३	१०	धा.	६	१०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटा कर इष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० म से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें लब्ध अंक वर्ष. फिर शेषांक को १२ से गुणें भभोग के पलों से भाग दें लब्ध मास, फिर ३० से गुणा कर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध दिन, फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें लब्ध पल होंगें। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलबोधकचक्रम्—

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभः	हानिः	कष्ट	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाशः	सुखं	धनला.	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुना.	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योद.	विजयः	धनला.	व्ययः
भौमः	व्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्गति	शत्रुना.	स्त्रीकष्टं	पीड़ा	पुण्योद.	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यला.	पुत्रला.	कलहः	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.ला.	पुत्रप्रा.	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्मलाभः	राज्यला.	धनला.	शोकः
शुक्रः	मानप्रा०	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुखला.	धनलाभ	शत्रुभीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोद.	मानला.	क्षेमला.	व्ययः
शनिः	वार्ताति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्र पी.	जयः	स्त्रीकष्टं	रोगः	भाग्यहा.	धनहा.	धनला.	चिंता
राहुः	चिरोति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्महा.	विजयः	सुलाभ	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्यं	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभः	शोकः
मन्था:	सुखम	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योद.	राज्यप्रा.	लाभः	कष्टम्

* अथ वर्षप्रवेश सारणीयम् *

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

वर्षफलसाधनप्रकार :—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष जाने। स्मरण रहे कि मेषार्कप्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी के संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्रसौरात्) इस प्रकार से गतवर्ष लाकर उसीगताब्द अंक के नीचे जो सारिणी में वारादि अंक हैं उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश होता है। यदि नीचे घटयादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना; ऊपर के वारांक में सात से अधिक आ जाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्ष प्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा। (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट-सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन ठीक वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टों के अनुसार कभी कभी वार नहीं मिलता सो वहां पर मुख्य वर्षप्रवेश का वार जानना-योग्य है। इस इष्ट के अनुसार आगे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष-कुंडली लगाना। वर्षप्रवेश समय का सूर्य जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् तब मिलता है जब कि जन्म और वर्षप्रवेश सामयिक गणित एक ही करण ग्रन्थ से की हो। वर्ष बनाने में जन्मस्थान की स्वदेशीय सारणियों से वर्षलग्नादि साधन करे अन्यथा वर्षपत्र अशुद्ध होगा। मुन्थानयनप्रकार:—गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना; यह मुन्था प्रतिदिन पांच कला चलती है।

अथ त्रिपताकी चक्रम्—तिरछी और खड़ी तीन तीन रेखा खींचकर उनके कोण परस्पर मिलाकर त्रिपताकी चक्र तैयार करो, उस चक्र के पूर्व की मध्य रेखा पर वर्षप्रवेश का लग्न रख कर अन्य स्थानों में शेष क्रमशः ११ राशियों को स्थापन करो, अब ग्रह स्थापन करने की यह विधि है कि गतवर्षों में एकयुक्त कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उनकी संख्या की राशि पर जन्मराशि से चन्द्रमा होता है, एक युक्त गताब्दों में ४ का भाग देने से जो शेष रहे उसी संख्या पर शेष ग्रह जन्म-स्थान से होते हैं; परंच राहु केतु को विपरीत जानना॥ फल—यदि उक्त चक्र में राहु के साथ चन्द्रमा का वेध होवे तो कष्ट, सूर्य के वेध से संताप, शनैश्चर से रोग, भौम के वेध से शरीर पीडा होती है; शुभग्रहों के वेध से जय सौख्य लाभ होता है, शुभाशुभ ग्रहों का वेध देख कर वर्ष का फल कहे॥

त्रिराशिपतिचक्रम्

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	राशयः
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	वृ	चं	दि ल. प
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	वृ	चं	रा ल. प.

अथ वर्षबलम्

स्थानबल—सूर्य लग्न से ९, चं० ३, मं० ६, बु० १, गु० ११, शु० ५, श० १२, इन स्थानों में ५ बल देते हैं। स्वोच्चबल—सू. १।५, चं० २।४, मं० १।८।१०, बु० ३।६।, गु० ९।१।२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं। पुरुष स्त्री बल—स्त्रीग्रह (चं०, बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू० मं० बु०) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रिबल—दिन के वर्षेष्ट में पुरुष ग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं। मित्र शत्रु ज्ञानम्—जिस ग्रह का मित्रादि देखना है उस ग्रह से ३।५।९।११ इन स्थानों पर जो ग्रह हों वह उसके मित्र होते हैं और २।६।८।१२ वें हों तो सम, १।४।७।१०वें होवें तो शत्रु।

वर्षेशनिर्णये दृष्टिज्ञानम्—९।५वें ४५ कला, ३रे ४० कला, ११वें १० कला ४।१०वें १५ कला, और १७वें पूर्ण कला (६० कला) दृष्टि होती है।

अथ वर्षेशनिर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि में हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पांचो अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होगा, यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उनमें से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल दृष्टि अधिकार यह तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा॥ यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा॥ फल—वर्षेश ६।८।१२वें अस्तंगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

अथ लग्नपत्रात सूक्ष्म लग्नसाधनम्—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का प्रथम राश्यादि स्पष्टसूर्य बना लो। फिर सूर्य की राशि, अंश प्रमाण लग्नसारणी के कोष्ठक में इष्ट घटी पल युक्त करना, उससे अल्प कोष्ठक के राशि अंश लेना; रात्रि अंश के नीचे स्पष्ट सूर्य की कला विकला युक्त करना। तदनन्तर इष्टयुक्त किये हुए कोष्ठक और अल्पकोष्ठक का अन्तर करना, जो शेष बचे उसमें अल्प कोष्ठक और उसके आगे के (ऐष्य) कोष्ठक का अन्तर करके भाग देना, लब्ध जो अंश कला विकला फल आवे वह प्रथम आये हुए राश्यादि में युक्त करने से सूक्ष्मस्पष्ट लग्न होता है॥

मुद्दा दशा चक्र विधिश्च

जन्मनक्षत्र की संख्या में गतवर्षगण जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिये जन्मनक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़े, ३ और जोड़े, ८ से शेष करे तो मंगलादि योगिनी होती है॥

मुद्धादशा क्रमः

शेष	ग्रहाः	मास	दिन
१	सूर्य	०	१८
२	चंद्र	१	०
३	भौम	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०

वर्षयोगिनीमतेन मुद्दादशा

मं.	पि.	ध	भ्रा	भ.	उ	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

॥ लग्न सारणीयम् ॥

पलभा ७।१२

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	२०६
०	३८	४५	५२	५९	४	१२	१९	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	
वृष	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	२४२
१	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	२९९
२	१७	२३	३३	४४	५७	७	१७	२७	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	३४०
३	५३	४	१५	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	३५६
४	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४०
५	३८	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१३	
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	३४०
६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४८	१	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	३४६
७	२३	३४	४६	५७	१०	२२	३४	४५	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	३४७
८	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	३	१३	२३	३३	४४	५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	२९९
९	२२	३१	४४	५५	७	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	२४२
१०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२०६
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२७	३४	४१	४८	५५	०	७	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	३१	

॥ दशमलग्न सारणीयम् ॥ (सर्वोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	स्वोदय पलानि
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	२७८
०	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	२९९
१	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	३२३
२	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२६	३७	४८	५८	१०	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	३२३
३	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९९
४	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	२७८
५	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	२७८
६	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	२९९
७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२४	३५	४५	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	३२३
८	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	३२३
९	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	२९९
१०	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६	
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	२७८
११	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४	

उदाहरण—स्पष्ट सूर्य १।१५।५०।४०, इसकी राशि १ अंश १५ के प्रमाण लग्न-सारणी में कोष्ठक देखो तो ८।४८ है। इसमें इष्ट घटचादि ९।५ मिलाया तो १७।५३ हुए यह इष्टयुक्त किया हुआ लग्नसारणी का कोष्ठक हुआ इस इष्टकोष्ठक से अल्प-कोष्ठक सारणी में देखो तो (१७।५१) तीन राशि ५ अंश के कोष्ठक में मिलता है, इस कारण ३ कर्क राशि के ५ अंश लिये इसके नीचे सूर्य की कला ५० विकला ४० को युक्त किया तो ३।५।५०।४० हुआ तदनन्तर इष्टयुक्त कोष्ठक १७।५३ और अल्पकोष्ठक (१७।५१) का अन्तर किया तो पल २ हुआ इसमें अल्पकोष्ठक १७।५१ और ऐष्य (आगे का) कोष्ठक १८।२ के अन्तर पल ११ का भाग दिया तो लब्धि ० अंश आया, शेष २ को ६० से गुणा किया तो १२० हुए, इनमें फिर भाजक ११ का भाग दिया तो लब्धि १० कला आई; शेष १० बचे इनको ६० से गुणा किया तो ६०० हुए, इनमें भाजक ११ का फिर भाग दिया तो लब्धि ५५ विकला आई। इस अंशादि फल ०।१०।५५ को प्रथम आये हुए राश्यादि ३।५।५०।४० में युक्त किया तो राश्यादि ३।६।१।३५ यह सूक्ष्म स्पष्ट लग्न हुआ।

११) २ (०।१०।५५
    ६०
   १२०
   ११०
    १०
    ६०
   ६००
   ६०५

अथ दशमलग्नसाधनम्—सूर्योदयात् घटचादि इष्टकाल में से दिनार्ध हीन करना, जो शेष बचे वह दशमभाव का इष्ट होता है (यदि इष्ट में से दिनार्ध न घट सके तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर घटाना)। इसी दशम भावेष्ट का जन्म-कालीन इष्ट मान कर इस दशम-लग्नसारणी द्वारा पूर्ववत् लग्न की क्रिया करने से दशमभाव सिद्ध होता है। कभी-कभी दशमभाव में नवम या एकादश राशि भी हो जाती है। दशमभाव में ६ राशियुक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि करने से सप्तमभाव होता है।

भावसाधनम्—चतुर्थभाव में लग्न को हीन करके शेष का षष्ठांश लेवे, उस षष्ठांश को लग्न में ५ बार युक्त करे, अर्थात् प्रथम बार षष्ठांश को लग्न में युक्त करने से द्वितीय भाव की आरम्भ सन्धि होगी, फिर उसी आरम्भ सन्धि में षष्ठांशयुक्त करने से दूसरा भाव होवेगा। इसी प्रकार क्रमपूर्वक ५ बार षष्ठांशयुक्त करने से चतुर्थ भाव की आरंभ सन्धि तक चारों भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर एक २ बढ़ाते हुए उत्क्रम से चतुर्थ भाव की आरम्भसन्धि से लग्न की विराम सन्धि तक १ से ५ पर्यन्त केवल राशिसंख्या में युक्त करने से सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे, अर्थात् चतुर्थभाव की आरम्भ सन्धि में एक राशियुक्त करने से पंचम भाव की आरम्भ सन्धि हो जावेगी, तीसरे भाव में २ राशियुक्त करने से पंचम भाव होगी, इसी प्रकार क्रमपूर्वक सन्धि सहित ६ भाव हो जावेंगे। इसके अनन्तर शेष ६ भावों के साधन उपर्युक्त सन्धि सहित छः ही भावों में ६–६ राशियुक्त करने से सन्धि सहित द्वादश भाव होते हैं।

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

(दिनद्वयान्तरकरणात्सूक्ष्मगतिः) केतकी अहर्गणः ६९५५ मासारम्भे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
चैत्रशुक्लपक्षः ।	१	चं	११। १।५८।३३	०। ३।४३।१२	११। ६।४९।४१	०।२५। ६।५०	०। ७।२२।५९	६। २।५६।३५	९।१६।५७। २	२।२१।१२।४७	६। ०। ७।४४
	२	मं	११। २।५८।१४	०। ४।२७। ७	११। ५।५४।२४	०।२५।१८। ४	०। ७।३७।५९	६। २।५२।५४	९।१६।५४।५१	२।२१।१२।२४	६। ०। ६।१७
	३	बु	११। ३।५७।५२	०। ५।१०।५९	११। ५। ०। ८	०।२५।२९।२३	०। ७।५०।१७	६। २।४९। ९	९।१६।५०।४०	२।२१।१२। २	६। ०। ४।५२
	४	गु	११। ४।५७।२८	०। ५।५४।४९	११। ४। ६।५४	०।२५।४०।४६	०। ८। ०।१५	६। २।४५।२२	९।१६।४७।३०	२।२१।११।४६	६। ०। ३।२७
	५	शु	११। ५।५७। १	०। ६।३८।३७	११। ३।१४।४२	०।२५।५२।११	०। ८। ८।१३	६। २।४१।३२	९।१६।४४।१९	२।२१।११।३१	६। ०। १।५९
	७	श	११। ६।५६।३६	०। ७।२२।२२	११। २।२३।५०	०।२६। ३।४५	०। ८।१३।४०	६। २।३७।३९	९।१६।४१। ९	२।२१।११।२३	६। ०। ०।३१
	८	र	११। ७।५६। ६	०। ८। ६। ५	११। १।३३।५९	०।२६।१५।२१	०। ८।१६।४५	६। २।३३।४३	९।१६।३७।५८	२।२१।११।१८	५।२९।५९। २
	९	चं	११। ८।५५।३४	०। ८।४९।४६	११। ०।४५।१०	०।२६।२७। १	०। ८।१७।३०	६। २।२९।४५	९।१६।३४।४७	२।२१।११।१७	५।२९।५७।३३
	९	मं	११। ९।५५।००	०। ९।३३।२५	१०।२९।५७।२२	०।२६।३८।४६	०। ८।१५।५४	६। २।२५।४४	९।१६।३१।३७	२।२१।११।२०	५।२९।५६। २
	१०	बु	११।१०।५४।२४	०।१०।१७। २	१०।२९।१३। ९	०।२६।५०।३५	०। ८।११।५८	६। २।२१।३९	९।१६।२८।२६	२।२१।११।२७	५।२९।५४।३१
	११	गु	११।११।५३।४६	०।११। ०।३६	१०।२८।३४।५२	०।२७। २।२९	०। ८। ५।४०	६। २।१७।३२	९।१६।२५।१६	२।२१।११।३९	५।२९।५२।५९
	१२	शु	११।१२।५३। ६	०।११।४४। ८	१०।२८। २।३३	०।२७।१४।२७	०। ७।५७। २	६। २।१३।२३	९।१६।२२। ५	२।२१।११।५५	५।२९।५१।२७
	१३	श	११।१३।५२।२३	०।१२।२७।३७	१०।२७।३६।११	०।२७।२६।२९	०। ७।४६। ३	६। २। ९।१०	९।१६।१८।५४	२।२१।१२।१५	५।२९।४९।५३
	१४	र	११।१४।५१।३९	०।१३।११। ४	१०।२७।१५।४५	०।२७।३८।३६	०। ७।३२।४३	६। २। ४।५४	९।१६।१५।४४	२।२१।१२।३९	५।२९।४८।१९
	१५	चं	११।१५।५०।५२	०।१३।५४।३०	१०।२७। १।१८	०।२७।५०।४७	०। ७।१७। २	६। २। ०।३६	९।१६।१२।३३	२।२१।१३। ७	५।२९।४६।४३
प्र. वैशाख कृष्णपक्षः ।	१	मं	११।१६।५०। ३	०।१४।३७।५३	१०।२६।५२।४७	०।२८। ३। २	०। ६।५९। १	६। १।५६।१५	९।१६। ९।२३	२।२१।१३।३९	५।२९।४५। ७
	२	बु	११।१७।४९।१३	०।१५।२१।१४	१०।२६।५०।१३	०।२८।१५।२२	०। ६।३८।१८	६। १।५१।५०	९।१६। ६।१२	२।२१।१४।१७	५।२९।४३।३०
	३	गु	११।१८।४८।२२	०।१६। ४।३२	१०।२६।५२।४०	०।२८।२७।३४	०। ६।१२।३५	६। १।४७।२४	९।१६। ३। २	२।२१।१४।५०	५।२९।४१।५४
	४	शु	११।१९।४७।२९	०।१६।४७।४७	१०।२६।५९।४७	०।२८।३९।५१	०। ५।४५।३१	६। १।४२।५७	९।१५।५९।५१	२।२१।१५।२७	५।२९।४०।१७
	५	श	११।२०।४६।३४	०।१७।३०।५८	१०।२७।११।३४	०।२८।५२।१४	०। ५।१७।३३	६। १।३८।३०	९।१५।५६।४१	२।२१।१६। ६	५।२९।३८।४०
	६	र	११।२१।४५।३६	०।१८।१४। ७	१०।२७।२८। १	०।२९। ४।४१	०। ४।४८।३२	६। १।३४। ०	९।१५।५३।३०	२।२१।१६।४८	५।२९।३७। ३
	७	चं	११।२२।४४।३७	०।१८।५७।१३	१०।२७।४९। ७	०।२९।१७।१४	०। ४।१८।३४	६। १।२९।३०	९।१५।५०।२०	२।२१।१७।३२	५।२९।३५।२७
	८	मं	११।२३।४३।३५	०।१९।४०।१५	१०।२८।१४।५३	०।२९।२९।५१	०। ३।४७।३७	६। १।२४।५९	९।१५।४७। ९	२।२१।१८।१९	५।२९।३३।४९
	९	बु	११।२४।४२।३१	०।२०।२३।१४	१०।२८।४५।१९	०।२९।४२।३४	०। ३।१५।४२	६। १।२०।२८	९।१५।४३।५८	२।२१।१९। ८	५।२९।३२।११
	१०	गु	११।२५।४१।२५	०।२१। ६।११	१०।२९।२०।२४	०।२९।५५।२३	०। २।४२।४७	६। १।१५।५४	९।१५।४०।४८	२।२१।२०। २	५।२९।३०।३२
	११	शु	११।२६।४०।१७	०।२१।४९। ५	१०।२९।५८।२९	१। ०। ८।१३	०। २। ८।५४	६। १।११।२०	९।१५।३७।३७	२।२१।२०।५७	५।२९।२८।५३
	१२	श	११।२७।३९। ७	०।२२।३१।५५	११। ०।४०। ५	१। ०।२१।१४	०। १।३४। २	६। १। ६।४५	९।१५।३४।२६	२।२१।२१।५५	५।२९।२७।१४
	१४	र	११।२८।३७।५५	०।२३।१४।४१	११। १।२५। १	१। ०।३४।१५	०। ०।५८।१२	६। १। २। ९	९।१५।३१।१५	२।२१।२२।५५	५।२९।२५।३५
	३०	चं	११।२९।३६।४०	०।२३।५७।२५	११। २।१३।१९	१। ०।४७।२७	०। ०।२१।२४	६। ०।५७।३२	९।१५।२८। ५	२।२१।२४।००	५।२९।२३।५५

श्री संवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतवयहर्गणः ६५८४ मासारंभे

मास	ति.	वा.	सूर्यः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
प्र० वैशाखशुक्लपक्षः ।	१	मं.	०।०।३५।२३	०।२४।४०।६	११।३।४।५८	१।१।०।४०	११।२९।४३।३७	६।०।५२।५४	९।१५।२४।५४	२।२१।२५।६	५।२९।२२।१४
	२	बु.	०।१।३४।५	०।२५।२२।४३	११।३।५९।५६	१।१।१४।०	११।२९।४।५२	६।०।४८।१५	९।१५।२१।४४	२।२१।२६।१५	५।२९।२०।३४
	३	गु.	०।२।३२।४५	०।२६।५।१८	११।४।५८।१८	१।१।२७।२६	११।२८।२५।९	६।०।४३।३४	९।१५।१८।३३	२।२१।२७।२६	५।२९।१८।५४
	४	शु.	०।३।३१।२३	०।२६।४७।४९	११।६।०।०	१।१।४०।५५	११।२७।४४।२८	६।०।३८।५१	९।१५।१५।२२	२।२१।२८।४१	५।२९।१७।१३
	५	श.	०।४।२९।५८	०।२७।३०।१९	११।७।३।४१	१।१।५४।२	११।२७।७।२६	६।०।३४।१५	९।१५।१२।११	२।२१।३०।७	५।२९।१५।३४
	६	र.	०।५।२८।२१	०।२८।१२।४६	११।८।९।५१	१।२।७।१३	११।२६।२२।१४	६।०।२९।१८	९।१५।९।१	२।२१।३१।३५	५।२९।१३।५७
	७	चं.	०।६।२७।२	०।२८।५५।११	११।९।१८।३१	१।२।२०।२८	११।२५।५८।५२	६।०।२५।३	९।१५।५।५०	२।२१।३३।५	५।२९।१२।२०
	८	मं.	०।७।२५।३२	०।२९।३७।३३	११।१०।२९।४२	१।२।३३।४७	११।२५।२७।१८	६।०।२०।३०	९।१५।२।३९	२।२१।३४।३७	५।२९।१०।४३
	९	बु.	०।८।२४।१	१।०।१९।५४	११।११।४३।२२	१।२।४७।१०	११।२४।५७।३१	६।०।१५।५९	९।१४।५९।२९	२।२१।३६।१२	५।२९।९।७
	१०	गु.	०।९।२२।२७	१।१।२।१०	११।१२।५९।३३	१।३।०।३७	११।२४।२९।४०	६।०।११।२८	९।१४।५६।१८	२।२१।३७।४९	५।२९।७।३१
	११	शु.	०।१०।२०।५१	१।१।४४।२५	११।१४।१८।१४	१।३।१४।८	११।२४।३।४३	६।०।६।५९	९।१४।५३।८	२।२१।३९।२८	५।२९।५।५५
	१२	श.	०।११।१९।१४	१।२।२६।३८	११।१५।३९।२५	१।३।२७।४४	११।२३।३९।१८	६।०।२।३१	९।१४।४९।५७	२।२१।४१।१०	५।२९।४।१९
	१३	र.	०।१२।१७।३६	१।३।८।४७	११।१७।२।२९	१।३।४१।२४	११।२३।१६।५१	५।२९।५८।५	९।१४।४६।४६	२।२१।४२।५४	५।२९।२।४४
	१३	चं.	०।१३।१५।५५	१।३।५०।५४	११।१८।२७।३४	१।३।५५।८	११।२२।५६।१४	५।२९।५३।४०	९।१४।४३।३६	२।२१।४४।४१	५।२९।१।९
	१४	मं.	०।१४।१४।१२	१।४।३२।५९	११।१९।५४।३९	१।४।८।५६	११।२२।३७।२७	५।२९।४९।१७	९।१४।४०।२५	२।२१।४६।३०	५।२८।५९।३५
	१५	बु.	०।१५।१२।२८	१।५।१५।१	११।२१।२३।४६	१।४।२२।४७	११।२२।२०।२८	५।२९।४४।५४	९।१४।३७।१४	२।२१।४८।२१	५।२८।५८।१
द्वि० वैशाखकृष्णपक्षः	१	गु.	०।१६।१०।४४	१।५।५७।१	११।२२।५४।५३	१।४।३६।४२	११।२२।५।१८	५।२९।४०।३१	९।१४।३४।४	२।२१।५०।१०	५।२८।५६।२८
	२	शु.	०।१७।८।५५	१।६।३८।५८	११।२४।२८।१	१।४।५०।४२	११।२१।५१।५८	५।२९।३६।१४	९।१४।३०।५३	२।२१।५२।११	५।२८।५४।५४
	३	श.	०।१८।७।६	१।७।२०।५३	११।२६।३।९	१।५।४।४६	११।२१।४०।२८	५।२९।३१।५७	९।१४।२७।४३	२।२१।५३।५४	५।२८।५३।२२
	४	र.	०।१९।५।१४	१।८।२।४६	११।२७।४०।१९	१।५।१८।५४	११।२१।३०।४६	५।२९।२७।४०	९।१४।२४।३२	२।२१।५६।१०	५।२८।५१।५०
	५	चं.	०।२०।३।२१	१।८।४४।३२	११।२९।१९।७	१।५।३२।४६	११।२१।३३।३	५।२९।२३।२८	९।१४।२१।२१	२।२१।५८।१६	५।२८।५०।१७
	६	मं.	०।२१।१।२६	१।९।२६।१६	०।०।५९।५२	१।५।४६।३५	११।२१।३६।५८	५।२९।१९।२०	९।१४।१८।११	२।२२।०।२४	५।२८।४८।४५
	८	बु.	०।२१।५९।३१	१।१०।७।५८	०।२।४२।३५	१।६।०।२२	११।२१।४२।३३	५।२९।१५।१६	९।१४।१५।०	२।२२।२।३४	५।२८।४७।१५
	९	गु.	०।२२।५७।३२	१।१०।४९।३८	०।४।२७।१४	१।६।१४।८	११।२१।४९।४८	५।२९।११।१४	९।१४।११।४९	२।२२।४।४८	५।२८।४५।४६
	१०	शु.	०।२३।५५।३३	१।११।३१।१५	०।६।१३।५१	१।६।२७।५५	११।२१।५८।४३	५।२९।७।१६	९।१४।८।३९	२।२२।७।४	५।२८।४४।१७
	११	श.	०।२४।५३।३२	१।१२।१२।५०	०।८।२।२६	१।६।४१।४७	११।२२।९।१८	५।२९।३।२२	९।१४।५।२८	२।२२।९।२२	५।२८।४२।५१
	१२	र.	०।२५।५१।२९	१।१२।५४।२३	०।९।५२।५९	१।६।५५।४४	११।२२।२१।३३	५।२८।५९।३२	९।१४।२।१७	२।२२।११।४२	५।२८।४१।२७
	१३	चं.	०।२६।४९।२६	१।१३।३५।५३	०।११।४५।२९	१।७।९।४०	११।२२।३५।२८	५।२८।५५।४४	९।१३।५९।७	२।२२।१४।६	५।२८।४०।१
	१४	मं.	०।२७।४७।१७	१।१४।१७।२१	०।१३।३९।२	१।७।२३।३६	११।२२।५१।३	५।२८।५२।०	९।१३।५५।५६	२।२२।१६।३२	५।२८।३८।३७
	१०	बु.	०।२८।४५।१४	१।१४।५८।४६	०।१५।३४।३०	१।७।३७।३३	११।२३।८।१७	५।२८।४८।२०	९।१३।५२।४५	२।२२।१९।०	५।२८।३७।१४

१२

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिका स्पष्टा ग्रहाः ।

केतक्यहर्गणः ६६१४ मासारम्भे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	न्द्र.
द्वि० वैशाखकृष्णपक्षः	१	गु	०।२९।४३। ५	१।१५।४०। ९	०।१७।३१।५२	१। ७।५१।५२	११।२३।२७।११	५।२८।४४।४४	९।१३।४९।३५	२।२२।२१।३०	५।२८।३५।५३
	२	शु	१। ०।४०।५६	१।१६।२१।३०	०।१९।३१। ८	१। ८। ५।३२	११।२३।४७।४४	५।२८।४१।१०	९।१३।४६।२४	२।२२।२४। ४	५।२८।३४।३२
	३	श	१। १।३८।४५	१।१७। २।४८	०।२१।१२।१८	१। ८।१९।३३	११।२४। ९।५८	५।२८।३७।४०	९।१३।४३।१३	२।२२।२६।३९	५।२८।३३।१२
	४	र	१। २।३६।३२	१।१७।४४। ४	०।२३।३५।२२	१। ८।३३।३५	११।२४।३३।५१	५।२८।३४।१४	९।१३।४०। ३	२।२२।२९।१८	५।२८।३१।५४
	५	चं	१। ३।३४।१७	१।१८।२५।१८	०।२५।४०।२०	१। ८।४७।३९	११।२४।५९।२४	५।२८।३०।५२	९।१३।३६।५२	२।२२।३१।५९	५।२८।३०।३६
	६	मं	१। ४।३२। २	१।१९। ६।२९	०।२७।४७।१३	१। ९। १।४४	११।२५।२६।३८	५।२८।२७।३२	९।१३।३३।४१	२।२२।३४।४४	५।२८।२९।२०
	७	बु	१। ५।२९।४६	१।१९।४७।३८	०।२९।५६।३४	१। ९।१५।४९	११।२५।५६।२४	५।२८।२४।१८	९।१३।३०।३१	२।२२।३७।२८	५।२८।२८। ५
	८	गु	१। ६।२७।२९	१।२०।२८।४३	१। २। ६।२७	१। ९।२९।५४	११।२६।२७।१७	५।२८।२१।१०	९।१३।२७।२०	२।२२।४०।१४	५।२८।२६।५२
	९	शु	१। ७।२५।१०	१।२१। ९।४६	१। ४।१६।५४	१। ९।४३।५८	११।२६।५९।१८	५।२८।१८। ६	९।१३।२४। ९	२।२२।४३। २	५।२८।२५।४१
	१०	श	१। ८।२२।४९	१।२१।५०।४६	१। ६।२७।५४	१। ९।५८। १	११।२७।३२।२७	५।२८।१५। ७	९।१३।२०।५८	२।२२।४५।५१	५।२८।२४।३०
	११	र	१। ९।२०।२७	१।२२।३१।४४	१। ८।३९।२७	१।१०।१२। ३	११।२८। ६।४४	५।२८।१२।१२	९।१३।१७।४८	२।२२।४८।४३	५।२८।२३।२१
	१२	चं	१।१०।१८। ५	१।२३।१२।३९	१।१०।५१।३३	१।१०।२६। ४	११।२८।४२। ९	५।२८। ९।२४	९।१३।१४।३७	२।२२।५१।३४	५।२८।२२।१४
	१३	मं	१।११।१५।४१	१।२३।५३।३२	१।१३। ४।११	१।१०।४०। ४	११।२९।१८।४२	५।२८। ६।४०	९।१३।११।२६	२।२२।५४।२७	५।२८।२१। ७
	१४	बु	१।१२।१३।१६	१।२४।३४।२३	१।१५।१७।२४	१।१०।५४। ४	११।२९।५६।२४	५।२८। ४। १	९।१३। ८।१५	२।२२।५७।२५	५।२८।२०। २
	१५	गु	१।१३।१०।५०	१।२५।१५।११	१।१७।३१।११	१।११। ८। ५	०। ०।३५। ३	५।२८। १।२६	९।१३। ५। ५	२।२३। ०।२४	५।२८।१८।५८
	१	शु	१।१४। ८।२३	१।२५।५५।५७	१।१९।४३।१२	१।११।२२। ५	०। १।१४।५३	५।२७।५८।५७	९।१३। १।५४	२।२३। ३।२३	५।२८।१७।५६
	२	श	१।१५। ५।५४	१।२६।३६।४१	१।२१।५३।२९	१।११।३६। ५	०। १।५५।५३	५।२७।५६।३४	९।१२।५८।४३	२।२३। ६।२४	५।२८।१६।५४
	३	र	१।१६। ३।२३	१।२७।१७।२२	१।२४। २। २	१।११।५०। ४	०। २।३८। ४	५।२७।५४।१५	९।१२।५५।३३	२।२३। ९।२७	५।२८।१५।५४
	४	चं	१।१७। ०।५१	१।२७।५८। १	१।२६। ८।५१	१।१२। ४। ३	०। ३।२१।२६	५।२७।५२। ४	९।१२।५२।२२	२।२३।१२।३०	५।२८।१४।५६
	५	मं	१।१७।५८।१९	१।२८।३८।३७	१।२८।१३।५४	१।१२।१८। १	०। ४। ५।५९	५।२७।४९।५५	९।१२।४९।११	२।२३।१५।३६	५।२८।१३।५८
	६	बु	१।१८।५५।४५	१।२९।१९।११	२। ०।१७।१३	१।१२।३२।००	०। ४।५१।४२	५।२७।४७।५०	९।१२।४६। १	२।२३।१८।४६	५।२८।१३। २
	७	गु	१।१९।५३।१०	१।२९।५९।४२	२। २।१८।४७	१।१२।४५।५८	०। ५।३८।३८	५।२७।४५।४७	९।१२।४२।५०	२।२३।२१।५८	५।२८।१२। ७
	८	शु	१।२०।५०।३५	२। ०।४०।१२	२। ४।१८।१५	१।१२।५९।५९	०। ६।२५।४४	५।२७।४३।५२	९।१२।३९।३९	२।२३।२५। ७	५।२८।११।१६
	९	श	१।२१।४७।५९	२। १।२०।३९	२। ६।१५।१५	१।१३।१३।५८	०। ७।१३।२६	५।२७।४२। ३	९।१२।३६।२८	२।२३।२८।१७	५।२८।१०।२६
	११	र	१।२२।४५।२३	२। २। १। ४	२। ८। ९।४९	१।१३।२७।५७	०। ८। १।४६	५।२७।४०।२०	९।१२।३३।१८	२।२३।३१।२९	५।२८। ९।३८
	१२	चं	१।२३।४२।४६	२। २।४१।२७	२।१०। १।५५	१।१३।४१।५२	०। ८।५०।४३	५।२७।३८।४३	९।१२।३०। ७	२।२३।३४।४२	५।२८। ८।५२
	१३	मं	१।२४।४०। ८	२। ३।२१।४९	२।११।५१।३३	१।१३।५५।४८	०। ९।४०।१७	५।२७।३७।१२	९।१२।२६।५६	२।२३।३७।५६	५।२८। ८। ७
	१४	बु	१।२५।३७।३०	२। ४। २। ७	२।१३।३८।४५	१।१४। ९।४५	०।१०।३०।२८	५।२७।३५।४७	९।१२।२३।४५	२।२३।४१।११	५।२८। ७।२४
	३०	गु	१।२६।३४।५१	२। ४।४२।२३	२।१५।२[illegible]	१।१४।२३।३४	[illegible]	[illegible]	९।१२।२०।३४	२।२३।४४।२८	५।२८। ६।४३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

केतक्यहर्गणः ६६४३ मासारम्भे।

मासः	ति.	वा.	सूर्य	मंगल.	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
ज्येष्ठशुक्लपक्षः	१	शु	१।२७।३२।१२	२। ५।२२।३७	२।१७। ५।४६	१।१४।३७।२६	०।१२।१२।४३	५।२७।३३।१४	९।१२।१७।२४	२।२३।४७।४६	५।२८। ६। ४
	२	श	१।२८।२९।३३	२। ६। २।४९	२।१८।४५।५४	१।१४।५१।१७	०।१३। ४।४६	५।२७।३२। ५	९।१२।१४।११	२।२३।५१। ७	५।२८। ५।२६
	३	र	१।२९।२६।५२	२। ६।४२।५८	२।२०।२३।२४	१।१५। ५। ७	०।१३।५७।२६	५।२७।३१। ४	९।१२।११। २	२।२३।५४।२८	५।२८। ४।५०
	४	चं	२। ०।२४।११	२। ७।२३। ५	२।२१।५८।१६	१।१५।१८।५७	०।१४।५०।४४	५।२७।३०। ९	९।१२। ७।५१	२।२३।५७।५१	५।२८। ४।१६
	५	मं	२। १।२१।१८	२। ८। ३।११	२।२३।३०।३२	१।१५।३२।४२	०।१५।४४।३९	५।२७।२९।२१	९।१२। ४।४०	२।२४। १।१५	५।२८। ३।४४
	६	बु	२। २।१८।४६	२। ८।४३।१४	२।२५। ०।१०	१।१५।४६।२९	०।१६।३९।११	५।२७।२८।३८	९।१२। १।२९	२।२४। ४।४१	५।२८। ३।१३
	७	गु	२। ३।१६।०२	२। ९।२३।१४	२।२६।२७।१२	१।१६। ०।१३	०।१७।३४।२०	५।२७।२८। १	९।११।५८।१९	२।२४। ८। ८	५।२८। २।४४
	८	शु	२। ४।१३।१८	२।१०। ३।१२	२।२७।५१।३६	१।१६।१३।५७	०।१८।३०। ५	५।२७।२७।३०	९।११।५५। ८	२।२४।११।३७	५।२८। २।१७
	९	श	२। ५।१०।३३	२।१०।४३। ८	२।२९।१३।२३	१।१६।२७।४०	०।१९।२६।३१	५।२७।२७। ४	९।११।५१।५७	२।२४।१५। ७	५।२८। १।५२
	९	र	२। ६। ७।४८	२।११।२३। १	३। ०।३२।३४	१।१६।४१।१७	०।२०।२३। १	५।२७।२६।४५	९।११।४८।४६	२।२४।१८।३८	५।२८। १।२८
	१०	चं	२। ७। ५। २	२।१२। २।५२	३। १।४८।३६	१।१६।५४।५२	०।२१।१९।५३	५।२७।२६।११	९।११।४५।३६	२।२४।२२।१०	५।२८। १। ६
	११	मं	२। ८। २।१६	२।१२।४२।४१	३। ३। १।३०	१।१७। ८।२५	०।२२।१७। ७	५।२७।२६।२३	९।११।४२।२५	२।२४।२५।४२	५।२८। ०।४६
	१२	बु	२। ८।५९।३०	२।१३।२२।२९	३। ४।११।१७	१।१७।२१।५५	०।२३।१४।४१	५।२७।२६।२१	९।११।३९।१४	२।२४।२९।१५	५।२८। ०।२८
	१३	गु	२। ९।५६।४४	२।१४। २।१५	३। ५।१७।५५	१।१७।३५।२३	०।२४।१२।४१	५।२७।२६।२५	९।११।३६। १	२।२४।३२।४८	५।२८। ०।१२
	१४	शु	२।१०।५३।५८	२।१४।४२।००	३। ६।२२।२६	१।१७।४८।४८	०।२५।११। १	५।२७।२६।३५	९।११।३२।५२	२।२४।३६।२२	५।२७।५९।५८
	१५	श	२।११।५१।१२	२।१५।२१।४३	३। ७।२१।४९	१।१८। २।१३	०।२६। ९।४३	५।२७।२६।५१	९।११।२९।४१	२।२४।३९।५६	५।२७।५९।४६
आषाढकृष्णपक्षः	१	र	२।१२।४८।२५	२।१६। १।२६	३। ८।१९। ५	१।१८।१५।३२	०।२७। ८।४९	५।२७।२७।१४	९।११।२६।३१	२।२४।४३।३०	५।२७।५९।३५
	२	चं	२।१३।४५।३९	२।१६।४१। ७	३। ९।१२।५६	१।१८।२८।५२	०।२८। ८।१६	५।२७।२७।४२	९।११।२३।२०	२।२४।४७। ४	५।२७।५९।२७
	४	मं	२।१४।४२।५२	२।१७।२०।४६	३।१०। २।५७	१।१८।४२। ८	०।२९। ८। ५	५।२७।२८।१६	९।११।२०। ९	२।२४।५०।३९	५।२७।५९।२१
	५	बु	२।१५।४०। ५	२।१८। ०।२१	३।१०।४९। ८	१।१८।५५।२२	१। ०। ८।१६	५।२७।२८।५६	९।११।१६।५८	२।२४।५४।१४	५।२७।५९।१७
	६	गु	२।१६।३७।१८	२।१८।३९।५९	३।११।३१।३०	१।१९। ८।३३	१। १। ८।४९	५।२७।२९।४३	९।११।१३।४८	२।२४।५७।५०	५।२७।५९।१४
	७	शु	२।१७।३४।३१	२।१९।१९।३३	३।१२।१०। १	१।१९।२१।४३	१। २। ९।४४	५।२७।३०।३५	९।११।१०।३७	२।२५। १।२६	५।२७।५९।१४
	८	श	२।१८।३१।४४	२।१९।५८। ६	३।१२।४६।४१	१।१९।३४।५०	१। ३।११। १	५।२७।३१।३४	९।११। ७।२६	२।२५। ५। ३	५।२७।५९।१५
	९	र	२।१९।२८।५६	२।२०।३८।३७	३।१३।१५।३१	१।१९।४७।५५	१। ४।१२।४०	५।२७।३२।३९	९।११। ४।१५	२।२५। ८।४०	५।२७।५९।१८
	१०	चं	२।२०।२६। ८	२।२१।१८। ७	३।१३।४२।३२	१।२०। ०।५८	१। ५।१४।४२	५।२७।३३।५०	९।११। १। ४	२।२५।१२।१९	५।२७।५९।२४
	११	मं	२।२१।२३।२०	२।२१।५७।३२	३।१४। ५।२१	१।२०।१३।५८	१। ६।१६।४२	५।२७।३५। ५	९।१०।५७।५४	२।२५।१६। ०	५।२७।५९।३२
	१२	बु	२।२२।२०।३१	२।२२।३६।५६	३।१४।२३।४१	१।२०।२६।५४	१। ७।१८।५६	५।२७।३६।२५	९।१०।५४।४३	२।२५।१९।४१	५।२७।५९।४२
	१३	गु	२।२३।१७।४३	२।२३।१६।१८	३।१४।३७।३१	१।२०।३९।४६	१। ८।२१।२६	५।२७।३७।५१	९।१०।५१।३२	२।२५।२३।२२	५।२७।५९।५४
	१४	शु	२।२४।१४।५६	२।२३।५५।३९	३।१४।४६।५२	१।२०।५२।३४	१। ९।२४।११	५।२७।३९।२३	९।१०।४८।२१	२।२५।२७। ३	५।२८। ०। ७
	३०	श	२।२५।१२। ९	२।२४।३४।५८	३।१४।५१।४४	१।२१। ५।१८	१।१०।२७।११	५।२७।४१। १	९।१०।४५।१०	२।२५।३०।४३	५।२८। ०।२२

श्री संवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

केतवयहर्गणः ६६७३मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य.	भौम	बुध.	गुरु.	शुक्र.	शनि.	राहु.	वरुण.	इन्द्र.
आषाढशुक्लपक्षः ।	१	र	२।२६। ९।२१	२।२५।१४।१६	३।१४।५२। ७	१।२१।१७।५८	१।११।१०।२६	५।२७।४२।४५	९।१०।४२। ०	२।२५।३४।२३	५।२८। ०।३८
	२	चं	२।२७। ६।३७	२।२५।५२।३२	३।१४।४८। ०	१।२१।३०।३४	१।१२।३३।५५	५।२७।४४।३५	९।१०।३८।४९	२।२५।३८। ३	५।२८। ०।५६
	३	मं	२।२८। ३।५१	२।२६।३२।४६	३।१४।३९।२५	१।२१।४३। ८	१।१३।३७।४१	५।२७।४६।३०	९।१०।३५।३८	२।२५।४१।४२	५।२८। १।१६
	४	बु	२।२९। १। ६	२।२७।११।५९	३।१४।२५।५७	१।२१।५५।३६	१।१४।४१।४४	५।२७।४८।३१	९।१०।३२।२७	२।२५।४५।२१	५।२८। १।३७
	५	गु	२।२९।५८।२१	२।२७।५१।१०	३।१४। ८।५०	१।२२। ८। १	१।१५।४५।५९	५।२७।५०।३९	९।१०।२९।१६	२।२५।४९। ०	५।२८। २। १
	६	शु	३। ०।५५।३७	२।२८।३०।१९	३।१३।४८। ३	१।२२।२०।२२	१।१६।५०।२८	५।२७।५२।५२	९।१०।२६। ५	२।२५।५२।३८	५।२८। २।२७
	७	श	३। १।५२।५४	२।२९। ९।२७	३।१३।२३।३५	१।२२।३२।४०	१।१७।५५।११	५।२७।५५।११	९।१०।२२।५४	२।२५।५६।१५	५।२८। २।५५
	८	र	३। २।५०।११	२।२९।४८।३३	३।१२।५५।२७	१।२२।४४।५३	१।१९। ०। ७	५।२७।५७।३६	९।१०।१९।४३	२।२५।५९।५२	५।२८। ३।२४
	९	चं	३। ३।४७।२९	३। ०।२७।३८	३।१२।२३।३८	१।२२।५७। ३	१।२०। ५।१५	५।२८। ०। ७	९।१०।१६।३३	२।२६। ३। ०	५।२८। ३।५७
	१०	मं	३। ४।४४।४७	३। १। ६।४१	३।११।४८।५९	१।२३। ९। ९	१।२१।१०।३७	५।२८। २।४४	९।१०।१३।२२	२।२६। ७। ७	५।२८। ४।३२
	११	बु	३। ५।४२। ६	३। १।४५।४३	३।११। ९। ०	१।२३।२१।११	१।२२।१६।१२	५।२८। ५।२८	९।१०।१०।११	२।२६।१०।४४	५।२८। ५।१०
	१२	गु	३। ६।३९।२४	३। २।२४।४४	३।१०।२६।२६	१।२३।३३।१६	१।२३।२१।५७	५।२८। ८।१५	९।१०। ७। ०	२।२६।१४।२१	५।२८। ५।४९
	१३	शु	३। ७।३६।४२	३। ३। ३।४२	३। ९।४४।४५	१।२३।४५।१६	१।२४।२७।५१	५।२८।११। ७	९।१०। ३।४९	२।२६।१७।५६	५।२८। ६।२९
	१४	श	३। ८।३४। १	३। ३।४२।३८	३। ९। ३।५४	१।२३।५७।१०	१।२५।३३।५४	५।२८।१४। ५	९।१०। ०।३८	२।२६।२१।३१	५।२८। ७।११
	१५	र	३। ९।३१।२०	३। ४।२१।३३	३। ८।२३।५६	१।२४। ८।५९	१।२६।४०। ७	५।२८।१७। ७	९। ९।५७।२७	२।२६।२५। ४	५।२८। ७।५६
श्रावणकृष्णपक्षः ।	१	चं	३।१०।२८।४०	३। ५। ०।२६	३। ७।४४।४९	१।२४।२०।४१	१।२७।४६।२८	५।२८।२०।१४	९। ९।५४।१६	२।२६।२८।३८	५।२८। ८।४२
	२	मं	३।११।२६। २	३। ५।२९।१८	३। ७। ६।३३	१।२४।३२।२२	१।२८।५२।५९	५।२८।२३।२७	९। ९।५१। ६	२।२६।३२।१०	५।२८। ९।२९
	३	बु	३।१२।२३।२५	३। ६।१८। ८	३। ६।२९। ९	१।२४।४३।५५	१।२९।५९।१९	५।२८।२६।४४	९। ९।४७।५५	२।२६।३५।४२	५।२८।१०।३८
	४	गु	३।१३।२०।४८	३। ६।५६।५६	३। ५।५२।३७	१।२४।५५।२३	२। १। ६।२९	५।२८।३०। ७	९। ९।४४।४४	२।२६।३९।१४	५।२८।११।१०
	५	शु	३।१४।१८।१२	३। ७।३५।४३	३। ५।२१।२१	१।२५। ६।४७	२। २।१३।२८	५।२८।३४।३५	९। ९।४१।३१	२।२६।४२।४६	५।२८।१२। ४
	७	श	३।१५।१५।३७	३। ८।१४।२९	३। ४।५६। ८	१।२५।१८। ५	२। ३।२०।३५	५।२८।३७। ७	९। ९।३८।२३	२।२६।४६।१७	५।२८।१२।५९
	८	र	३।१६।१३। ३	३। ८।५३।१३	३। ४।३६।५९	१।२५।२९।१७	२। ४।२७।५२	५।२८।४१।४५	९। ९।३५।१२	२।२६।४९।४८	५।२८।१३।५६
	९	चं	३।१७।१०।३०	३। ९।३१।५५	३। ४।२३।५३	१।२५।४०।२५	२। ५।३५।१९	५।२८।४४।२९	९। ९।३२। १	२।२६।५३।१७	५।२८।१४।५४
	१०	मं	३।१८। ७।५८	३।१०।१०।३६	३। ४।१६।५०	१।२५।५१।२७	२। ६।४२।५५	५।२८।४८।१८	९। ९।२८।५०	२।२६।५६।४५	५।२८।१५।५५
	११	बु	३।१९। ५।२७	३।१०।४९।१५	३। ४।१५।५२	१।२६। २।२५	२। ७।५०।३९	५।२८।५२।११	९। ९।२५।३९	२।२७। ०।१३	५।२८।१६।५७
	१२	गु	३।२०। २।५७	३।११।२७।५२	३। ४।२०।५८	१।२६।१३।१७	२। ८।५८।३३	५।२८।५६।१०	९। ९।२२।२८	२।२७। ३।४१	५।२८।१८। १
	१३	शु	३।२१। ०।२७	३।१२। ६।२९	३। ४।३२। ६	१।२६।२४। ४	२।१०। ६।३३	[illegible]	९। ९।१९।१७	२।२७। ७। ८	५।२८।१९। ८
	१४	श	३।२१।५७।५८	३।१२।४५। १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५।२९। ४।२२	९। ९।१६। ६	[illegible]	[illegible]
	३०	र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री संवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कितवयहर्गणः ६७०२ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
श्रावणशुक्लपक्षः ।	१	चं	३।२३।५३। १	३।१४। २। ३	३। ५।४९। ५	१।२६।५५।४२	२।१३।३१।२९	५।२९।१२।५२	९। ९। ९।४५	२।२७।१७।११	५।२८।२२।३१
	२	मं	३।२४।५०।३५	३।१४।४०।३३	३। ६।२७।११	१।२७। ६। ०	२।१४।४०। १	५।२९।१७।११	९। ९। ६।३४	२।२७।२०।३०	५।२८।२३।४२
	३	बु	३।२५।४८।११	३।१५।१९।१२	३। ७।११।३१	१।२७।१६।१२	२।१५।४८।४०	५।२९।२१।३८	९। ९। ३।२३	२।२७।२३।४६	५।२८।२४।५४
	४	गु	३।२६।४५।४८	३।१५।५७।३०	३। ८। २। ४	१।२७।२६।१६	२।१६।५७।२६	५।२९।२६। ७	९। ९। ०।१२	२।२७।२७। २	५।२८।२६। ८
	५	शु	३।२७।४३।२६	३।१६।३५।५८	३। ८।५८।५१	१।२७।३६।१४	२।१८। ६।२०	५।२९।३०।४०	९। ८।५७। १	२।२७।३०।१६	५।२८।२७।२४
	६	श	३।२८।४१। ६	३।१७।१४।२४	३।१०। १।५२	१।२७।४६। ५	२।१९।१५।२२	५।२९।३५।१७	९। ८।५३।५०	२।२७।३३।२९	५।२८।२८।४४
	६	र	३।२९।३८।४७	३।१७।५२।५०	३।११।१२।२०	१।२७।५५।४९	२।२०।२४।३१	५।२९।३९।५९	९। ८।५०।३९	२।२७।३६।४१	५।२८।३०। १
	७	चं	४। ०।३६।३०	३।१८।३१।१४	३।१२।२७।३८	१।२८। ५।२७	२।२१।३३।४६	५।२९।४४।४४	९। ८।४७।२९	२।२७।३९।५१	५।२८।३१।२४
	८	मं	४। १।३४।१४	३।१९। ९।३८	३।१३।४७।४४	१।२८।१४।५७	२।२२।४३। ९	५।२९।४९।३१	९। ८।४४।१८	२।२७।४२।५९	५।२८।३२।४७
	९	बु	४। २।३१।५९	३।१९।४८। १	३।१५।११।४०	१।२८।२४।२०	२।२३।५२।३९	५।२९।५४।२७	९। ८।४१। ७	२।२७।४६। ६	५।२८।३४।१२
	१०	गु	४। ३।२९।४६	३।२०।२६।२३	३।१६।४२।२५	१।२८।३३।३६	२।२५। २।१६	५।२९।५९।२४	९। ८।३७।५६	२।२७।४९।११	५।२८।३५।३८
	११	शु	४। ४।२७।३४	३।२१। ४।४४	३।१८।१७। ०	१।२८।४२।४५	२।२६।१२। ०	६। ०। ४।२६	९। ८।३४।४५	२।२७।५२।१५	५।२८।३७। ६
	१२	श	४। ५।२५।२४	३।२१।४३। ५	३।१९।५६।२३	१।२८।५१।४८	२।२७।२१।५२	६। ०। ९।३२	९। ८।३१।३५	२।२७।५५।१७	५।२८।३८।३६
	१४	र	४। ६।२३।१६	३।२२।२१।२५	३।२१।४०।३७	१।२९। ०।४३	२।२८।३१।५२	६। ०।१४।४२	९। ८।२८।२४	२।२७।५८।१९	५।२८।४०। ८
	१५	चं	४। ७।२१। ८	३।२२।५९।३८	३।२३।२८।५६	१।२९। ९।३९	२।२९।४१।५६	६। ०।१९।५७	९। ८।२५।१३	२।२८। १।२४	५।२८।४१।४१
भाद्रपदकृष्णपक्षः ।	१	मं	४। ८।१९। १	३।२३।३७।४९	३।२५।१८।५३	१।२९।१८।२७	३। ०।५३। ५	६। ०।२५।१७	९। ८।२२। २	२।२८। ४।२६	५।२८।४३।१४
	२	बु	४। ९।१६।५५	३।२४।१६।००	३।२७।१०।२८	१।२९।२७। ७	३। २। २।२१	६। ०।३०।४०	९। ८।१८।५१	२।२८। ७।२६	५।२८।४४।४९
	३	गु	४।१०।१४।५१	३।२४।५४। ९	३।२९। ३।४३	१।२९।३५।३६	३। ३।१२।४१	६। ०।३६। ५	९। ८।१५।४०	२।२८।१०।२५	५।२८।४६।२४
	४	शु	४।११।१२।४९	३।२५।३२।१९	४। ०।५८।३५	१।२९।४३।५९	३। ४।२३।११	६। ०।४१।३४	९। ८।१२।२९	२।२८।१३।२१	५।२८।४८। २
	५	श	४।१२।१०।४८	३।२६।१०।२७	४। २।५५। ७	१।२९।५२।११	३। ५।३३।४५	६। ०।४७। ७	९। ८। ९।१९	२।२८।१६।१४	५।२८।४९।४०
	६	र	४।१३। ८।४९	३।२६।४८।३५	४। ४।५३।१७	२। ०। ०।१५	३। ६।४४।२६	६। ०।५२।४३	९। ८। ६। ८	२।२८।१९। ५	५।२८।५१।२०
	७	चं	४।१४। ६।५२	३।२७।२६।४२	४। ६।५३। ६	२। ०। ८।१०	३। ७।५५।१२	६। ०।५८।२३	९। ८। २।५७	२।२८।२१।५४	५।२८।५३। २
	८	मं	४।१५। ४।५७	३।२८। ४।४९	४। ८।५४।४४	२। ०।१५।५८	३। ९। ६। ४	६। १। ४। ६	९। ७।५९।४६	२।२८।२४।४१	५।२८।५४।४५
	९	बु	४।१६। ३। ३	३।२८।४२।५६	४।१०।४९।४५	२। ०।२३।३५	३।१०।१७। ३	६। १। ९।५२	९। ७।५६।३५	२।२८।२७।२५	५।२८।५६।३०
	१०	गु	४।१७। १।११	३।२९।२१। १	४।१२।४७। ८	२। ०।३१। ४	३।११।२८। ८	६। १।१५।४२	९। ७।५३।२४	२।२८।३०। ७	५।२८।५८।१५
	११	शु	४।१७।५९।२१	३।२९।५९। ५	४।१४।४३।५५	२। ०।३८।२४	३।१२।३९।१९	६। १।२१।३५	९। ७।५०।१३	२।२८।३२।४७	५।२९। ०। २
	१२	श	४।१८।५७।३२	४। ०।३७। ९	४।१६।४०। ४	२। ०।४५।३७	३।१३।५०।३६	६। १।२७।३२	९। ७।४७। २	२।२८।३५।२६	५।२९। १।५१
	१३	र	४।१९।५५।४५	४। १।१५।१२	४।१८।३५।३७	२। ०।५२।३९	३।१५। १।५९	६। १।३३।३२	९। ७।४३।५१	२।२८।३८। १	५।२९। ३।४०
	१४	चं	४।२०।५४। ०	४। १।५३।१५	४।२०।३०।३२	२। ०।५९।३३	३।१६।१३।२८	६। १।३९।३६	९। ७।४०।४०	२।२८।४०।३४	५।२९। ५।३१
	३०	मं	४।२१।५२।१७	४। २।३१।१६	४।२२।२४।५०	२। १। ६।१८	३।१७।२५। ५	६। १।४५।४३	९। ७।३७।३०	२।२८।४३। ५	५।२९। ७।२३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

केतवयहर्गणः ६७३२ मासारम्भे।

मासः	ति.	वा.	सूर्य	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण	इन्द्र
भाद्रपदशुक्लपक्षः।	१	बु	४।२२।५०।३५	४। ३।०९।२०	४।२४।१७।४४	२। ११।२।५८	३।१८।३६।३६	६। १।११।५२	९। ७।३४।१९	२।२८।४५।३४	५।२९। ९।१६
	२	गु	४।२३।४८।५४	४। ३।४७।२१	४।२६। ९।३७	२। ११।९।२८	३।१९।४८।११	६। १।५८। ५	९। ७।३१। ८	२।२८।४८। ८	५।२९।११।११
	३	शु	४।२४।४७।१५	४। ४।२५।२१	४।२८। ०।२८	२। ११।२५।४८	३।२०।५९।५२	६। २। ४।२०	९। ७।२७।५७	२।२८।५०।२८	५।२९।१३। ६
	४	श	४।२५।४५।३८	४। ५। ३।२१	४।२९।५०।१७	२। १।३१।५९	३।२२।११।३८	६। २।१०।३८	९। ७।२४।४६	२।२८।५२।५४	५।२९।१५। २
	५	र	४।२६।४४। ३	४। ५।४१।२०	५। १।३९। ४	२। १।३८। ०	३।२३।२३।२९	६। २।१६।५८	९। ७।२१।३५	२।२८।५५।१३	५।२९।१७। ०
	६	चं	४।२७।४२।३०	४। ६।१९।१७	५। ३।२६।४९	२। १।४३।५०	३।२४।३५।२५	६। २।२३।२१	९। ७।१८।२४	२।२८।५७।३०	५।२९।१८।५७
	७	मं	४।२८।४०।५९	४। ६।५७।१४	५। ५।१३।३२	२। १।४९।३०	३।२५।४७।२७	६। २।२९।४६	९। ७।१५।१३	२।२८।५९।४५	५।२९।२०।५६
	८	बु	४।२९।३९।३०	४। ७।३५।१०	५। ६।५९।१३	२। १।५५। १	३।२६।५९।३५	६। २।३६।१४	९। ७।१२। ३	२।२९। १।५९	५।२९।२२।५५
	९	गु	५। ०।३८। ३	४। ८।१३। ७	५। ८।४३।५८	२। २। ०।२२	३।२८।११।४८	६। २।४२।४४	९। ७। ८।५२	२।२९। ४। ८	५।२९।२४।५६
	१०	शु	५। १।३६।३७	४। ८।५१। ३	५।१०।२७।४६	२। २। ५।३२	३।२९।२४। ५	६। २।४९।१७	९। ७। ५।४१	२।२९। ६।१५	५।२९।२६।५७
	११	श	५। २।३५।१३	४। ९।२८।५७	५।१२।१०।३६	२। २।१०।३२	४। ०।२६।२८	६। २।५५।५२	९। ७। २।३०	२।२९। ८।१९	५।२९।२९। ०
	१२	र	५। ३।३३।५२	४।१०। ६।४९	५।१३।५२।३०	२। २।१५।२३	४। १।४८।५६	६। ३। २।३०	९। ६।५९।२०	२।२९।१०।२०	५।२९।३१। ३
	१३	चं	५। ४।३२।३३	४।१०।४४।४०	५।१५।३३।२७	२। २।२०। ३	४। ३। १।२८	६। ३। ९।१०	९। ६।५६। ९	२।२९।१२।१७	५।२९।३३। ७
	१४	मं	५। ५।३१।१५	४।११।२२।२९	५।१७।१३।२६	२। २।२४।३४	४। ४।१४। ७	६। ३।१५।५३	९। ६।५२।५८	२।२९।१४।१३	५।२९।३५।११
	१५	बु	५। ६।२९।५९	४।१२। ०।१६	५।१८।५२।२७	२। २।२८।५५	४। ५।२६।५२	६। ३।२२।३८	९। ६।४९।४७	२।२९।१६। ५	५।२९।३७।१६
आश्विनकृष्णपक्षः।	१	गु	५। ७।२८।४५	४।१२।३८। २	५।२०।३०।३२	२। २।३३। ७	४। ६।३९।४०	६। ३।२९।२८	९। ६।४६।३६	२।२९।१७।५६	५।२९।३९।२२
	३	शु	५। ८।२७।३४	४।१३।१५।४६	५।२२। ७।१४	२। २।३७। ६	४। ७।५२।२९	६। ३।३६।१७	९। ६।४३।२५	२।२९।१९।४७	५।२९।४१।२८
	४	श	५। ९।२६।२४	४।१३।५३।२९	५।२३।४३।२३	२। २।४०।५२	४। ९। ५।२१	६। ३।४३। ६	९। ६।४०।१४	२।२९।२१।३५	५।२९।४३।२६
	५	र	५।१०।२५।१६	४।१४।३१।१०	५।२५।१८।५८	२। २।४४।२८	४।१०।१८।१७	६। ३।४९।५७	९। ६।३७। ३	२।२९।२३।१९	५।२९।४५।४४
	६	चं	५।११।२४।११	४।१५। ८।४९	५।२६।५४। ०	२। २।४७।५३	४।११।३१।१७	६। ३।५६।४८	९। ६।३३।५३	२।२९।२५। १	५।२९।४७।५२
	७	मं	५।१२।२३। ८	४।१५।४६।२७	५।२८।२८।२८	२। २।५१। ७	४।१२।४४।२०	६। ४। ३।४०	९। ६।३०।४२	२।२९।२६।४०	५।२९।५०। १
	८	बु	५।१३।२२। ६	४।१६।२४। ३	६। ०। २।२३	२। २।५४। ८	४।१३।५७।२७	६। ४।१०।३६	९। ६।२७।३१	२।२९।२८।१४	५।२९।५२।१०
	९	गु	५।१४।२१। ६	४।१७। १।३८	६। १।३५।४४	२। २।५६।५९	४।१५।१०।३८	६। ४।१७।३४	९। ६।२४।२०	२।२९।२९।४६	५।२९।५४।२०
	१०	शु	५।१५।२०। ९	४।१७।३९।११	६। ३। ८।३१	२। २।५९।३८	४।१६।२३।५३	६। ४।२४।३६	९। ६।२१। ९	२।२९।३१।१२	५।२९।५६।३१
	११	श	५।१६।१९।१४	४।१८।१६।५०	६। ४।३६।३९	२। ३। २। ६	४।१७।३७।११	६। ४।३१।३७	९। ६।१७।५८	२।२९।३२।३६	५।२९।५८।४२
	१२	र	५।१७।१८।२१	४।१८।५४।२९	६। ६। ४। ४	२। ३। ४।२२	४।१८।५०।३२	६। ४।३८।३९	९। ६।१४।४७	२।२९।३३।५७	६। ०। ०।५४
	१३	चं	५।१८।१७।३०	४।१९।३२। ८	६। ७।३०।४७	२। ३। ६।२८	४।२०। ३।५७	६। ४।४६।४३	९। ६।११।३६	२।२९।३५।१४	६। ०। ३। ६
	१४	मं	५।१९।१६।४१	४।२०। ९।४८	६। ८।५६।४६	२। ३। ८।२१	४।२१।१७।२७	६। ४।५२।५०	९। ६। ८।२६	२।२९।३६।२९	६। ०। ५।१८
	३०	बु	५।२०।१५।५४	४।२०।४७।२८	६।१०।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९। ६। ५।१५	२।२९।३७।३९	६। ०। ७।३१

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कितवयहर्गणः ६७६१ मासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
आश्विनशुक्लपक्षः ।	१	गु	५।२१।१५। ९	४।२१।२५। ७	६।११।४६।३८	२। ३।११।३४	४।२३।४४।३६	६। ५। ७। ७	९। ६। २। ४	२।२९।३८।४७	६। ०। ९।४४
	१	शु	५।२२।१४।२८	४।२२। २।४७	६।१३।१०।३१	२। ३।१२।५४	४।२४।५८।१६	६। ५।१४।१८	९। ५।५८।५३	२।२९।३९।५१	६। ०।११।५८
	२	श	५।२३।१३।४७	४।२२।४०।२६	६।१४।३३।४०	२। ३।१४। २	४।२६।१२। ०	६। ५।२१।३२	९। ५।५५।४३	२।२९।४०।५२	६। ०।१४।१३
	३	र	५।२४।१३। ७	४।२३।१८। ७	६।१५।५६। ६	२। ३।१५। २	४।२७।२५।३१	६। ५।२८।४३	९। ५।५२।३२	२।२९।४१।५०	६। ०।१६।२९
	४	चं	५।२५।१२।२९	४।२३।५५।४६	६।१७।१७। ७	२। ३।१५।४८	४।२८।३९। ७	६। ५।३५।५४	९। ५।४९।२१	२।२९।४२।४६	६। ०।१८।४४
	५	मं	५।२६।११।५३	४।२४।३३।२३	६।१८।३६।४४	२। ३।१६।२२	४।२९।५२।४७	६। ५।४३। ५	९। ५।४६।१०	२।२९।४३।४०	६। ०।२०।५९
	६	बु	५।२७।११।२१	४।२५।१०।५९	६।१९।५४।५८	२। ३।१६।४४	५। १। ६।३१	६। ५।५०।१७	९। ५।४२।५९	२।२९।४४।३१	६। ०।२३।१४
	७	गु	५।२८।१०।५०	४।२५।४८।३३	६।२१।११।४७	२। ३।१६।५३	५। २।२०।२०	६। ५।५७।२९	९। ५।३९।४८	२।२९।४५।२०	६। ०।२५।२९
	८	शु	५।२९।१०।२१	४।२६।२६। ४	६।२२।२७।१३	२। ३।१६।५०	५। ३।३४।१३	६। ६। ४।४२	९। ५।३६।३७	२।२९।४६। ६	६। ०।२७।४४
	९	श	६। ०। ९।५४	४।२७। ३।३४	६।२३।४१।१५	२। ३।१६।३५	५। ४।४८।१०	६। ६।११।५५	९। ५।३३।२६	२।२९।४६।५०	६। ०।२९।५९
	११	र	६। १। ९।३०	४।२७।४१। २	६।२४।५३।५३	२। ३।१६। ८	५। ६। २।१३	६। ६।१९। ८	९। ५।३०।१५	२।२९।४७।३१	६। ०।३२।१३
	१२	चं	६। २। ९। ८	४।२८।१८।२९	६।२६। ५।२३	२। ३।१५।२७	५। ७।१६।२१	६। ६।२६।२२	९। ५।२७। ४	२।२९।४८। ९	६। ०।३४।२८
	१३	मं	६। ३। ८।४८	४।२८।५५।५३	६।२७।१४।२७	२। ३।१४।[illegible]	५। ८।३०।३२	६। ६।३३।३५	९। ५।२३।५४	२।२९।४८।४६	६। ०।३६।४३
	१४	बु	६। ४। ८।३०	४।२९।३३।१६	६।२८।२१। १	२। ३।१३।३१	५। ९।४४।४७	६। ६।४०।५०	९। ५।२०।४३	२।२९।४९।२१	६। ०।३८।५८
	१५	गु	६। ५। ८।१५	५। ०।१०।३७	६।२९।२५।१२	२। ३।१२।१४	५।१०।५९। ७	६। ६।४८। ५	९। ५।१७।३२	२।२९।४९।५३	६। ०।४१।१२
कार्तिककृष्णपक्षः ।	१	शु	६। ६। ८। १	५। ०।४७।५६	७। ०।२६।५३	२। ३।१०।४५	५।१२।१३।३१	६। ६।५५।२१	९। ५।१४।२१	२।२९।५०।२३	६। ०।४३।२७
	२	श	६। ७। ७।५०	५। १।२५।१३	७। १।२६। ७	२। ३। ९। ३	५।१३।२८। ०	६। ७। २।३७	९। ५।११।१०	२।२९।५०।५३	६। ०।४५।४१
	३	र	६। ८। ७।४१	५। २। २।२८	७। २।२२।५३	२। ३। ७। ९	५।१४।४२।३१	६। ७। ९।५१	९। ५। ७।५९	२।२९।५१।२३	६। ०।४७।५६
	४	चं	६। ९। ७।३४	५। २।३९।४१	७। ३।१७।१३	२। ३। ५। २	५।१५।५७।११	६। ७।१७।१०	९। ५। ४।४८	२।२९।५१।३६	६। ०।५०।१०
	५	मं	६।१०। ७।२९	५। ३।१६।५९	७। ४। ९। ६	२। ३। २।४५	५।१७।११।४८	६। ७।२४।३२	९। ५। १।३८	२।२९।५१।४०	६। ०।५२।२५
	६	बु	६।११। ७।२४	५। ३।५४।१४	७। ४।५५।२०	२। ३। ०।१६	५।१८।२६।२६	६। ७।३१।४६	९। ४।५८।२७	२।२९।५१।४२	६। ०।५४।३९
	७	गु	६।१२। ७।२१	५। ४।३१।२९	७। ५।३५।५८	२। २।५७।३७	५।१९।४१। ९	६। ७।३९।००	९। ४।५५।१६	२।२९।५१।४२	६। ०।५६।५२
	८	शु	६।१३। ७।२०	५। ५। ८।४२	७। ६।१०।५९	२। २।५४।४६	५।२०।५५।४८	६। ७।४६।१८	९। ४।५२। ५	२।२९।५१।३७	६। ०।५९। ४
	९	श	६।१४। ७।२१	५। ५।४५।५५	७। ६।४०।२४	२। २।५१।४३	५।२२।१०।३२	६। ७।५३।३३	९। ४।४८।५४	२।२९।५१।३०	६। १। १।१६
	१०	र	६।१५। ७।२४	५। ६।२३। ६	७। ७। ४।१२	२। २।४८।३०	५।२३।२५।१६	६। ८। ०।४६	९। ४।४५।४३	२।२९।५१।२०	६। १। ३।२७
	११	चं	६।१६। ७।२९	५। ७। ०।१७	७। ७।२२।२४	२। २।४५। ५	५।२४।४०। २	६। ८। ७।५९	९। ४।४२।३२	२।२९।५१। ८	६। १। ५।३८
	१२	मं	६।१७। ७।३६	५। ७।३७।२६	७। ७।३४।५९	२। २।४१।२८	५।२५।५४।५०	६। ८।१५।११	९। ४।३९।२१	२।२९।५०।५३	६। १। ७।४८
	१३	बु	६।१८। ७।४५	५। ८।१४।३५	७। ७।३६।५२	२। २।३७।३९	५।२७। ९।४०	६। ८।२२।२०	९। ४।३६।११	२।२९।५०।३६	६। १। ९।५८
	१४	गु	६।१९। ७।५६	५। ८।५१।४२	७। ७।४०।५३	२। २।३३।४०	५।२८।२४।११	६। ८।२९।३१	९। ४।३३। ०	२।२९।५०।१५	६। १।१२। ८
	३०	शु	६।२०। ८। ९	५। ९।२८।४९	७। ७।४१। ४	२। २।२९।२९	५।२९।१९।२४	६। ८।३६।३८	९। ४।२९।४९	२।२९।४९।५२	६। १।१४।१७

श्री संवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

क्षितयहर्गणः ६७९१ मासारंभे ।

मासः	ति.	वाः	सूर्यः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
कार्तिकशुक्लपक्षः ।	१	श	६।२१। ८।२४	५।१०। ५।५६	७। ६।४७।२४	२। २।२५। ८	६। ०।५४।१८	६। ८।४३।४८	९। ४।२६।३८	२।२९।४९।२५	६। १।१६।२४
	२	र	६।२२। ८।४१	५।१०।४३। २	७। ६।१०।५४	२। २।२०।३४	६। २। ९।१४	६। ८।५०।५५	९। ४।२३।२७	२।२९।४८।५६	६। १।१८।३२
	३	चं	६।२३। ९। ०	५।११।२०। ६	७। ५।२४।३३	२। २।१५।५०	६। ३।२४।११	६। ८।५८। १	९। ४।२०।१६	२।२९।४८।२३	६। १।२०।३८
	४	मं	६।२४। ९।२१	५।११।५७।१०	७। ४।२८।२२	२। २।१०।५४	६। ४।३९।१०	६। ९। ५। ७	९। ४।१७। ५	२।२९।४७।४८	६। १।२२।४४
	५	बु	६।२५। ९।४४	५।१२।३४।१२	७। ३।२२।१९	२। २। ५।४६	६। ५।५४।११	६। ९।१२।११	९। ४।१३।५४	२।२९।४७।१०	६। १।२४।५०
	६	गु	६।२६।१०। ८	५।१३।११।१९	७। २। ५।१४	२। २। ०।३०	६। ७। ९।१५	६। ९।१९।११	९। ४।१०।४३	२।२९।४६।२१	६। १।२६।५६
	७	शु	६।२७।१०।३२	५।१३।४८।२४	७। ०।४९।४६	२। १।५५। ६	६। ८।२४।१८	६। ९।२६।२२	९। ४। ७।३२	२।२९।४५।३०	६। १।२९। ०
	८	श	६।२८।१०।५८	५।१४।२५।२७	६।२९।३५।५६	२। १।४९।३४	६। ९।३९।२३	६। ९।३३।१९	९। ४। ४।२१	२।२९।४४।३७	६। १।३१। ३
	९	र	६।२९।११।२६	५।१५। २।३०	६।२८।२३।४२	२। १।४३।५२	६।१०।५४।२८	६। ९।४०।२६	९। ४। १।१०	२।२९।४३।४२	६। १।३३। ६
	१०	चं	७। ०।११।५५	५।१५।३९।३१	६।२७।१३। ४	२। १।३८। २	६।१२। ९।३६	६। ९।४७।२५	९। ३।५८। ०	२।२९।४२।४४	६। १।३५। ८
	११	मं	७। १।१२।२६	५।१६।१६।३२	६।२६। ४। ४	२। १।३२। २	६।१३।२४।४४	६। ९।५४।२२	९। ३।५४।४९	२।२९।४१।४४	६। १।३७। ८
	१२	बु	७। २।१२।५९	५।१६।५३।३१	६।२४।५६।४०	२। १।२५।५४	६।१४।३९।५४	६।१०। १।१७	९। ३।५१।३८	२।२९।४०।४२	६। १।३९। ८
	१३	गु	७। ३।१३।३४	५।१७।३०।२९	६।२३।५०।५३	२। १।१९।३७	६।१५।५५। ५	६।१०। ८।१०	९। ३।४८।२७	२।२९।३९।३६	६। १।४१। ६
	१४	शु	७। ४।१४।१०	५।१८। ७।२५	६।२२।५८।१३	२। १।१३। ९	६।१७।१०।१८	६।१०।१५। २	९। ३।४५।१६	२।२९।३८।२८	६। १।४३। ३
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः ।	१	श	७। ५।१४।४७	५।१८।४४।२१	६।२२।१६।३४	२। १। ६।३२	६।१८।२५।३२	६।१०।२२।५१	९। ३।४२। ६	२।२९।३७।१९	६। १।४५। ०
	२	र	७। ६।१५।२६	५।१९।२१।१५	६।२१।४५।५५	२। ०।५९।४७	६।१९।४०।४८	६।१०।२८।३८	९। ३।३८।५५	२।२९।३६। ८	६। १।४६।५६
	३	चं	७। ७।१६। ६	५।१९।५८। ८	६।२१।२६।१७	२। ०।५२।५२	६।२०।५६। ४	६।१०।३५।२४	९। ३।३५।४४	२।२९।३४।५४	६। १।४८।५०
	४	मं	७। ८।१६।४८	५।२०।३४।५९	६।२१।१७।५३	२। ०।४५।४८	६।२२।११।२३	६।१०।४२। ८	९। ३।३२।३३	२।२९।३३।३८	६। १।५०।४३
	५	बु	७। ९।१७।३१	५।२१।११।४९	६।२१।२१।००	२। ०।३८।३६	६।२३।२६।४२	६।१०।४८।४९	९। ३।२९।२२	२।२९।३२।१९	६। १।५२।३६
	६	गु	७।१०।१८।१६	५।२१।४८।३७	६।२१।३४।३७	२। ०।३१।१६	६।२४।४२। ३	६।१०।५५।२८	९। ३।२६।११	२।२९।३०।५८	६। १।५४।२९
	७	शु	७।११।१९। ३	५।२२।२५।२६	६।२२। १।४४	२। ०।२३।४६	६।२५।५७।२५	६।११। २। ६	९। ३।२३। १	२।२९।२९।३५	६। १।५६।२०
	८	श	७।१२।१९।५१	५।२३। २।१४	६।२२।३८। ०	२। ०।१६।१६	६।२७।१३।५२	६।११। ८।४४	९। ३।१९।५०	२।२९।२८। ३	६। १।५८। ९
	९	र	७।१३।२०।४१	५।२३।३८।५९	६।२३।१९।५०	२। ०। ८।४४	६।२८।२८।१९	६।११।१५।१८	९। ३।१६।३९	२।२९।२६।२८	६। १।५९।५७
	१०	चं	७।१४।२१।३१	५।२४।१५।४४	६।२४। ७।१४	२। ०। १। ८	६।२९।४३।४६	६।११।२१।४८	९। ३।१३।२८	२।२९।२४।५१	६। २। १।४३
	१०	मं	७।१५।२२।२२	५।२४।५२।२८	६।२५। ०।११	१।२९।५३।२८	७। ०।५९।१४	६।११।२८।१६	९। ३।१०।१७	२।२९।२३।१२	६। २। ३।२९
	११	बु	७।१६।२३।१४	५।२५।२९।१२	६।२५।५८।१८	१।२९।४५।४५	७। २।१४।४१	६।११।३४।४०	९। ३। ७। ६	२।२९।२१।३०	६। २। ५।१२
	१२	गु	७।१७।२४। ७	५।२६। ५।५५	६।२७। १।४२	१।२९।३८। ०	७। ३।३०। ९	६।११।४१। २	९। ३। ३।५५	२।२९।१९।४६	६। २। ६।५५
	१३	शु	७।१८।२५। १	५।२६।४२।३८	६।२८।१०।२४	१।२९।३०।११	७। ४।४५।३७	६।११।४७।२०	९। ३। ०।४४	२।२९।१८। ०	६। २। ८।३६
	१४	श	७।१९।२५।५६	५।२७।१९।१९	६।२९।२४।२२	१।२९।२२।१९	७। ६। १। ५	६।११।५३।३५	९। २।५७।३३	२।२९।१६।१२	६। २।१०।१६
	३०	र	७।२०।२६।५१	५।२७।५६। १	७। ०।[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	९। २।५४।२२	२।२९।१४।२०	६। २।११।५४

श्री संवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कितवयहर्गणः ६८२१ मासारंभे ।

मासः	ति.	वा:	सूर्यः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः ।	१	चं	७।२१।२७।४८	५।२८।३२।४१	७। १।५७।२४	१।२९। ६।२७	७। ८।३२। २	६।१२। ५।५५	९। २।५१।११	२।२९।१२।२७	६। २।१३।३१
	२	मं	७।२२।२८।४५	५।२९। ९।२१	७। ३।१५।५२	१।२८।५८।२५	७। ९।४७।३१	६।१२।१२। ०	९। २।४८। १	२।२९।१०।३२	६। २।१५। ६
	३	बु	७।२३।२९।४४	५।२९।४६। ०	७। ४।३५।३८	१।२८।५०।२०	७।११। ३।००	६।१२।१८। २	९। २।४४।५०	२।२९। ८।३४	६। २।१६।४१
	४	गु	७।२४।३०।४३	६। ०।२२।३९	७। ५।४६।४३	१।२८।४२।१२	७।१२।१८।२८	६।१२।२४। ०	९। २।४१।३९	२।२९। ६।३४	६। २।१८।१३
	५	शु	७।२५।३१।४३	६। ०।५९।१७	७। ७।१९। ६	१।२८।३४। १	७।१३।३३।५८	६।१२।२९।५७	९। २।३८।२८	२।२९। ४।३१	६। २।१९।४५
	६	श	७।२६।३२।४५	६। १।३५।५५	७। ८।५२।४७	१।२८।२५।४६	७।१४।४९।२८	६।१२।३५।४९	९। २।३५।१७	२।२९। २।२६	६। २।२१।१५
	७	र	७।२७।३३।४८	६। २।१२।३२	७।१०। ७।४८	१।२८।१७।२८	७।१६। ४।५९	६।१२।४१।३८	९। २।३२। ६	२।२९। ०।१८	६। २।२२।४४
	८	चं	७।२८।३४।५१	६। २।४८।५३	७।११।३५।५१	१।२८। ९।१०	७।१७।२०।३६	६।१२।४७।२९	९। २।२८।५५	२।२८।५८।१४	६। २।२४।११
	१०	मं	७।२९।३५।५६	६। ३।२५।११	७।१३। ४।१३	१।२८। ०।५६	७।१८।३६।१२	६।१२।५३।१५	९। २।२५।४५	२।२८।५६। ८	६। २।२५।३५
	११	बु	८। ०।३७। २	६। ४। १।२७	७।१४।३२।५३	१।२७।५२।४४	७।१९।५१।४८	६।१२।५८।५७	९। २।२२।३४	२।२८।५४। ०	६। २।२६।५७
	१२	गु	८। १।३८। ८	६। ४।३७।४०	७।१६। १।५२	१।२७।४४।३५	७।२१। ७।२४	६।१३। ४।३५	९। २।१९।२३	२।२८।५१।४६	६। २।२८।१८
	१३	शु	८। २।३९।१५	६। ५।१३।५२	७।१७।३१।१०	१।२७।३६।२८	७।२२।२३। १	६।१३।१०। ९	९। २।१६।१२	२।२८।४९।३३	६। २।२९।३७
	१४	श	८। ३।४०।२२	६। ५।५०। १	७।१९। ०।४७	१।२७।२८।२६	७।२३।३८।३६	६।१३।१५।३९	९। २।१३। १	२।२८।४७।२०	६। २।३०।५५
	१५	र	८। ४।४१।३०	६। ६।२६। ८	७।२०।३०।४२	१।२७।२०।२६	७।२४।५४।११	६।१३।२१। ५	९। २। ९।५०	२।२८।४५। ५	६। २।३२।११
पौषकृष्णपक्षः ।	१	चं	८। ५।४२।३९	६। ७। २।१३	७।२२। ०।५८	१।२७।१२।२९	७।२६। ९।४६	६।१३।२६।२८	९। २। ६।३९	२।२८।४२।५०	६। २।३३।२५
	२	मं	८। ६।४३।४९	६। ७।३८।१६	७।२३।३१।४०	१।२७। ४।३४	७।२७।२५।२२	६।१३।३१।४७	९। २। ३।२८	२।२८।४०।३५	६। २।३४।३८
	३	बु	८। ७।४४।५९	६। ८।१४।१६	७।२५। २।४२	१।२६।५६।४४	७।२८।४०।५७	६।१३।३७। १	९। २। ०।१७	२।२८।३८। ९	६। २।३५।४९
	४	गु	८। ८।४६। ९	६। ८।५०।१४	७।२६।३४। ०	१।२६।४८।५६	७।२९।५६।३२	६।१३।४२।११	९। १।५७। ७	२।२८।३५।४६	६। २।३६।५८
	५	शु	८। ९।४७।१८	६। ९।२६।१०	७।२८। ५।३८	१।२६।४१।११	८। १।१२। ६	६।१३।४७।१७	९। १।५३।५६	२।२८।३३।२२	६। २।३८। ६
	६	श	८।१०।४८।२८	६।१०। २। ४	७।२९।३७।३३	१।२६।३३।२८	८। २।२७।४१	६।१३।५२।१९	९। १।५०।४५	२।२८।३०।५५	६। २।३९।१३
	७	र	८।११।४९।३७	६।१०।३७।५६	८। १। ९।४६	१।२६।२५।५०	८। ३।४३।१५	६।१३।५७।१७	९। १।४७।३४	२।२८।२८।२७	६। २।४०।१७
	८	चं	८।१२।५०।४६	६।११।१३।४६	८। २।४२।१७	१।२६।१८।१४	८। ४।५८।४९	६।१४। २।११	९। १।४४।२३	२।२८।२५।५७	६। २।४१।२०
	९	मं	८।१३।५१।५६	६।११।४९।३४	८। ४।१५। ७	१।२६।१०।४१	८। ६।१४।२४	६।१४। ७। १	९। १।४१।१३	२।२८।२३।२४	६। २।४२।२२
	१०	बु	८।१४।५३। ८	६।१२।२५।२१	८। ५।४८।३९	१।२६। ३।२३	८। ७।२९।५९	६।१४।११।४३	९। १।३८। २	२।२८।२०।५१	६। २।४३।२०
	११	गु	८।१५।५४।१८	६।१३। १।२१	८। ७।२२।२७	१।२५।५६।११	८। ८।४५।३४	६।१४।१६।२१	९। १।३४।५१	२।२८।१८।१७	६। २।४४।१५
	१२	शु	८।१६।५५।२८	६।१३।३७।११	८। ८।५६।२९	१।२५।४९। ५	८।१०। १। ९	६।१४।२०।५३	९। १।३१।४०	२।२८।१५।४१	६। २।४५। ८
	१३	श	८।१७।५६।३८	६।१४।१२।५९	८।१०।३०।४७	१।२५।४२। ५	८।११।१६।४२	६।१४।२५।२१	९। १।२८।२९	२।२८।१३। ९	६। २।४६। ०
	१३	र	८।१८।५७।४८	६।१४।४८।४४	८।१२। ५।२०	१।२५।३५।११	८।१२।३२।१५	६।१४।२९।४४	९। १।२५।१९	२।२८।१०।३४	६। २।४६।४९
	१४	चं	८।१९।५८।५८	६।१५।२४।२७	८।१३।४०। ७	१।२५।२८।२३	८।१३।४७।४८	६।१४।३४। ३	९। १।२२। ८	२।२८। ७।५९	६। २।४७।३७
	३०	मं	८।२१। ०। ८	६।१६। ०। ८	८।१५।१५।१०	१।२५।२१।४१	८।१५। ३।२१	६।१४।३८।१६	९। १।१८।५७	२।२८। ५।२४	६। २।४८।२१

१३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शहर) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कृतक्यहर्गणः १८५१ बाधारंभे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	हर्षलः	वरुणः
पौषशुक्लपक्षः ।	१	बु	८।२२। १।१८	६।१६।३५।४६	८।१६।५०।२८	१।२५।१५। ४	८।१६।१८।५४	६।१४।४२।२५	९। १।१५।४६	२।२८। २।४९	६। २।४९। ८
	३	गु	८।२३। २।२८	६।१७।११।२२	८।१८।२४।१३	१।२५। ८।४२	८।१७।२४।२६	६।१४।४६।१०	९। १।१२।३६	२।२८। ०।१२	६। २।४९।५०
	४	शु	८।२४। ३।३७	६।१७।४६।५५	८।१९।५८।५८	१।२५। २।२८	८।१८।४९।५७	६।१४।५०।३०	९। १। ९।२५	२।२७।५७।३६	६। २।५०।३०
	५	श	८।२५। ४।४६	६।१८।२२।२६	८।२१।३४।४१	१।२४।५६।२२	८।२०। ५।२८	६।१४।५४।२४	९। १। ६।१४	२।२७।५५। ०	६। २।५१। ८
	६	र	८।२६। ५।५४	६।१८।५७।५५	८।२३।११।२४	१।२४।५०।२४	८।२१।२०।५८	६।१४।५८।१५	९। १। ३। ३	२।२७।५२।२३	६। २।५१।४४
	७	चं	८।२७। ७। १	६।१९।३३।२१	८।२४।४९। ४	१।२४।४४।३४	८।२२।३६।२८	६।१५। २। ०	९। ०।५९।५२	२।२७।४९।४५	६। २।५२।१८
	८	मं	८।२८। ८।११	६।२०। ८।४५	८।२६।२७।४४	१।२४।३८।५२	८।२३।५१।५७	६।१५। ५।४२	९। ०।५६।४२	२।२७।४७। ८	६। २।५२।५०
	९	बु	८।२९। ९।१९	६।२०।४४। ७	८।२८। ८।२२	१।२४।३३।१८	८।२५। ७।२६	६।१५। ९।१८	९। ०।५३।३१	२।२७।४४।३१	६। २।५३।१९
	१०	गु	९। ०।१०।२७	६।२१।१९।२६	८।२९।४८। ०	१।२४।२७।५०	८।२६।२२।५५	६।१५।१२।५०	९। ०।५०।२०	२।२७।४१।५३	६। २।५३।४९
	११	शु	९। १।११।३५	६।२१।५४।३९	९। १।२७। २	१।२४।२२।२८	८।२७।३८।२८	६।१५।१६। ६	९। ०।४७। ९	२।२७।३९।१४	६। २।५४।१६
	१२	श	९। २।१२।४२	६।२२।२९।४८	९। ३। ६।३३	१।२४।१७।३७	८।२८।५३।५८	६।१५।१९।३५	९। ०।४३।५८	२।२७।३६।३५	६। २।५४।४१
	१३	र	९। ३।१३।४९	६।२३। ४।५५	९। ४।४६।३२	१।२४।१२।४६	९। ०। ९।२८	६।१५।२२।४८	९। ०।४०।४८	२।२७।३३।५६	६। २।५५। ४
	१४	चं	९। ४।१४।५४	६।२३।४०।००	९। ६।२७। ०	१।२४। ८। ७	९। १।२४।५७	६।१५।२५।५४	९। ०।३७।३७	२।२७।३१।१७	६। २।५५।२४
	१५	मं	९। ५।१५।५९	६।२४।१५। २	९। ८। ७।५७	१।२४। ३।३८	९। २।४०।२६	६।१५।२८।५५	९। ०।३४।२६	२।२७।२८।३९	६। २।५५।४१
माघकृष्णपक्षः ।	१	बु	९। ६।१७। २	६।२४।५०। ०	९। ९।४९।२३	१।२३।५९।२१	९। ३।५५।५२	६।१५।३१।४९	९। ०।३१।१५	२।२७।२६। १	६। २।५५।५९
	२	गु	९। ७।१८। ५	६।२५।२४।५६	९।११।३१।१८	१।२३।५५।१४	९। ५।११।१८	६।१५।३४।३०	९। ०।२८। ४	२।२७।२३।२१	६। २।५६।१३
	३	शु	९। ८।१९। ८	६।२५।५९।४९	९।१३।१३।४१	१।२३।५१।१८	९। ६।२६।४२	६।१५।३७।१९	९। ०।२४।५४	२।२७।२०।४६	६। २।५६।२४
	४	श	९। ९।२०।१०	६।२६।३४।३९	९।१४।५५।२६	१।२३।४७।३२	९। ७।४२। ६	६।१५।३९।५५	९। ०।२१।४३	२।२७।१८। ९	६। २।५६।३४
	५	र	९।१०।२१।११	६।२७। ९।२६	९।१६।३८।१९	१।२३।४३।५८	९। ८।५७।२८	६।१५।४२।२५	९। ०।१८।३२	२।२७।१५।३१	६। २।५६।४१
	६	चं	९।११।२२।१०	६।२७।४४।११	९।१८।२२।२२	१।२३।४०।३४	९।१०।१२।५०	६।१५।४४।४९	९। ०।१५।२२	२।२७।१२।५७	६। २।५६।४६
	७	मं	९।१२।२३। ८	६।२८।१८।५२	९।२०। ७।३६	१।२३।३७।२१	९।११।२८। ९	६।१५।४७। ६	९। ०।१२।११	२।२७।१०।२१	६। २।५६।४८
	८	बु	९।१३।२४। ६	६।२८।५३।५२	९।२१।५३।५९	१।२३।३४।१९	९।१२।४३।२८	६।१५।४९।१८	९। ०। ९। ०	२।२७। ७।४६	६। २।५६।४८
	९	गु	९।१४।२५। २	६।२९।२८। ८	९।२३।४१।४१	१।२३।३१।२८	९।१३।५८।४६	६।१५।५१।२३	९। ०। ५।४९	२।२७। ५।११	६। २।५६।४७
	१०	शु	९।१५।२५।५८	७। ०। ३।४२	९।२५।३०।३९	१।२३।२८।४७	९।१५।१४। ४	६।१५।५३।२२	९। ०। २।३९	२।२७। २।३६	६। २।५६।४४
	११	श	९।१६।२६।५४	७। ०।३७।१२	९।२७।२०।५३	१।२३।२६।१७	९।१६।२९।२०	६।१५।५५।१६	८।२९।५९।२८	२।२७। ०। ०	६। २।५६।३८
	१२	र	९।१७।२७।४८	७। १।११।३९	९।२९।११।२१	१।२३।२४। ४	९।१७।४४।३९	६।१५।५७। ९	८।२९।५६।१८	२।२६।५७।२४	६। २।५६।३२
	१३	चं	९।१८।२८।४१	७। १।४६। ५	१०। १। १।१७	१।२३।२२। ४	९।१८।५९।५५	६।१५।५८।५५	८।२९।५३। ७	२।२६।५४।२८	६। २।५६।२४
	१४	मं	९।१९।२९।३२	७। २।२०।३०	१०। २।५२।४१	१।२३।२०।१६	९।२०।१५।११	६।१६। ०।३५	८।२९।४९।५६	२।२६।५२।१५	६। २।५६।१४
	३०	बु	९।२०।३०।२२	७। २।५४।४९	१०। ४।[illegible]	१।२३।१८।४०	९।२१।३०।२६	६।१६। २। ८	८।२९।४६।४५	२।२६।४९। २	६। २।५६। २

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयकाले दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः।

कैतवयहर्गणः ६८८० मासारम्भे ।

मासः	ति.	वा.	सूर्य	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	वरुण	इन्द्र
माघशुक्लपक्षः ।	१	गु	९।२१।३१।१२	७। ३।२९। ६	१०। ५।४१।१५	१।२३।१७।१६	९।२२।४५।४०	६।१६। ३।३८	८।२९।४३।३५	२।२६।४८।५१	६। २।५५।४६
	२	शु	९।२२।३१।५९	७। ४। ३। ४	१०। ७।२०।४५	१।२३।१६। ४	९।२४। ०।५३	६।१६। ४।५५	८।२९।४०।२४	२।२६।४६।४०	६। २।५५।३०
	३	श	९।२३।३२।४५	७। ४।३६।५४	१०। ९। ०। ३	१।२३।१५। ४	९।२५।१६। ६	६।१६। ६। ६	८।२९।३७।१३	२।२६।४४।३१	६। २।५५।१३
	४	र	९।२४।३३। १	७। ५।१०।१७	१०।१०।३९।११	१।२३।१४।१७	९।२६।३१।१९	६।१६। ७।१६	८।२९।३४। ३	२।२६।४२।२२	६। २।५४।५४
	५	चं	९।२५।३४।१८	७। ५।४४।१२	१०।१२।१५। २	१।२३।१३।४१	९।२७।४६।३१	६।१६। ८।१२	८।२९।३०।५२	२।२६।४०।१४	६। २।५४।३२
	६	मं	९।२६।३५। २	७। ६।१७।३८	१०।१३।४५। ७	१।२३।१३।१८	९।२९। १।४१	६।१६। ९।१२	८।२९।२७।४१	२।२६।३८। ७	६। २।५४। ८
	८	बु	९।२७।३५।४४	७। ६।५०।५६	१०।१५। ९।२४	१।२३।१३। ७	१०। ०।१६।५१	६।१६।१०। ०	८।२९।२४।३१	२।२६।३६। २	६। २।५३।४२
	९	गु	९।२८।३६।२२	७। ७।२४। ७	१०।१६।२७।५४	१।२३।१३। ८	१०। १।३१।५८	६।१६।१०।४२	८।२९।२१।२०	२।२६।३३।५८	६। २।५३।१४
	१०	शु	९।२९।३७। १	७। ७।५७।१०	१०।१७।४०।४४	१।२३।१३।२१	१०। २।४७। ५	६।१६।११।१८	८।२९।१८।१०	२।२६।३१।५५	६। २।५२।४४
	११	श	१०। ०।३७।३९	७। ८।३०। ४	१०।१८।४७।११	१।२३।१३।४६	१०। ४। २।११	६।१६।११।४६	८।२९।१४।५९	२।२६।२९।५३	६। २।५२।१२
	१२	र	१०। १।३८।१७	७। ९। २।५०	१०।१९।४८।४८	१।२३।१४।२३	१०। ५।१७।१७	६।१६।१२। ७	८।२९।११।४८	२।२६।२७।५३	६। २।५१।३८
	१३	चं	१०। २।३८।५३	७। ९।३५।२८	१०।२०।४३।५९	१।२३।१५।१४	१०। ६।३२।२४	६।१६।१२।२५	८।२९। ८।३८	२।२६।२५।५२	६। २।५१। ०
	१४	मं	१०। ३।३९।२६	७।१०। ८।२२	१०।२१।२८।१७	१।२३।१६।१६	१०। ७।४७।२८	६।१६।१२।३१	८।२९। ५।२७	२।२६।२३।५१	६। २।५०।२०
	१५	बु	१०। ४।३९।५८	७।१०।४१।१०	१०।२२। ३। ७	१।२३।१७।३३	१०। ९। २।३१	६।१६।१२।३६	८।२९। २।१७	२।२६।२१।५३	६। २।४९।४०
फाल्गुनकृष्णपक्षः ।	१	गु	१०। ५।४०।२८	७।११।१३।५२	१०।२२।२८।३१	१।२३।१९।००	१०।१०।१७।३२	६।१६।१२।३२	८।२८।५९। ६	२।२६।१९।५९	६। २।४८।५८
	२	शु	१०। ६।४०।५६	७।११।४६।२९	१०।२२।४४।२८	१।२३।२०।३८	१०।११।३२।३३	६।१६।१२।३३	८।२८।५५।५५	२।२६।१८। ७	६। २।४८।१४
	३	श	१०। ७।४१।२३	७।१२।१९। ०	१०।२२।५०।५५	१।२३।२२।२८	१०।१२।४७।३२	६।१६।१२। ७	८।२८।५२।४५	२।२६।१६।१९	६। २।४७।२७
	४	र	१०। ८।४१।४८	७।१२।५१।२६	१०।२२।४८। १	१।२३।२४।२९	१०।१४। २।३१	६।१६।११।४६	८।२८।४९।३४	२।२६।१४।३३	६। २।४६।४०
	५	चं	१०। ९।४२।११	७।१३।२३।४६	१०।२२।३५।४१	१।२३।२६।४२	१०।१५।१७।२८	६।१६।११।१८	८।२८।४६।२४	२।२६।१२।५१	६। २।४५।५१
	५	मं	१०।१०।४२।३२	७।१३।५६। २	१०।२२।१३।४८	१।२३।२९। ६	१०।१६।३२।२४	६।१६।१०।४४	८।२८।४३।१३	२।२६।११।१०	६। २।४५। ०
	६	बु	१०।११।४२।५१	७।१४।२८।१२	१०।२१।४०। ५	१।२३।३१।४२	१०।१७।४७।१९	६।१६।१०। ४	८।२८।४०। ३	२।२६। ९।३४	६। २।४४। ७
	७	गु	१०।१२।४३।११	७।१५। ०।१६	१०।२१। ३।२७	१।२३।३४।२९	१०।१९। २।१२	६।१६। ९।१८	८।२८।३६।५२	२।२६। ८। ०	६। २।४३।१३
	८	शु	१०।१३।४३।२७	७।१५।३२।१४	१०।२०।१३।५५	१।२३।३७।२८	१०।२०।१७। ५	६।१६। ८।२६	८।२८।३३।४१	२।२६। ६।३०	६। २।४२।१७
	९	श	१०।१४।४३।४२	७।१६। ४। ७	१०।१९।२९।२४	१।२३।४०।३८	१०।२१।३२।५७	६।१६। ७।२९	८।२८।३०।३१	२।२६। ५। १	६। २।४१।२०
	१०	र	१०।१५।४३।५५	७।१६।३५।५४	१०।१८।३५।५८	१।२३।४४।००	१०।२२।४६।४८	६।१६। ६।२६	८।२८।२७।२०	२।२६। ३।३७	६। २।४०।२०
	११	चं	१०।१६।४४। ७	७।१७। ७।३६	१०।१७।३७।३७	१।२३।४७।३३	१०।२४। १।३७	६।१६। ५।१६	८।२८।२४। ९	२।२६। २।१४	६। २।३९।१९
	१२	मं	१०।१७।४४।१७	७।१७।३९।१२	१०।१६।३४।२०	१।२३।५१।१८	१०।२५।१६।२६	६।१६। ४। ०	८।२८।२०।५८	२।२६। ०।५५	६। २।३८।१६
	१३	बु	१०।१८।४४।२५	७।१८।१०।४४	१०।१५।२९। ६	१।२३।५५।१६	१०।२६।३१।१२	६।१६। २।३८	८।२८।१७।४७	२।२५।५९।३८	६। २।३७।१२
	१४	गु	१०।१९।४४।३१	७।१८।४१।५८	१०।१४।२०।५०	१।२३।५९।२१	१०।२७।४५।५७	६।१६। १। ९	८।२८।१४।३६	२।२५।५८।२०	६। २।३६। ७
	३०	शु	१०।२०।४४।३४	७।१९।१३। ३	१०।१३।२१। २	१।२४। ३।३७	१०।२९। ०।४०	६।१५।५९।३९	८।२८।११।२६	२।२५।५७। ५	६। २।३५। १

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

कैतव्यहर्गणः ६९१० वासारंभे

मासः	ति.	वा.	सूर्यः	भौमः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	वरुणः	इन्द्रः
फाल्गुनशुक्लपक्षः ।	२	श	१०।२१।४४।३५	७।१९।४३।५८	१०।१२।२६।४४	१।२४। ८। ३	११। ०।१५।२१	६।१५।५७।५३	८।२८। ८।१५	२।२५।५५।५४	६। २।३३।५४
	३	र	१०।२२।४४।३६	७।२०।१४।४४	१०।११।३७।५५	१।२४।१२।३९	११। १।३०। ४	६।१५।५६। ७	८।२८। ५। ५	२।२५।५४।४६	६। २।३२।४६
	४	चं	१०।२३।४४।३४	७।२०।४५।२१	१०।१०।५४।३५	१।२४।१७।२६	११। २।४४।४४	६।१५।५४।१६	८।२८। १।५४	२।२५।५३।४०	६। २।३१।३६
	५	मं	१०।२४।४४।३०	७।२१।१५।४९	१०।१०।१६।४३	१।२४।२२।२३	११। ३।५९।२४	६।१५।५२।१९	८।२७।५८।४४	२।२५।५२।३९	६। २।३०।२५
	६	बु	१०।२५।४४।२५	७।२१।४६। ७	१०। ९।४४।१८	१।४२।२७।११	११। ५।१४। ३	६।१५।५०।१७	८।२७।५५।३३	२।२५।५१।४१	६। २।२९।१२
	७	गु	१०।२६।४४।१८	७।२२।१६।१६	१०। ९।१७।२४	१।२४।३२।४९	११। ६।२८।४१	६।१५।४८।११	८।२७।५२।२२	२।२५।५०।४६	६। २।२७।५८
	८	शु	१०।२७।४४। ९	७।२२।४६।१७	१०। ८।५९।३४	१।२४।३८।१७	११। ७।४३।१८	६।१५।४५।५९	८।२७।४९।१२	२।२५।४९।५१	६। २।२६।४२
	९	श	१०।२८।४३।५८	७।२३।१६। ८	१०। ८।४७।२९	१।२४।४३।५६	११। ८।५७।५४	६।१५।४३।४१	८।२७।४६। १	२।२५।४९। ४	६। २।२५।२५
	१०	र	१०।२९।४३।४६	७।२३।४५।४९	१०। ८।४१।१०	१।२४।४९।४५	११।१०।१२।२९	६।१५।४१।१८	८।२७।४२।५०	२।२५।४८।१९	६। २।२४। ६
	११	चं	११। ०।४३।३२	७।२४।१५।२२	१०। ८।४०।३७	१।२४।५५।४५	११।११।२७। ४	६।१५।३८।५१	८।२७।३९।४०	२।२५।४७।३६	६। २।२२।४६
	१२	मं	११। १।४३।१६	७।२४।४४।४६	१०। ८।४५।४९	१।२५। १।५५	११।१२।४१।३८	६।१५।३६।१८	८।२७।३६।२९	२।२५।४६।५६	६। २।२१।२४
	१३	बु	११। २।४२।५८	७।२५।१४। ०	१०। ८।५६।४७	१।२५। ८।१६	११।१३।५६।१०	६।१५।३३।३९	८।२७।३३।१९	२।२५।४६।२०	६। २।२०। १
	१४	गु	११। ३।४२।३८	७।२५।४३। ४	१०। ९।१३।११	१।२५।१४।४७	११।१५।१०।४१	६।१५।३०।५४	८।२७।३०। ८	२।२५।४५।४७	६। २।१८।३६
	१५	शु	११। ४।४२।१७	७।२६।१२। ०	१०। ९।३६।००	१।२५।२१।२९	११।१६।२५।१२	६।१५।२८। ५	८।२७।२६।५७	२।२५।४५।१८	६। २।१७।१०
चैत्रकृष्णपक्षः ।	१	श	११। ५।४१।५१	७।२६।४०।१७	१०।१०। २।५४	१।२५।२८।११	११।१७।३९।३४	६।१५।२५।११	८।२७।२३।४६	२।२५।४४।४९	६। २।१५।४४
	२	र	११। ६।४१।२३	७।२७। ९। १	१०।१०।३३।३०	१।२५।३५। ६	११।१८।५३।५४	६।१५।२२।१३	८।२७।२०।३६	२।२५।४४।२२	६। २।१४।१७
	३	चं	११। ७।४०।५३	७।२७।३७।११	१०।११। ७।५०	१।२५।४२। ७	११।२०। ८।१४	६।१५।१९।११	८।२७।१७।२५	२।२५।४३।५९	६। २।१२।५०
	४	मं	११। ८।४०।२१	७।२८। ५। ९	१०।११।४५।५४	१।२५।४९।१६	११।२१।२२।३३	६।१५।१६। ५	८।२७।१४।१४	२।२५।४३।४२	६। २।११।२२
	५	बु	११। ९।३९।४६	७।२८।३२।५४	१०।१२।२७।४१	१।२५।५६।३४	११।२२।३६।५२	६।१५।१२।५४	८।२७।११। ४	२।२५।४३।२८	६। २। ९।५४
	६	गु	११।१०।३९। ९	७।२९। ०।२५	१०।१३।१३।१२	१।२६। ४। ०	११।२३।५१।१०	६।१५। ९।३९	८।२७। ७।५३	२।२५।४३।१८	६। २। ८।२५
	७	शु	११।११।३८।२९	७।२९।२७।४२	१०।१४। २।२७	१।२६।११।३५	११।२५। ५।२७	६।१५। ६।२०	८।२७। ४।४२	२।२५।४३।१२	६। २। ६।५५
	८	श	११।१२।३७।४८	७।२९।५४।४७	१०।१४।५५।२६	१।२६।१९।१९	११।२६।१९।४४	६।१५। २।५६	८।२७। १।३२	२।२५।४३। ८	६। २। ५।२४
	९	र	११।१३।३७। ६	८। ०।२१।३९	१०।१५।५१। ९	१।२६।२७।११	११।२७।३३।५९	६।१४।५९।२८	८।२६।५८।२१	२।२५।४३। ९	६। २। ३।५३
	१०	चं	११।१४।३६।२२	८। ०।४८।१७	१०।१६।४९।२१	१।२६।३५।१२	११।२८।४८।१३	६।१४।५५।५६	८।२६।५५।११	२।२५।४३।१४	६। २। २।२१
	११	मं	११।१५।३५।३६	८। १।१४।४१	१०।१७।५०। १	१।२६।४३।२१	०। ०। २।२७	६।१४।५२।२०	८।२६।५२। १	२।२५।४३।२३	६। २। ०।४८
	१२	बु	११।१६।३४।४९	८। १।४०।५१	१०।१८।५३।१०	१।२६।५१।३८	०। १।१६।४०	६।१४।४८।३९	८।२६।४८।५०	२।२५।४३।३६	६। १।५९।१४
	१३	गु	११।१७।३४। ०	८। २। ६।५१	१०।१९।५८।४८	१।२७। ०। ४	०। २।३०।५२	६।१४।४४।५४	८।२६।४५।४०	२।२५।४३।५२	६। १।५७।४०
	१४	शु	११।१८।३३।१०	८। २।३२।३७	१०।२१। ६।५५	१।२७। ८।३८	०। ३।४५। ३	६।१४।४१। ५	८।२६।४२।३०	२।२५।४४।१२	६। १।५६। ५
	३०	श	११।१९।३२।१८	८। २।५८। ९	१०।२२।१७।१०	१।२७।१७।२१	०। ४।५९।१३	६।१४।३७।१२	८।२६।३९।२०	२।२५।४४।३६	६। १।५४।२९

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु स्पष्टो दैनिकश्चन्द्रः ।

मास	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
चैत्रशुक्लपक्षः ।	१	चं.	११। ९।४८।२८	११।१२।११।१२	११।१४।३३।५६	११।१६।५६।३१	११।१९।१८। ६	११।२१।३९।४२
	२	मं.	११।२४। १।१७	११।२६।२२।५३	११।२८।४४।२८	०। १। ५।२३	०। ३।२५।३९	०। ५।४५।३५
	३	बु.	०। ८। ५।४१	०।१०।२५।४८	०।१२।४५।५४	०।१५। ४।२२	०।१७।२७।१७	०।१९।४०।१३
	४	गु.	०।२१।५८। ९	०।२४।१६। ४	०।२६।३४। ०	०।२८।५०।१०	१। १। ३।१२	१। ३।२२।१६
	५	शु.	१। ५।३८।१९	१। ७।५४।३३	१।१०।१०।१४	१।१२।२३।३८	१।१४।३७। १	१।१६।५०।२७
	६	श.	१।१९। ३।५२	१।२१।१७।१६	१।२३।३०।२८	१।२५।४१।२२	१।२७।५२।१६	२। ०। ३।१०
	७	र.	२। २।१४। ४	२। ४।२४।५८	२। ६।३५।५२	२। ८।४४। ३	२।१०।५२। ९	२।१३। ०।१५
	८	चं.	२।१५। ८।२१	२।१७।१६।२७	२।१९।२४।३३	२।२१।३०।५०	२।२३।३६।२५	२।२५।४२। ०
	९	मं.	२।२७।४७।३६	२।२९।५३।११	३। १।५८।४६	३। ४। ३।३८	३। ६। ७। ७	३। ८।१०।३६
	१०	बु.	३।१०।१४। ६	३।१२।१७।३५	३।१४।२१। ४	३।१६।२४।३४	३।१८।२६।३०	३।२०।२८।१२
	११	गु.	३।२२।२९।५४	३।२४।३१।३६	३।२६।३३।१८	३।२८।३५। ०	४। ०।३६।२३	४। २।३६।५९
	१२	शु.	४। ४।३७।३५	४। ६।३८।११	४। ८।३८।४८	४।१०।३९।२४	४।१२।४०। १	४।१४।४०।१७
	१३	श.	४।१६।४०।२४	४।१८।४०।३१	४।२०।४०।३८	४।२२।४०।४५	४।२४।४०।५२	४।२६।४१। ०
	१४	र.	४।२८।४१।२७	५। ०।४१।५४	५। २।४२।२१	५। ४।४२।४८	५। ६।४३।१५	५। ८।४३।४२
	१५	चं.	५।१०।४४।३४	५।१२।४६। ७	५।१४।४७।४०	५।१६।४९।१३	५।१८।५०।४६	५।२०।५२।१९
प्र० वैशाखकृष्णपक्षः	१	मं.	५।२२।५३।५२	५।२४।५६।४०	५।२६।५९।४८	५।२९। २।५७	६। १। ६। ५	६। ३। ९।१४
	२	बु.	६। ५।१२।२२	६। ७।१६। ६	६। ९।२१।२०	६।११।२६।३४	६।१३।३१।४८	६।१५।३७। २
	३	गु.	६।१७।४२।१६	६।१९।४७।३०	६।२१।५४।५३	६।२४। २।३२	६।२६।१०।१२	६।२८।१७।५२
	४	शु.	७। ०।२५।३२	७। २।३३।११	७। ४।४२।१४	७। ६।५२।५३	७। ९। ३।१८	७।११।१३।४०
	५	श.	७।१३।२४। २	७।१५।३४।२४	७।१७।४६। ३	७।१९।५९। ३	७।२२।१२। १	७।२४।२५। ३
	६	र.	७।२६।३८। १	७।२८।५१। ३	८। १। ५।१९	८। ३।२०।५४	८। ५।३६।३०	८। ७।५२। ५
	७	चं.	८।१०। ७।४१	८।१२।२३।१६	८।१४।४०।१४	८।१६।५७।४३	८।१९।१५।२२	८।२१।३३। २
	८	मं.	८।२३।५०।४१	८।२६। ८।२०	८।२८।२७।३८	९। ०।४७।२५	९। ३। ७।१२	९। ५।२६।५८
	९	बु.	९। ७।४६।४५	९।१०। ६।१६	९।१२।२८। १	९।१४।४९।२७	९।१७।१०।५२	९।१९।३२।१८
	१०	गु.	९।२१।५३।४३	९।२४।१५।१३	९।२६।३७।५९	९।२९। ०।२५	१०। १।२२।५१	१०। ३।४५।१७
	११	शु.	१०। ६। ७।४३	१०। ८।३०।४०	१०।१०।५३।४६	१०।१३।१६।५३	१०।१५।४०। ०	१०।१८। ३। ६
	१२	श.	१०।२०।२६।१७	१०।२२।४२।३६	१०।२५।१२।५६	१०।२७।३६।१५	१०।२९।५९।३५	११। २।२२।५४
	१४	र.	११। ४।४५।५६	११। ७। ८।४५	११। ९।३१।३४	११।१२।१५।४३	११।१४।१७।१२	११।१६।४०। ०
	३०	चं.	११।१९। १।४८	११।२१।२२।३६	११।२३।४५।२४	११।२६। ७।१२	११।२८।२९। ०	०। ०।५०।१८
प्र० वैशाखशुक्लपक्षः	१	मं.	०। ३।१०।४१	०। ५।३३। ५	०। ७।५५।२८	०।१०।१९।५२	०।१२।३३।१५	०।१४।५९।२१
	२	बु.	०।१७। ९।४५	०।१९।२८।१०	०।२१।४६।३५	०।२४। ४।१९	०।२६।२२।२४	०।२८।४०। ९
	३	गु.	१। ०।५६।४०	१। ३।११।११	१। ५।२९।४२	१। ७।४६।१३	१।१०। २।४१	१।१२।१३।४३
	४	शु.	१।१४।३०।४६	१।१६।४४।४८	१।१८।५८।५१	१।२१।१२।५३	१।२३।२६।५७	१।२५।३८। ८
	५	श.	१।२७।४९।३०	२। ०। ०।५२	२। २।१२।१३	२। ४।२३।३५	२। ६।३४।५७	२। ८।४७।४९
	६	र.	२।१०।५२।३४	२।१३। १।१९	२।१५।१०। ५	२।१७।१८।५०	२।१९।२७।३५	२।२१।३४।२१
	७	चं.	२।२३।४०।२६	२।२५।४६।३१	२।२७।५२।३६	२।२९।५८।४१	३। २। ४।४६	३। ४। ९।५६
	८	मं.	३। ६।१३।५०	३। ८।१७।४४	३।१०।२१।१९	३।१२।२५।३३	३।१४।२९।२७	३।१६।३३।२२
	९	बु.	३।१८।३५।३४	३।२०।३७।१८	३।२२।३९।४३	३।२४।४१।४७	३।२६।४३।५२	३।२८।४५।५६
	१०	गु.	४। ०।४७।३१	४। २।४८।२०	४। ४।४९। ९	४। ६।४९।५८	४। ८।५०।४७	४।१०।५१।३६
	११	शु.	४।१२।५२।२४	४।१४।५२।४६	४।१६।५२।५५	४।१८।५१। ४	४।२०।५३।११	४।२२।५३।२२
	१२	श.	४।२४।५३।३१	४।२६।५३।४०	४।२८।५३।५९	५। ०।५४।१९	५। २।५४।३८	५। ४।५४।५८
	१३	र.	५। ६।५५।१७	५। ८।५५।३७	५।१०।५६।२३	५।१२।५७।३७	५।१४।५८।५२	५।१७। ०। ७
	१४	चं.	५।१९। १।२१	५।२१। १।३६	५।२३। ३।५१	५।२५। ६। २	५।२७। ८।४४	५।२९।११।२६
	१४	मं.	६। १।१४। ८	६। ३।१६।५०	६। ५।१९।३२	६। ७।२३।१७	६। ९।२८। ९	६।११।३३। १
	१५	बु.	६।१३।३७।५३	६।१५।४२।४६	६।१७।४७।१८	६।१९।५१।३०	६।२१।५९।३०	६।२४। ६।३७

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकः स्पष्टश्चन्द्रः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०:०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
द्वि० वैशाखकृष्णपक्षः	१	गु	६।२६।१३।४४	६।२८।२०।५१	७। ०।२७।५८	७। २।३५। ५	७। ४।४२।५५	७। ६।५३।४१
	२	शु	७। ९। ३।२७	७।११।१३।१३	७।१३।२२।५९	७।१५।३२।४५	७।१७।४२।४६	७।१९।५६। ८
	३	श	७।२२। ८।३१	७।२४।२०।५३	७।२६।३३।१६	७।२८।४५।३९	८। ०।५९।११	८। ३।१४।१२
	४	र	८। ५।२९।१३	८। ७।४४।१५	८। ९।५९।१६	८।१२।१४।१७	८।१४।३०।३०	८।१६।४७।५०
	५	चं	८।१९। ५।११	८।२१।२२।३१	८।२९।३९।५२	८।२५।५७।१२	८।२८।१५।५६	९। ०।१५।१८
	६	मं	९। २।५४।४१	९। ५।१४। ३	९। ७।३३।२६	९। ९।५२।४८	९।१२।१३।४८	९।१४।३४।५३
	८	बु	९।१६।५५।५९	९।१९।१७। ४	९।२१।३८।१०	९।२३।५९।३६	९।२६।२१।५१	९।२८।४४। ७
	९	गु	१०। १। ६।२३	१०। ३।२८।३९	१०। ५।५०।५४	१०। ८।१३।४१	१०।१०।३६।४२	१०।१२।५९।४४
	१०	शु	१०।१५।२२।४५	१०।१७।४५।४७	१०।२०। ८।५०	१०।२२।३२। ७	१०।२४।५५।२४	१०।२७।१८।४१
	११	श	१०।२९।४१।५९	११। २। ५।१६	११। ४।२८।२१	११। ६।५१।१५	११। ९।१४। ९	११।११।३७। ३
	१२	र	११।१३।५९।५७	११।१६।२२।५१	११।१८।४४।५६	११।२१। ६।५९	११।२३।२९। २	११।२५।५१। ६
	१३	चं	११।२८।१३। ९	०। ०।३४।५७	०। २।५५।४३	०। ५।१६।२९	०। ७।३७।१५	०। ९।५८। ०
	१४	मं	०।१२।१८।४६	०।१४।३८।३१	०।१६।५७।२१	०।१९।१६।२७	०।२१।३५।२५	०।२३।५४।२४
	३०	बु	०।२६।१३।२२	०।२८।३०।४२	१। ०।४७।३९	१। ३। ४।३६	१। ५।२१।३३	१। ७।३८।३०
द्वि० वैशाखशुक्लपक्षः	१	गु	१। ९।५५।२७	१।१२।१० ५	१।१४।२४।३९	१।१६।३९।१३	१।१८।५३।४७	१।२१। ८।२१
	२	शु	१।२३।२२।५२	१।२५।३४।४८	१।२७।४६।४५	१।२९।५८।४१	२। २।१०।३८	२। ४।२२।३४
	३	श	२। ६।३४।३१	२। ८।४३।५१	२।१०।५३। ५	२।१३। २।२०	२।१५।११।३४	२।१७।२०।४९
	४	र	२।१९।३०। १	२।२१।३७।१७	२।२३।४३।५४	२।२५।५०।३१	२।२७।५७। ८	३। ०। ३।४४
	५	चं	३। २।१०।२१	३। ४।१६। ३	३। ६।२०।३५	३। ८।२५। ८	३।१०।२९।४१	३।१२।३४।१३
	६	मं	३।१४।३८।४६	३।१६।४३।१६	३।१८।४५।३५	३।२०।४७।५५	३।२२।५०।१४	३।२४।५२।३४
	७	बु	३।२६।५४।५३	३।२८।५७।१३	४। ०।५८।५५	४। २।५९।५८	४। ५। १। २	४। ७। २। ५
	८	बृ	४। ९। ३। ९	४।११। ४।१२	४।१३। ५।१६	४।१५। ५।४१	४।१७। ६। ०	४।१९। ६।२०
	९	शु	४।२१। ६।३९	४।२३। ६।५९	४।२५। ७।१९	४।२७। ७।३८	४।२९। ७।४५	५। १। ७।५२
	१०	श	५। ३। ७।५९	५। ५। ८। ६	५। ७। ८।१३	५। ९। ८।२०	५।११। ८।५६	५।१३। ९।५२
	११	र	५।१५।१०।४८	५।१७।११।४४	५।१९।१२।४०	५।२१।१३।३७	५।२३।१४।३३	५।२५।१६।५३
	१२	चं	५।२७।१९।१६	५।२९।२१।३९	६। १।२४। २	६। ३।२६।२५	६। ५।२८।४७	६। ७।३२। २
	१३	मं	६। ९।३६।२५	६।११।४०।४८	६।१३।४५।११	६।१५।४९।३४	६।१७।५४।५७	६।१९।५८।२०
	१४	बु	६।२२। ४।५२	६।२४।११।२५	६।२६।१७।५८	६।२८।२४।३१	७। ०।३१। ४	७। २।३७।३७
	१५	गु	७। ४।४५।५३	७। ६।५५। ३	७। ९। ४।१३	७।११।१३।२३	७।१३।२२।३४	७।१५।३१।४४
ज्येष्ठकृष्णपक्षः	१	शु	७।१७।४२।११	७।१९।५४। ७	७।२२। ६। १	७।२४।१७।५५	७।२६।२९।५०	७।२८।४१।४४
	२	श	८। ०।५४।४२	८। ३। ९।११	८। ५।२३।४१	८। ७।३८।१०	८। ९।५२।४०	८।१२। ७। ९
	३	र	८।१४।२२।४३	८।१६।३९।१२	८।१८।५६।२२	८।२१।१३।१२	८।२३।३०। १	८।२५।४६।५१
	४	चं	८।२८। ४।५७	९। ०।२३।५०	९। २।४२।४३	९। ५। १।३६	९। ७।२०।३०	९। ९।३९।२१
	५	मं	९।११।५९।५३	९।१४।२०।३८	९।१६।४१।२४	९।१९। २।१०	९।२१।२२।५५	९।२३।४३।५६
	६	बु	९।२६। ६। ४	९।२८।२८।१२	१०। ०।५०।२०	१०। ३।१२।२८	१०। ५।३४।३७	१०। ७।५७। ९
	७	गु	१०।१०।२०। ०	१०।१२।४२।५१	१०।१५। ५।४२	१०।१७।२८।३३	१०।१९।५१।२४	१०।२२।१४।४१
	८	शु	१०।२४।३७।५७	१०।२७। ११४	१०।२९।२४।३१	११। १।४७।४७	११। ४।११। २	११। ६।३४। ६
	९	श	११। ८।५७।१०	११।११।२०।१४	११।१३।४३।१९	११।१६। ६।२३	११।१८।२८।५६	११।२०।५१।१९
	११	र	११।२३।१३।४३	११।२५।३६। ६	११।२७।५८।३०	०। ०।२०।४२	०। २।४१।५०	०। ५। २।५८
	१२	चं	०। ७।२४। ६	०। ९।४५।१४	०।१२। ६।२२	०।१४।२६।४५	०।१६।४६।१७	०।१९। ५।४९
	१३	मं	०।२१।२५।२१	०।२३।४४।५३	०।२६। ४।२५	०।२८।२२।२४	१। ०।३९।५१	१। २।५७।१८
	१४	बु	१। ५।१४।४५	१। ७।३१।१२	१। ९।४९।४०	१।१२। ५। ०	१।१४।२०। ८	१।१६।३५।१६
	३०	गु	१।१८।५०।२४	१।२१। ५।३२	१।२३।२०।४०	१।२५।३४।११	१।२७।४७।४२	१।२९।५८।१३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रःस्पष्टः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
ज्येष्ठशुक्लपक्षः	१	शु	२। २।१०।४५	२। ४।२३।१६	२। ६।३५।४७	२। ८।४५।४८	२।१०।५५।४२	२।१३। ५।३६
	२	श	२।१५।१५।३१	२।१७।२५।२५	२।१९।३५।१९	२।२१।४३। ६	२।२३।५०।२३	२।२५।५७।४०
	३	र	२।२८। ४।५१	३। ०।१२।१४	३। २।१९।३१	३। ४।२५।३६	३। ६।३०।३२	३। ८।३५।२८
	४	चं	३।१०।४०।२४	३।१२।४५।२०	३। ४।५०।१६	३।१६।५४।४२	३।१८।५७।३२	३।२१। ०।२१
	५	मं	३।२३। ३।११	३।२५। ६। ०	३।२७। ८।५०	३।२९।११।३९	४। १।१३।४८	४। ३।१५। ६
	६	बु	४। ५।१६।२४	४। ७।१७।४३	४। ९।१९। १	४।११।२०।१९	४।१३।२१।३६	४।१५।२२। १
	७	गु	४।१७।२२।२६	४।१९।२२।२५	४।२१।२३।१७	४।२३।२३।४२	४।२५।२४। ८	४।२७।२४।२७
	८	शु	४।२९।२४।३६	५। १।२४।४५	५। ३।२४।५४	५। ५।२५। ३	५। ७।२५।१२	५। ९।२५।२१
	९	श	५।११।२६। १	५।१३।२६।५४	५।१५।२७।४७	५।१७।२८।३९	५।१९।२९।३२	५।२१।३०।२५
	९	र	५।२३।३१।२३	५।२५।३३।२४	५।२७।३५।२५	५।२९।३७।२६	६। १।३९।२७	६। ३।४१।२८
	१०	चं	६। ५।४३।२९	६। ७।४६।३१	६। ९।५०।२७	६।११।५४।२१	६।१३।५८।१९	६।१६। २।१५
	११	मं	६।१८। ६।११	६।२०।१०।१८	६।२२।१६।१९	६।२४।२२।२०	६।२६।२८।२१	६।२८।३४।२२
	१२	बु	७। ०।४०।२३	७। २।४६।२४	७। ४।५४।२२	७। ७। १। ३	७। ९।११।४४	७।११।२०।२५
	१३	गु	७।१३।२९। ६	७।१५।३७।४४	७।१७।४७।५२	७।१९।५९।१४	७।२२।१०।३६	७।२४।२१।५७
	१४	शु	७।२६।३३।१८	७।२८।४४।३९	८। ०।५७। ०	८। ३।१०।५३	८। ५।२४।४७	८। ७।३८। ०
	१५	श	८। ९।५२।३४	८।१२। ६।२८	८।१४।२१।४१	८।१६।३८।१४	८।१८।५४।४८	८।२१।११।२१
आषाढकृष्णपक्षः	१	र	८।२३।२७।५४	८।२५।४४।२७	८।२८। २। ०	९। ०।२०।१९	९। २।३८।३९	९। ४।५६।५८
	२	चं	९। ७।१५।१८	९। ९।३३।३७	९।११।५३।०७	९।१४।१४।१५	९।१६।३४।४४	९।१८।५५।१२
	४	मं	९।२१।१५।४०	९।२३।१६।२८	९।२५।५८। ५	९।२८।१९।५२	१०। ०।४२।३९	१०। ३। ३।२६
	५	बु	१०। ५।२५।११	१०। ७।४७।३८	१०।१०।१०।३२	१०।१२।३३।२६	१०।१४।५६।२०	१०।१७।१९।१४
	६	गु	१०।१९।४२। ८	१०।२२। ५।२०	१०।२४।२८।३४	१०।२६।५१।४२	१०।२९।१५। ३	११। १।३८।१८
	७	शु	११। ४। १।३२	११। ६।२४।४६	११। ८।४८। ०	११।११।१२।१४	११।१३।३४।२९	११।१५।५७।४३
	८	श	११।१८।२०।३२	११।२०।४३। ८	११।२३। ५।४४	११।२५।२८।२१	११।२७।५०।५७	०। ०।१३।२७
	९	र	०। २।३५। ०	०। ४।५६।३३	०। ७।१८। ६	०। ९।३९।३९.	०।१२। १।१२	०।१४।२१।५५
	१०	चं	०।१६।४१।४४	०।१९। १।३३	०।२१।१२।२२	०।२३।४१।११	०।२६। १। ०	०।२८।१९।३२
	११	मं	१। ०।३७।२८	१। २।५५।२४	१। ५।१३।१९	१। ७।३१।२५	१। २।४२।११	१।१२। ५। ९
	१२	बु	१।१४।२०।५६	१।१६।३६।४३	१।१८।५२।३०	१।२१। ८।१७	१।२३।२३।५९	१।२५।३७। ८
	१३	गु	१।२७।५०।१७	२। ०। ३।२६	२। २।१६।३५	२। ४।२२।४४	२। ६।४२।५०	२। ८।५३।२९
	१४	शु	२।११। ४। ८	२।१३।१४।४७	२।१५।२५।२६	२।१७।३६। ५	२।१९।४६।४४	२।२१।५४।५२
	३०	श	२।२४। २।४४	२।२६।१०।३६	२।२८।१८।२७	३। ०।२६।११	३। २।३४।११	३। ४।४०।२८
आषाढशुक्लपक्षः	१	र	३। ६।४५।५१	३। ८।५१।१५	३।१०।५६।३८	३।१३। २। २	३।१४। ७।२९	३।१७।१२।१९
	२	चं	३।१९।१५।३१	३।२१।१८।४८	३।२३।२२। ४	३।२५।२५।२१	३।२७।२८।३७	३।२९।३३।१४
	३	मं	४। १।३३।५६	४। ३।३५।४०	४। ५।३७।२४	४। ७।३९। ९	४। ९।४०।५१	४।११।४२।३७
	४	बु	४।१३।४४। ६	४।१५।४४।३७	४।१७।४५। ८	४।१९।४५।३८	४।२१।४६। ९	४।२३।४६।४०
	५	गु	४।२५।४७।१०	४।२७।४७।१०	४।२९।४७।४१	५। १।४७।५२	५। ३।४८। ३	५। ५।४८।१४
	६	शु	५। ७।४८।२५	५। ९।४८।३६	५।११।४८।५७	५।१३।४९।३५	५।१५।५०।१३	५।१७।५०।५१
	७	श	५।१९।५१।२९	५।२१।५२। ७	५।२३।५३।१६	५।२५।५४।५८	५।२७।५६।४०	५।२९।५८।२३
	८	र	६। २। ०। ५	६। ४। १।४७	६। ६। ३।३०	६। ८। ६।२८	६।१०। ९।५९	६।१२।१३।३०
	९	चं	६।१४।१७। १	६।१६।२०।१२	६।१८।२४। ३	६।२०।२८। २	६।२२।३३।३१	६।२४।३९। ४
	१०	मं	६।२६।४४।३६	६।२८।५०। ७	७। ०।५५।३८	७। ३। १।१०	७। ५। ८।५२	७। ७।१६।५६
	११	बु	७। ९।२५। ०	७।११।३३। ४	७।१३।४२। ८	७।१५।४९।१२	७।१७।५८।५६	७।२०। १।४५
	१२	गु	७।२२।२०।३५	७।२४।११।२४	७।२६।४२।१४	७।२८।५३। ३	८। १। १। ७	८। ३।१८।२७
	१३	शु	८। ५।३१।४७	८। ७।४५। ७	८। ९।५८।२७	८।१२।११।४७	८।१४।२६।२६	८।१६।४२।२५
	१४	श	८।१८।५८।२५	८।२१।१४।२४	८।२३।३०।२४	८।२५।४६।२२	८।२८। ३।५४	९। ०।२१।४९
	१५	र	[illegible]	[illegible]	९। ७।१५।३६	९। ९।३३।३२	९।११।५१।१२	९।१४।१३।१७

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: ०।१०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
श्रावणकृष्णपक्षः	१	चं	९।१६।३३।२१	९।१८।५३।२५	९।२१।१३।२९	९।२३।१३।३१	९।२५।५५।१९	९।२८।१६।५७
	२	मं	१०।१।३८।३५	१०। ४।०।१३	१०। ६।२१।५१	१०। ७।४३।५८	१०।१०। ६।३९	१०।१२।२९।२०
	३	बु	१०।१४।५२। २	१०।१७।१४।४३	१०।१९।३७।२५	१०।२२। ०।२१	१०।२४।२३।३८	१०।२६।४६।५५
	४	गु	१०।२९।१०।१२	११। १।३३।२९	११। ४।५६।४७	११। ७।२०। ६	११। ९।४३।२६	११।१२। ६।४५
	५	शु	११।१४।३०। ५	११।१६।५१।२४	११।१८।१६।२७	११।२०।३९।२१	११।२३। २।१५	११।२५।२५। ९
	७	श	११।२७।४८। ३	०। ०।१०।५२	०। २।३३।३७	०। ४।५४।२३	०। ७।१६। ८	०। ९।३७।५४
	८	र	०।११।५९।४१	०।१४।२०।५१	०।१६।४१।१७	०।१९। १।४१	०।२१।२२। ९	०।२३।४२।३५
	९	चं	०।२६। ३। ९	०।२८।२१।५१	१। ०।४०। ६	१। २।५८।२१	१। ५।१६।३६	१। ७।३४।५१
	१०	मं	१। ९।५३। ६	१।१२। ९।३३	१।१४।२५।५५	१।१६।४२।१७	१।१८।५८।३८	१।२१।१५। ०
	११	बु	१।२३।११। ९	१।२५।४५। ०	१।२७।५८।५१	२। ०।१२।४३	२। २।२६।३४	२। ४।४०।२५
	१२	गु	२। ६।५४। ०	२। ९। ५।१५	२।११।१६।३०	२।१३।२७।४६	२।१५।३९। १	२।१७।५०।१६
	१३	शु	२।२०। १।३०	२।२२।१०। १	२।२४।१८।३२	२।२६।२७। ३	२।२८।१५।३४	३। ०।४४। ५
	१४	श	३। २।५२।१६	३। ४।५९। ६	३। ७। ५। ५	३। ९।११। ४	३।११।१७। ३	३।१३।२३। २
	३०	र	३।१५।२९। १	३।१७।३४।१४	३।१९।३७।५२	३।२१।४१।४१	३।२३।४५।२९	३।२५।४९।१८
श्रावणशुक्लपक्षः	१	चं	३।२७।५३। ६	३।२९।५६।५५	४। १।५८।५८	४। ४। ०।५९	४। ६। ३। ०	४। ८। ५। १
	२	मं	४।१०। ७। २	४।१२। ९। ३	४।१४।१०।३३	४।१६।११।२२	४।१८।१२।११	४।२०।१३।०
	३	बु	४।२२।१३।४९	४।२४।१४।३८	४।२६।१५।२७	४।२८।१५।४६	५। ०।१५।५८	५। २।१६।११
	४	गु	५। ४।१६।२३	५। ६।१६।३६	५। ८।१६।४८	५।१०।१७। ४	५।१२।१७।३५	५।१४।१८। ६
	५	शु	५।१६।१८।३६	५।१८।१९। ७	५।२०।१९।३७	५।२२।२०। ८	५।२४।२१। ९	५।२६।२२।३८
	६	श	५।२८।२४। ७	६। ०।२५।३७	६। २।२७। ६	६। ४।२८।३५	६। ६।३०। ५	६। ८।३२।५५
	६	र	६।१०।३५।५२	६।१२।३८।४९	६।१४।४१।४६	६।१६।४४।४३	६।१८।४७। ५	६।२०।५१।१०
	७	चं	६।२२।५६।१५	६।२५। १।४०	६।२७। ६।४५	६।२९।११।५०	७। १।१६।५५	७। ३।२२। ०
	८	मं	७। ५।२९।३५	७। ७।१७।११	७। ९।४४।४६	७।११।५२।२२	७।१३।५९।५७	७।१६। ७।३३
	९	बु	७।१८।१७। ९	७।२०।२७।१६	७।२२।३७।२३	७।२४।४७।३०	७।२६।५७।३७	७।२९। ७।४४
	१०	गु	८। १।१९।२५	८। ३।३२।१०	८। ५।४४।५६	८। ७।५७।४०	८।१०।१०।२५	८।१२।२३।१०
	११	शु	८।१४।३७।२४	८।१६।५२।४८	८।१९। ८।१२	८।२१।२३।३७	८।२३।३९। १	८।२५।५४।२५
	१२	श	८।२८।११।१५	९। ०।२८।४९	९। २।४६।२४	९। ५। ३।५८	९। ७।२१।३३	९। ९।३९। ७
	१४	र	९।११।५८।३१	९।१४।१८।२७	९।१६।३८। १	९।१८।५७।४६	९।२१।१७।३०	९।२३।३७।२६
	१५	चं.	९।२५।५८।४४	९।२८।२०। २	१०। ०।४१।२०	१०। ३। २।३८	१०। ५।२३।५६	१०। ७।४५।४९
भाद्रपदकृष्णपक्षः	१	मं	१०।१०। ८।२२	१०।१२।३०।५६	१०।१४।५३।२९	१०।१७।१६। ३	१०।१९।३८।३६	१०।२२। १।४१
	२	बु	१०।२४।२४।५०	१०।२६।४७।५९	१०।२९।११। ९	११। १।३४।१८	११। ३।५७।३३	११। ६।२१। ३
	३	गु	११। ८।४४।१३	११।११। ८। २	११।१३।३१।३२	११।१५।५५। २	११।१८।१८।१३	११।२०।४१।१४
	४	शु	११।२३। ४।१६	११।२५।२७।१७	११।२७।५०।१९	०। ०।१३।१६	०। २।३५।२७	०। ४।५७।१८
	५	श	०। ७।१९।४९	०। ९।४२। ०	०।१२। ४।११	०।१४।२५।४२	०।१६।४६।३०	०।१९। ७।१८
	६	र	०।२१।२८। ७	०।२३।४८।५५	०।२६। ९।४४	०।२८।२९। ०	१। ०।४७।५१	१। ३। ६।४२
	७	चं	१। ५।२५।३३	१। ७।४४।२४	१।१०। ३। ८	१।१२।२०। ५	१।१४।३७। २	१।१६।५३।५९
	८	मं	१।१९।१०।५६	१।२१।२७।५३	१।२३।४४।२६	१।२५।५८।५५	१।२८।१३।२७	२। ०।२७।५५
	९	बु	२। २।४२।२४	२। ४।५६।५३	२। ७।१०।४७	२। ९।२२।३९	२।११।३४।३४	२।१३।४६।२८
	१०	गु	२।१५।५८।२२	२।१८।१०।१७	२।२०।२१।४५	२।२२।३०।५५	२।२४।४०। ५	२।२६।४९।१६
	११	शु	२।२८।५८।२१	३। १। ७।३२	३। ३।१६।४२	३। ५।२३।२१	३। ७।२९।५६	३। ९।३६।२९
	१२	श	३।११।४३। २	३।१३।४९।३५	३।१५।५६। ८	३।१८। १।१६	३।२०। ५।१९	३।२२।१०। २
	१३	र	३।२४।१४।२५	३।२६।१८।४८	३।२८।२३।११	४। ०।२७। ८	४। २।२९।११	४। ४।३१।५४
	१४	चं	४। ६।३४।१७	४। ८।३६।४०	४।१०।३९। १	४।१२।४१।२६	४।१४।४२।५७	४।१६।४४। २
	३०	मं	४।१८।४५। ७	४।२०।४६।२३	[illegible]	[illegible]	४।२६।४९।२६	४।२८।४९।४५

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चन्द्रःस्पष्टः।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी ०।०	इष्टघटी १०।०	इष्टघटी २०।०	इष्टघटी ३०।०	इष्टघटी ४०।०	इष्टघटी ५०।०
भाद्रपदशुक्लपक्षः	१	बु	५। ०।५०। ४	५। २।५०।२४	५। ४।५०।४३	५। ६।५१। २	५। ८।५१।२२	५।१०।५१।४१
	२	गु	५।१२।५२। ९	५।१४।५२।३२	५।१६।५२।५६	५।१८।५३।१९	५।२०।५३।४२	५।२२।५४। ५
	३	शु	५।२४।५५। ८	५।२६।५६।१९	५।२८।५७।३०	६। ०।५८।४१	६। २।५९।५२	६। ५। १। ३
	४	श	६। ७। २।२८	६। ९। ५। २	६।११। ७।३७	६।१३।१०।११	६।१५।१२।४६	६।१७।१५।२०
	५	र	६।१९।१७।५५	६।२१।२१।५४	६।२३।२६।३६	६।२५।३१।१९	६।२७।३६। १	६।२९।४०।४४
	६	चं	७। १।४५।२६	७। ३।५०।४१	७। ५।५७।३८	७। ८। ४।३५	७।१०।११।३२	७।१२।१८।२९
	७	मं	७।१४।२५।२६	७।१६।३२।२३	७।१८।४१।४५	७।२०।५१।१६	७।२३। ०।४७	७।२५।१०।१८
	८	बु	७।२७।१९।४९	७।२९।२९।२०	८। १।४०।५१	८। ३।५२।५८	८। ६। ५। ५	८। ८।१७।१३
	९	गु	८।१०।२९।२०	८।१२।४१।२७	८।१४।५५।३२	८।१७।१०।२४	८।१९।२५।१६	८।२१।४०। ९
	१०	शु	८।२३।५५। १	८।२६। ९।५३	८।२८।२६।४०	९। ०।४३।५३	९। ३। १। ६	९। ५।१८।२०
	११	श	९। ७।३५।३३	९। ९।५२।४६	९।१२।११।४७	९।१४।३१। ०	९।१६।५०।१३	९।१९। ९।२५
	१२	र	९।२१।२८।३८	९।२३।४८।१३	९।२६। ९।१६	९।२८।३०।१९	१०। ०।५१।२३	१०। ३।१२।२६
	१३	चं	१०। ५।३३।२९	१०। ७।५५। ६	१०।१०।१७।१४	१०।१२।३९।२२	१०।१५। १।३१	१०।१७।२३।१९
	१४	मं	१०।१९।४५।४७	१०।२२। ८।५०	१०।२४।३१।५९	१०।२६।५५। ८	१०।२९।१८।१६	११। १।४१।२५
	१५	बु	११। ४। ४।४५	११। ६।२८।२०	११। ८।५१।५५	११।११।१५।३०	११।१३।३९। ५	११।१६। २।·०
आश्विनकृष्णपक्षः	१	गु	११।१८।२५।५६	११।२०।४९। ५	११।२३।१२।१४	११।२५।३५।२२	११।२७।५८।३१	०। ०।२१।३६
	३	शु	०। २४।४। ०	०। ५। ६।२३	०। ७।२८।४७	०। ९।५१।१०	०।१२।१३।३४	०।१४।३५।१६
	४	श	०।१६।५६।२४	०।१९।१७।४२	०।२१।३८।४०	०।२३।५९।४८	०।२६।२०।५६	०।२८।४०।३६
	५	र	१। १। ०। १	१। ३।११।२६	१। ५।३८।५१	१। ७।५८।१६	१।१०।१७।२४	१।१२।३४।४३
	६	चं	१।१४।५२।१४	१।१७। ९।३९	१।१९।२७। ४	१।२१।४४।२९	१।२४। १।१२	१।२६।१६।१६
	७	मं	१।२८।३१।१९	२। ०।४६।२३	२। ३। १।२६	२। ५।१६।३०	२। ७।३०।३४	२। ९।४१। ३
	८	बु	२।११।५५।३२	२।१४। ८। १	२।१६।२०।३०	२।१८।३२।५९	२।२०।४४।३४	२।२२।३५।२२
	९	गु	२।२५। ४।१०	२।२७।१३।५८	२।२९।२३।४६	३। १।३३।३४	३। ३।४२।५४	३। ५।५०। ५
	१०	शु	३। ७।५७।१६	३।१०। ४।२७	३।१२।११।३८	३।१४।२८।४९	३।१६।२६। ०	३।१८।३१।१२
	११	श	३।२०।३६। ८	३।२२।४१। ४	३।२४।४६। ०	३।२६।५०।५६	३।२८।५५।५२	४। ०।५९।४४
	१२	र	४। ३। २।२८	४। ५। ५।१२	४। ७। ७।५६	४। ९।१०।४०	४।११।१३।२४	४।१३।१६। ८
	१३	चं	४।१५।१७।१३	४।१७।१८।५७	४।१९।२०।२१	४।२१।२१।४४	४।२३।२३। ८	४।२५।२४।३२
	१४	मं	४।२७।२५।११	४।२९।२५।५४	५। १।२६।१८	५। ३।२६।४१	५। ५।२७। ५	५। ७।२७।२८
	३०	बु	५। ९।२७।५२	५।११।२८।१३	५।१३।२८।३०	५।१५।२८।४८	५।१७।२९। ५	५।१९।२९।२३
आश्विनशुक्लपक्षः	१	गु	५।२२।२९।४१	५।२३।३०। ५	५।२५।२१। १	५।२७।२२। १	५।२९।३२।५९	६। १।२३।५७
	१	शु	६। ३।३४।५५	६। ५।३५।५३	६। ७।३७।२५	६। ९।३९।३५	६।११।४१।४५	६।१३।४३।५५
	२	श	६।१५।४६। ५	६।१७।४८।१५	६।१९।५०।२५	६।२२।५४।२४	६।२४।५८।११	६।२६। २।३९
	३	र	६।२८। ६।४६	७। ०।१०।५४	७। २।१५। १	७। ४।२०। ९	७। ६।२६।२०	७। ८।१२।३१
	४	चं	७।१०।३८।४२	७।१२।४४।५१	७।१४।५१। ४	७।१६।५७।३७	७।१९। ६।३३	७।२१।१५।२९
	५	मं	७।२३।२४।२४	७।२५।३३।२०	७।२७।४२।१६	७।२९।५२।११	८। २। २।३३	८। ४। ४। ६
	६	बु	८। ६।२५।१९	८। ८।३७।११	८।१०।४८।४४	८।१३। ०।१७	८।१५।१४। ०	८।१७।२८। ७
	७	गु	८।१९।४२।१४	८।२२।५६।२१	८।२४।१०।२८	८।२६।२४।३५	८।२८।४१। ०	९। ०।५७।४३
	८	शु	९। ३।१४।२६	९। ५।३१। ८	९। ७।४७।५१	९।१०। ४।३७	९।१२।२२। ६	९।१४।४१।३५
	९	श	९।१७। ०। ५	९।१९।१८।३४	९।२१।३७। ३	९।२३।५६। ६	९।२६।१६।४४	९।२८।१७।२२
	११	र	१०। ०।५८। १	१०। ३।१८।१९	१०। ५।३९।१७	१०। ८। ०।४१	१०।१०।२२।१९	१०।१२।४४।३७
	१२	चं	१०।१५। ६।३६	१०।१७।२८।१४	१०।१९।५०।२२	१०।२२।१३।२५	१०।२४।२४।२२	१०।२६।५९।१८
	१३	मं	१०।२९।२२।१५	११। १।४५।११	११। ४। ८।१८	११। ६।३१।४५	११। ८।५५।१२	११।११।१८।४०
	१४	बु	११।१३।४२। ७	११।१६। ५।३४	११।१८।२८।५२	११।२०।५२। ७	११।२३।१५।२२	११।२५।१८।३८
	१५	गु	११।२८।[illegible]	०। ०।२४।५८	०। २।४७।२९	०। ५।१०।२०	०। ७।३३। २	०। ९।५५।४३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकः स्पष्टश्चन्द्रः।

मास	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी:२०।०	इष्टघटी:३०।०	इष्टघटी:४०।०	इष्टघटी:५०।०
कार्तिककृष्णपक्षः	१	बु.	०।१२।१८।२४	०।१४।४०।२६	०।१७। १।५६	०।१९।२३।२७	०।२१।४४।५७	०।२४। ६।२८
	२	श.	०।२६।२७।५८	०।२८।४८। ३	१। १। ७।५९	१। ३।२७।५५	१। ५।४७।५२	१। ८। ७।४
	३	र.	१।१०।२७।२०	१।१२।४५। ९	१।१५। २।५८	१।१७।२०।४६	१।१९।३८।३५	१।२१।५६।२
	४	चं.	१।२४।१३।२४	१।२६।२९।११	१।२८।४४।५८	२। १। ०।४५	२। ३।१६।३२	२। ५।३२।१
	५	मं.	२। ७।४६।४८	२। ९।५९।५७	२।१२।१३। ६	२।१४।२६।१५	२।१६।३९।२४	२।१८।५२।३
	६	बु.	२।२१। ४।२३	२।२३।१४।५३	२।२५।२५।२४	२।२७।३५।५४	२।२९।४६।२५	३। १।५६।५
	७	गु.	३। ४। ६।२७	३। ६।१४।१७	३। ८।२२। ७	३।१०।२९।५६	३।१२।३७।४६	३।१४।४५।३
	८	शु.	३।१६।५३।१०	३।१८।५८।३५	३।२१। ४। ०	३।२३। ९।२५	३।२५।१४।५०	३।२७।२०।१
	९	श.	३।२९।२५।४०	४। १।२९।३६	४। ३।३३।५४	४। ५।३६।१२	४। ७।३९।१०	४। ९।४२।४
	१०	र.	४।११।४६। ६	४।१३।४९। ०	४।१५।५०।४०	४।१७।५२।२१	४।१९।५४। १	४।२१।५५।४
	११	चं.	४।२३।५७।२२	४।२५।५९। १	४।२८। ०। ०	५। ०। ०।१६	५। २। १।१२	५। ४। १।४
	१२	मं.	५। ६। २।२५	५। ८। १। १	५।१०। १।३६	५।१२। ३।५२	५।१४। ४। ८	५।१६। ४।२
	१३	बु.	५।१८। ४।४१	५।२०। ४।५७	५।२२। ५।१४	५।२४। ५।३९	५।२६। ६।१९	५।२८। ६।५
	१४	गु.	६। ०। ७।३९	६। २। ८।१९	६। ४। ८।१९	६। ६। ९।१९	६। ८।११।१३	६।१०।१३।१
	३०	शु.	६।१२।१५। ०	६।१४।१६।५३	६।१६।१८।४६	६।१८।२०।४०	६।२०।२२।५२	६।२२।२६।२
कार्तिकशुक्लपक्षः	१	श.	६।२४।३०। ६	६।२६।३३।४३	६।२८।३७।२०	७। ०।४०।५७	७। २।४४।३४	७। ४।४९।३८
	२	र.	७। ६।५५।१७	७। ९। ०।५६	७।११। ६।३६	७।१३।१२।१५	७।१५।१७।५४	७।१७।२४।२
	३	चं.	७।१९।३२।३९	७।२१।४०।५२	७।२३।४९। ४	७।२५।५७।१७	७।२८। ५।२९	८। ०।१३।५८
	४	मं.	७। २।२४।५६	८। ४।३५।५४	८। ६।४६।५१	८। ८।५७।५१	८।११। ८।४९	८।१३।१९।४
	५	बु.	८।१५।३३।१८	८।१७।१६।४९	८।२०। ०।२०	८।२२।१३।५१	८।२४।२७।२२	८।२६।४०।५
	६	गु.	८।२८।५६।५८	९। १।११। २	९। ३।२९। ५	९। ५।४५। ९	९। ८। १।१२	९।१०।१७।३
	७	शु.	९।१२।३५।४०	९।१४।५३।५०	९।१७।१२। १	९।१९।३०।११	९।२१।४८।२१	९।२४। ७।१
	८	श.	९।२६।२७।२३	९।२८।४७।३४	१०। १। ७।४५	१०। ३।२७।५६	१०। ५।४८। ७	१०। ८। ९।१
	९	र.	१०।१०।३१। ४	१०।१२।५२।५०	१०।१५।१४।३५	१०।१७।३६।२१	१०।१९।५८। ६	१०।२२।२०।४
	१०	चं.	१०।२४।४३।३३	१०।२७। ६।१७	१०।२९।२९। ०	११। १।५१।४४	११। ४।१४।४१	११। ६।३७।४
	११	मं.	११। ९। १।२५	११।११।२४।३३	११।१३।४७।५०	११।१६।११। ७	११।१८।३४।२९	११।२०।५७।५
	१२	बु.	११।२३।२१।१९	११।२५।४४।४३	११।२८। ८। ८	०। ०।३१।२६	०। २।५४।२२	०। ५।१७।१
	१३	गु.	०। ७।४०।१०	०।१०। १। ४	०।१२।२५।५८	०।१४।४८। ९	०।१७। ९।५७	०।१९।३१।४
	१४	शु.	०।२१।५१।३३	०।२४।१५।२१	०।२६।३७। ९	०।२८।५७।३३	१। १।१७।५४	१। ३।३८।१
मार्गशीर्षकृष्णपक्षः	१	श.	१। ५।५८।३६	१। ८।१८।५७	१।१०।३८।४४	१।१२।५७। ४	१।१५।१५।२४	१।१७।३३।४
	२	र.	१।१९।५२। १	१।२२।१०।२३	१।२४।२७।४२	१।२६।४४। १	१।२९। ०।२१	२। १।१६।४
	३	चं.	२। ३।३३। ०	२। ५।४९।१९	२। ८। ४। ५	२।१०।१७।५४	२।१२।३१।४३	२।१४।४५।३
	४	मं.	२।१६।५९।२२	२।१९।१३।११	२।२१।२५।१८	२।२३।३६।३१	२।२५।४७।४४	२।२७।५८।५
	५	बु.	३। ०।१०।१०	३। २।२१।२३	३। ४।३१। ६	३। ६।३९।३५	३। ८।४८। ४	३।१०।५६।३
	६	गु.	३।१३। ५। १	३।१५।१३।३०	३।१७।२१। ९	३।१९।२७। ८	३।२१।३३। ७	३।२३।३९। ७
	७	शु.	३।२५।४५। ६	३।२७।५१। ५	३।२९।५७। ४	४। २। ०।५०	४। ४। ४।३३	४। ६। ८।१
	८	श.	४। ८।११।५९	४।१०।१५।४२	४।१२।१९।२५	४।१४।२२।१६	४।१६।२४।२०	४।१८।२६।२
	९	र.	४।२०।२८।२९	४।२२।३०।३३	४।२४।३२।३७	४।२६।३४।४१	४।२८।३५।३३	५। ०।३६।२
	१०	चं.	५। २।३७। ७	५। ४।३७।५५	५। ६।३८।४२	५। ८।३९।२९	५।१०।४०। ५	५।१२।४०।१
	१०	मं.	५।१४।४०।३४	५।१६।४०।४८	५।१८।४१। ३	५।२०।४१।१७	५।२२।४१।३२	५।२४।४१।३
	११	बु.	५।२६।४२।३०	५।२८।४३। ३	६। ०।४३।३५	६। २।४४। ८	६। ४।४४।४०	६। ६।४५।१
	१२	गु.	६। ८।४६।४५	६।१०।४८।१४	६।१२।४९।४४	६।१४।५१।१३	६।१६।५२।४२	६।१८।५४।१
	१३	शु.	६।२०।५६।२४	६।२२।५९।२७	६।२५। २।३०	६।२७। ५।३३	६।२९। ८।३५	७। १।११।३
	१४	श.	७। ३।१४।४१	७। ५।१९।४८	७। ७।२५। २	७। ९।३०।१६	७।११।३५।३०	७।१३।४०।४
	३०	र.	७।१५।४५।५८	७।१७।५२।२९	७।२०। ०। ०	७।२२। ७।३२	७।२४।१५। ३	७।२६।२२।३

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०-१० घटीषु दैनिकश्चंद्रः स्पष्टः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटी: ०।०	इष्टघटी: १०।०	इष्टघटी: २०।०	इष्टघटी: ३०।०	इष्टघटी: ४०।०	इष्टघटी: ५०।०
मार्गशीर्षशुक्लपक्षः	१	चं	७।२८।३०।६	८।०।३८।२५	८।२।४८।३८	८।४।५८।५१	८।७।९।५	८।९।१९।१८
	२	मं	८।११।२९।३१	८।१३।४०।९	८।१५।५३।२	८।१८।५।५५	८।२०।१८।४९	८।२२।३१।४२
	३	बु	८।२४।४४।३६	८।२६।५७।५०	८।२९।११।१४	९।१।२८।३८	९।३।४४।२	९।५।५९।२६
	४	गु	९।८।१४।४९	९।१०।३०।४५	९।१२।४८।२९	९।१५।६।१३	९।१७।२३।५७	९।१९।४१।४१
	५	शु	९।२१।५९।२५	९।२४।१७।५८	९।२६।३७।३९	९।२८।५७।२१	१०।१।१७।३	१०।३।३६।४४
	६	श	१०।५।५६।२६	१०।८।१७।२१	१०।१०।३८।४६	१०।१३।०।१२	१०।१५।२१।३७	१०।१७।४३।३
	७	र	१०।२०।४।३०	१०।२२।२७।१	१०।२४।४९।३२	१०।२७।१२।३	१०।२९।३४।३४	११।१।५७।४
	८	चं	११।४।१९।५३	११।६।४३।२	११।९।६।११	११।११।२९।२१	११।१३।५२।३०	११।१६।१५।४०
	१०	मं	११।१८।३९।२	११।२१।१।२६	११।२३।२५।५१	११।२५।४९।१६	११।२८।१२।४०	०।०।३५।५८
	११	बु	०।२।५८।५४	०।५।२२।५१	०।७।४४।४७	०।१०।७।४४	०।१२।३०।४०	०।१४।५३।४
	१२	गु	०।१७।१५।९	०।१९।३७।१५	०।२१।५९।२१	०।२४।२१।२६	०।२६।४३।३१	०।२९।४।१२
	१३	शु	१।१।२७।५१	१।३।४५।३४	१।६।६।१५	१।८।२६।५६	१।१०।४६।५६	१।१३।५।१७
	१४	श	१।१५।२४।१८	१।१७।४२।५९	१।२०।१।४१	१।२२।२०।२२	१।२४।३८।०	१।२६।५६।४९
	१५	र	१।२९।११।३९	२।१।२८।२८	२।३।४५।१८	२।६।२।७	२।८।१७।१४	२।१०।३२।१९
पौषकृष्णपक्षः	१	च	२।१२।४६।४	२।१५।०।२९	२।१७।१४।५४	२।१९।२९।१९	२।२१।४४।३९	२।२३।५९।२२
	२	मं	२।२६।५।५	२।२८।१६।४९	३।०।२८।३२	३।२।४०।१६	३।४।५०।६	३।६।५९।८
	३	बु	३।९।८।१०	३।११।१७।१२	३।१३।२६।१४	३।१५।३५।१६	३।१७।४३।०	३।१९।४८।२५
	४	गु	३।२१।५५।५०	३।२४।२।१५	३।२६।८।४०	३।२८।१५।५	४।०।२१।८	४।२।२५।२५
	५	शु	४।४।२९।४२	४।६।३४।०	४।८।३८।१७	४।१०।४२।३४	४।१२।४६।५२	४।१४।४९।४१
	६	श	४।१६।५१।५८	४।१८।५४।१६	४।२०।५६।११	४।२२।५८।५१	४।२५।१।८	४।२७।३।१२
	७	र	४।२९।४।१३	५।१।५।१५	५।३।६।१७	५।५।७।१८	५।७।८।२०	५।९।९।२२
	८	चं	५।११।९।५६	५।१३।१०।१०	५।१५।१०।२५	५।१७।१०।१९	५।१९।१०।५४	५।२१।११।८
	९	मं	५।२३।११।२३	५।२५।११।४४	५।२७।१२।५	५।२९।१२।२७	६।१।११।४८	६।३।१३।१०
	१०	बु	६।५।१३।११	६।७।१४।८	६।९।१५।१९	६।११।१६।३०	६।१३।१७।४१	६।१५।१८।५२
	११	गु	६।१७।२०।३	६।१९।२१।१४	६।२१।२३।२०	६।२३।२५।५२	६।२५।२८।२५	६।२७।३०।५७
	१२	शु	६।२९।३३।१०	७।१।३६।२	७।३।३८।५४	७।५।४३।३४	७।७।४८।१५	७।९।५२।५५
	१३	श	७।११।५७।३६	७।१४।२।१६	७।१६।६।५७	७।१८।१३।१२	७।२०।२०।१	७।२२।२६।५०
	१३	र	७।२४।३३।३९	७।२६।४०।२८	७।२८।४७।१७	८।०।५५।१६	८।३।४।४९	८।५।१४।२२
	१४	चं	८।७।२३।५५	८।९।३३।२८	८।११।४३।१	८।१३।५१।१५	८।१६।५।२२	८।१८।१७।२९
	३०	मं	८।२०।२९।१७	८।२२।४१।४४	८।२४।५३।५१	८।२७।६।११	८।२९।२२।२०	९।१।१६।१०
पौषशुक्लपक्षः	१	बु	९।३।५१।१	९।६।५।५०	९।८।२०।४०	९।१०।३६।७	९।१२।५३।१५	९।१५।१०।२४
	३	गु	९।१७।२७।१२	९।१९।४४।४१	९।२२।१।४९	९।२४।१९।५१	९।२६।३६।१	९।२८।५८।११
	४	शु	१०।१।१७।२२	१०।३।३६।१२	१०।५।५५।४२	१०।८।१६।२	१०।१०।३६।५५	१०।१२।५७।४८
	५	श	१०।१५।१८।४१	१०।१७।३९।३४	१०।२०।०।२८	१०।२२।२२।४३	१०।२४।४४।५९	१०।२७।७।१५
	६	र	१०।२९।२९।३०	११।१।५२।४६	११।४।१४।२३	११।६।३७।१०	११।९।०।३७	११।११।२३।४४
	७	चं	११।१३।४६।५१	११।१६।९।५८	११।१८।३४।५७	११।२१।०।२७	११।२३।२५।५७	११।२५।५१।२७
	८	मं	११।२८।१६।५७	०।०।४१।७	०।३।२।५	०।५।२३।३	०।७।४४।१	०।१०।४।५९
	९	बु	०।१२।२५।५७	०।१४।४७।४४	०।१७।१।५९	०।१९।१३।१५	०।२१।५४।३१	०।२४।१६।४६
	१०	गु	०।२६।३९।२	०।२९।०।२	१।१।२१।०	१।३।४१।५८	१।६।२।५६	१।८।२३।५४
	११	शु	१।१०।४४।२०	१।१३।३।३७	१।१५।२२।५५	१।१७।४२।१३	१।२०।१।१०	१।२२।२०।४८
	१२	श	१।२४।३८।५७	१।२६।५६।२५	१।२९।१२।३३	२।१।३०।५१	२।३।४८।९	२।६।५।२८
	१३	र	२।८।२०।५७	२।१०।३५।५१	२।१२।५०।४९	२।१५।५।४०	२।१७।२०।१५	२।१९।३५।२९
	१४	चं	२।२१।४८।१२	२।२४।०।२६	२।२६।१२।४०	२।२८।२४।५४	३।०।३७।८	३।२।४१।२२
	१०	मं	३।४।[illegible]	३।७।३।२३	३।९।१८।५१	३।११।२८।२८	३।१३।२८।६	३।१५।४७।४१

श्रीसंवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टार्कोदयादारभ्य १०–१० घटीषु दैनिकः स्पष्टश्चन्द्रः।

मास	ति.	वा.	इष्टघटी। ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटी। २०।०	इष्ट घटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
माघकृष्णपक्षः	१	बु	३।१७।५५।४७	३।२०। २।४९	३।२२। ९।५१	३।२४।१६।५३	३।२६।२३।५५	३।२८।३०।५७
	२	गु	४। ०।३७।१२	४। २।४१।५४	४। ४।४६।३७	४। ६।५१।१९	४। ८।५६। २	४।११। ०।४४
	३	शु	४।१३। ५।२७	४।१५। ८।२३	४।१७।११। ५	४।१९।१३।४७	४।२१।१६।२९	४।२३।१९।११
	४	श	४।२५।२१।५३	४।२७।२४। २	४।२९।२५।१०	५। १।२६।१९	५। ३।२७।२७	५। ५।२८।३६
	५	र	५। ७।२९।४४	५। ९।३०।५३	५।११।३२।५१	५।१३।३२।१०	५।१५।३२।३०	५।१७।३२।४९
	६	चं	५।१९।३३। ९	५।२१।३३।२८	५।२३।३३।४९	५।२५।३४। ०	५।२७।३४।११	५।२९।३४।२२
	७	मं	६। १।३४।३३	६। ३।३४।४४	६। ५।३४।५५	६। ७।३५।२५	६। ९।३६।१९	६।११।३७।१४
	८	बु	६।१३।३८। ८	६।१५।३९। ३	६।१७।३९।५७	६।१९।४०।५२	६।२१।४२।५१	६।२३।४५। २
	९	गु	६।२५।४७।१४	६।२७।४९।२६	६।२९।५१।३७	७। १।५३।४९	७। ३।५६।१७	७। ६। ०।४४
	१०	शु	७। ८। ४।५२	७।१०। ८।५९	७।१२।१३। ७	७।१४।१७।१४	७।१६।२२।२२	७।१९।२७।२०
	११	श	७।२०।३३।१७	७।२२।३९।५४	७।२४।४६।११	७।२६।५२।२८	७।२८।५८।४५	८। १। ६।२७
	१२	र	८। ३।१५।२०	८। ५।२४।१४	८। ७।३३। ७	८। ९।४२। १	८।११।५०।५४	८।१४। ०।३४
	१३	चं	८।१६।१२। ८	८।१८।२३।४३	८।२०।३५।१७	८।२२।४६।५२	८।२४।५८।२६	८।२७।१०।१८
	१४	मं	८।२९।२४।४७	९। १।३८।५६	९। ३।५३। ५	९। ६। ७।१४	९। ८।२१।२३	९।१०।३६।१५
	१०	बु	९।१२।५१। २	९।१५। ९।४९	९।१७।२६।३७	९।१९।४३।२४	९।२२। ०।११	९।२४।१७।४१

मास	ति.	वा.	इष्टघटी। ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटी। २०।०	इष्ट घटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
माघशुक्लपक्षः	१	गु	९।२६।३६।१४	९।२८।५४।४६	१०। १।१३।१७	१०। ३।३१।४९	१०। ५।५०।२०	१०। ८।१०।१४
	२	शु	१०।१०।३०।५२	१०।१२।५१।३०	१०।१५।१२। ९	१०।१७।३२।४७	१०।१९।५३।२६	१०।२२।१५।१६
	३	श	१०।२४।३७। ९	१०।२६।५९। २	१०।२९।२०।५५	११। १।४२।४८	११। ४। ४।५९	११। ६।२७।४८
	४	र	११। ८।५०।३७	११।११।१३।२६	११।१३।३६।१५	११।१५।५९। ४	११।१८।२२।२०	११।२०।४५।४७
	५	चं	११।२३। ९।१४	११।२५।३२।४१	११।२७।५६। ८	०। ०।१९।३३	०। २।४२।३४	०। ५। ५।३६
	६	मं	०। ७।२८।३७	०। ९।५१।३९	०।१२।१४।४०	०।१४।३७।२६	०।१६।५९।५७	०।१९।२२।२८
	८	बु	०।२१।४४।५९	०।२४। ७।३०	०।२६।३०। १	१।२८।५१।२२	१। १।१२।३७	१। ३।३३।५१
	९	गु	१। ५।५५। ८	१। ८।१६।२३	१।१०।३७।३६	१।१२।५७। ०	१।१५।१६।४४	१।१७।३६।२९
	१०	शु	१।१९।५६।११	१।२२।१५।५७	१।२४।३४।३०	१।२६।५२। २	१।२९। ९।३४	२। १।२७। ६
	११	श	२। ३।४४।३९	२। ६। २।११	२। ८।१८।२५	२।१०।३३।४६	२।१२।४९।१७	२।१५। ४।४८
	१२	र	२।१७।२०।१९	२।१९।३५।५०	२।२१।४९।१०	२।२४।१२। १	२।२६।२४।५२	२।२८।३७।४३
	१३	चं	३। ०।५०।३४	३। ३। ३।२५	३। ५। ४।११	३। ७।१४।२४	३। ९।२४।३७	३।११।३४।५०
	१४	मं	३।१३।४५। ४	३।१५।५५।१७	३।१८। ३।४६	३।२०।११।१९	३।२२।१८।५१	३।२४।२६।२६
	१५	बु	३।२६।३४। ०	३।२८।४१।३३	४। ०।४८।११	४। २।५३।२२	४। ४।५८।३०	४। ७। ३।४०

मास	ति.	वा.	इष्टघटी। ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटी। २०।०	इष्ट घटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
फाल्गुनकृष्णपक्षः	१	गु	४। ९। ८।४९	४।११।१३।५९	४।१३।१९। ९	४।१५।२२।१२	४।१७।२५।१२	४।१९।२८।१३
	२	शु	४।२१।३१।१४	४।२३।३४।१४	४।२५।३७।१५	४।२७।३९।३१	४।२९।४०।५८	५। १।४२।२५
	३	श	५। ३।४३।५३	५। ५।४५।२०	५। ७।४६।४७	५। ९।४८।१५	५।११।४८।४५	५।१३।४९। ८
	४	र	५।१५।४९।११	५।१७।४९।५५	५।१९।५०।१८	५।२१।५०।४२	५।२३।५१। ३	५।२५।५१।१४
	५	चं	५।२७।५१।२५	५।२९।५१।३६	६। १।५१।४७	६। ३।५१।५८	६। ५।५२। ९	६। ७।५२।३६
	५	मं	६। ९।५३।१६	६।११।५३।५६	६।१३।५४।३६	६।१५।५५।१६	६।१७।५५।५६	६।१९।५६।३६
	६	बु	६।२१।५८।२२	६।२४। ०।११	६।२६। २। १	६।२८। ३।५०	७। ०। ५।४०	७। २। ७।२९
	७	गु	७। ४।१०। ४	७। ६।१३।४१	७। ८।१७।१८	७।१०।२०।५५	७।१२।२४।३२	७।१४।२८। ९
	८	शु	७।१६।३१।४६	७।१८।३७।१०	७।२०।४३। ३	७।२२।४८।४६	७।२४।५४।२९	७।२७। ०।१२
	९	श	७।२९। ५।५५	८। १।११। ८	८। ३।१२।२६	८। ५।२९।४५	८। ७।३८। ३	८। ९।४६।२२
	१०	र	८।११।५४।४०	८।१४। ३।५३	८।१६।१४।५३	८।१८।२५।५३	८।२०।३६।५४	८।२२।४७।५४
	११	चं	८।२४।५८।५५	८।२७।१०।१०	८।२९।२४। ५	९। १।३७।४१	९। ३।५१।१६	९। ६। ४।५२
	१२	मं	९। ८।१८।२७	९।१०।३२।४१	९।१२।४८।५१	९।१५। ५। १	९।१७।२१।१२	९।१९।३७।२२
	१३	बु	९।२१।५३।३३	९।२४।१०।२३	९।२६।२८।२९	९।२८।४६।२९	१०। १। ४।१२	१०। ३।२२।३५
	१४	गु	१०। ५।४०।३८	१०। ७।५९।५८	१०।१०।२०।१६	१०।१२।४०।३५	१०।१५। ०।१३	१०।१७।२१। २
	१०	शु	१०।१९।४१।२०	१०।२२। २।५७	१०।२४।२४।३३	[illegible]	[illegible] ७।४३	११। ११२९।१९

श्री संवत् २०१० रूपगढ़ (शतद्रु) स्पष्टसूर्योदयसमये दृक्पक्षीया दैनिकाः स्पष्टा ग्रहाः ।

मासः	ति.	वा.	इष्टघटीः ०।०	इष्टघटीः १०।०	इष्टघटीः २०।०	इष्टघटीः ३०।०	इष्टघटीः ४०।०	इष्टघटीः ५०।०
फाल्गुनशुक्लपक्षः ।	२	श	११। ३।५१।१०	११। ६।१३।५६	११। ८।३६।४२	११।१०।५९।२९	११।१३।२२।१५	११।१५।४५। २
	३	र	११।१८। ८। १	११।२०।३१। ७	११।२२।५४।१४	११।२५।१७।२१	११।२७।४०।२८	०। ०। ३।३५
	४	चं	०। २।२६।४३	०। ४।४९।५२	०। ७।१३। १	०। ९।३६। ९	०।११।५९।१८	०।१४।२२।२९
	५	मं	०।१६।४५। २	०।१९। ७।४६	०।२१।३०।२९	०।२३।५३।१२	०।२६।१५।५६	०।२८।३८।४५
	६	बु	१। ०।५९।२०	१। ३।२०।५६	१। ५।४२।३१	१। ८। ४। ७	१।१०।२५।२६	१।१२।४५।२७
	७	गु	१।१५। ५।२८	१।१७।२५।३०	१।१९।४५।३१	१।२२। ५।३२	१।२४।२४।३६	१।२६।४२।३१
	८	शु	१।२९। ०।२७	२। १।१८।२१	२। ३।१६।१८	२। ५।५४।१४	२। ८।१०।५४	२।१०।२६।५५
	९	श	२।१२।४२।५६	२।१४।५८।५७	२।१७।१४।५८	२।१९।३०।५९	२।२१।४४।५७	२।२३।५८।२१
	१०	र	२।२६।११।४६	२।२८।२५।१०	३। ०।३८।३५	३। २।५१।५९	३। ५। ३।२३	३। ७।१४।१४
	११	चं	३। ९।२५। ६	३।११।३५।५७	३।१३।४६।४९	३।१५।५७।४०	३।१८। ६।४१	३।२०।१४।४७
	१२	मं	३।२२।२२।५३	३।२४।३१। ०	३।२६।३९। ६	३।२८।४७।१२	४। ०।५४।१२	४। ३।५९।४५
	१३	बु	४। ५। ५।१८	४। ७।१०।५१	४। ९।१६।२५	४।११।२१।५८	४।१३।२७।२५	४।१५।३०।५६
	१४	गु	४।१७।३४।२७	४।१९।३७।५८	४।२१।४१।२९	४।२३।४५। ०	४।२५।४८।३१	४।२७।५१। १
	१५	शु	४।२९।५२।४५	५। १।५४।२९	५। ३।५६।१४	५। ५।५७।५८	५। ७।५९।४३	५।१०। १।२४
चैत्रकृष्णपक्षः ।	१	श	५। १२। २।०	५।१४। २।३६	५।१६।३ ।१३	५। १८।३।४९	५।२०। ४।२६	५।२२। ५। २
	२	र	५। २४।५।२७	५। २६।५।२४	५।२८।५। ४१	६।०। ५। ४९	६। २। ५।५६	६ ।४। ६। ३
	३	चं	६। ६।६। १०	६। ८।६। ३१	६।१०। ७।१२	६। १२।७।३१	६।१४।८ ०	६।१६। ८।२९
	४	मं	६।१८।८।५८	६। २०।९।३१	६।२२।१०। २	६।२४।१२।३३	६।२६।१४। ४	६।२८।१५।३५
	५	बु	७। ०।१७। ६	७। २।१८।३७	७।४।२० ।५८	७। ६।२४। ८	७। ८।२७।१८	७।१०।३०।२८
	६	गु	७।१२।३३।३९	७।१४।३६।४९	७।१६।४० १०	७।१८।४३।२०	७।२०।४६।३९	७।२२।४९।५९
	७	शु	७।२४।५३।१९	७।२६।५६।३८	७।२८।५९।५८	८। १।६ ।३७	८। ३।१६।२३	८।५ ।२६। ९
	८	श	८।७ ।१५।५५	८। ९।४५।४१	८।११।५५।२७	८।१४।५। २४	८।१६।१५।४९	८।१८।२६। ८
	९	र	८।२०।३६।३०	८।२२।४६।५२	८।२४।५७।१४	८। २७। ८।९	८।२९।२१। ९	९।१ ।३४। ९
	१०	चं	९। ३।४७। ९	९। ६। ० ।१९	९। ८।१३ ।१९	९।१०।२६।४१	९।१२।४०।२१	९।१४।५८। १
	११	मं	९।१७।१३।४१	९।१९।२९।२१	९।२१।४५। १	९।२४।१। १८	९।२६।१८।५७	९।२८।३६।३६
	१२	बु	१०।०।५४।१६	१०।३।११।५५	१०।५।२९।१४	१०।७।४८।१५	१०।१०। ८। १	१०।१२।२७।४८
	१३	गु	१०।१४।४७।३५	१०।१७।७।२१	१०।१९।२७।८	१०।२१।४८।११	१०।२४।९ ।३६	१०।२६।३१। २
	१४	शु	१०।२८।५२।३७	११।१।१३।५३	११।३।३५।२६	११।५।५७। ५७	११।८ ।२०।२८	११।१०।४२।५९
	३०	श	११ ।१३।५।१०	११।१५।२८।१	११।१७।५०।४९	११।२०।१३।५३	११।२२।३६।५७	११।२५। ०। १

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः ।

खचरगतिविधानामुद्गमानुद्गमाद्यान् विविधवचनजालांल्लोकयन्शास्त्रसिद्धान् । भरतभुविसमस्तायाञ्च पञ्चापदेशे, करकलममूहूर्तालीमहंसंलिखामि ॥

सं० २०१० मध्ये विवाहादिमुहूर्ताः ।

अथ समयशुद्धिः

गुर्वस्तः—द्वि. वैशाख कृ. १० बुधवार से ज्येष्ठ कृ. १२ चन्द्रवार तक (सौरमान से वै. प्र. ३१से ज्ये.प्र.२६ तक) गुरु. का अस्त रहेगा शुक्रास्त—प्र. वै. कृ. १२ शनिवार से प्र. वैशा. शु.२ बुधवारतक (सौरमान से ३० चै. से वै. प्र. १ तक) शुक्र का पश्चिममें अस्त रहेगा ।

तदनन्तर—पौ. कृ. १२ भृगुवार से फा. कृ. ४ तक (सौरमान से पौ. प्र. १८ से फा. प्र. १० तक) शुक्र का पूर्व से अस्त रहेगा । ग्रहलाघवकार ने जो शुक्रोदयास्त के दिन लिखे हैं वह स्थूल रूप से मध्यम मान के हैं । सूक्ष्म-स्पष्ट-मान के तो श्री केतकराचार्यकृत ज्योतिर्गणित से निकलते हैं सो हमने यही स्पष्ट करके लिखे हैं आकाशीय वातावरण ठीक हो तो प्रत्यक्ष दिखा भी सकते हैं ।

सूचना—अस्त से पहिले तीन दिन वृद्धत्व दोष और उदय से पीछे तीन दिन बाल्यत्व दोष विशेष होता है जो अस्त की भांति सर्व शुभ कार्यों में वर्जित है ।

शुद्धानि सपरिहाराणि च विवाहमुहूर्तानि

सर्वदेशों के लिये—

आ. प्र. ५ (ज्ये.शु.७गु) उ.फा. ।।।।।।ऽ।। ल. १अंश ११ घा.

आ. प्र. ७ (ज्ये. शु. ९ श.) ह. ।ऽ।।।।ऽ।।। ल. २ मु. घा.

आ. प्र. ९ (ज्ये. शु. १० चं.) स्वा. ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ५

आ. प्र. ११ (ज्ये. शु. १२बु.) अनु.ऽमू.ऽ।ऽशु.।।।।।ल. २चं. घा.

(शुक्रस्य पादवेधाद् वेधाभावः)

आ. प्र. १३ (ज्ये शु. १४ शु.) मू. ।।।।ऽश. ।ऽ।। ल. १

(गणितसे क्रांति साम्याभाव है)

आ. प्र. २० (आ. कृ. ७ भृ.) उ. भा.ऽ शु. ।।।ऽ रो. ।ऽ।।

दि. ल. ५ चं. घा.

आ. प्र. २० (आ. कृ. ७ भृ.) रे. ।।।।।ऽऽ।ऽ ल. २ दाबा घा.

बा. प्र. २१ (बा. कृ. ८ श.) रे. ।।।।।ऽऽ।। दि. ल. ५ चं. दा.
आ. प्र. २४ (आ. कृ. ११ मं.) रो. ।ऽऽ गु. ।।।ऽ।। ल. २

(वृषकर्क के पूर्णचन्द्र लग्न में ग्राह्य हैं)

मार्ग. प्र. ६ (मार्ग. कृ. १श.) रो. ।।।ऽ।।ऽ।। ल. ३ वा. ५ भृ. दा.
मार्ग प्र. १२ (मार्ग. कृ. ७ शु.) म.ऽ गु. शु. ।।।।।ऽ।। ल. गो. वा ३
मार्ग. प्र. १४ (मार्ग कृ. ९ र.) उ. फा. ऽ।।।ऽ नृ. ।ऽ।। ल. १ अंश १२ उ.
मार्ग. प्र. १६ (मार्ग. कृ. १० मं.) ह. ।।।।ऽ चौ ऽऽ।। ल. गोधू.
फा. प्र. २१ (फा. शु. २ श.) उ. भा. ।।।।ऽ घ. १३ उ. नृ. ।।।। ल. चि.
फा. प्र. २१ (फा. शु. २ श.) रे. ।।।।ऽ नृ ऽ।।। ल. १० बं. ६ उ.
फा. प्र. २४ (फा. शु. ३ र.) रे. ।।।।।ऽ।।। दि. ल. ४
फा. प्र. २७ (फा. शु. ६ बु.) रो. ।।।।ऽ रो. ऽऽ।।ल. १० शु. दा.

देशाचार से केवल पंजाब देश के लिये।

श्रा. प्र. ४ (आषा. शु. ८ र.) स्वा. ।।।।।ऽऽ।। ल. अन्यगो. वा. २ चं. दा
श्रा. प्र. १५ (श्रा. कृ. ४ गु.) उ. भा. ।।।।ऽनृ. घ. ४८ उ. ।ऽ।। ल. २, ३
श्रा. प्र. १६ (श्रा. कृ. ५ शु.) रे. ।।।।।ऽ।।। ल. २ वा ३ अंश २० या.
श्रा. प्र. २८ (श्रा. शु. ३ बु.) उ. फा. ।।।।ऽरोऽ।।। ल. २ वा. ३
भा. प्र. ११ (भा. कृ. २ बु.) उ. भा. ।।।।।।।।। ल. २ वा. ३ अ. ग्र. दा.
भा. प्र. २६ (भा. शु. २ गु.) ह. ।।।।ऽचौ.ऽ।।। ल. ३
भा. प्र. २८ (भा. शु. ४ श.) स्वा. ।।।।ऽरो. घ. ४३ उ.ऽऽ।। ल. ३
भा. प्र. ३० (भा. शु. ६ चं.) अनु. ।।।।।।।।। ल. अन्य गो.
आ. प्र. २६ (आश्वि. शु. ३ र.) अनु. ।।।।ऽचौ. ।।।। ल. गो.
आ. प्र. २८ (आश्वि. शु. ५ मं.) मू. ।।।ऽगु.ऽरो. ।।।। ल. ३ चं. दा.
आ. प्र. २९ (आ. शु. ६ बु.) मू. ।।।ऽगु. ।।।।। ल. गो.
का. प्र. ४ (आ. शु. १३ मं.) उ. भा. ।।।ऽमं. ।।।।। ल. ३ वा. गो.
का. प्र. ९ (का. कृ. ३ र.) रो. ।।।ऽबु.ऽरो. ।।।। ल. ५ वा. गो.
का. प्र. १५ (का. कृ. ९ श.) म.ऽगु. ।।।।।ऽ।। ल. अन्य गो.

सूचना—कार्तिक मास में विवाह मुहूर्त पंजाब के पहाड़ों में करते हैं अन्यत्र नहीं।

आर्ष (कात्यायन) मतक शुद्ध साहे

आषा. प्र. १७ (आ. कृ. ४ भौ.) घ. ।।।।ऽचौ ऽऽ।। ल. १ वा. २
श्रा. प्र. १७ (श्रा. कृ. ७ श.) अश्वि.ऽगु. ।।ऽश.ऽचौ. ।ऽ।। ल. २ वा. ३
आश्वि. प्र. ५ (भा. शु. १२ र.) ध. ।।।।।ऽ।।। ल. २ वा. ३ शु. दा.
का. प्र. ६ (आ. शु. १५ गु.) अश्वि. ।ऽ।।ऽमृ. ।।ऽ।। ल. ५ अ. ग्र. दा.
का. प्र. २८ (का. शु. ७ शु.) श्र.ऽश.ऽ।ऽके. ।।ऽ।। ल. गो.
मार्ग. प्र. २५ (मार्ग. शु. ४ गु.) श्र.ऽश. ।।।ऽचौ. घ. ४४ या. ।ऽ।। ल. गो. वा. ६ शु. दा.
मार्ग. प्र. २६ (मार्ग शु. ५ शु.) ध. ।।।।ऽरो. घ. ४३ उ. ।।।। ल. ५ चं. दा. वा गो.
फा. प्र. २४ (फा. शु. ६ र.) अश्वि. ।।।।।।।ऽआवश्यकेल. १० श. दा. दग्धा दा.

अत्र क्वचित्स्मृतिदृष्टिदोषश्चेत्तन्नवर्ज्यं [illegible]

नोट—इस वर्ष स्थानाभावसे अशुद्ध साहों का पूरा विवरण नहीं लिख सके जिस विद्वान् को किसी साहे का दोष पूछना हो जवाबी पत्र भेजकर पूछ सकता है।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहान्तं कलौ पञ्चविवर्जयेत्॥

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

कात्यायनेन मुनिना तु विवाहताराः। अश्वावती शवलकर्णधनिष्ठकाख्याः।
उक्तास्तदार्षमतमान्यतयाऽभ्युपेयं, सर्वैर्बुधैर्भरतभूमिभवैरशकम्॥

गत् सं० २००७ वि० से मैं वेद के कल्प भाग अर्थात् पारस्कर गृह्यसूत्र की चतुर्थी कण्डिका के प्रथम काण्डोक्तसप्तमसूत्र "त्रिषु त्रिषूत्तरादिषु के प्रमाणानुसार अश्वि० चि० श्र० ध० इस नक्षत्र चतुष्टयी के साहे भी शोधकर लिख रहा हूं। जिसे देखकर अमृतसर में गत् सं० २००७ द्वि० आषाढ़ शु, ३ को सायंकाल ६ बजे श्री गंगाराम जी के शिवालय में वयोवृद्धश्री पं० बैकुण्ठ नाथजी जेतली के सभापतित्व में सुयोग्य विद्वानों की एक विराट सभा हुई थी, जिसमें महर्षि श्री पूज्य चिट्ट बल्लू जी के वंशधर सुयोग्य पं० गिरधारीलालजी सूर्यपंचाङ्ग कर्त्ता भी पधारे थे। परस्परवाद विवाद के अनन्तर सिद्धान्ततः निर्णय हुआ था कि श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग में जो महर्षि कात्यायन के मत से पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त अन्य श्रवणादि ४ नक्षत्रों में विवाह लगाये हैं वह भी सर्वथा पुनीत और शास्त्र सम्मत है। जो श्रद्धालु सज्जन वैदिक आर्ष ग्रंथों में श्रद्धा रखते हों, वे निःसंकोच इन नक्षत्रों में विवाह कर सकते हैं।

इस सभा के अनन्तर मार्गशीर्ष प्र० १८ को फिर हिन्दूसभा कालेज अमृतसर में सभा हुई जिसमें सबसे पहले श्री मान पं० ज्ञानचन्द्रजी ज्यो० जी ने तथा श्री पं० गुरमुखराय जी वैद्यराज ने श्रवणादि नक्षत्रों के समर्थन में विद्वत्तापूर्ण भाषणं दिये। तदनु श्री पं० लालचन्द्रजी के सुपुत्र पं० ज्ञानचन्द्र जी जेतली चौड़ा खूह कटरा दूलो ने उपर्युक्त नक्षत्रों के समर्थन मे बड़ी ही गवेषणापूर्ण प्रभावोत्पादक व्यवस्था सुनाई।

तदनन्तर मैंने भी यथामति कहा कि महर्षि कात्यायन त्रिकाल दर्शी थे। उन्होंने हमारे अर्थात् यजुर्वेदियों के लिए यह श्रवणादि नक्षत्रचतुष्टयी भी विवाहार्थ शुभ कहीं हैं अन्यसाम तथा ऋग्वेदियों के लिये नहीं। इसीलिये "सत्कृत्य मुक्तावलि" ग्रन्थ में लिखा है— चित्राश्रवण धनिष्ठाश्विनी नक्षत्रं यजुर्वेदिविषयम्।

अर्थात्— चित्रा, श्रवण धनिष्ठा और अश्विनी नक्षत्र मे यजुर्वेदियों का विवाह होता है इत्यादि। तत्पश्चात विपक्ष के कई एक विद्वानों व सहयोगियों ने भी इस नक्षत्र चतुष्टयी में वृथा ही दोष दिखलाते हुए परतः प्रमाण अर्थात् निबन्धोक्त प्रमाणों से खण्डन करना चाहा था, परन्तु वे तत्त्वतः खण्डन न कर सके। क्योंकि कहा है—

वेदाः प्रमाणं प्रथमं सूत्रमेव ततः परम्। स्मृतयश्च पुराणानि भारते मुनिपंगवाः अन्यान्यपि मुनिश्रेष्ठा शास्त्राणि सुबहूनि च सर्ववेदाविरोधेन प्रमाणं नान्यवर्त्मना (सूतसंहिता)

सुयोग्यवैदिक विद्वानों को सम्यक्तया ज्ञात है कि जो दोष इन नक्षत्रों मे ग्रंथकारों ने लिखे हैं वे साम व ऋग्वेदियों के लिये हैं, हम यजुर्वेदियों पर वह दोष लागू नहीं हो सकते। अन्यथा सूत्र व्यर्थ हो जाता है। जो कि स्वतः प्रमाण होने के कारण असंभव है। श्रुतिस्मृति [illegible] राणयोर्विरोधे स्मृतिरेव बलवती।

प्राचीन काल में तो यजुर्वेदियों के इन नक्षत्रों में विवाह सदैव होते थे, परन्च कुछ काल पश्चात् विद्वानों का वैदिक ग्रन्थों की ओर जैसा ध्यान होना चाहिए था, वैसा न होने के कारण ही इन नक्षत्रों में विवाह न करने की भूल हुई है । इन नक्षत्रों की तरह अपने वेद की शाखा सूत्र के अनुसार कोई वार एक को शुभ है तो दूसरे वेद शाखादि के अनुसार कर्म करनेवालों को अशुभ फल देने वाला होता है । जैसे—मंगलवार यजुर्वेदियों के यज्ञोपवीत संस्कार में ज्योतिः प्रकाशानुसार अशुभ है (मरणं च भौमे) और उधर वही सामवेदियों के लिए शुभफलप्रद है । यदि हम सामवेदियों को (मरणं च भौमे) का प्रमाण देकर भौमवार उनके लिए अशुभ सिद्ध करना चाहें, तो वह अपने सामवेद की मर्यादानुकूल "सामवेदानां कुजवारेऽप्युपनयनमिति स्मार्तभट्टाचार्येणोक्तम्" कहकर हमारे प्रमाण को नहीं मानेंगे ।

माननीय विचारशील विद्वज्जनोंको चाहिए कि अपने वेद की शाखा सूत्र के अनुसार स्वकर्तव्यकर्मानुष्ठान करने में शंकाशील न हों क्योंकि वेद के विधि भाग में भगवान् कात्यायन कभी अशुद्ध सदोष नहीं लिख सकते थे (श्रुतिर्यत्र प्रमाण स्याद्युक्तिका तत्र नारद) । बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इन सूत्रोक्त नक्षत्रों के अनुसार अब पंजाब व यूपी के कई पचाङ्ग कर्ता विवाह मुहूर्त लिखेंगे । पूर्वी पंजाब में बहुत जगह इन नक्षत्रों में सहर्ष विवाह हो रहे हैं । विद्वज्जनो ! कुतर्क से आर्षमत का खण्डन नहीं हो सकता । कहा है:—

या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः । सर्वास्ता निष्फला प्रेत्य तमो निष्ठा हि ताः स्मृताः । उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानि चित् । तान्यर्वाक्कालिकतया निष्फलान्यनृतानि च ।। मनुः ।। और देखिये—सरहन्द शहर के सुप्रसिद्ध श्रीदुर्गा भवन में भी इन्हीं नक्षत्रों के विषय में विद्वत्प्रवर श्री पं० लज्जारामजी संड, तथा श्री पं० ज्वाला प्रसादजी कर्मठ तथा श्री पं० जगदीश रामजी ज्योतिषी नालेगढिये आदि २ प्रसिद्ध विद्वानोंका सम्मेलन हुआ, जिसमें परस्पर विचार के अनन्तर सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि कात्यायन सूत्र हम यजुर्वेदियों को सर्वथा मान्य है, सूत्रोक्त चित्रादि वैदिक विवाह नक्षत्रों के विषयमें जो अन्य-ग्रन्थों में शापित या दोषयुक्त कहा है, वह अशुभ फल साम व ऋग्वेदी द्विजातियों के लिय संभव है, हम यजुर्वेदियों के लिये नहीं क्योंकि हमारा सूत्र इनमें विवाह की आज्ञा देता है (पञ्चाङ्ग कर्ता) (२०-५-५२)

नोट—१ यदि साहों में विवाह लग्न दिन में प्रातः का शुद्ध हो तो बरात एक दिन पहले पहुंच जाना योग्य है । क्योंकि उस दिन पहले सायंकालतक शान्तिकृत और जूठा टिक्का आदि रस्में भली प्रकार सम्पन्न हो सकेंगी ।।

२ विवाहादि मुहूर्तों में बाण-विचार तात्कालिक स्पष्टसूर्य के भुक्तांशों पर ही किया जाना शास्त्रसम्मत है, प्रविष्टों पर विचार करना ठीक नहीं, ऐसा काशी काश्मीर तक के सम्पूर्ण विद्वान् मानते हैं और वही जम्बू पटियाला आदि के प्राचीन पञ्चांगों से सुस्पष्ट है । किसी भी प्रामाणिक (मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त मार्तण्ड) मूल ग्रन्थकार ने पश्चिम वा उत्तर भारतीयों के लिये 'प्रविष्टों पर से बाण विचार करना चाहिए' ऐसा नहीं लिखा ।।

३ यदि गुरु शुक्र के उदयानन्तर ५-७ दिन के भीतर विवाह मुहूर्त बनता हो तो साहे चिट्ठी माईयां पेड़े माष हस्तादि विवाहांगकृत्य का आरम्भ अस्त होने से पहिले ही से प्रारम्भ कर लेना चाहिये ।

उपनयन मुहूर्त

यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि ब्राह्मणादि जातियों में जन्मने वाले बालक प्रायः स्वजात्युक्त गुण ९० फीसदी वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्मसे ही साथ लाते हैं । अन्य यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कारों से उनमें उस सत्याशक्ति का क्रमशः विकास होता है, यदि वह संस्कार वर्णोचित आयु और शुभ समय में किये जावें ।

चै. शु. ३ बुध अश्वि. ८।५१ या. चै. शु १० बुध पुष्य १।४८ उ. चै. शु. ११ गुरु आश्ले. ७।४१ उ. प्र. वै. कृ. २ बुध स्वा. ७।७ उ. द्वि वै. शु. ५ चं. पुन. पुष्य ज्ये. शु. १० चं. स्वा. फा. शु. ३ रवि रेवती चै. कृ. २ रवि चित्रा ।

नोट—अत्यावश्यकता में चन्द्र बल देखकर सतीर्थ पर अन्य समय भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है । इसी तरह ऋषितर्पण के समय भी मंत्र दीक्षा जनेऊ-लिया जा सकता है ।

द्विरागमन मुहूर्त

का. शु. १२ बुध. रे. मार्ग. कृ. ३ चन्द्र मृग. १६।३१ या. मार्ग. कृ. ५ बुध. पुन. मार्ग. कृ. १० चन्द्र उ. फा. मार्ग शु. ३ बुध. उषा. ८।४१ उ. मार्ग. शु. ५ शुक्र. श्र. ध. फा. शु. ३ रवि. रेवती फा. शु. ७ गुरु रोहिणी—

सूचना—यदि विवाह दिन से १६ दिन के अन्दर द्विरागमन हो जावे तो उपर्युक्त मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं,

विशेष—यदि दिपावली को दीपों के प्रकाश में स्त्री पति के घर में आवे तो उसमें भी कोई मास नक्षत्रादि की शुद्धि न देखे । ऐसे समय पतिगृह प्रवेश हो तो लक्ष्मी वृद्धि व सर्वसुख प्राप्त होता है ।

जैन पर्व निर्णय: श्री वीर सं० २४७९-८० आत्म सं० ५७-५८ शाका सं० १८७५, वि० सं० २०१० ई० सन १९५३-५४

नाम पर्व	पक्ष	तिथि	वार	मास	प्रविष्टे	ता०	मास	सन्
श्रीबुद्धि विजय (बूटेराये) जी का स्वर्ग	चैत्र शुदि	०१	चंद्र	चैत्र	०४	१६	मार्च	१९५३
श्रीमद्विजय आनन्दसूरी (आत्माराम) जीका जन्मदिन	,,	,,	,,	,,	,,	,,		,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली आम्बिल शुरु	चैत्र शुदि	०८	रवी	चैत्र	१०	२२	मार्च	१९५३
,, वर्धमान (महावीर) जयन्ती	,, ,,	१३	शनि	,,	१६	२८	,,	१९५३
,, सिद्धचक्रओली सं०सिद्धा०मेला चैत्री पुणम,	,,	१५	चंद्र	,,	१८	३०	,,	,,
श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ० द्वि०वै०	शुदि	०३	शनि	ज्येष्ट	०३	१६	मई	,,
,, हस्तिनापुर तीर्थ मेला	,, वैशाख शुदि	,,	,,	,,	,,	,,		,,
,, विजयानंद (आत्मा०) स्व०शा० ५८ गुरुज्ये०	,,	०८	शुक्र	आषाढ़	०६	१९	जून	,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	आषाढ़ शुदि	९	शनि	श्रावण	०३	१८	जुलाई	,,
चौमासी चौदस	आ० ,,	१४	,,	,,	१०	२५	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	आ० ,,	१५	रवि	,,	११	२६	,,	,,
श्रीनेमनाथ भगवान् का जन्म दिन	श्रावण ,,	०५	शुक्र	,,	३०	१४	अगस्त	,,
,, पर्यूषण पर्व अठाई शुरु	भादव वदि	१२	शनि	भाद्रपद	२१	०५	सितंवर	,,
,, कल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण	,, ,,	१४	चंद्र	,,	२३	०७	,,	,,
,, कल्पसूत्र वांचना प्रारम्भ	,, ,,	३०	मंगल	,,	२४	०८	,,	,,
,, वीरजन्म उत्सव	,, शुदि	०१	बुध	,,	२५	०९	,	,,
,, संवत्सरीपर्व	,, ,,	०४	शनि	,,	२८	१२	,,	,,
जगद्गुरु विजयहीर सूरी स्वर्गदिन	,, ,,	११	शनि	आश्विन	०४	१९	,,	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली आंबिल शुरु	आश्विन ,,	६	बुध	,,	२९	१४	अ०	,,
,, सिद्ध चक्र आंबिल ओली संपूर्ण	,, ,,	१५	गुरु	कार्तिक	०६	२२	,,	,,
,, वर्धमान (निर्वाण) दीपावली	कार्तिक वदि	३०	शुक्र	,,	२१	०६	नवंबर	,,
,, गौतमस्वामीकेवलज्ञानश्री वी०सं०२४८०	,, शुदि	०१	शनि	,,	२२	०७	,,	,,
भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्मदिन	,, ,,	०२	रवि	,,	२३	०८	,,	,,
ज्ञान (सौभाग्य) पचमी	,, ,,	०५	बुध	,,	२६	११	,,	,,
चौमासी अठाई शुरु	,, ,,	०६	गुरु	,,	२७	१२	,,	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	गुरु	मार्गशिर	०४	१९	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण कार्तिकी पुनम	,, ,,	१५	शुक्र	,,	०५	२०	,,	,,
श्रीसिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर मेला	,, ,,	,,		,,	,,	,,	,,	,,
जगद्गुरु विजय हीरसूरी जन्मदिन	म.गंशिर वदि	०७	शुक्र	,,	१२	२७	,,	,,
मौन एकादशी (१५०) कल्याणकदिन	,, शुदि	११	बुध	पौष	०२	१६	दि०	,,
पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौष वदि	१०	बुध	,,	१६	३०	,,	,,
श्रीऋषभदेव मेरु त्रयोदशी	माघ ,,	१३	चंद्र	माघ	२०	०१	फरवरी	१९५४
चौमासी अठाई शुरु	फाल्गुण शुदि	७	गुरु	फाल्गुण	२८	११	मार्च	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	गुरु	चैत्र	०५	१८	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,, ,,	१५	शुक्र	,,	६	१९	,,	,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा	चैत्र वदि	८	शनि	,,	[illegible]			

वेद उपनिषदादि ग्रन्थ

अथर्ववेद मूल अजमेर बुकसाइज ५) अथर्ववेद-सुबोध हिन्दीभाष्य सातवलेकर (१ से १८ कांड तक) २६) अथर्ववेद-सायण भाष्य तथा हिन्दी टीका सहित पं० रामस्वरूप संपूर्ण ९०) अथर्ववेद हि० टीका जयदेव ४ भाग५०) अथर्ववेद-पैप्पलाद शाखा ३०) अ०व० बृहत्सर्वानुक्रमणी ६) अ. व. कौशिकगृह्यसूत्र हिन्दी टीका सहित ४५) अ. व. की प्राचीनता।=) अ. व. दन्त्योष्ठ-विधि १॥) अप्रकाशित सामान्य उपनिषद-ब्रह्मयोगी कृत संस्कृत व्याख्या ५) अष्टविकृतिविवृति बंगाली सहित १) अष्टाविंशत्युपनिषद मूल गुटका २॥) अष्टोत्तरशतोपनिषद मूल काशी ४) अष्टोपनिषद-भास्करानंद कृत सटीक ३) अश्विनौ देवता का मंत्रसंग्रह हि. टीका ५) आथर्वण उपनिषद एकादश १॥) आपस्तम्बगृह्यसूत्र-अनाकुला-तात्पर्यदर्शन दो सं. व्याख्या ७) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र-कपर्दिभाष्य-करविन्द-सुन्दरराज व्याख्या ३॥) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र-धूर्तस्वामि-भाष्य-रामाग्निवृत्ति प्रथम भाग ४॥) आपिशालिशिक्षा १) आरण्य संहिता सायणभाष्य ॥।=) आश्वलायनगृह्यसूत्र-मूल ॥) आश्वलायन गृह्यसूत्र-नारायणवृत्ति ४॥=) आश्वलायन गृह्य-देवस्वामि-नारायण दो व्याख्या प्रथम भाग ६॥) आश्वलायन गृह्यमन्त्र व्याख्या हरदत्तकृत २॥=) आश्वलायन श्रौतसूत्र-सिद्धान्तिभाष्य प्रथमभाग ॥)॥ आश्वलायन श्रौतसूत्र-नारायण-वृत्ति ८) आर्षेयब्राह्मण-बंगाली सहित १॥) आश्वलायनसूत्र प्रयोग-प्रदीपिका ३) इंद्रशक्ति का विकास-हिन्दी ॥॥) ईशकेन कठोपनिषद-दिगम्बरानुचरकृत सं० व्याख्या १॥=) ईशकेनादि ७ उपनिषद रामानुज भाष्य ४॥) ईश-प्रकाशिका, बालबोधनी व्याख्या १॥) ईश-शंकरभाष्यादि ९ टीका १॥) ईश-शंकर भाष्य हि. टीका =) ईश भा. टी।) ईशावास्य-शंकर भाष्य, हि. अनुवाद तथा हि. टीकादि ॥॥) ईशादि आठ उपनिषद् विद्याविनोद हिन्दी भाष्य सहित ५) ईशादि दशोपनिषद भाष्य (गोपालानंद) ७) ईशादिविंशोत्तरशतोपनिषद मूल बंबई १०) उदकशांति-शौनकीय ॥) उदकशांति-आपस्तंब ॥) उपनिदानसूत्र ॥) उपनिषद मंत्रवाक्य महाकोश (२२३ उपनिषदों का) १६) उपनिषदसमुच्चय--३२ उपनिषद सटीक ११॥) ऋग्वेद संहिता मूल खुला पत्रा ६) ऋग्वेद मूल बुकसाइज अजमेर ७) ऋग्वेद मूल बुकसाइज सातवलेकर १०) ऋग्वेदपदपाठ बुकसाइज १३) ऋग्वेद-सायण से प्राचीन वेंकटमाधवकृत ऋगर्थदीपिका भाष्य सहित तथा टिप्पणी में प्राचीन जितने भी भाष्य उपलब्ध हैं वह वेंकट के भाष्य से जहाँ भी भिन्न अर्थ देते हैं वह सब दे दिये हैं। अर्थात् इसी संस्करण के लेने से सभी प्राचीन भाष्यों का मत इसी में मिल जाता है तीन भाग छपे हैं। प्रत्येक भाग का मूल्य ५०) बाकी छपते हैं। ऋग्वेद-सायण भाष्य सहित संपूर्ण इन्डेक्स सहित पांच भागों में १३५) ऋग्वेद-मध्वभाष्य अभी दो भाग छपे हैं २१) ऋक् संहिता-स्कान्द भाष्य दो भाग ३॥) ऋग्वेद-वैदिक जीवन हिन्दी भाष्य ४ बड़ी-बड़ी जिल्दें १००) ऋग्वेद-कपाली शास्त्रीकृत सिद्धाञ्जन भाष्यसहित ३५) ऋग्वेद-उदगीथ भाष्य ४) ऋग्वेद संहिता-हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ३०) ऋग्वेद-सुबोध हिन्दी भाष्य-सातवलेकर १-१७ २१) ऋक् संग्रह-सिलेक्शन ३) ऋग्वेदमें रुद्रदेवता हिन्दी ॥=) ऋग्वेदके अग्निसूक्त २) ऋग्वेद पर व्याख्यान हिन्दी भगवद्दत्त २॥) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मूल १) हिन्दी टीका सहित २॥) ऋग्वेद प्रातिशाख्य-सटीक(डा.मंगलदेव)८॥=) ऋग्वेद प्रातिशाख्य-शौनक-सटीक ५। ऋग्वेदानु-क्रमणीभष्य ४) ऋग्वेद मंत्रसंहिता १॥) ऋग्वेदमंत्रसूची २) ऋग्यजुस्सामाथर्व विधान।) ऋग्वेदभाष्य भूमिका सायणकी टीका बद्रीनाथी ॥=) ऐतरेयब्राह्मण मूल खुला २) ऐ. ब्रा. सायण भाष्य सहित दो भाग १८) ऐ. ब्रा. केवल हिन्दी अनुवाद ५) ऐतरेय ब्राह्मण अनुक्रमणिका ४) ऐतरेयालोचन-सत्यव्रत २॥) ऐतरेयारण्यक-सायणभाष्य ५) ऐतरेयोपनिषद्-शांकर-आनंदगिरि २=) ऐतरेयोपनिषद-शंकरभाष्य हिन्दी अनुवाद।=) काठक गृह्यसूत्र १०) कठोपनिषद् -शंकर आनंदगिरि २=) कठोपनिषद्-शंकर रामानुज भाष्य, श्रीधर टीका ३॥) कठोपनिषद्-शंकर भाष्य हिंदी अनुवाद सहित ॥-) कात्यायन श्रौत सूत्र कर्क भाष्य सहित १३) कात्यायन श्रौत सूत्र-विद्याधर गौड कृत व्याख्या ८) केनोपनिषद् शंकर भाष्य आदि पूना १॥=) केन शंकर रामानुज बालबोधिनी १॥) केन हिन्दी अनुवाद सातवलेकर १॥) केन-शंकरभाष्य हिन्दी टीका ॥) कात्यायन यजु प्रातिशाख्य सटीक ४॥) काठक संहिता (यजु) मूल ६) कौषीतकीगृह्यसूत्र भवत्रात विवरण ५) खादिर गृह्यसूत्र वृत्ति सहित १) खादिर गृह्यसूत्र हिन्दी टीका सहित २॥) गणरत्यथर्व शीर्षमूल =) सटीक ॥=) गोपथ ब्राह्मण मूल१॥) गोभिलगृह्यसूत्र मृदुला ३॥) गोभिल-गृह्यसूत्र भा. टी. २॥) चतुर्वेद भाष्य भूमिका संग्रह सायनकृत ३॥) चरणव्यूहसभाष्य ॥।=) चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय २) चारों वेदों की अनुक्रमणिका २॥) छान्दोग्योपनिषद् -शंकरभाष्य ८॥) छान्दोग्य-रामानुज ६।-) छान्दोग्यमिताक्षरा ३।=) छान्दोग्य-भा.टी. स्वा. विद्यानन्द ५) छान्दोग्य भा. टी. जालम सिंह ५) जैमिणी ब्राह्मण १०) जैमिणीसंहिता १०) जैमिणीयोपनिषद् ब्राह्मण ५) ताण्ड्य महा ब्राह्मण सायणभाष्य २०) तैत्तिरीय ब्राह्मण-सायण भाष्य २४॥) तैत्तिरीय संहिता-सायन भाष्य६०) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य सटीक २॥) तैत्तिरीय अनुक्रमणिका २)तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर-आनन्द गिरि ३) तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर भाष्य हिन्दी अनुवाद ॥।-) तैत्तिरीयोपनिषद्-सुरेश्वर भाष्य वार्तिक ३॥=) तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर १) दण्डक १) दशोपनिषद् मूल ३।=) दशोपनिषद्-केवल भाषा५) दशोपनिषद्-शंकरभाष्य१०)दशोपनिषद्-ब्रह्मयोगिव्याख्या६॥) देवताविचार हिन्दी।) दैवत षड्विंशब्राह्मण २॥) दैवत संहिता-प्रथम ६) तृतीय ६) द्राह्यायण गृह्यसूत्रवृत्ति १॥=) द्राह्यायण गृह्यसूत्र हि० टी० २॥) नारायणोपनिषद् भा. टी. २॥) निरुक्त मूल ॥।=) निरुक्त अंग्रेजी नोटस-राजवाड़े १०) निरुक्त-मुकुन्दझा टीका १०) निरुक्त दुर्गाचार्य-बम्बई १४), पूना १७), २७॥) निरुक्तदेवराज--दुर्गाचार्य १५) निरुक्त-मेहरचन्द्र व्याख्या (१-४,७) ५) निरुक्त-चन्द्रमणि भा० टी० ३०) निरुक्त लघुविवृति १॥) नृसिंहपूर्वोत्तरतापनी सभाष्य ३) पवमान पञ्चसूक्त ॥।=) पादविधान शौनक १) पारस्कर गृह्यसूत्र मूल ॥=) पा० गृ० हरिहरभाष्य ३॥) पा० गृ० पांच भाष्य ८) पा. गृ. पांच भाष्य तथा कामदेवभाष्य सहित १२) पितृसंहिता =) पुरुष सूक्त भा०टी० =) पुरुष सूक्त भा०टी० श्री सम्पूर्णानन्द १॥) पुरुषसूक्त चार भाष्य १॥) पुरुष सूक्त सभाष्य।=) पुष्पसूत्र (सामप्रातिशाख्य) सभाष्य ४॥) प्रश्नोपनिषद्-शंकरभाष्य १॥=) प्रश्नोपनिषद्-शंकरभाष्य भा० टी०।=) प्राजापत्यसूत्र १॥) बृहदारण्यकोपनिषद् मिताक्षरा ४॥=) बृहदारण्यकोपनिषद्-रंगरामानुज ५॥) बृहदारण्यकोपनिषद्-शंकर भाष्य छपता है, बृहदारण्यकोपनिषद्-वार्तिक ३८) बृहदारण्यक वार्तिक सार दो भागोंमें (वार्तिक का संक्षेप) भा. टी. १२) बृहदारण्यक भा. टी. स्वामी विद्यानन्द ५) भारद्वाजशिक्षा सटीक १॥) मन्त्र संहिता हिरण्यकेशी १॥) मन्त्र संहिता-शुक्लयजुर्वेदीय ३), १), १॥) मन्त्रार्थदीपिका शत्रुघ्न ५) महानारायणोपनिषद् ॥=) माण्डुकीशिक्षा २) माण्डूक्योपनिषद् गौड़पाद कारिका-शंकर भाष्य ४) माण्डूक्योपनिषद्-शंकर भाष्य भा. टी. १) मानवगृह्यसूत्र-अष्टावक्रभाष्य ५) मानवीय आयुष्य

जैन पर्व निर्णयः श्री वीर सं० २४७९–८० आत्म सं० ५७–५८ शाका सं० १८७५, वि०-सं० २०१० ई० सन् १९५३-५४

नाम पर्व	पक्ष	तिथि	वार	मास	प्रविष्टे	ता०	मास	सन्
श्रीवृद्धि विजय (बूटेराये) जी का स्वर्ग	चैत्र शुदि	०१	चंद्र	चैत्र	०४	१६	मार्च	१९५३
श्रीमद्विजय आनन्दसूरी (आत्माराम) जीका जन्मदिन	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली आम्बिल शुरु	चैत्र शुदि	०८	रवी	चैत्र	१०	२२	मार्च	१९५३
,, वर्धमान (महावीर) जयन्ती	,, ,,	१३	शनि	,,	१६	२८	,,	१९५१
,, सिद्धचक्रओली सं०सिद्धा०मेला चैत्री पुणम,	,,	१५	चंद्र	,,	१८	३०	,,	,,
श्रीऋषभदेव वर्षी तप पारणा अक्षयतृ० द्वि०वै०	शुदि	०३	शनि	ज्येष्ट	०३	१६	मई	,,
,, हस्तिनापुर तीर्थ मेला	,, वैशाख शुदि	,,	,,	,,	,,	,,	,,	,,
,, विजयानंद (आत्मा०) स्व०आ० ५८ शुरु ज्ये०	,,	०८	शुक्र	आषाढ़	०६	१९	जून	,,
चौमासी अठाई प्रारम्भ	आषाढ़ शुदि	९	शनि	श्रावण	०३	१८	जुलाई	,,
चौमासी चौदस	आ० ,,	१४	,,	,,	१०	२५	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	आ० ,,	१५	रवि	,,	११	२६	,,	,,
श्रीनेमनाथ भगवान् का जन्म दिन	श्रावण ,,	०५	शुक्र	,,	३०	१४	अगस्त	,,
,, पर्यूषण पर्व अठाई शुरु	भादव वदि	१२	शनि	भाद्रपद	२१	०५	सितंबर	,,
,, कल्पसूत्र गृहस्थापनरात्रिजागरण	,, ,,	१४	चंद्र	,,	२३	०७	,,	,,
,, कल्पसूत्र वांचना प्रारम्भ	,, ,,	३०	मंगल	,,	२४	०८	,,	,,
,, वीरजन्म उत्सव	,, शुदि	०१	बुध	,,	२५	०९	,	,,
,, संवत्सरीपर्व	,, ,,	०४	शनि	,,	२८	१२	,,	,,
जगद्गुरु विजयहीर सूरी स्वर्गदिन	,, ,,	११	शनि	आश्विन	०४	१९	,,	,,
श्रीसिद्ध चक्र ओली आंबिल शुरु	आश्विन ,,	६	बुध	,,	२९	१४	अ०	,,
,, सिद्ध चक्र आंबिल ओली संपूर्ण	,, ,,	१५	गुरु	कार्तिक	०६	२२	,,	,,
,, वर्धमान (निर्वाण) दीपावली	कार्तिक वदि	३०	शुक्र	,,	२१	०६	नवंबर	,,
,, गौतमस्वामीकेवलज्ञानश्री वी०सं०२४८०,	शुदि	०१	शनि	,,	२२	०७	,,	,,
भाईदूज श्रीमद्विजय वल्लभसूरी जन्मदिन	,, ,,	०२	रवि	,,	२३	०८	,,	,,
ज्ञान (सौभाग्य) पंचमी	,, ,,	०५	बुध	,,	२६	११	,,	,,
चौमासी अठाई शुरु	,, ,,	०६	गुरु	,,	२७	१२	,,	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	गुरु	मार्गशिर	०४	१९	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण कार्तिकी पुनम	,, ,,	१५	शुक्र	,,	०५	२०	,,	,,
श्रीसिद्धाचल, हस्तिनापुर, शौरीपुर मेला	,, ,, ,,			,,	,,	,,	,,	,,
जगद्गुरु विजय हीरसूरी जन्मदिन	मार्गशिर वदि	०७	शुक्र	,,	१२	२७	,,	,,
मौन एकादशी (१५०) कल्याणकदिन	,, शुदि	११	बुध	पौष	०२	१६	दि०	,,
पौषदशमी श्रीपार्श्वनाथ जन्मदिन	पौष वदि	१०	बुध	,,	१६	३०	,,	,,
श्रीऋषभदेव मेरु त्रयोदशी	माघ ,,	१३	चंद्र	माघ	२०	०१	फरवरी	१९५४
चौमासी अठाई शुरु	फाल्गुण शुदि	७	गुरु	फाल्गुण	२८	११	मार्च	,,
चौमासी चौदस	,, ,,	१४	गुरु	चैत्र	०५	१८	,,	,,
चौमासी अठाई संपूर्ण	,, ,,	१५	शुक्र	,,	६	१९	,,	,,
श्रीऋषभदेव जन्मदीक्षा	चैत्र वदि	८	शनि	,,	[illegible]	[illegible]		

वेद उपनिषदादि ग्रन्थ

अथर्ववेद मूल अजमेर बुकसाइज ५) अथर्ववेद-सुबोध हिन्दीभाष्य सातवलेकर (१ से १८ कांड तक) २६) अथर्ववेद-सायण भाष्य तथा हिन्दी टीका सहित पं० रामस्वरूप संपूर्ण ९०) अथर्ववेद हि० टीका जयदेव ४ भाग५०) अथर्ववेद-पैप्पलाद शाखा ३०)अ०व०बृहत्सर्वानुक्रमणी ६) अ. व. कौशिकगृह्यसूत्र हिन्दी टीका सहित ४५) अ. व. की प्राचीनता।=)अ. व. दन्त्योष्ठ-विधि १॥) अप्रकाशित सामान्य उपनिषद-ब्रह्मयोगी कृत संस्कृत व्याख्या ५) अष्टविकृतिविवृति बंगाली सहित १) अष्टाविंशत्युनिषद मूल गुटका २॥) अष्टोत्तरशतोपनिषद मूल काशी ४) अष्टोपनिषद-भास्करानंद कृत सटीक ३) अश्विनी देवता का मंत्रसंग्रह हि. टीका ५) आथर्वण उपनिषद एकादश १॥) आपस्तम्बगृह्यसूत्र-अनाकुला-तात्पर्यदर्शन दो सं. व्याख्या ७) आपस्तम्ब शुल्बसूत्र-कपर्दिभाष्य-करविन्द-सुन्दरराज व्याख्या ३।) आपस्तम्ब श्रौतसूत्र-धूर्तस्वामि-भाष्य-रामाग्निवृत्ति प्रथम भाग ४॥) आपिशालिशिक्षा १) आरण्य संहिता सायणभाष्य ॥।=) आश्वलायनगृह्यसूत्र-मूल ॥) आश्वलायन गृह्यसूत्र-नारायणवृत्ति ४॥=) आश्वलायन गृह्य-देवस्वामि-नारायण दो व्याख्या प्रथम भाग ६।) आश्वलायन गृह्यमन्त्र व्याख्या हरदत्तकृत २॥=) आश्वलायन श्रौतसूत्र-सिद्धान्तिभाष्य प्रथमभाग ॥)॥ आश्वलायन श्रौतसूत्र-नारायण-वृत्ति ८) आर्षेयब्राह्मण-बंगाली सहित १।) आश्वलायनसूत्र प्रयोग-प्रदीपिका ३) इंद्रशक्ति का विकास-हिन्दी ।॥) ईशकेन कठोपनिषद-दिगम्बरानुचरकृत सं० व्याख्या १॥=) ईशकेनादि ७ उपनिषदें रामानुज भाष्य ४।) ईश-प्रकाशिका, बालबोधनी व्याख्या १।) ईश-शंकरभाष्यादि ६ टीका १॥) ईश-शंकर भाष्य हि. टीका =) ईश भा. टी ।) ईशावास्य-शंकर भाष्य, हि. अनुवाद तथा हि. टीकादि ।॥) ईशादि आठ उपनिषद् विद्याविनोद हिन्दी भाष्य सहित ५) ईशादि दशोपनिषद भाष्य (गोपालानंद) ७) ईशादिविंशोत्तरशतोपनिषद मूल बंबई १०) उदकशांति-शौनकीय ॥) उदकशांति-आपस्तंब ॥) उपनिदानसूत्र ॥) उपनिषद मंत्रवाक्य महाकोश (२२३ उपनिषदों का) १६) उपनिषदसमुच्चय--३२ उपनिषद सटीक ११॥) ऋग्वेद संहिता मूल खुला पत्रा ६) ऋग्वेद मूल बुकसाइज अजमेर ७) ऋग्वेद मूल बुकसाइज सातवलेकर १०) ऋग्वेदपदपाठ बुकसाइज १३) ऋग्वेद-सायण से प्राचीन वेंकटमाधवकृत ऋगर्थदीपिका भाष्य सहित तथा टिप्पणी में प्राचीन जितने भी भाष्य उपलब्ध हैं वह वेंकट के भाष्य से जहाँ भी भिन्न अर्थ देते हैं वह सब दे दिये है। अर्थात् इसी संस्करण के लेने से सभी प्राचीन भाष्यों का मत इसी में मिल जाता है तीन भाग छपे हैं। प्रत्येक भाग का मूल्य ५०) बाकी छपते हैं। ऋग्वेद-सायण भाष्य सहित संपूर्ण इन्डेक्स सहित पांच भागों में १३५) ऋग्वेद-मध्वभाष्य अभी दो भाग छपे हैं २१) ऋक् संहिता-स्कान्द भाष्य दो भाग ३।) ऋग्वेद-वैदिक जीवन हिन्दी भाष्य ४ बड़ी-बड़ी जिल्दें १००) ऋग्वेद-कपाली शास्त्रीकृत सिद्धाञ्जन भाष्यसहित ३५) ऋग्वेद-उदगीथ भाष्य ४) ऋग्वेद संहिता-हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ३०) ऋग्वेद-सुबोध हिन्दी भाष्य-सातवलेकर १-१७ २१) ऋक् संग्रह-सिलेक्शन ३) ऋग्वेदमें रुद्रदेवता हिन्दी ॥=) ऋग्वेदके अग्निसूक्त २) ऋग्वेद पर व्याख्यान हिन्दी भगवद्दत्त २॥) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मूल १) हिन्दी टीका सहित २॥) ऋग्वेद प्रातिशाख्य-सटीक(डा.मंगलदेव)८॥=) ऋग्वेद प्रातिशाख्य-शौनक-सटीक ५।ऋग्वेदानु-क्रमणीभाष्य ४) ऋग्वेद मंत्रसंहिता १॥) ऋग्वेदमंत्रसूची २) ऋग्यजुस्सामाथर्व विधान ।) ऋग्वेदभाष्य भूमिका सायणकी टीका बद्रीनाथी ॥=) ऐतरेयब्राह्मण मूल खुला २) ऐ. ब्रा. सायण भाष्य सहित दो भाग १८) ऐ. ब्रा. केवल हिन्दी अनुवाद ५) ऐतरेय ब्राह्मण अनुक्रमणिका ४) ऐतरेयालोचन-सत्यव्रत २॥) ऐतरेयारण्यक-सायणभाष्य ५) ऐतरेयोपनिषद्-शांकर-आनंदगिरि २=) ऐतरेयोपनिषद-शंकरभाष्य हिन्दी अनुवाद ।=) काठक गृहसूत्र १०) कठोपनिषद् -शंकर आनंदगिरि २=) कठोपनिषद्-शंकर रामानुज भाष्य, श्रीधर टीका ३॥) कठोपनिषद्-शंकर भाष्य हिंदी अनुवाद सहित ॥-) कात्यायन श्रौत सूत्र कर्क भाष्य सहित १३) कात्यायन श्रौत सूत्र-विद्याधर गौड कृत व्याख्या ८) केनोपनिषद् शंकर भाष्य आदि पूना १॥=) केन शंकर रामानुज बालबोधिनी १॥) केन हिन्दी अनुवाद सातवलेकर १॥) केन-शंकरभाष्य हिन्दी टीका ॥) कात्यायन यजु प्रातिशाख्य सटीक ४॥) काठक संहिता (यजु) मूल ६) कौषीतकीगृह्यसूत्र भवत्रात विवरण ५) खादिर गृहसूत्र वृति सहित १) खादिर गृह्यसूत्र हिन्दी टीका सहित २॥) गणपत्यथर्व शीर्ष मूल =) सटीक ॥=) गोपथ ब्राह्मण मूल१) गोभिलगृहसूत्र मृदुला ३॥) गोभिल-गृहसूत्र भा. टी. २॥) चतुर्वेद भाष्य भूमिका संग्रह सायनकृत ३॥) चरणव्यूहसभाष्य ॥।=)चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय २) चारों वेदों की अनुक्रमणिका २।) छान्दोग्योपनिषद् -शंकरभाष्य ८॥) छान्दोग्य-रामानुज ६।-) छान्दोग्यमिताक्षरा ३।=) छान्दोग्य-भा.टी. स्वा. विद्यानन्द ५) छान्दोग्य भा. टी. जालम सिंह ५) जैमिणी ब्राह्मण १०) जैमिणीसंहिता १०) जैमिणीयोपनिषद् ब्राह्मण ५) ताण्डय महा ब्राह्मण सायणभाष्य २०) तैत्तिरीय ब्राह्मण-सायण भाष्य २४॥) तैत्तिरीय संहिता-सायन भाष्य६०) तैत्तिरीयप्रातिशाख्य सटीक २॥) तैत्तिरीय अनुक्रमणिका २)तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर-आनन्द गिरि ३) तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर भाष्य हिन्दी अनुवाद ॥।-) तैत्तिरीयोपनिषद्-सुरेश्वर भाष्य वार्तिक ३॥=) तैत्तिरीयोपनिषद्-शंकर १) दण्डक १) दशोपनिषद् मूल ३।=) दशोपनिषद्-केवल भाषा५) दशोपनिषद्-शंकरभाष्य१०)दशोपनिषद्-ब्रह्मयोगिव्याख्या६॥) देवताविचार हिन्दी ।) दैवत षड्विंशब्राह्मण २॥) दैवत संहिता-प्रथम ६) तृतीय ६) द्राह्यायण गृहसूत्रवृत्ति १॥=) द्राह्यायण गृहसूत्र हि० टी० २॥) नारायणोपनिषद् भा. टी. २॥) निरुक्त मूल ॥।=) निरुक्त अंग्रेजी नोटस-राजवाडे १०) निरुक्त-मुकुन्दझा टीका १०) निरुक्त दुर्गाचार्य-बम्बई १४), पूना १७), २७॥) निरुक्तदेवराज--दुर्गाचार्य १५) निरुक्त-मेहरचन्द्र व्याख्या (१-४,७) ५) निरुक्त-चन्द्रमणि भा० टी० ३०) निरुक्त लघुविवृति १।) नृसिंहपूर्वोत्तरतापनी सभाष्य ३) पवमान पञ्चसूक्त ॥।=) पादविधान शौनक १) पारस्कर गृहसूत्र मूल ॥=) पा० गृ० हरिहरभाष्य ३॥) पा० गृ० पांच भाष्य ८) पा. गृ. पांच भाष्य तथा कामदेवभाष्य सहित १२) पितृसंहिता =) पुरुष सूक्त भा०टी० =) पुरुष सूक्त भा०टी० श्री सम्पूर्णानन्द १।) पुरुषसूक्त चार भाष्य १।) पुरुष सूक्त सभाष्य ।=) पुष्पसूत्र (सामप्रातिशाख्य) सभाष्य ४॥) प्रश्नोपनिषद्-शंकरभाष्य १॥=) प्रश्नोपनिषद्-शंकरभाष्य भा० टी० ।=) प्राजापत्यसूत्र १॥) बृहदारण्यकोपनिषद् मिताक्षरा ४॥=) बृहदारण्यकोपनिषद्-रंगरामानुज ५॥) बृहदारण्यकोपनिषद्-शंकर भाष्य छपता है, बृहदारण्यकोपनिषद्-वार्तिक ३८) बृहदारण्यक वार्तिक सार दो भागोंमें (वार्तिक का संक्षेप) भा. टी. १२) बृहदारण्यक भा. टी. स्वामी विद्यानन्द ५) भारद्वाजशिक्षा सटीक १॥) मन्त्र संहिता हिरण्यकेशी १॥) मन्त्र संहिता-शुक्लयजुर्वेदीय ३), १), १।) मन्त्रार्थदीपिका शत्रुघ्न५) महानारायणोपनिषद् ॥=) माण्डुकीशिक्षा २) माण्डूक्योपनिषद् गौड़पाद कारिका-शंकर भाष्य ४) माण्डूक्योपनिषद्-शंकर भाष्य भा. टी. १) मानवगृह्यसूत्र-अष्टावक्रभाष्य५) मालवीय आयुष्य

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता :—मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस

।) मुण्डकोपनिषद्-शंकर भाष्य १-) मुण्डकोपनिषद् बालबोधिनी १।।।) मुण्डकोपनिषद्-शंकर भाष्य भा. टी. ।≋) मैत्रायणी संहिता मूल ६) यजुर्वेद माध्यंदिन मूल मोटा अक्षर खुला पत्रा बम्बई १०) काशी खुला पत्रा ७), ५) बुकसाइज सातवलेकर ३) अजमेर २।।) गुटका १।।।) छोटा साइज मुरादाबाद १) उवट तथा महिधरभाष्य १२) स्वामी दयानन्द कृत भाष्य संपूर्ण २५) स्वामी दयानन्द कृत भाषा भाष्य ५) १-४ अध्याय हि. टी.।।)यजु. सर्वानुक्रम सूत्र १।।) यजु० पादसूचि १।।) यजुःप्रातिशाख्य कलकत्ता ३) मद्रास ४।।) यजु० काण्व संहिता ४) याज्ञवल्क्य शिक्षा भा० टी० ।।=) याज्ञिक्यूपनिषद् विवरण-पुरुषोत्तम २।।) योगउपनिषद्-ब्रह्मयोगी व्याख्या ५) रामतापनी उपनिषद् २ टीका १।।।=) रुद्रस्वाहाकार पद्धति =) रुद्राष्टाध्यायी मूल खुला पत्रा काशी ।=). ।।=).।।।). ।।।=), बम्बई ।।।) रुद्राध्याय-सायन भट्टभास्कर २।) रुद्राध्याय विष्णुसूरि १।।) रुद्रभाष्य अभिनव शंकर १।।=) लाट्यायन श्रौतसूत्र अग्निष्टोमान्तम् २।।) वंश ब्राह्मण-बंगला ।।।) वेद का स्वयंशिक्षक २ भाग ३) वेदों का वास्तविक स्वरूप ।=) वाराह गृह्यसूत्र हि. टीका १।।) वेदपरिचय ३ भागोंमें सातवलेकर ५) वेदभाष्यसार-भट्टोजी दीक्षित १) वेद-भाष्य भूमिकासंग्रह सायण (चारों वेद की) ३।।) वेदप्रवेश-मरुद्देवताका मन्त्रसंग्रह हिन्दी सहित सातवलेकर ५) वेद प्रश्नोत्तरमाला-जगद्राम ।।।) वेदभाष्यानुशीलन हिन्दी १) वेद में वर्षा हिन्दी ।।=) वेदमें लोहे के कारखाने हिन्दी ।।) वेदमें रोगजन्तु शास्त्र ।) वेदरहस्य ९) वेदवाणी १।) वेद विज्ञान मीमांसा ।।) वेदार्थ द्वात्रिंशका-श्रीसिद्धसेन १) वेदांगप्रकाश १०।।=) वैखानस श्रौतसूत्र ७।।) वैखानस आगम २।) वैखानसस्मार्तसूत्र १।।) वैदिक अग्निविद्या हिन्दी २) वैदिक कहानियाँ हिन्दी २) वैदिक कोष-हंसराज १५) वैदिक पदानुक्रमकोष-श्री विश्वबन्धु ५ भागोंमें १५०) वैदिक राज्यपद्धति हिन्दी ।=) वैदिक वाङ्मयका इतिहास-भगवद्दत्त दो भाग १५) वैदिक शब्दार्थ पारिजात-प्रथम ६) वैदिक सभ्यता हिन्दी ।।।) वैदिक सर्पविद्या हिन्दी ।।=) वैदिक स्वराज्य की महिमा हिन्दी ।।।) वैदिक साहित्य रामगोविंद त्रिवेदी हिन्दी ६) वैदिक सिलेक्शन २ भाग ४) वैदिक सूक्तसंग्रह-बनारस शास्त्रिपरीक्षोपयोगी ।) वैष्णव उपनिषद-ब्रह्मयोगी ४) षट् सूक्तमूल ।) शतपथ ब्राह्मण-मूल संपूर्ण अनुक्रमणिका सहित माध्यंदिन ३ भाग ११) शतपथ ब्राह्मण संपूर्ण सायण भाष्य १२५) शतपथ-सायण भाष्य प्रथम कांड ८।।) शतपथ १-७ कांड मूल ६) शतबोधामृत हिन्दी ।=) शतरुद्रीयति ।।=) शांख्यायनारण्यक १=) शांख्यायन ब्राह्मण २=) शिवसंकल्प का विजय हिन्दी ।।=) शिक्षासूत्र ।) शिक्षादिवेदांग चतुष्टय ।।) शिक्षादिवेदांगषडंगानि ३) शुल्वसूत्र-(कात्यायण) ...ति ।=) शैव उपनिषद् ब्रह्मयोगी व्याख्या ५।।) शाक्त उपनिषद-ब्रह्मयोगी व्याख्या ३।।) ...नकीयम् ।।=) श्रीसूक्त मूल =) श्रीसूक्त हिन्दी टीका ।) श्रीसूक्त सभाष्य ।।।) श्रुतिसार समुद्धरण ...) श्रुतिसिद्धान्तसार संग्रह हिन्दी ५) श्रौतपदार्थनिर्वचनम्- ६।।) श्रौतपाठ दो भाग में ९) ...श्वेताश्वतरोपनिषद सभाष्य ३।।।-) श्वेताश्वतरोपनिषद शंकर भाष्य, हिन्दी अनुवाद ।।।=) श्वेताश्वतरो हिन्दी अन्वय पदार्थ भावार्थ १।।।) सत्याषाढ श्रौतसूत्र-संपूर्ण ४८) संन्यास उपनिषद् ब्रह्मयोगी व्याख्या ४) सामवेद मूल अजमेर १।।) सामवेद संहिता सायण भाष्य सहित केवल ...-४-५ भाग मिलता है ४०) सामवेद कौथुमशाखीयः—ग्रामगेय गानात्मकः ६) सामवेद माध्व ...या भरत स्वामी भाष्य सहित प्रथम भाग ६) सामवेद-वीरेन्द्र शास्त्री भा. टी. ४) सामवेदीय पुंसोवनिपद्धति ४।।) सामवेदीय रुद्र जपविधि १) सामान्य-वेदान्त उपनिषद ब्रह्मयोगी व्याख्या ५) सांख्यायण गृह संग्रह १।।) सौर सूक्त =) त्रिकाण्डमंडन भास्कर ५)

धर्मशास्त्र तथा कर्मकाण्ड पांचरात्र अगम ग्रन्थ

अग्निष्टोम पद्धति ३। अर्की विवाह =) अग्निहोत्रचन्द्रिका—वामन शास्त्री ५) अन्त्यकर्मदीपक—नित्यानंद ३।।) अन्त्यष्टीयकर्म पद्धति—चतुर्थी लाल २) अनुष्ठानप्रकाश—चतुर्थीलाल १२) अहिर्बुध्न्य संहिता—पांचरात्र १५) आधान पद्धति—वामन शास्त्री ३≋) आचारचन्द्रिका हिन्दी ।।।) आचारार्क १।) आचारभूषण—त्र्यम्बक ७।।) आचारमयूख—नीलकंठ १।) आचाररत्न २) आचारदर्श—उपाध्याय १।) आचारेन्दु—त्र्यम्बक ६।।।) आपस्तम्ब धर्मसूत्र—पूना ३), काशी ७) आर्याभिविनय—स्वामी दयानन्द ।=) आर्यविद्यासुधाकर-यज्ञेश्वर चिमनभट्ट रचित तथा डा० मंगलदेव- द्वारा सम्पादित अनेकों टिप्पण सहित १०) आर्यविधानम्—पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ विरचित भा० टी० २०) आश्लेषाज्येष्ठा शान्ति ।) अशौच निर्णय-मूल ।) भा० टी० ।।) आह्निक कर्मसूत्रावली--बम्बई ५) आह्निक सूत्रावलि—पं० दौलतराम गौड़ काशी ८) आह्निक पद्धति—नव्यचण्डिदास ३) उत्सर्गमयूख—नीलकंठ ।) उत्सर्जनोप-करणविधी ।।) उपनयन पद्धति-मूल ।।=) भा० टी० १।) सटिप्पण विद्याधर गौड़ १।) उपनयन मार्तण्ड भा० टी० ।।।) उमामहेश्वर गुटका १।।।) ऋग्वेदोक्त नित्य-विधि १।) एकोदृष्टश्राद्धपद्धति ।।) एकादशीव्रतोद्यापन २।।) कर्मकाण्डक्रमावलि—सोमशम्भु ४।।) कर्मकाण्डप्रकाशिका ।।=) कर्मठ गुरु—राज्यज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ कृत नित्य कर्म के लिए सब से बढिया ग्रंथ इसमें अनेकों सिद्धिप्रद अनुष्ठान जो पंडितजीके अपने अनुभव में आए हुए लिखे हैं जैसे सिद्ध पुत्रेष्टीय विधि कर्मकाण्ड विषयक ऐसा ग्रन्थ आज तक नहीं छपा ५) कर्मप्रदीप-छान्दोग्य परिशिष्ट २।) कर्म-रहस्य हिन्दी ।।।≡) कर्म विपाक भा० टी० ३), ५) कलश प्रतिष्ठा =) कात्यायन मतसंग्रह २।) कात्यायनस्मृति ४।।) कात्यायनी तर्पण =) कात्यायनी-शांति ।) कातियेष्ट-दीपका—(दर्शपौर्णमास पद्धति)— नित्यानन्द १।।) कालतत्वविवेचन २ भाग-रघुनाथ भट्ट ३।।।) कालमाधव-माधव ४।) कालमाधव कारिका ।।।=) कार्तिक शुक्ल द्वितीया कृत्य-निर्णय ≡) कालविवेक—जीमूतवाहन ५।) काश्यपज्ञानकाण्ड—वैखानस ५) कुट्टाकार शिरोमणि १) कुण्ड मण्डपसिद्धि भा० टी० ।।) कुण्डरत्नावलि सटीक ३) कुण्डविंशति २) कुण्डार्क सटीक ३) कुम्भ-विवाह =) कृत्यकल्पतरु-लक्ष्मीधर १०५) कृत्यरत्नाकर—चण्डेश्वर ६) कृत्यसार सुमुच्चय—अमृतनाथ झा, बम्बई १।।।) सटिप्पण काशी ३।।) क्रमदीपिका ३) गयायात्रापद्धति ।≡) गया श्राद्धपद्धति भा० टी० ।।।=) मूल ।=) गायत्री पूजा पद्धति ≡) गोदान पद्धति =) गौतमधर्मसूत्र-हरदत्त व्याख्या ४।) गौतमधर्म सूत्र परिशिष्ट (द्वितीय प्रश्न) ९) गदाधर पद्धति-आचारसार ४।।) गोविन्दार्चनचंद्रिका १०) गौड़ीय श्राद्धप्रकाश महानिबंध-चतुर्थीलाल ८) गृहस्थरत्नाकर-चण्डेश्वर ५।) ग्रहयागतत्व ।।।=) ग्रहप्रयोग-ग्रहशांति-वायुनंदन २।) चतुर्लिंगतोभद्रचक्र ≡) चतुर्वर्गचिन्तामणि हेमाद्रि-प्रायश्चित्त खंड १०) परिशेष खंड-कालनिर्णय संपूर्ण १५) चतुर्विं-शतिमतसंग्रह-भट्टोजी दीक्षित ३) चूड़ाकरण पद्धति ≡) जन्म दिन पूजा पद्धति =) जयाख्य संहिता-पांचरात्र आगम १२) जातिनिर्णय १।।।) जीवत्पुत्रिका ≡) ज्येष्ठाशान्ति ।) छन्दोऽह्निक ।।।) टोडरानन्द-राजा टोडरमल प्रथम भाग १०) तिथि निर्णय ।) तिथी निर्णय-भट्टोजीदीक्षित १।।) तिथि चिंतामणि ।।।) तिथ्यर्क-दिवाकर २) तिथिविवेक-शूलपाणि २) तीर्थचिंतामणि—

वाचस्पति ३॥।) तीर्थतत्त्व-रघुनन्दन ।॥) तुलसी पूजा पद्धति =) तुलसी-विवाह ।-) काशी १॥) दण्ड विवेक-वर्द्धमान ८॥) दत्तक मीमांसा-नंद पण्डित ५॥=) दत्तकचन्द्रिका-कुबेर भट्ट २॥) दशकर्मपद्धति १) भा० टी० १॥), २॥) दर्शपूर्णमास प्रकाश-भाष्य वृत्ति ११॥) दान-क्रियाकौमुदी-गोविन्दानन्द २॥) दत्तकप्रकाश-राज्याभिषेक कोटीहोम पद्धति ।॥) दानदीपिका भा० टी० ॥) दान मयूख नीलकंठ २) दीक्षातत्त्वमीमांसा भा० टी० १॥) दीक्षा प्रकाशिका-विष्णुभट्ट १) द्विरागमननिर्णय =) द्वादश हरिहर मंडल ≡) दुर्गा पूजा तत्त्व-रघुनन्दन २॥) दुर्गापूजा श्यामा पूजा ।॥) दुर्गोत्सव विवेक शूलपाणी १) देवर्षीयपितृतर्पण =) धर्मतत्त्व-निर्णय १) धनिष्ठापञ्चकशांति ।=) धर्मतत्व परिशिष्ट १।=) धर्मप्रदीप-मूल २) धर्मप्रवेशिका हिन्दी ।=) धर्म विज्ञान भाषा ३ भाग १०) धर्मशास्त्रसंग्रह (छब्बीस) कलकत्ता १६) धर्मसिन्धु-काशीनाथ मूल ५) भा० टी० १२) धर्मानुबन्धिश्लोक चतुर्दशी-शेषकृष्ण ॥) धार्मिक विमर्श समुच्चय ४) धर्मोपदेशिका हिन्दी ।॥) नवग्रहचक्र -)॥ नवग्रहविधान पद्धति ॥=) नवरत्न विवाह पद्धति भा० टी० ३॥) नवरात्र-प्रदीप-विनायक १) नान्दीमुख श्राद्ध ।), ॥) नारदीयमनु-संहिता-सभाष्य २॥) नारायणबलि भा० टी० १॥) नित्यकर्मपद्धति ।) नित्य कर्म विधि-पं० बालकृष्ण १) नित्यकर्तव्य-स्वा० शिवानन्द ।=) नित्यकर्मप्रयोगमाला-चतुर्थीलाल २) नित्य हवन पद्धति ॥=) नित्याचार प्रदीप-नृसिंह बाजपेयी अपूर्ण १२॥।) नित्याचार पद्धति-विद्याकर ५॥) नित्योत्सव-उमानंद ४) निर्णयसिन्धु-कमलाकर मूल ७), ६) भा० टी० १५) कृष्णभट्टकृत व्याख्या सहित २२) नीतिमयूख-नीलकंठ १॥) नूतन गृहप्रवेश हवन पद्धति २॥) नूतन वास्तु-प्रबन्ध ॥-) नृसिंह प्रासाद-दलपतिविरचित-व्यवहारसार २) प्रायश्चित्त सार १॥=) श्राद्ध सार १) तीर्थसार ।॥) निर्णयामृत ३॥) परम संहिता-पाञ्चरात्र ८) पश्वालम्भमीमांसा-वामन शास्त्री १-) पंचदान पद्धति ।≡) पंच मंगल ।=) पंच महायज्ञ-आर्य्यसमाज ≡) पंचाङ्ग पद्धति ।), ।=) पर्वोत्सव विवरण-चक्र १) पांचरात्र रक्षा-वेदान्त देषिक ४॥) पार्वणश्राद्ध-भा० टी० ।=) पाराशर स्मृति भा० टी० १।) पितृकर्मनिर्णय-श्री त्रिलोकनाथ मिश्र ३) पितृदयिता-अनिरुद्ध २॥) पुतल विधान ।=) पुराणोक्त ग्रहशान्ति वास्तुशांति १॥) पुराणोक्तविवाहपद्धति-मूल ॥) पुरुषार्थ चिन्तामणि-रामकृष्ण भट्ट ४) पूजा समुच्चय-१०५ विषय २) पूतनाशान्ति =) पौरोहित्य कर्मसार २ भाग १॥) प्रायश्चित्त कदम्ब भा० टी० १) प्रपंचसार विवेक १॥।) प्रायश्चित्त मयूख-नीलकंठ २) प्रायश्चित्त प्रकाश-चतुर्थीलाल १॥।) प्रायश्चित्तेन्दु शेखर-नागोजीभट्ट २॥।) प्रतिष्ठा मयूख-नीलकंठ ॥) प्रतिष्ठामहोदधि-वायुनंदन ५) प्रतिष्ठा संग्रह-पं० रामलाल ७) प्रेतमंजरी भा० टी० २॥) प्रयोग पारिजातस्य षोडश संस्कार काण्डम् ७) प्रयोगरत्न नारायणभट्टी-ऋग्वे-दीय ३॥) पर्वनिर्णय ।=) पंच देवता पूजन ≡) पार्थिवपूजन ।) बौद्धायन धर्मसूत्र-गोविन्दस्वामी विवरण ७) बृहस्पति स्मृति १५) बृहद्गायत्री महामन्त्रीय सरयूपारीण शुक्ल भाष्य ॥) ब्रह्मकर्म समुच्चय-ऋग्वेदीय ५) ब्रह्मकर्म समुच्चय-हिरण्यकेशी ५) भारतीय धर्मशास्त्र-चूड़ामणि २) मंगलाष्टक शाखोच्चार ≡) मदनरत्नव्यवहारकाण्ड-मदनसिंह १२) मनुस्मृति-कुल्लूकभट्ट टीका ४), ५) कलकत्ता ४॥) मेधातिथि भाष्य ३ भाग सम्पूर्ण १३) भा० टी० ३), ३॥), ४), २॥) केवल द्वितीय अध्याय भा० टी० ।॥) मनुटीका संग्रह ५) मातृका विलास ३॥) महालक्ष्मी पूजा ।), ॥), मानवधर्मसार ॥) मांसतत्त्व विवेक-विश्वनाथ ।=) मूलाशान्ति ।≡) ।=) मूलाशांति चक्र ≡) यतिधर्मसंग्रह-विश्वेश्वर ३) यज्ञमीमांसा-वेणीराम परिवर्द्धित संस्करण २॥) यात्रातत्त्व रघुनंदन २) याज्ञवल्क्य स्मृति-मिताक्षरा टीका बम्बई ८) वीरमित्रोदय तथा मिताक्षरा टीका-काशी ८) अपरार्क टीका २२) बालंभट्टी-मिताक्षरा १६॥) सुबोधनी, बालंभट्टी, मिताक्षरा, बालक्रीड़ा बंबई १७) मिताक्षरानुसार भाषाटीका १२) केवल भाषाटीका लखनऊ ।॥) राजधर्म-कौस्तुभ-अनन्तदेव १०) रामविवाहपद्धति ।) रामार्चनचंद्रिका-आनंदवन १॥) रामार्चापद्धति ॥) रुद्रयाग पद्धति-वायुनंदन २॥) रुद्रविधान पद्धति ॥=) रुद्रस्वाहाकार =)॥ लघुदर्पण पद्धति ६) लघुपूजाऽनुष्ठान ॥-) लम्बोदरी हवन् पद्धति ॥) ललितास्तवमणिमाला ॥) लक्ष्मी पूजन प्रयोग बड़ा बंबई १) वर्षकृत्य-रुद्रधर शर्मा ३) वर्षकृत्य-इन्दुमती टिप्पणी दो भाग ७) वर्षकृत्यदीपकनित्यानंद ७) वर्षक्रियाकौमुदी-गोविन्दानंद ५।) वसन्तोत्सवनिर्णय =) वास्तु-पूजापद्धति-गृहप्रवेशपद्धति ।=) वास्तुप्रतिष्ठा संग्रह-खुला २॥) वास्तु शांति प्रयोग ॥-) वासिष्ठ धर्मशास्त्र १) वासिष्ठी हवनपद्धति मूल ।=), ॥=) भाषाटीका ।॥=) वारुणमंडल चक्र ≡) विधान-माला-नृसिंहभट्ट ७।) विधान पारिजात-अनंतदेव अपूर्ण १५) विवाद-चिन्तामणि २॥) विवाद-रत्नाकर-चंडेश्वर ६) विवाहपद्धति-झंग निवासी पं. गौरीशंकर कृत भाषा टीका पंजाब कुल्य अनुसार १॥) विवाहपद्धति-भा. टी. चतुर्थीलाल १=) विवाहपद्धति मूल ॥=) भा. टी. १) विवाह सोपांगविधि भा. टी. ३) विवाहपद्धति-आर्यसमाज ॥) विष्णुयाग पद्धति २) विज्ञप्तिरत्नावली १) वीरमित्रोदय-आह्निक प्रकाश ९) पूजाप्रकाश ६) लक्षणप्रकाश १०॥) राजनीति प्रकाश ७॥) तीर्थ-प्रकाश ९) व्यवहारप्रकाश ९) श्राद्धप्रकाश ६) समय प्रकाश ४॥) भक्ति प्रकाश ३) शुद्धि प्रकाश ४॥) वैश्य सन्ध्या प्रयोग =) व्यवहारनिर्णय-वरदराज १५) व्यवहारमयूख १॥) व्यवहार मयूख-नीलकंठ सटिप्पण १०) व्यवहारमाला १॥≡) व्यासस्मृति २॥) वृद्ध सूर्यार्णव कर्मविपाक-संपूर्ण मूल १२) व्रतकोश-जगन्नाथ २) व्रतचंद्रिका-हिन्दी १॥) व्रतराज-छपता है, व्रतोत्सव कौमुदी ॥-) व्रतार्क-भाषाटीका ८) व्रतोद्यापन कौमुदी २) व्रात्यताप्रायश्चित्त निर्णय १॥) शय्यादान पद्धति ≡) शांतिकाण्ड प्रदीप २) शांतिमयूख-नीलकण्ठ २॥) शांतिसार खुला ३॥) शाश्वत धर्मदीपकः ३) शिलान्यास पद्धति ।) शिवार्चणपद्धति १) शुक्लयजु शास्त्रीय कर्म काण्ड प्रदीप ७) शुद्धि कौमुदी-गोविन्दानन्द ३॥।) शुद्धि मयूख-नीलकंठ १) शूद्राचार्य शिरोमणि-शेषकृष्ण १॥) शूद्रदशगात्र।) शूद्रपार्वण ≡) श्राद्धकल्पलता-नन्द पण्डित ४॥) श्राद्ध क्रिया कौमुदी-गोविन्दा-नन्द ५।) श्राद्धचन्द्रिका-दिवाकरभट्ट ३) श्राद्ध पद्धति-वाचस्पति १॥।) श्राद्धमयूख-नीलकंठ १॥) श्राद्ध मंजरी-बापूभट्ट ३।=) श्राद्धविवेक-रुद्रधर २) श्राद्धसंग्रह-वायुनन्दन ५) श्रावणी-उपाकर्म १॥), २॥) षडशीति-आदित्याचार्य २) सत्यार्थप्रकाश-स्वामी दयानन्द १॥) संध्याभाष्य समुच्चय-६ भाष्य ३।=) संध्योपासन भा.टी. -) तर्पण सहित ≡) क्षत्रिय ≡) वैश्य ≡) सम्बन्धनिर्णय १।) समूर्तार्चनाधिकरण (अत्रिसंहिता) ६) सरस्वतीविलास-प्रतापरुद्र २॥) सरयूपारीण ब्राह्मण-वंशावली ।) समय मयूख-नीलकंठ २) सर्वतोभद्र चक्र ।) सर्वदेवप्रतिष्ठा प्रकाश-चतुर्थीलाल ४॥) सर्वपूजा ।) सापिण्ड्य कल्पलतिका-वृत्ति ॥=) सापिण्ड्यदीपक ।=) सापि-ण्डीनिर्णयपत्रिका ।≡) संकल्पकल्पना ।॥=) संस्कार गणपति-रामकृष्ण १५) संस्कार दीपक-३ भागों में-नित्यानंद १४॥) (पृथक् पृथक् भाग भी मिलते हैं) संस्कार पद्धति-भास्कर शास्त्री ४।) संस्कारप्रकाश-चतुर्थीलाल ४॥) संस्कारभास्कर ६), ७) संस्कारमयूख-नीलकंठ १॥) संस्काररत्नमाला २१।) संस्कारविधि-स्वामी दयानन्द ।॥=) संस्कारविधिविमर्श-अत्रिदेव-गुप्त ३) स्मार्त प्रभु-विद्याधर गौड़ १॥) स्मार्तोल्लास-३ भाग २॥) संक्षिप्त दीक्षा तुलादान पद्धति

=)॥ स्मृति कौस्तुभ-अनन्तदेव ५) स्मृतिचन्द्रिका ६ भाग १३॥) स्मृतितत्त्व-रघुनंदन भट्ट २ भाग १६) स्मृतिसमुच्चय-२७ स्मृति ८॥) स्मृतिसारोद्धार-विश्वम्भर ६) स्मृत्यर्थसार-श्रीधराचार्य २॥) स्वस्तिवाचन =) हरदीमातृपूजा =) हरिजन स्मृति ॥) हारलता-निरुद्धभट्ट २) हिन्दू धर्मका स्वरूप =) होमपद्धति =) क्षौरनिर्णय =) त्रिशच्छलोकी ५) त्रिपिंडी श्राद्धपद्धति ॥=) त्रिस्थली-सेतु-नारायणभट्ट ६॥=) त्रिस्थलीसेतु प्रघट्टक—नारायण १॥) त्रिस्थली सेतु-तीर्थेन्दु शेखर-काशी-मोक्ष विचार ॥)

पुराण-रामायण-इतिहास-महाभारत-व्रतकथा-महात्म्य ग्रन्थ

अग्निपुराण बुक साइज ५) अग्निवेषरामायण ॥=) अद्भुतरामायण भा.टी. २॥) अध्यात्म रामायण मूल गुटका २) संस्कृत टीका-खुला पत्रा ७) तीन संस्कृत टीका बुक साइज १५) भाषा टीका बुकसाइज काशी ५) भा. टी. गोरखपुर ३) अनन्तव्रत कथा भा. टी. ।) अयोध्या महात्म १॥) आवन्ति क्षेत्र माहात्म्य ७) अष्टादशपुराण दर्पण भाषा ५) आत्म रामायण १) आदित्य व्रत कथा =) आदि पुराण भा. टी. ४॥) आनन्द-रामायण मूल १०) आर्य मंजुश्री मूल कल्प केवल दूसरा, तीसरा भाग ७) इतिहास गुरु खालसा भा. ५) ऋषिपंचमी भा. टी. ।=) एकादशी महात्म केवल भाषा १) भा.टी. खुला पत्रा ४) करवा चतुर्थी ।) कल्किपुराण मूल बुकसाइज १) भा. टी. ५) कृष्ण जन्माष्टमी ।=) कार्तिक महात्म भा. टी. २) ३५ अध्याय क्षेमंकरी ४॥) कार्तिक शुक्ल रविषष्ठी =) काशीखण्ड खुला पत्रा भा. टी. २०) केवलभाषा बुकसाइज १०) काशी केदार महात्म ३) केदार कल्प ३॥) केदार खण्ड भाषा टीका २०) कूर्म महा पुराण खुला पत्रा मूल ७) गणेश चौथ कथा भा.टी. =) गया महात्म भा. टी. १॥) गर्ग संहिता मूल खुला पत्रा ११) गरुड़ पुराण १६ अध्याय भा. टी. २॥) ३४ अध्याय भाषा टीका २) सम्पूर्ण मूल बुक साइज ३॥) चन्दन षष्ठी सूर्यषष्ठी ।) चान्द्रायण व्रत कथा भा.टी. ।) चित्रगुप्त कथा =) जगन्नाथ महात्म २॥) जैमिनी अश्वमेघ मूल ४) देवी भागवत भा. टी. खुला पत्रा ५०) नारद पुराण खुला पत्रा मूल १५) नासिकेत भा.टी. २) नृसिंह पुराण मूल बुक साइज ३॥) पद्म पुराण मूल बुक साइज ४ भाग में सम्पूर्ण ३३॥) खुला पत्रा मूल मोटा अक्षर ५०) पंचकोशी यात्रा ।=) पुराण संहिता-आलमन्दार-संहिता-बृहत्सदाशिव संहिता-सनत्कुमार संहिता ६) पुरुषोत्तम महात्म (अधिकमास) भा. टी. ३) प्रणवकल्प-सभाष्य १॥) प्रेमसागर-भाषा सचित्र ३), २॥) प्रेमसुधासागर भा. गोरखपुर सचित्र ३॥) बहुला व्रत कथा =) बुद्धाष्टमी कथा ।=) ब्रह्म पुराण बुकसाइज मूल १०॥) ब्रह्मवैवर्त पुराण बुकसाइज कलकत्ता ७॥) बुकसाइज २ भाग पूना १५॥=) खुला पत्रा मोटा अक्षर बम्बई १८) ब्रह्मोत्र खण्ड भा.टी.३॥) ब्रह्माण्डपुराण खुला पत्रा मूल १४) भक्तमाल नाभाजी सटीक ३॥) केवल भाषा १०) भागवत सम्पूर्ण, मूल गुटका-गोरखपुर ३) बम्बई निर्णयसागर ९) मोटा अक्षर मूल बड़ा साइज गोरखपुर ६) सचूर्णिका-संस्कृत टीका खुला पत्रा बम्बई ३४) श्रीधरी संस्कृत टीका खुला पत्रा काशी २४) भाषाटीका खुला पत्रा रामतेज ३२) भा. टी. खुला पत्रा-दौलतराम कृत सरस्वती भा. टी. प्रकाश-टिप्पणी पृष्ठसंख्या १८५०-रु ३३) शालिगराम कृत भा.टी. खुला पत्रा मोटा अक्षर बढ़िया कागज बंबई ४५) भा. टी. बुक साइज दो जिल्द गीता प्रेस १५) भा. टी. दो जिल्द मथुरा २०) भा. टी. बुकसाइज काशी एक जिल्द १५) भागवत सुधासागर केवल भाषा गीता प्रेस ८॥) भागवत केवल भाषा अनेकों रंगीन चित्र सहित दो भाग इलाहाबाद १६) भागवत दशम स्कन्ध भा.टी. खुला पत्रा १०) भागवत एकादश स्कन्ध प्रत्येक पद का हिन्दी अनुवाद तथा भावानुवाद सहित २ भाग ६॥) भारत पारिजात ५) भारतवर्ष भूगोल संस्कृत १) मंगला गौरी व्रत कथा ।) मत्स्य पुराण बुकसाइज ५) खुला पत्रा मूल १४) बुकसाइज केवल विस्तृत हिन्दी अनुवाद २०) महा-भागवत-देवी पुराण मूल २) महाभारत-नीलकंठी संस्कृत टीका सम्पूर्ण ६ जिल्दों में ५०) केवल विराटपर्व ८ संस्कृत टीका ५) केवल उद्योग ५ संस्कृत टीका १०) हिन्दी टीका सातवलेकर केवलआदि पर्व ७) सभापर्व ३॥) केवल हिन्दी भाषा बारीक टाइप सम्पूर्ण १० जिल्दों में सम्पूर्ण २०) केवल हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण स्थूल अक्षर अनेकों रंगीन तथा सादे चित्रों सहित बढ़िया कागज १० बड़ी जिल्दों में ९०) छोटा हिन्दी भाषा संक्षिप्त मोटा अक्षर १०) गुटका बारीक ४), २) सबलसिंह चौहान दोहा-चौपाई लखनऊ ८) बम्बई १३॥) राधेश्याम की तर्जपर गीता धर्म ८) महाभारतकी समालोचना सातवलेकर १॥) महाभारत तात्पर्य प्रकाश संस्कृत २॥) महाभारत संग्रह ।=) महालक्ष्मीव्रत कथा ।), ॥) मन्त्र रामायण २) मारकण्डेय पुराण बुक साइज मूल २॥) माघमहात्म भा.टी. २॥) माघ भादों गणेश चौथ =) मुक्ताभरणसप्तमी ।) मुक्ताफल-बोपदेव ६) मूल रामायण =)॥, ॥) युगपुराण २) लघुभागवतामृत ४) ललिता सहस्रनाम सटीक २॥) ललितोपाख्यान २) लिङ्गपुराण बुक साइज मूल ६॥) खुला पत्रा मूल मोटा अक्षर १६) वटसावित्री कथा ।=) वामन द्वादशी =) वामन पुराण खुला पत्रा ६) वायु पुराण बुकसाइज ८) खुला पत्रा मोटा अक्षर १२) केवल भाषा विस्तृत अनुवाद १२) वाराह पुराण खुलापत्रा १३) वाल्मीकि रामायण मूल खुला पत्रा १७) गोविंदराजीय चार व्याख्या सहित ६०) ३ संस्कृत टीका सहित (१-५ तथा ७ काण्ड) ३०) भा. टी. खुला पत्रा मोटा अक्षर बम्बई ५०) भा. टी. बुकसाइज २४) मूल छोटा पाकट साइज आठ भाग अपूर्ण १२॥) केवल बालकाण्ड भा. टी. सातवलेकर ४) अयोध्याकाण्ड भा. टी. सातवलेकर ८) अरण्य काण्ड सातवलेकर ४) सुन्दर-काण्ड भा. टी. सातवलेकर ४) रामतेज भा. टी. ३) भा. टी. खुला पत्रा बम्बई ५॥) वाल्मीकि रामायण संपूर्ण केवल भा० इलाहाबाद १३) भा. टी. सम्पूर्ण इलाहाबाद २४) केवल भाषा मथुरा १०) विष्णु पुराण बुकसाइज ४।=) खुला पत्रा सटीक ९) विष्णुधर्मोत्तर पुराण मूल खुला पत्रा १८) वैशाख महात्म भा. टी. ३) व्यतिपात कथा ।) शनिप्रदोषव्रत भा. टी. ।) शिवपुराण मूल खुला पत्रा संपूर्ण १८) केवल भाषा १०) शिवभारत २॥) शिवरात्रिमाहात्म्य ।॥) शुकोक्ति-सुधासागर भाषा १२) श्रावणमाहात्म्य भा. टी. ४) श्रीसुबोधनी-श्रीवल्लभाचार्य ४॥) संकट चतुर्थी मूल ।=) सत्यनारायण कथा भा. टी. ५ अध्याय ।=) ७ अध्याय भा.टी. ॥) भा.टी. वायु-नंदन ५ अध्याय ॥=) भाषा राधेश्याम ॥) स्कान्दपुराण मूल सम्पूर्ण खुला पत्रा ३००) भा. टी. लखनऊ खुला पत्रा १००) सुखसागर (भागवत) सरल भाषा मोटा अक्षर सचित्र लखनऊ २५) मोटा अक्षर मथुरा १६), १२) मध्यम सफेद कागज लखनऊ १३) मथुरा ८) सुखसागर-सरल भाषा-ला. सालिगराम सफेद कागज बड़ा साइज बम्बई ३६) गुटका बारीक-टाइप १२) सोमावती कथा ॥) सौर पुराण ५) हरितालिका व्रत कथा भा.टी. ।=) हरिलीला अमृत गोपदेव १॥) हरिवंश संस्कृत टीका बुकसाइज १२) केवल भाषा बम्बई ११) फाल्गुण महात्म १) रास पंचाध्यायी भा. टी. ४) रामाश्वमेध खुला पत्रा ११) महाभारत तात्पर्य टीका ज्ञानदीपिका ४)

वेदान्त ग्रन्थ

१॥।) प्रकाशिका व्याख्या १॥।) अनन्तकृष्णशास्त्रिकृत टीका ६) शिखामणि-मणिप्रभा दो सं. टीका ६) भाषाटीका सहित बंबई २।) वेदान्तदर्शन-भाषाटीका सहित गोरखपुर २) वेदान्त-रत्नमंजुषा-पुरुषोत्तमाचार्य ३) वेदान्तरहस्य ~) वेदान्तसंज्ञावली १) वेदान्तसंज्ञा भा. टी. ॥।=) वेदान्तसार-आपोदेव व्याख्या २) सुबोधनी तथा विद्वन्मनोरंजनी दो संस्कृत व्याख्या सहित २) संस्कृत तथा भाषाटीका सहित १॥।) वेदान्तसिद्धान्तकल्पवल्ली-सदाशिवेंद्र कृत भाषाटीका सहित ॥।) वेदान्तसिधान्तसंग्रह-वनमालि कृत ४।।) वेदान्त सिधान्तसूक्तिमंजरी सटीक ५) वेदान्तसिद्धान्तादर्श २।।) वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली-प्रकाशानंद ३=) भाषाटीका सहित १।) वैराग्यभास्कर भा. टी. १।) वेदान्तसूत्र मुक्तावली-ब्रह्मानंद ४) वृत्तिप्रभाकर-निश्चलदास भाषा ८) शंकरदिग्विजय-सटीक १०=) भाषाटीका १०) शंकरपाद भूषण १४) शाब्दनिर्णय-प्रकाशात्म ॥।=) शारीरिकमीमांसा वार्तिक भाष्य ५) शाण्डिल्यसंहिता दो भाग २=) शास्त्र-दर्पण-अमलानंद ३।।) शक्तिपात अर्थात् कुण्डलिनी भाषा १) शिवाद्वैतनिर्णय-अप्पयदीक्षित २॥।~) शुद्धाद्वैतमार्तण्ड श्रीगिरिधरजी १।।) शैतान का गुलाम भाषा २) शैवपरिभाषा-शिवाचार्य प्रणीत ३।=) श्रीकर भाष्य-वीरशैवभाष्य दो भागोंमें १८) श्री भाष्य-यतीन्द्रमतदीपिका-श्रीनिवासाचार्य ३) श्रुत्यनाकल्पवल्ली-पुरुषोत्तमदास ३) श्रुत्यन्तसुरद्रुम-पुरुषोत्तमदास ४।।) श्रुतिकल्पलता-वामनकृत वेदस्तुति व्याख्या ३।।) संत प्रभाव-भाषा ।।=) संक्षेप शारीरिक-अन्वयार्थबोधिनी टीका रामतीर्थकृत ८) मधुसूदनी टीका ८) सुबोधिनी, अन्वयार्थ दो टीका दो भाग पूना १५।) नृसिंहाश्रमकृत तत्वबोधिनीटीका ५ भाग ३।।) सनतसुजातीय-सभाष्य १।) स्वानुभवादर्श-माध्वाश्रय ३) स्तुति कुसुमांजलि जगद्धर भा. टी. ८) साधनसंकेत भाषा ।।) सत्संग के बिखरे मोती भाषा ॥।) सत्संगसुधा भाषा ।।) सत्संगमाला ।) साधनपथ भाषा =)॥ सारसंग्रह-रूपकविराजकृत (गौडीय वैष्णव) ६) सिद्धान्तदर्शन-विश्वदेवाचार्यकृत २) सिद्धान्त बिन्दु-मधुसूदन विरचित पुरुषोत्तम व्याख्या ११) न्यायरत्नावली-नारायणी दो सं. टीका ४) वासुदेव अभ्यंकर कृत सं. टीका २।।) भाषाटीका सहित २) सिद्धान्तलेश संग्रह-अप्पयदीक्षित मूल १॥≡) भाषाटीका सहित ४) सुखी जीवन भाषा ।।) सुन्दर विलास भाषा २।।) सूक्तिसुधाकर-भाषा ।।=) सूतसंहिता-तात्पर्य दीपिका सं. व्याख्या सहित ७।।) सूत्रार्थामृतलहरी-कृष्णावधूत पंडित विरचित ३।) सौन्दर्यलहरी-भाषाटीका ५) हंस सन्देश सटीक ।।=) ज्ञानमाला-भाषा ≡) ज्ञानवैराग्य प्रकाश-भाषा स्वा. परमानंद २) शास्त्रसिद्धान्तलेश-तात्पर्यसंग्रह-वासुदेव-ब्रह्मेन्द्र विरचित २)

काश्मीर-शैवग्रन्थावलि

आह्निक पद्धति—नव्य चण्डीदास कृत ३) ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी—उत्पलदेव विरचित तथा अभिनवगुप्त व्याख्या सहित दो भागों में २१) ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विवृति विमर्शिनी—अभिनवगुप्त कृत ३ भागोंमें २४) उड्डामरेश्वरतन्त्रम् ५।) कर्मकाण्ड क्रमावली—सोमशंभु विरचित ४।।) कामकला विलास—पुण्यानंद विरचित ३॥।) काश्मीर शैविज्म—अंग्रेजीमें ७।।) क्रमदीपिका ३) गिलगित मैनुस्क्रिप्ट सीरिज—देवनागरी अक्षरोंमें संस्कृत ३ वोल्युम ५ भागमें ६४।।) गन्धर्वतन्त्र ९) घटकर्पर काव्य १) जन्ममरण विचार—अमरौघशासन-तन्त्रवटधानिका ३॥।) तंत्रसार—अभिनवगुप्त कृत ७।।) तंत्रालोक—अभिनवगुप्त कृत जयरथ कृत व्याख्या सहित १२ भागोंमें ११७) देवीनामविलास—साहिब कौल विरचित ७।।) देवीरहस्य—परिशिष्ट सहित १८) दशोपदश नर्ममाला—क्षेमेन्द्र कृत ४।।) नरेश्वर परीक्षा—षड्ज्योति विरचित रामकण्ठ कृत व्याख्या सहित ६) नेत्र तन्त्र क्षेमराज कृत व्याख्या सहित २ भाग १८) परमार्थसार—अभिनवगुप्त कृत योगराज कृत व्याख्या सहित ७।।) परात्रिंशिका-आगम-शास्त्र—अभिनवगुप्त कृत व्याख्या सहित १०) परात्रीशिका लघुवृत्ति, परात्रीशिका विवृति २) परात्रीशिका तात्पर्य-दीपिका २) प्रासादमण्डन ३) प्रत्यभिज्ञाहृदय—क्षेमराज कृत ३) बृहन्नीलतंत्र ९) भगवद्गीता—रामकंठकृत व्याख्या सहित ६) महानयप्रकाश-राजानक शितिकंठ ५।) महार्थमंजरी—महेश्वरानंद कृत स्वोपज्ञ व्याख्या ५।) मालिनीविजय तन्त्र—आगमशास्त्र १०।।) मालिनी-विजय-वार्तिक—अभिनवगुप्त कृत ९) मृगेन्द्रतन्त्र—विद्यापाद, योगपाद, नारायणकण्ठ कृत व्याख्या सहित ९) लल्लेश्वरी वाक्यानि—राजानक भास्कर कृत व्याख्या १।।) लोकप्रकाश—क्षेमेन्द्र विरचित ३) लौगाक्षि गृह्यसूत्राणि—देवपाल कृत भाष्य सहित दो भाग में १६।।) वातूलनाथ सूत्राणि—अनन्तशक्ति कृत वृत्ति सहित ३) वामकेश्वरीमतविवरणम्—जयरथ कृत २) श्री-विद्यार्णवतन्त्र—श्रीविद्यारण्य स्वामी कृत दो भागोंमें संपूर्ण बड़ा साइज ८१) विज्ञानभैरव—क्षेमराज, शिवोपाध्याय तथा आनंदभट्ट कृत व्याख्या ७।।) शिवदृष्टि—सोमानंदनाथ विरचित-उत्पलदेव कृत व्याख्या ७।।) शिवसूत्र वार्तिक वरद राजकृत ३) शिवसूत्र वार्तिक—राजानक भास्कर कृत तथा शिवसूत्रवृत्ति—स्पन्द वृत्ति सहित ७।।) शिवसूत्र विमर्शिनी—वसुगुप्त कृत—क्षेमराजकृत व्याख्या सहित ९) शिशुपाल वध—वल्लभदेव कृत व्याख्या सहित ९) षट् त्रिंशत्तत्वसंदोह—भावोपहार—बोधपंचदशिका—अनुत्तर प्रकाश पंचाशिका सहित ४।) स्तवचिन्तामणि-भट्टनारायण विरचित ६॥।) स्पन्दकारिका—रामकण्ठाचार्य वृत्ति ८।) स्पन्दनिर्णय क्षेमराज कृत १०।।) स्पन्दसंदोह—क्षेमराज कृत १।।) स्वच्छंदतंत्र—आगमशास्त्र—क्षेमराजकृत व्याख्या सहित ७ भागों में ५८।।) सिद्धित्रय—प्रत्यभिज्ञा कारिकावृत्ति सहित ९)।

दर्शन ग्रन्थ (सांख्य, वैशेषिक, न्याय, योग, मीमांसा)

अधिकरण कौमुदी—देवनाथ ठक्कर १) अर्थवादादिविचार—क्षीरसमुद्रवासि मिश्र १) अर्थ-संग्रह—लौगाक्षि-कौमुदी व्याख्या १।।) अनेकान्त जय पताका—श्री हरिभद्र सूरि स्वोपज्ञ व्याख्या २ भाग २८) अनुमान दीधिति प्रसारिणी—कृष्णदास अपूर्ण २।) अध्वरमीमांसा कुतुहलवृत्ति—वासुदेव दीक्षित अपूर्ण १०।।) अवैदिक दर्शन संग्रह ।~) आगमशास्त्र—गौडपादीय—विधुशेखर भट्टाचार्य कृत वृत्ति सहित ८।।) आत्मतत्वविवेक—बौधाधिकार—शंकर मिश्र, भगीरथ ठक्कर, रघुनाथ ३ व्याख्या ८।) रामतर्कालंकार, रघुनाथ तथा शंकर कृत ३ व्याख्या ९) नारायणी व्याख्या ७।।) आलंबन परीक्षा—दिङ्नाग ३) उपेंद्रविज्ञानसूत्र—स्वोपज्ञवृत्तिसहित १) उभया-भावादिवारकपरिष्कार—विवरणसमेत १) कारिकावली—सिद्धान्तमुक्तावली १।), १) मुक्तावली, दिनकरी, रामरुद्री ९) मुक्तावली, प्रभा, मंजूषा, दिनकरी, रामरुद्री, गंगारामजटीय सहिता ९) मुक्तावली-न्यायचंद्रिका १।) मुक्तावली, मयूख टीका संपूर्ण २) प्रत्यक्षखंड मात्र १) मुक्ता, दिन, राम शब्दखंड मात्र ।।) कारिकावली-कंठाभरण टीका ॥।) प्राज्ञमनोरमा १) का०

मुक्तावली तत्त्वालोक (मुक्तावली-प्रश्नोतरी) ॥) किरणावलीप्रकाश-वर्धमान विरचित २ भाग १॥) किरणावलीप्रकाशदीधिति—रघुनाथशिरोमणि ॥।=) किरणावलिभास्कर—पद्मनाभ ॥।=) कुसुमांजलिबोधिनी—वरदराज १) कुसुमांजलि कारिका ३) कर्मयोग—स्वा० विवेकानंद भाषा १॥=) कर्मवाद और जन्मांतर भाषा ३) कालीशंकरी ॥) केवलान्वयी १) क्रोडपत्रसंग्रह (अनुमान जागदीशी अनुमान गादाधरी क्रोडपत्राणि) १२) ख्यातिवाद ॥=) गादाधरी—(अनुमानचिन्तामणि व्याख्या) ३१॥) गादाधरी सामान्यनिरुक्ति गूढार्थतत्त्वालोक १॥।) गङ्गा व्याख्या सहित ६) गादाधरी सव्यभिचार—वामाचरण टीका ३॥) गोरक्ष सिद्धान्त-संग्रह ।≡) गोरक्ष योग मंजरी—भाषा कवित्त—चटकानाथ जी १) चतुर्दशलक्षणी—गदाधर ४॥) जागदीशी-व्यधिकरण (पं० शिवदत्त) ४) जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्ति मूल ।-) पं० शिवदत्त व्याख्या २॥) जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्ति (श्रीवामाचरण टीका) ३) जा० सिद्धान्तलक्षण—पं० शिवदत्त ३) जा० पक्षता—पं० शिवदत्त ३) जैमिनीय न्यायमाला (माधवाचार्य) १—३ अध्याय ४) तथा संपूर्ण पूना १३॥) जैमिनीय सूत्रवृत्ति सुबोधिनी—श्रीशितिकण्ठभट्ट कृत भाषानुवाद सहित १—४ अध्याय ८) टुपटीका—कुमारिलभट्ट ४) तंत्र सिद्धान्त रत्नावली—श्री चित्रस्वामी ४) तंत्राधिकारी निर्णय ॥) तत्त्वचिन्तामणि—गंगेशोपाध्याय—प्रत्यक्षखंड प्रथम भाग १।) तत्त्व चिन्तामणि दीधिति प्रकाश अपूर्ण ४॥) दीधिति विवृति अपूर्ण ९॥।) तत्वसार-रामलालदास ॥) तत्त्वोपप्लव-जयाराशि ८) तौताति मत तिलक ३ भागों में ४) तर्ककौमुदी ।) तर्कताण्डव न्यायदीप ९॥) तर्क प्रकरण—(गंगेशोपाध्याय) तर्करहस्य सहित १) तर्कभाषा (केशव) मूल ॥=) सटीक २॥) तर्कभाषा जैन ३) तर्कभाषा बौधन्याय—मोक्षाकर ३) तर्क मकरन्द ।=) तर्कसंग्रह मूल ।) इन्दुमति हिं० टीका ।=) न्यायबोधनी, पदकृत्य, चिरला, भा० टीका १) न्याय बोधनी-दीपिका-मयूख, भा० टी० १।) न्यायबोधनी की भाषा टीका—पं० आनन्द झा कृत १) सिद्धान्त चन्द्रोदय सं० टीका १) चंद्रिका टीका ॥) दीपिका, किरणावली १।) बाल मनोरमा, परीक्षादि ४ टीका १।) अभिनव राजलक्ष्मी, परिमलदीपिका टीका १।) दीपिका, न्यायबोधनी अंग्रेजी नोट्स २॥) तर्कामृत ।=) दीपिका सर्वस्व—कुरुंगोटी ४) धर्म और दर्शन भाषा पं० बलदेव ३) नयविवेक भवनाथ मिश्र ३॥) न्याय कलिका-जयन्त ।≡)न्यायकोश-भीमाचार्य १५) न्याय-कौस्तुभ-प्रत्यक्ष १॥=) न्यायदर्शन मूल ≡) वात्स्यायन भाष्य, विश्वनाथ वृत्ति पूना ७॥) कलकत्ता ३=) वात्स्यायन भाष्य, खद्योत पूना ६।) वात्स्यायन भाष्य ३। खद्योत टीका १०)पं० छज्जूराम टीका १) वात्स्यायन भाष्य, वार्त्तिक, तात्पर्य टीका तथा वृत्ति २ भाग २०॥) सुदर्शन भाष्य १०) वात्स्यायन भाष्य तथा भाषा टीका ३॥) न्यायप्रकाश—केवल भाषा स्वा० चिनद्घानंद १२) न्याय परिशिष्ट—उदयनाचार्य ६।) न्यायबिन्दु टीका—धर्मोत्तराचार्य २।) न्यायबिन्दु—वैद्यनाथ भट्ट १॥) न्यायमंजरी—जयन्त भट्ट १०) न्याय रत्नमाला—पार्थ सारथि ३) न्यायलीलावती मूल १।) विवृति, प्रकाश तथा कण्ठाभरण ३ व्याख्या १३॥) न्यायवार्तिक तात्पर्य टीका—वाचस्पति ६) न्यायवार्तिक तात्पर्य परिशुद्धि अपूर्ण ६) न्यायप्रदीप—गंगासहाय १॥।) न्यायसिद्धान्ततत्त्वामृत २॥) न्यायसार—वासुदेव १॥।) न्यायसार-माधव २॥) न्यायसिद्धांजन २॥) न्यायसिद्धान्त दीप सटीक ८) न्यायसिद्धान्त मंजरी जानकीनाथ १॥), २॥) न्याय सिद्धान्तमाला दो भाग १॥-) न्यायसिद्धान्त मुक्तावली—किरणावली टीका ३॥) पं० कृष्णजूराम टीका २) साधु गोविन्द सिंह भाषा टीका ५) न्याय सिद्धान्त मुक्तावली प्रश्नोत्तरी १।) न्यायसुधा—भट्ट सोमेश्वर २४) नायकरत्न—रामानुज ४॥) ।

पंचलक्षणीसर्वस्व २) पदार्थतत्व निरूपण १॥) पदार्थमंडन—वेणीदत्त ।≡) पदार्थ रत्न-माला—रघुनाथ १॥) पदार्थशास्त्र—भाषा पं० आनंद झा कृत—अत्युतमग्रन्थ २॥) पूर्णयोग—भाषा श्री अरविन्द १॥) पूर्वमीमांसाधिकरण कौमुदी—रामकृष्ण १॥) पूर्वमीमांसा सूत्रवृत्ति—भावबोधिनी—करवीरपीठ के श्री शंकराचार्य विरचित १०) प्रकटार्थ विवरण ४) प्रभाकर-विजय—नन्दीश्वर २॥) प्रमाणमंजरी—सर्वदेव ।) प्रमाणवार्तिक सटीक ३०) प्रमेयकमलमार्तण्ड—प्रभाचंद्राचार्य ८) प्रमेयरत्नावली—बलदेव विद्याभूषण २॥) प्रमेय रत्नालंकार—अभिनव चारु कीर्ति विरचित ३=) प्रशस्तपादभाष्य ४) प्रशस्तपादभाष्य टीका संग्रह—कणादरहस्य ३) प्रेमयोग—स्वा. विवेकानंद भाषा १=) बृहद्योग सोपान भाषा १॥।) बृहती-ऋजु विमलाद्वय व्याख्या ४॥) बृहती—दो भागोंमें (प्रभाकर मिश्र) शालिकनाथ कृत शाबर भाष्य व्याख्या तथा भाष्य परिशिष्ट सहित ८।≡) भक्तियोग—स्वा. विवेकानंद भाषा १॥) भक्तिसागर स्वा. चरण-दास भाषा ७) भाट्टचिन्तामणि—गागाभट्ट ४॥) भाट्टदीपिका—(खंडदेव) प्रभावल्ली व्याख्या निवितान्त ८) भाट्टभाषा प्रकाश—नारायणतीर्थ ॥) भारतीय दर्शन भाषा—पं० बलदेव ८) भारतीय दर्शनशास्त्रका इतिहास—देवराज, तिवारी भाषा ६॥) भावनाविवेक—मंडनमिश्र १) भाषा परिच्छेद—मुकुन्द झा १) भाषारत्न—कणाद तर्क वागीश ७) भास्करोदय—तर्कसंग्रह दीपिका प्रकाश (नीलकंठी) की व्याख्या २) भेदसिद्धि—विश्वनाथ ॥।=) भेदजयश्री—तर्कवागीश ॥=) भेदरत्न—शंकर मिश्र ॥।) मणिसार—गोपीय १॥।) मातृ तत्व प्रकाश १) माधुरी पंचलक्षणी मूल ।) व्याख्यासहित ॥=) माधुरी व्याप्ति पंचकरहस्य सिंह व्याघ्रलक्षणरहस्य—पं० शिवदत्त कृत व्याख्या १॥) पं० वामाचरण कृत व्याख्या २) मीमांसा कौस्तुभ—(खंडदेव) संपूर्ण १८) मीमांसा दर्शन—तन्त्रवार्तिक—शाबर भाष्य सहित संपूर्ण (तर्कपादरहित) ४३॥।) मीमांसा न्याय प्रकाश (आपदेवी) ॥।), १) वासुदेव अभ्यंकर कृत संस्कृत व्याख्या ३॥) भाट्टालंकार टीका २॥) सारविवेचनी टीका ५) मीमांसानुक्रमणिका-मंडन मिश्र कृत ७॥) मीमांसा परिभाषा मूल ।) सं. टीका हिं० टीका ॥।) मीमांसा बाल प्रकाश—भट्टशंकर ३) मीमांसा शास्त्रसार १।) मीमांसा श्लोक वार्तिक—न्यायरत्नाकर व्याख्या सहित ४॥) काशिका व्याख्या दो भाग ५॥) मुक्तिवाद—चंद्रिका व्याख्या ॥) योगके आधार—भाषा स्वा. अरविंद २।) योगके चमत्कार—प० ब्रंटन भाषा २) योगके आसन—सातवलेकर भाषा २॥) योगप्रदीप—स्व. अरविंद भाषा ॥।) योगप्रवाह भाषा ३॥) योगबीज—श्री गोरखनाथ संस्कृत मूल ॥) योगतत्वप्रकाश भाषा ≡)॥ योगमार्ग प्रकाशिका भाषा१।) योगयाज्ञवल्क्य—मूल संस्कृत ।=) योगसाधनकी तैयारी—भाषा सातवलेकर१) योगसार संग्रह मूल ॥) योगसूत्र (पातंजल) मूल)। भावागणेशीय टीका १।) किरणावली टीका३) प्रदीपिका टीका १) योगचंद्रिका व्याख्या ३) मणिप्रभा टीका १॥-) विज्ञान भिक्षु कृत योगवार्तिक व्याख्या ३॥।) व्यास भाष्य—वाचस्पति टीका २॥।-) भोजवृत्ति १।) अनंत पंडित टीका ॥) व्यास भाष्य वाचस्पति टीका, भोजवृत्ति ५) सांगयोग दर्शन—व्यास भाष्य—वाचस्पति टीका (तत्ववैशारदी) पातंजल रहस्य—योगवार्तिक भास्वती वृत्ति सहित ६) योगदर्शन भाषा टीका ॥।) जिलदवाला १) योग सूत्रवृत्ति—सदाशिवेंद्र २) योगिनी हृदयदीपिका दो भाग १।=) योगसूत्र भाष्य कोष ३) योगसूत्र—श्री शंकर भगवत्पादकृत भाष्य विवरण १२॥।) रससार—गुण-वादीन्द्र ॥-) राजयोग भाषा—स्व. विवेकानंद १=) लौकिकन्यायाञ्जलि ३ भाग ४) वाक्यार्थरत्न —सव्याख्या १।)

बादवारिधि—गदाधरभट्ट ४।।) वासिष्ठदर्शन २।।) विधिरसायन—अप्पय दीक्षित ३) विभ्रम-विवेक—मंडन मिश्र १) वेदप्रकाश—सत्यज्ञानानंद १।।) विषयतावाद—ढण्ढिराज ।) वैयासिक न्यायमाला ३।=) वैशेषिक दर्शन प्रशस्तपाद-सूक्ति-सेतु-व्योमवती १०।।) व्याप्ति पंचक कलकता १।) व्याप्तिपंचकरहस्य—पं०शिवदत्त १।।) व्याप्तिपंचक—पं०वामाचरण २) व्युत्पतिवाद-गदाधर भट्ट मूल २) शास्त्रार्थ कलाटीका २) गूढार्थ तत्वालोक व्याख्या ६) आदर्श टीका (सुदर्शन) ११) जयाटीका ४) व्युत्पत्तिवादतरंणि—व्युत्पतिवाद प्रश्नोतरी ।।।=) शक्तिवाद—हरिनाथी टीका २) मंजूषा, विनोदनी २।।) आदर्श टीका (सुदर्शन) ४।।) विवृत्ति ।।।).शब्दशक्ति प्रकाशिका—जगदीश प्रथम भाग १।=) कृष्णकान्तीय टीका, रामभद्री टीका ७) शास्त्रदीपिका—युक्ति स्नेह प्रपूरणी व्याख्या ३) शास्त्र दीपिका—प्रथम तर्कपाद ३।।) शास्त्रार्थ रत्नावली—जयदेव शर्मा १।।) श्लोकवार्तिक ७।) सरकारिका ४) शिवसंहिता भाषाटीका २।।।) शिवस्वरोदय भा. टी. १।), ।।।) षट्दर्शन मूल गुटका २।।) सप्तपदार्थी—सटीक २।।) ३ टीका सहित ५) सर्वतन्त्रसिद्धान्त पदार्थ लक्षण संग्रह—इसमें आकारादि क्रमसे दार्शनिक शब्दोंके ८९०१ लक्षण है भिक्षु गौरी शंकर संगृहीत ।।।) सरल राजयोग भाषा ।।) सर्वदर्शन कौमुदी माध्व सरस्वती १≡) सर्वदर्शन संग्रह—माध्वाचार्य मूल कलकता १।।–) पूना स्थूलाक्षार ४।।) वासुदेव अभ्यंकर कृत सर्वोत्तम व्याख्या १५) भाषाटीका ५) सांख्यकारिका मूल ।=) चंद्रिका भाषा टीका ।।।=) किरणावली टीका ३) हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद १।) सांख्यतत्वकौमुदी:बालरामोदासीन कृत व्याख्या ३।।) सुषुमा-टीका २) सटिप्पण १।) तत्व बिभाकर टीका २।।) सारबोधिनी टीका ५) तत्वविलासटीका २) भाषा टीका सहित २) सांख्यवसन्त—योगीनरहरिनाथ विरचित ।।) सांख्य प्रवचन भाष्य—विज्ञानभिक्षु २।।) अनिरुद्धवृति १।।–) हिन्दी टीका १।) सांख्य दर्शन का इतिहास—भाषा में —श्री उदयवीरजी शास्त्री कृत २०) सांख्यतत्वालोक—श्री हरिहरानंद ।।≡) सांख्य संग्रह ३) सांख्यसार ।–) सामान्य निरुक्ति २।।) सामान्य लक्षण (अनुमान जागदीशी) श्रीकाशिकानंद स्वामिकृतया तत्त्वप्रदीप व्याख्या सहित ४।।) सिद्धसिद्धान्तसंग्रह—बलभद्र ।≡) सिधान्तरत्न—बलदेव ।।–) सिधान्त सार्वभौम दो भाग २।।) सुवर्ण सप्तति शास्त्र—(सांख्यकारिका व्याख्या) ३। सूर्यनमस्कार हिन्दी सचित्र १।) सूर्यभेदन व्यायाम ।।।) स्याद्वाद मंजरी—प्रो. ध्रुव ११) भाषा टीका ६) स्वरोदयसारभाषा ।) हेतुतत्वोपदेश—जितारि १।।) हेतुबिन्दु टीका—भट्टाचर्ट विरचिता—विरचिता—दुर्वेक मिश्र कृतालोकालंकृता ११) हमारा योग और उसका आधार भाषा ।।।) हठ्योगप्रदीपका सटीक २) ज्ञानस्वरोदय भाषा ।–) ज्ञानयोग भाषा स्वा. विवेकानंद ३) ज्ञानयोग दो खंड ५)।

गीतादिग्रन्थ

अवधूत गीता मूल ।।।) भाषा टीका ।।।) अष्टावक्रगीता भाषा टीका २।) उत्तरगीता सटीक ।।) गांधी गीता ३।।।) गीताप्रबन्ध भाषा ४।।) गुरुगीता ।।) गणेश गीता भा. टी. ।।।=) जीवन्मुक्त गीता ≡) देवीगीता भा. टी. १) पांडवगीता =) पंचदशगीता १।) पंचरत्नगीता मूल २।।) भाषा-टीका ५) भगवद्गीता मूल स्थूलाक्षर ।–) सजिल्द ।।–) अर्थप्रकाशिका—ब्रह्मयोगीकृत ४) शंकरानंदी टीका ५) भगवद्गीता गुटका मूल विष्ण सहित –)।। शंकरानंदी भाषा टीका ६) श्रीधरी टीका २) मधुसूदनी टीका का भाषानुवाद हरिहर कृपालु ११) पैशाच भाष्य २।=) मधुसूदनी श्रीधरी ९) रामानुजीय १२।।=) अद्वैतांकुराटीका ३।।।) सर्वतोभद्रटीका ५) शंकर भाष्य—आनंदगिरि १०।।) रामकण्ठ कृत टीका ७।।) शांकर भाष्य ७।।) निम्बार्क भाष्यादि अष्ट टीका १०) शांकर भाष्याद्येकादश टीका सहित २०) शांकर भाष्य, आनंदगिरी, नीलकंठी, मधुसूदनी, भाष्योत्कर्ष दीपिका, श्रीधरी, अभिनव गुप्त व्याख्या, गूढार्थतत्वालोक, श्रीधर्मदत्त कृत आठ टीका सहित १८) सर्वतोभद्र व्याख्या ६) ज्ञानेश्वरी संस्कृतमें ५) ज्ञानेश्वरी हिन्दी ५) हरीरामभार्गव कृत पदछेद, भावार्थ आदि ६) चिद्घनानंदी भाषा टीका विस्तृत १४) अमृत तरंगिणी भाषा टीका २।।)तत्वविवेचनी भाषा टीका जयदयाल ४) शांकर भाष्य तथा उसकी भाषा टीका सहित २।।।) रामानुज भाष्य तथा उसकी भाषा टीका २।।) पदछेद अन्वय भाषा टीका मोटा अक्षर १।) मध्यमाक्षर ।।≡) सजिल्द १) साधारण भाषा टीका ।।) सजिल्द ।।।=) भाषा टीका गुटका =)।। सजिल्द ।)।। पुरुषार्थ बोधनी भाषा टीका सातवलेकर १२।।) भाषा टीका दीपनारायण वकील ४) पदछेद भाषा टीका गुटका ज्वालाप्रसाद २) भाषा टीका गीतारहस्य लो. तिलक कृत १२) गुटका भा.टी. सचित्र नानाचित्र ।।।) सादा ।=) तावीजी बड़ी ।।)तावीजी एक इंच १।) भाषा केवल ।–) भाषा केवल १८ माहात्म्यादि सहित असली लोहारी ४), ३), २।।), १।।), राधेश्यामकृत संपूर्ण गीता गानेमें २।।।) हरिगीतामृत—हरिहरानंद—गीता पद्यानुवाद २।) गीताप्रश्नोतर अथवा अद्भुतसंवाद—गीतानंद शर्मा १) गीताज्ञान—पद्यानुवाद—सदानंद ।।।) भगवद्गीता का राजकीय तत्वावलोकन—सातवलेकर २) समन्वय--सातवलेकर २) भगवद्गीता भारतीय दर्शनानि—संस्कृत ४) रामगीता भा. टी. ।।=) शिवगीता मूल ।।।) संस्कृत टीका १।)

मन्त्रशास्त्रग्रन्थ

अघोरी तंत्र भा. टी. १) अनुष्ठान् प्रकाश—चतुर्थीलाल मूल १२) आगमप्रमाण्य १) आनंदलहरी भा. टी. १।) आर्य मंजु श्री मूल कल्प केवल २, ३ भाग ८) इंद्रजाल विद्या संग्रह—(इंद्रजाल विद्या, कामरत्न, दत्तात्रेयसंहिता, षट्कर्म दीपिका, सिद्धनागार्जुन कक्षपुटम्) ३।।।) ईशान शिवगुरु देवपद्धति—४ भाग २०) उच्छिष्टगणपति पंचांग १।।।) उड्डामरेश्वरतंत्र ५।) कर्पूरस्तव—महाकाल प्रणीत ।।।) कलिविलासतंत्र २) कार्तवीर्यार्जनोपासना मूल ३।।) काय बोध साजनीकृत ।।) कामरत्न—नित्यनाथ भाषा ५) कालीतन्त्र मूल १।) कालीनित्यार्चन भाषा २) काली स्वरुपतत्व भाषा ।=) कुलार्णव मूल २।।) क्रियोड्डीशतंत्र भा. टी. १।) कौलज्ञान निर्णय—बौधतंत्र ७।।) कौलावलि निर्णय मूल ४) कौलोपनिषद् ४) क्रमदीपिका—केशव भट्ट ४।।) गन्धर्वतंत्र—काश्मीर ९) गायत्रीतंत्र—शापोद्धार, कवच, दशमहाविद्या सहित ।।।), भाषा-टीका ।।।=) गायत्रीपंचांग मूल २।) गायत्री पुरश्चरण ≡) गायत्री पुरश्चरण शंकराचार्य पूना २।।) गायत्रीपूजा ≡) गुप्तसाधनतंत्र भाषा ।।=) गुह्यसमाज गुह्यकतंत्र-बौध ४।) चक्रपूजा भाषा १।।) चक्रपूजाके स्तोत्र ।=) चतुर्विंशती गायत्री ।=) चिदगगनचंद्रिका—कालीदास मूल १) जयाख्यसंहिता—आगम १२) डाकार्णव—बौधतंत्र ६।) तंत्ररत्न २–) तंत्रराज दो भाग २०) तंत्रसार—कृष्णानंद २) तंत्रसार—काश्मीर ७।।) तंत्रसारसंग्रह—नारायण विरचित टीका सहित १५।)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस

तंत्राभिधान—बीजनिघंटु मुद्रानिघंटु २) तंत्रोपाख्यान ॥) तंत्रालोक (काश्मीर) अभिनव गुप्त कृत तथा जयरथ व्याख्या १२ भागों में ११७) तत्व चिन्तामणि—पूर्णानंद १६।) तत्वनिधि-कृष्णराज ७) ताराभक्ति सुधार्णव नृसिंह ५।) तारारहस्य १।) तारास्वरूप भाषा १) दत्तात्रेय तंत्र भा. टी. ॥।) दशांगदुर्गा मूल खुला २॥) दुर्गा सप्तशती मूल खुलापत्रा मोटा अक्षर बंबई ३॥) २।) सजिल्द बंबई ४).३॥) खुला पत्रामूल २).१),॥।).(तावीजी)॥) भाषाटीका ॥।),१।),२॥), १॥) शान्तनवी सटीक ३) केवल भाषाछन्दों में (भगवतीप्रसाद)॥)देवीरहस्य १४)निष्पन्नयागा-वली बोधतंत्र ७)नित्योत्सव—उमानंद नाथ ४) नेत्रतन्त्र काश्मीर ७॥)परशुराम कल्प सूत्र रामेश्वर व्याख्या सहित १९) परानंद सूत्र ३॥) पुरश्चरण दीपिका ॥~) पुराणसंहिता ६) प्रत्यंगिरा पंचांग १॥।) प्रपंचसारतंत्र—सं० टीका ९) प्राणतोषिणी तंत्र १०) बगुला विधान ।) बगुला तंत्र ॥) बृहद्इन्द्रज.ल-भाषा असली बंबई ४) बृहन्नील तंत्र काश्मीर ९) बृहद् गायत्री ॥) ब्रह्म-संहिता-जीवगोस्वामि ३) भुवनेश्वरी नित्यार्चन भाषा २॥) भैरवोपदेश २॥) मंत्ररामायण सटीक १॥।) मंत्र सिद्धि काउपाय—भाषा १) मंत्र महोदधि मूल कलकत्ता ६) महानिर्वाण तंत्र मूल ५) महामृत्युञ्जयजपविधि ।), ।~). महामृत्युंजय पंचांग ॥=) महायक्षिणी साधन भाषा १॥।) महालक्ष्मी पंचांग ॥।) मातृ उपासना २) मातृकाभेदतंत्र २॥) माहेश्वरतंत्र संस्कृत ४॥) माहे-श्वरी तंत्र भा. टी. ।≡) मेरुतंत्र १२) मन्त्रमहार्णव—खुलापत्रा ३४) मंत्ररत्नमंजुषा त्रिविक्रम १) मृगेन्द्रतंत्र—काश्मीर ९) योगनी तंत्र मूल ३॥।) भाषा टीका ७) योगिनी हृदय १।=) रुद्रया-मल—उत्तर भाग ३॥।) ललिता सहस्रनाम मूल ॥) संस्कृत टीका २॥) वर्णबीज प्रकाश ३) वामकेश्वरतंत्र-सेतुबन्ध व्याख्या ६) वामकेश्वरी मत विवरण २) वाममार्ग भाषा २) श्री विद्या-र्णवतंत्र श्रीविद्यारण्य स्वामीकृत। मंत्रशास्त्र का यह सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है दो भागों में ८१) विष्णु संहिता ३) बारिवास्यरहस्य—अंग्रेजी सहित ५) वैखानसागम २।=) वैदिक बगुला मुखी भाषा १।) शक्तिसंगमतंत्र—दूसरा ताराखंड, तीसरा भाग सुन्दरी खंड ६) शतचण्डी विधान भाषा २।) मंत्ररत्नसंग्रह—उमार्पति २।) श्यामारहस्य २॥) श्यामासपर्यापद्धति ३॥) शाक्त प्रमोद—दशमहाविद्या मूल १४) शाक्तानंद तरंगिणी हिन्दी २) शारदा तिलक मूल ३॥।) पदार्थादर्श टीका १०) राघवभट्ट व्याख्या दो भागों में १२) षट् चक्र निरूपण—पादुका पंचक सहित ३) सप्तशतीसर्वस्व २॥) सप्तशतीगीता भाषा टीका १।) सात्वत तंत्र—वैष्णव तंत्र १॥) साधनमाला बौधतंत्र ८) साधक का संवाद भाषा ४) सिरिविश्वेश्वरतंत्र ३॥) स्वच्छन्द तंत्र संपूर्ण काश्मीर ५८॥) सौभाग्य लक्ष्मी १) हंसविलास ५॥) हिन्दुओं की पोथी भाषा २) त्रिपुरारहस्य—महात्म्य-खंड ७) तथा ४ भाग का ३।=) ज्ञानार्णव तन्त्र २=)।

व्याकरण ग्रन्थ

अनुवाद कला——प्रो० चारुदेव एम० ए० उच्च कक्षाओंके विद्यार्थियोंके लिए अनुवादकी अति उत्तम पुस्तक २॥) अनुवाद चन्द्रिका—पं० चक्रधर शास्त्री एम० ए० कृत प्रायः सब विद्यालयों में अनुवादके लिए सर्वोत्तम पुस्तक यही उपयोगमें लाई जाती है यही इसका प्रमाण है कि थोड़े कालमें इसके आठ संस्करण निकल चुके हैं २।) अनुवाद कौमुदी—१॥।) अष्टाध्यायी सूत्र पाठ बम्बई ॥=) काशी ॥।) पञ्चपाठी १।) सवार्तिकगणष्टाध्यायी-मद्रास १) वृन्दावन २॥) गुरु प्रसाद टीका २॥) स्वामी दयानन्द भाष्य—दो भाग ७) गुरुकुल कांगड़ी की संस्कृत व्याख्या सहित दो भाग में १४) अष्टाध्यायी शब्दानुक्रमणिका——१२) अव्ययविवेक—तारापद चौधरी ॥।) आदर्श लघु कौमुदी—मा० मा० मथुराप्रसाद १॥) आर्षपानीणीय व्याकरण—हरिशंकर पाण्डेय ५) आशुबोध व्याकरण—तारानाथ २॥) उणादि सूत्र—उज्ज्वल दत्त वृत्ति २॥) उणादि सूत्र—श्वेत बनवासी वृत्ति ३।=) औणादिक पदार्णवः—पेरु सूरि विरचित ४॥) उणादिसूत्र—नारायण भट्ट वृत्ति २॥।~) उत्तर पक्षावली ।) उपसर्ग वृत्ति ~) कारक चक्र ॥।), १॥~) काशि-कावृत्ति——वामन जयादित्य दो भाग सम्पूर्ण १२) कवि कल्पद्रुम—दुर्गा प्रसाद १॥।=) कौमुदी रूपलता १॥) जैनेन्द्र व्याकरण—अभयनन्दि सूरिटीका ५) दुर्घटवृत्ति—सरण देव २।=) दशपाद्यु-णादिवृत्ति—युधिष्ठिर मीमांसक ३।) गुप्ताशुद्धि प्रदर्शन—अम्बिका दत्त व्यास तथा व्युत्पत्ति प्रदर्शन ॥) धातुपाठ ।) धातुरूपावली ॥) धातु रत्नाकर सात भागोंमें ३०) धातु रूपादर्श २॥) न्यास कल्पलता अर्थात् पाणिनीय सूत्र न्यास शास्त्रार्थ १) नन्दीकेश्वरकाशिका ॥) चांगू सूत्र वृत्ति सहित ॥।)ऋजु पाणिनीयम ॥।) पदार्थ दीपिका ॥) परम लघुकला—(परम लघुमंजूषा प्रश्नोत्तरी) १) परम लघु मंजूषा—अर्थ दीपिका टीका १।) परिभाषा पाठ ~) परिभाषा वृत्ति—क्षीरदेव २॥) परिभाषेन्दु शेखर विजया टीका ४॥) परिभाषेन्दु शेखर—भैरवी तत्व प्रकाशिका ३) गदा टीका ४) मूल १) भूति टीका ५॥) बृहत् शास्त्रार्थ कला टीका ३) परिभाषेन्दु शेखर प्रश्नोत्तरी १।) परिभाषेन्दु प्रश्न पंजिका ॥।) परिभाषेन्दु दीपिका १) परिभाषार्थ-चन्द्रिका ॥) परम लघु मंजूषा मूल ॥) पंच प्रक्रिया सर्वज्ञात्मन २॥।=) परिष्कार दर्पण—शास्त्रार्थ कल्प २।) पाणिनीय प्रबोध ॥।)पाणिनीय मिताक्षरा—अन्नभट्ट १५) पाणिनीय प्रदीप २ भाग १।) पाणि-णीय शिक्षा सटीक ।=) पाणिनीय सिधान्त कौमुदी—म० म० पं० मथुराप्रसाद ३॥) पाणिनीय शिक्षा कलकत्ता ३।) गुरुप्रसाद टीका ॥=) प्रक्रिया कौमुदी—रामचन्द्र कृत २ भाग २०) प्रक्रिया-सर्वस्व—नारायण भट्ट सटीक दो भाग २=) प्रक्रिया सर्वस्व पद्धति मद्रास ३॥=) प्राकृत प्रकाश—सटीक कलकत्ता १॥~) मनोरमा टीका । काशी २॥) रामपाणिवादकृत वृत्ति सहित ४।) संजीवनी तथा सुबोधनी २ टीका दो भाग २॥)प्राकृत—मार्गोपदेशिका——पं० बेचरदास ४।) प्राकृत रूपा अवतार—सिंहराज कृत ५) प्राकृत मञ्जरी—कात्यायण ॥) प्राकृत व्याकरण—श्री हेम चन्द्र २) प्राकृत व्याकरण वृति—त्रिविक्रम देव ७॥) प्रारंभिक पाणिनीय—श्री विश्वनाथ १) प्रयोग शास्त्रार्थ कला ।) प्रौढ़ मनोरमा—शब्दरत्न-ज्योत्स्ना—कुच मर्दिनी व्याख्या प्रभाविभा टिप्पणी, अव्ययीभावान्त ६) शब्दरत्न—भैरवी-भाव प्रकाश—सरला टीका, चतुष्टय, अव्ययी भावान्त १२) सभापति मिश्र टीका १०) शब्दरत्न—तत्वादर्श व्याख्या सहित, प्रथम भाग पञ्च-संध्यान्त २॥) प्रौढ़ मनोरमा खण्डन चक्र पाणि १॥।) प्रौढ़ मनोरमा प्रश्नोत्तरावली १—३ खण्ड १॥) पूर्वपक्षावली ।) फक्किका मर्मवृत्ति—हरिशंकर १।) फक्किका सरलार्थ १।) फक्किका प्रश्नोत्तरी १॥) फक्किका प्रकाश १॥) फक्किका रत्न मंजूषा २ भाग ५) फक्कित आदर्श—विश्व-नाथ झा १।) प्रस्तार चक्र =) भूषण सार प्रकाश ॥।=) बटुतोषिणी—हरिशंकर ॥।=) बनारस सोत्रा प्रथमा प्रश्नावलि २॥) बिहार सोत्रा प्रथमा प्रश्नावली २) भावबोधिनी—पंक्ति पदार्थ विवरण २) भूषण सार चन्द्रिका ॥।) मध्यमा व्याकरण सोत्रा प्रश्नावली प्रथम खण्ड १।) द्वितीय खण्ड १।) तृतीय खण्ड २।) चतुर्थ खण्ड १॥।) मध्य सिद्धान्त कौमुदी मूल ३) इन्दुमति संस्कृत तथा हिन्दी टीका ६) बाल मनोरमा संस्कृत तथा हिन्दी टीका ६) मनोरमा रत्नविवेक

६

१॥) महाभाष्य (पातञ्जल)–प्रदीप–उद्योत तथा छाया सहित नवाह्निक १५) विधीशेषरूप द्वितीय खण्ड ९) विधी प्रकरण रूप तृतीय खण्ड ५) चतुर्थ-पञ्चमाध्यायात्मकम् चतुर्थ खण्ड ९) स्थानेविधी रूप पञ्चम खण्ड १०) महाभाष्य प्रदीप–उद्योत विमला टीका नवाह्निक १२) प्रदीप उद्योत–तत्त्वालोक ३ टीका सहित १–५ आह्निक ६॥) प्रदीप उद्योत–तशाङ्गाधिकार २ भागोंमें पूना ७॥) महाभाष्य–प्रदीप तथा महाभाष्य प्रदीपोद्योत–अन्नंभट्ट कृत नवाह्निक २ भाग २९॥) महाभाष्य शब्द अनक्रमुणिका १५) महाभाष्य प्रश्नोत्तर माला ॥) महाभाष्यादर्श १॥) महाभाष्य कुंचिका १॥) महाभाष्य प्रकाश ॥) महाभाष्य १–२ आह्निक भा० टी० २॥) माधवीय धातु वृत्ति–सायनकृत १०) मुग्धबोध व्याकरण सटीक ५) मंजुषा रत्न–हरिशंकर ॥) रामचन्द्रिका–शब्दरूपावली ॥) रूप कौमुदी–गुरु प्रसाद ३) रूप चन्द्रिका २॥) रूप प्रभा ३॥) रूपमाला–षट्लिङ्ग विभाग ॥=) लघु कौमुदी –श्री विश्वनाथ शास्त्री कृत छात्रोपयोगी उपेन्द्रविवृत्ति तथा लक्ष्मी नारायण शास्त्री कृत सूत्रों के हिन्दी अनुवाद सहित अनेकों छात्रोंपयोगी परिशिष्टों सहित यह टीका इतनी छात्रोपयोगी सिद्ध हुई है कि हजारों कापियां इसकी बिक चुकी हैं और कई संस्करण हो चुके हैं सफेद कागज मोटा अक्षर सहित मूल्य २) पं० श्रीधरानन्द शास्त्री व्याकरणाचार्य कृत विस्तृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित इसमें पूरी रूप सिद्धी दी गई हैं और छात्र अनायास ही इसे लगा सकते हैं पक्की कपड़ेकी जिल्द सहित मूल्य ७) तथा सुधा संस्कृत टीका ३) सजिल्द ३॥) लघु कौमुदी सोत्रा प्रयोग सूचि ॥≡) लघु कौमुदी प्रश्नोत्तरी–शिवदत्त २॥) लघुशब्देन्दुकला १॥) लघुशब्देन्दु शेखर (अव्ययीभावान्त) छः टीका सहित २०) नागेशोक्ति प्रकाश टीका २॥) लघुजूटीका ॥) लौकिक न्याय शास्त्रार्थ कला ॥) लिङ्गानुशासन सटीक १॥) वाक्य पदीय–हेलराज, तृतीय काण्ड १॥) वाक्य पदीय–ब्रह्मकाण्ड २॥) वाक्य तत्त्व ।=) वादरत्न २ भाग ५) वादार्थ संग्रह चार भाग २॥) विभक्त्यर्थ निर्णय–गिरीधर ७॥) विषम पद वाक्य वृत्ति २॥) वैयाकरण भूषण सार ॥) कलकत्ता १–)॥ दर्पण-भैरवी (परीक्षा) दो टीका ७) दर्पण टीका भूषण व्याख्या सहित ६) वैयाकरण भूषण–कौंड़ भट्ट १०) वैयाकरण भूषण सार प्रकाश ॥=) वैयाकरण सद्धान्त कारिका १॥) वैयाकरण सिद्धान्त लघुमंजुषा–कुञ्जिका-कला (तात्पर्य निरूपणान्त) ३) वैयाकरण लघुमंजुषा–शब्द-प्रभा पं० सभापति) ८) कुञ्जिका-कला २ टीका संपूर्ण २२॥) व्याकरण दीपिका-गौरम्म भट्ट १०) व्याकरण सिद्धान्तसुधानिधि–विश्वेश्वर सूरि १५) व्युत्पत्ति-प्रदर्शन ॥) दांग प्रकाश १०॥=) शब्द कौस्तुभ–भट्टोजी दीक्षित संपूर्ण १८) नवाह्निकमात्र ६) शब्दरूपादर्श ।–) शब्दरूपावली ।–), ।=), शाकटायन व्याकरण–यक्षवर्मा वृत्ति सहित १०) शास्त्रार्थ रत्नावली–श्री जयदेव १॥) श्रीधरी (लघुशब्देन्दु व्याख्या) १॥) शिक्षासूत्राणि–आपिशालि-पाणिनी चन्द्रगोमि ।) शब्देन्दुसुधा १॥) शब्दमंजरी ॥=) शब्दरूपमहोदधि ॥=) सदाशिव भट्टी) संस्कृत व्याकरण शास्त्रका इतिहास–(भाषा) युधिष्ठिर मीमांसक १०) सज्जनेन्द्र प्रयोग-कल्पद्रुम १॥) सन्धिचंद्रिका १) समासचक्र =)॥, ।–) संस्कृत व्याकरण-प्रवेशिका–बाबुराम सक्सेना ५) संस्कृत निबन्ध-पथ-प्रदर्शक (आप्टे गाईड का हिन्दी अनुवाद) ४) संस्कृत प्रथम पुस्तक रामविहारी शुक्ल २) द्वितीय पुस्तक ३) संस्कृत पाठशाला–सातवलेकर कृत २४ भाग १२) संस्कृत सुबोधनी ।=) संस्कृत शिक्षा–जीवाराम प्रथम भाग ।=) दूसरा ॥) तीसरा ॥=) चौथा ॥) छठा ॥) संस्कृतानुवाद–निबन्धादर्श–श्री पूर्णानंद आचार्य कृत तथा श्रीप्रकाश चंद्र गौड द्वारा सम्पादित। कोमलबुद्धि छात्रोंके लिये अनुवाद तथा संस्कृत निबन्धके लिये बड़ी सरल पुस्तक। पुस्तक अत्युपयोगी अंग्रेजी ढंगसे समझाया गया है १॥) संस्कृत व्याकरण सार–प्रो० रामचन्द्र शर्मा, एम० ए० प्रो० डी० ए० वी कालिज कृत कालिज के छात्रोंके लिये हिन्दीभाषा में अत्युपयोगी पुस्तक ६) संस्कृत व्याकरणका मानचित्र–प्रो० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री एम० ए० कृत एक ही नकशे '(मानचित्र) से सारा संस्कृत व्याकरण समझा दिया गया है कि देखते ही बनता है। १॥) सारस्वत मूल तीनों वृति २) पूर्वार्द्ध मूल ॥) सटीक ३॥) संपूर्ण चन्द्रकीर्ति टीका ८) सिधान्त कौमुदी मूल गुटका ३) स्थूलाक्षर ३) स्थूलाक्षर बंबई ५) तत्वबोधनी टीका पं० शिवदत्त कृत टिप्पणी १३॥) सिद्धान्त कौमुदी–श्री वासुदेव दीक्षित कृत बालमनोरमा तथा तत्वबोधनी दो प्राचीन संस्कृत टीकाओं सहित। सिद्धान्त कौमुदी जैसे कठिन ग्रन्थ को लगानेके लिये इन दोनों टीकाओंकी नितान्त आवश्यकता रहती है संपूर्ण पुस्तक चार भागोंमें छपी है। इसका संशोधन भी भारत के धुरन्धर विद्वान् महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी तथा महामहोपाध्याय पं० परमेश्वरानंदजी ने किया है। चारों भागोंका संपूर्ण मूल्य १६) पृथक् २ भाग भी मिलते हैं प्रथम भाग कारकान्त तक ४) द्वितीय भाग समास प्रभृति तद्धित प्रकरणान्ता ४) तृतीय भाग भ्वादि प्रभृति लकारार्थ प्रकराणान्ता ४) चतुर्थ भाग (कृदन्त प्रभृति समाप्तिपर्यन्ता) ४) सिधान्त कौमुदी केवल बालमनोरमा टीका काशी पूर्वार्द्ध ६) उत्तरार्द्ध ६) मदरास ७॥) सिधान्त कौमुदी प्रयोगसूची कारकान्त ॥=) कारकादि शेषिकान्त ॥) विकारादि चुराद्यन्त १=) ण्यन्तादि उत्तर कृदन्तात १) सिद्धान्त कौमुदी सोत्तरा स्वरवैदिक प्रयोग सूची ॥=) स्वरवैदिक प्रक्रिया प्रश्नोतरी १) सिद्धान्तचंद्रिका बालबोधनी टीका पूर्वार्द्ध १॥) उत्तरार्द्ध २) संपूर्ण ३॥) सुबोधिनी–तत्वदीपिका सहित संपूर्ण १२) स्फोटवाद–नागेश ३॥) स्फोटसिद्धि ॥=) स्फोटसिद्धि–मण्डनमिश्र कृत तथा गोपालिका व्याख्या सहित ३।=) सरस्वती कण्ठाभरण–भोजदेव व्याकरण ६॥) सरस्वती कण्ठाभरण (भोज) नारायण दण्डनाथ विरचित व्याख्या सहित ३ भागों में (चतुर्थाध्यायं पर्यन्त) ५॥) सुगम संस्कृत व्याकरण–प्रो० आनन्द स्वरूप कृत सरल भाषामें संस्कृत व्याकरण सीखनेके लिये मैट्रिक तथा इन्टर आदि छात्रोंके लिये अत्यन्त उपयोगी पुस्तक है मूल्य २॥)

काव्य, अलंकार, छन्द, चम्पु ग्रन्थ

अकबरसाहिश्रङ्गारदर्पण २) अच्युतराभ्युदय–राजनाथ (७–१२ सर्ग) ३॥) अनूपसिंह गुनावतार १) अन्योक्तष्टकसंग्रह २) अन्योक्तसाहस्री ।।=) अब्दुल्लाचरित–लक्ष्मीपति विरचित ५) अभिधावृत्ति मातृका–मुकुल १) अमरुशतक–भा० टी० १=) अमरसंडन–कृष्णसूरि ३। अलंकारकास्तुभ विश्वेश्वर ४) अलंकारप्रदीप विश्वेश्वर ॥) अलंकार शेखर केशव काशी ॥) बंबई १) अलंकार मुक्तावली–विश्वेश्वर ॥) अलंकार महोदधि–नरेन्द्रप्रभसूरि ७॥) अलंकार सर्वस्व–राजानकरुय्यक सटीक २) अलंकार संग्रह–अमृतानंद ३॥), ९) अलंकार रत्नाकर ३॥) अलंकृति-मणिमाला १॥) अलंकारसूत्र–राजानक रुय्यक अलंकारसर्वस्व तथा समुद्रबंध कृत व्याख्या सहित ३) अलंकार सार मंजरी ।≡) आनंदकंदचम्पु–मिश्र १॥) आनंदरंगचम्पु–श्रीनिवास ४) आर्यासप्तशती–गोवर्धनाचार्य–सटीक २) आर्यासप्तशती–विश्वेश्वरविरचित स्वोपज्ञ व्याख्या ४॥) उज्ज्वलनीलमणि–रूपगोस्वमि सटीक ४) उत्तरराम चरित चम्पु १॥)

उत्कीर्ण लेखांजलि (शिलालेख संग्रह) ॥।) उदयवर्मचरित १=) उषानिरुद्ध रामपाणिवाद ३॥) ऋजुलघ्वी-मालतीमाधव कथा २॥) ऋतुसंहार भाषा टीका १=) औचित्य विचार चर्चा-कविकण्ठाभरण-सुवृत्ततिलक-क्षेमेन्द्र १) कथासरितसागर--सोमदेव पद्य १०) जीवानंद कृत गद्य ७॥) कथा कोष प्रकरण-जिनेश्वरसूरि विरचित (प्राकृत) १०॥) कर्णभूषण-गंगानंद १) कविरहस्य ।), ॥।) कवीन्द्रचन्द्रोदय २॥) कादम्बरी-मूल संपूर्ण १०) भानुचंद्रसिद्ध चंद्र संस्कृत व्याख्या सहित संपूर्ण १६) केवल पूर्वार्द्ध-हरिदास कृत संस्कृत टीका तथा बंगाली अनुवाद १२॥) चन्द्रकला संस्कृत तथा हिन्दी टीका परीक्षोपयोगी जाबाल्याश्रम तक ३) तथा सं० हि० दोटीका कथामुखम तक ३॥।) तथा कादम्बरी संपूर्ण हिन्दी अनुवाद ऋषीश्वर नाथ कृत ५) कादम्बरी कथासार-अभिनंद १।) कालीदास ग्रन्थावली संपूर्ण भाषा टीका सहित २०) काव्य-कल्पलतावृत्ति-अमरचंद ३) काव्यडाकिनी--गंगानंद ।-)। काव्यदीपिका--जीवानंद सं० व्याख्या १॥) संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित २) केवल अष्टमशिखा--भाषा टीका ॥।) काव्यप्रकाश-संपूर्ण वामनाचार्य कृत सरल संस्कृत टीका १२) नागेश्वरी टीका ६) संकेत टीका ५॥) प्रदीपोद्योत २ टीका १०॥) महेश्वरी टीका १२) जीवानंद ५) दीपिका टीका केवल प्रथम भाग ॥।=) सम्प्रदाय प्रकाशिनी--साहित्य चूडामणि दो टीका १-१० उल्लास १५) काव्य निर्णय-भाषा ३) काव्यप्रदीप-गोविन्द कृत वैद्यनाथ व्याख्या ३) काव्यमाला १४ गुच्छक अनेकों छोटे छोटे काव्य (अष्टम, दशम नहीं मिलता) बाकी १३ का मूल्य २५) काव्य समुदाय ३) काव्यमीमांसा मूल स्थूलाक्षर २) राजशेखरकृत तथा मधुसूदनी टीका संपूर्ण ३) चंद्रिका टीका १-५ अध्याय ॥।=) काव्यमंजूषा १॥) काव्य रत्न-अर्हद्दास ॥।≡) काव्यविलास ॥-) काव्यादर्श (दण्डि) जीवानंद व्याख्या ३=) रंगाचार्य टीका ४॥) काव्यानुशासन--वागभट्ट १) काव्यानुशासन-श्री हेमचंद्राचार्य ३॥) काव्यालंकार--भामह २॥) काव्यालंकार सार संग्रह उद्भट २), २॥) काव्यालंकारसूत्र--कामधेनु व्याख्या २), १॥।=) किरातार्जुनीय काव्य सटीक संपूर्ण २।), २॥), ३) तथा संस्कृत हिन्दी टीका १-२ सर्ग (गौरीनाथ पाठक) १) गुरुप्रसाद १), सुधाटीका १।) मल्लिनाथ तथा प्रकाश संस्कृत हिन्दी टीका १-५ सर्ग १।) घण्टापथ-सुधा सं० हि० १-३ सर्ग २) कुमारसंभव-संपूर्ण संजीवनी टीका ३), २॥) तथा पुंसवनी संस्कृत-हिन्दी टीका १-७ सर्ग ५) प्रथम और पंचम सर्ग सं० हिन्दी १॥) केवल पंचमसर्ग सं० हिन्दी १) केवल पाँचवाँ सर्ग डा० कैलाशनाथ १॥।) कुवलयानंद-अप्पय दीक्षित ३) कोकसन्देश ॥=) गउडवहो-प्राकृत काव्य ५॥) गाथा सप्तशती सातवाहन ४॥) गाथा सप्तशती प्रकाशिका-हारिताम्र पीताम्बर विरचिता केवल ५-७ सर्ग १०) गीतगोविन्द--रसिक प्रिया रसमंजरी संस्कृत व्याख्या सहित ३) भाषा टीका सहित १) गंगावतरण नीलकंठ ॥।) चम्पुरामायण (भोज) रामचंद्रबुधेन्द्र व्याख्या ४) चंद्रालोक--पौर्णमासी सं० तथा हिन्दी टीकासहित ३) शरदागम संस्कृत टीका २) रमा संस्कृत टीका १) हिन्दी टीका सहित १) चंद्रप्रभचरित वीरनंदि-संपूर्ण २) परीक्षोपयोगी १-३ सर्ग ॥) चम्पुभारत--रामचंद्रबुधेन्द्र व्याख्या ७) सटीक २) चौमनीचरित २) चौरपंचाशिका बिल्हण २॥) छन्द कौमुदी--मिस्र ॥), ।=) छंदशास्त्र (पिंगल) हलायुध कृत टीका बंबई ३। कलकत्ता जीवानंद ३॥।) छंदो मंजरी--संस्कृत-हिन्दी टीका २।) तथा केवल संस्कृत टीका कलकत्ता २) तथा छन्दोमंजरी--वृत्तरत्नाकर सहित सटीक कलकत्ता १।) छंदोमंदाकिनी ≡) छंद संग्रह--गौरीनाथ ≡) जगद्विजय छंदस् ३।) जयदामन--(जयदेव छन्द, जयकीर्ति छन्दोनुशासन, केदार वृत्तरत्नाकर, श्रीहेमचंद्र छन्दोनुशासन) १०) जयन्तविजय--अभयदेव १॥) जातकमाला आर्यशूर २।) जानाश्रयी-छन्द १) जानकीहरण--कुमारदास ५) तिलकमंजरी--धनपाल ३॥) दशकुमारचरित--दण्डि कृत--पददीपिका, पदचंद्रिका, भूषण, लघुदीपिका चार टीका सहित ३) जीवानंद संस्कृत व्याख्या ३=) मनोरमा सं० व्याख्या २॥) संस्कृत तथा हिन्दी टीका संपूर्ण ५॥) सं० हिन्दी पूर्वपीठिका १।) केवल हिन्दी भाषा संपूर्ण १॥) पूर्वपीठिका तथा प्रथम, द्वितीय और अष्टम उच्छ्वास ३) अपहारवर्मचरित पर्यन्त ३) दशरूपक-धनंजयचरित--धनिक कृत व्याख्या १।) दशावतार--क्षेमेन्द्र १॥) दिग्विजय महाकाव्य--मेघविजय ८) देवानन्द महाकाव्य--मेघ-विजय (माघ समस्यापूर्ति) ४) देलारामकथा--राजानक ॥।) देशोपदेश तथा नर्ममाला क्षेमेन्द्र कृत ४॥) द्वात्रिंशत्पुत्तलिका--जीवानंद १॥।) धर्माभ्युदय महाकाव्य (वस्तुपालचरित) उदय प्रभ सूरि विरचित ८॥) धर्मोपदेश माला विवरण (कथा) ९॥।) ध्वन्यालोक--बालप्रिया, लोचन दो टीका ८) दीधिति व्याख्या ६) लोचन तथा कुप्पुस्वामि कृत व्याख्या प्रथम भाग ९) धूर्ताख्यान--हरिभद्र सूरि ८) धूर्तविडम्बना ।।) नञ्जराजयशो भूषण--नृसिंह कवि ५) नलचंपु-विषमपद प्रकाश व्याख्या ३) नलोदयकाव्य १॥।) नाटक कथा संग्रह १) नारायणशतक--विद्याधर २) निम्बादित्य दशश्लोकी ।।) नीलकंठ विजय चम्पु मूल १) नरेश्वर परीक्षा--सद्यज्योती कृत-सव्याख्या ६) नेमिनिर्वाण काव्य--वाग्भट १।) नैषधीयचरित--श्रीहर्षविरचित, नारायणीय टीका बंबई निर्णयसागर १४) वेंकटेश्वर १२), हरिदास कृत संस्कृत टीका संपूर्ण दो भागोंमें २०॥) जीवातु, प्रबोधिनी दो संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १-५ सर्ग मूल्य ३॥) १-३ सर्ग १॥।) १-९ सर्ग ६) मल्लिनाथ कृत टीका १-८ सर्ग ४) सं० तथा हिन्दी टीका मन्नालाल १-३ सर्ग १॥) तथा ऋषीश्वरनाथ भट्ट कृत सरल भाषा टीकामें संपूर्ण ६) आचार्य चण्डिका प्रसाद एम० ए० कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित सफेद कागज संपूर्ण ८) पउमसिरिचरिउ--धाहिल विरचित अपभ्रंश काव्य ४॥।) पतञ्जलिचरित--रामभद्र कृत ॥।=) पद्यवेणी--वेणीदत्त वरचित सुभाषित १०) पद्महर्षचरित १।) पद्मानंद महाकाव्य--अमरचंद्र कवि १४) पन्थदूत--भोलानाथ १) पवनदूत-धोयी १॥) पारिजात हरण शेषकृष्ण ॥।) पारिजातापहार--श्री भगवताचार्य ३) पाली जातका-वली २।) पिंगलछन्द--वैदिक छन्दात ॥।) पुष्पबाण विलास--कालिदास ॥) प्रतापरुद्र--सव्याख्या ११) प्रतापरुद्री--विद्यानाथ ४) पुरातन प्रबंध संग्रह--ऐतिहासिक प्रबंध ७) प्रबंधकोष--राजशेखर-सूरि ६) प्रबंध चिन्तामणि--मेरुतुंगाचार्य ६) केवल हिन्दी अनुवाद ६) प्रभावकचरित्र--प्रभाचंद्र सूरि ७), ३) प्रेमरसायन सटीक १) पृथ्वीराज विजय--जोनराज कृत व्याख्या २।) बल्लालचरित-आनंदभट्ट १॥) बालभारत अगस्त्यपंडित २।) बुधचरित--अश्वघोष भाषा टीका सहित २॥) वृद्धभूषण १॥) बृहत्कथामंजरि--क्षेमेन्द्र ८) बृहत्कथा कोष--हरिषेण १६) भंगाभंग भाषा ।) भरतचरितकृष्णकवि १॥।) भट्टिकाव्य--जयमंगला संस्कृत व्याख्या संपूर्ण ५।) चन्द्रकला तथा विद्योतनी संस्कृत तथा हिन्दी दो टीका सहित १-६ सर्ग ३॥) ७-११ सर्ग पूर्वार्द्ध ३॥) १२ से २२ सर्ग ५) उत्तरार्द्ध। भामिनीविलास सटीक ॥।) अंग्रेजी सहित २॥) भानुचंद्रगणिचरित-सिद्धिचन्द्रोपाध्यायकृत ८) भागीरथचंपु १॥) भारतीस्तव संस्कृत १) भागवत चंपु १॥) भार-तीय सिधान्तादेश ।=) भावप्रकाशन--शारदातनय ७) भूपशतक--राघव वाचस्पति १) भोज प्रबंध मूल ॥।) जीवानंद संस्कृत व्याख्या १॥।=) भोज और कालीदास भाषा ३।) भोट प्रकाश-संस्कृत तिब्बती ५) भृंगसंदेश--वासुदेव ।।) मनोदूत--विष्णुदास १।) मन्दारमंदचंपु कृष्णकवि

२) मानसोल्लास दो भाग ७।।) मयूर संदेश ३।।) मातृमुक्तावली ।।) मुकुन्दानंदभाण–काशिपति ।।।) मुद्राराक्षसकथानक १।।।) मूलरामायण भा० टी० ~)।। सं०, हि० टीका ।।।) मेघदूत–संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद पदच्छेद, दण्डान्वय, व्याकरण, नोट्स आदि विस्तृत अनुवाद प्रो० संसारचंद कृत पूर्वमेघ ३।।) मल्लिनाथ टीका संपूर्ण बंबई १) सं० तथा हिन्दी टीका ।।।), १।) मेघदूत–भरतमल्लिक कृत व्याख्या तथा प्राचीन आठ टीकाओंसे टिप्पण किया हुआ ८) मेघसन्देश सटीक २) मेघदूत–हरिदासकृत संस्कृत टीका २) यशस्तिलक–सोमदेवसूरि प्रथम खंड ६।।) यात्रा प्रबंध–समरपुंगव २) युधिष्ठिर विजय महाकाव्य–वासुदेव ३) रघुवंश मल्लिनाथ कृत टीका सहित स्थूलाक्षर बंबई ५) मल्लिनाथ कृत संजीवनी, वल्लभ-हेमाद्रि-दिनकर मिश्र चरित्रवर्धनसमतिविजयादि टीका विशिष्टांश, रघुवंशसारादि विविध परिशिष्ट सहित ४।।) मल्लिनाथ कृत टीका संपूर्ण ३) मल्लिनाथी तथा सुधा व्याख्या सं० तथा हिन्दी व्याख्या १–२ सर्ग १।।) २–३ सर्ग १।।) १–४ सर्ग २।।) १–५ सर्ग ३) मल्लिनाथी तथा मणिप्रभा संस्कृत हिन्दी टीका ५–१४ सर्ग ३) ६–१४ सर्ग २।।) १५–१९ सर्ग १।।) संपूर्ण १–१९ सर्ग ७) सं० हि० टीका गौरीनाथ पाठक १–२ सर्ग १।।) गुरुप्रसाद कृत सं० तथा हि० टीका १–५ सर्ग ३।=) १–२ सर्ग १।।) २–३ सर्ग १) केवल पाँचवाँ सर्ग ।।।=) सं० हिन्दी २ टीका १–४ सर्ग १।।) १–२ सर्ग १) रम्भाशुक संवाद भा० टी० ।) रत्नसमुच्चय ।=) रसचंद्रिका–विश्वेश्वर १) रसमंजरी–व्यङ्गार्थ कौमुदी, प्रकाश ३) सुरभि व्याख्या ३) व्यङ्गार्थ कौमुदी टीका सहित बंबई १।।) रसिकाष्टक =) रसिक जीवन–गदाधर भट्ट कृत ५।।) रघुनाथ भ्युदय १≡) रघुनाथ चरित काव्य २) रसतरंगिणी भाषा २।।) रसगंगाधर–नागेश भट्ट टीका पं० मथुरानाथ की सरला टीका १०) रसप्रदीप प्रभाकर ।।~) रसरत्न प्रदीपिका–अल्लराज ३) रससदनभाण–युवकराज १) रामचरित–अभिनंद ७।।) रामचन्द्र यशः प्रबंध ।।) राघवनैषधीय–हरदत्त सूरि सटीक १) रावणार्जुनीय काव्य–भट्टभीम २) रामविजय महाकव्य–रुपनाथ १) रामवनगमन सं० तथा हिन्दी टीका १।), १।।) रामायणमंजरी क्षेमेन्द्र ८) रावणार्जुनीय–भट्ट भीम २) रामकथा वासुदेव ।।) रोमावलिशतक–रामचंद्र भट्ट १) रामानुज चम्पु सटीक ३। रिष्टसमुच्चय–दुर्गदेव १०) रूपकपरिशुद्धि १) लक्ष्मीसहस्र–वेंकटाध्वविरचित सुबोधिनी व्याख्या १२) लक्ष्मीश्वरोपायन ।।।) लघुकाव्यानि ।।।) लीलावइ कहा–कौतुहल (प्राकृत काव्य संस्कृत व्याख्या) १५) लोकप्रकाश–क्षेमेन्द्र ३) वसन्ततिलक भाण ।।) वाग्भटालंकार सटीक ।।।) संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३) वरदाम्बिका परिणय चम्पु–तिरुमलम्बा सटीक ४) वाग्वल्लभ दुःखभंजन २।।) वाणीभूषण–दामोदर ।।।) वासवदत्ता–सुबन्धु १।) विदग्धमुखमंडन–धर्मदाससूरिसटीक ।।।) विदुलोपाख्यान–सं० तथाहिन्दी टीका ।।।) विद्वच्चरित पंचक १) विष्णुभक्तिकल्पलता–पुरुषोत्तम १) वृत्तालंकर–पंचिका संस्कृत व्याख्या २) नारायणी संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३। केवल हिन्दी टीका सहित ।।) छन्दसुबोधनी तथा सरला दो संस्कृत तथा हिन्दी टीका १।।) वृत्तवार्तिक–रामपाणिपाद १।।।) वृत्तिदीपिका ।।~) वृत्तिवार्तिक–अप्पय दीक्षित ।=) वृषभानुजा मथुरादास ।।।) वेतालपंचविंशतिका–जीवानंद २।।) व्यक्तिविवेक–मधुसूदनी वृत्ति सहित ८) शक्तिसाधन ।।) शतकत्रयादि सुभाषित संग्रह १२।।) शतरंजकतुहल ।।=) शिवपरिणय–कृपणराजानक सटीक ५।) शिवराज विजय–अम्बिका दत्त व्यास–वैजयन्ती टीका संपूर्ण ६) १–८ सर्ग वैजयन्ती टीका सहित ३।।) १–४ निश्वास २) १–२ निश्वास सं० हि० टीका १।।) शिशुपालवध-संपूर्ण मल्लिनाथ टीका ६) कलकता ६।) सर्वंकशा, सुधा सं० तथा हि० टीका १–२ सर्ग २) सान्वय सुधा व्याख्या १–२ सर्ग १।) सान्वय मल्लिनाथी व्याख्या १–३ सर्ग १) १–२ सर्ग ।।।) केवल तीसरा सर्ग ।) गौरीनाथ पाठक सं० हि० १– २ सर्ग २) १–९ सर्ग मल्लिनाथ ३। १–२ सर्ग गुरुप्रसाद टीका २) संपूर्ण वल्लभ देवटीका ९) श्रीकण्ठचरितमंखकवि ३।।) श्रीनिवासविलास चम्पु १।) श्रुतबोध सं० हि० टीका ।।।), ।≡) श्रुतबोध वृत्तरत्नाकर सटीक ।≡) शृंगारादि नवरस-निरूपण ।।=) शृंगार कल्लोल १।) शृंगार प्रकाश–भोज कृत प्रथम भाग १।।) श्रयंक काव्य २) शृंगार तिलक–कालीदास ।=) शृंगार तिलक भाण–।।) शृंगार भूषण भाण ।=) शृंगार सर्वस्व भाण ।।=) षोड़शोलंकार ।।) सत्यानुभव ५) समयमातृका–क्षेमेन्द्र १) समयोचित पद्यमालिका ।।।) सभ्यालंकरण–गोविन्दजीत २) सरस्वती कंठाभरण–भोज सटीक ७) सहृदयानंद–कृष्णानंद ।।।=) समुद्रसंगम–दाराशिकोह ४) संस्कृत गद्य मंजरी २।) संदेशरसिक–अब्दुल रहमान १०) साम्बपंचाशिका सटीक १≡), ।=) सारस्वतालोक–भारवि ।।=) साहित्यदर्पण जीवानंद व्याख्या सहित ६।) लक्ष्मीटीका १२) रुचिराव्याख्या १२) अंग्रजी नोट्स काण १५) साहित्यदर्पण प्रश्नोतरी–देवदत्त १) साहित्य मीमांसा १≡) साहित्यरत्नाकर–यज्ञनारायण १।।) साहित्यसार–अच्युतराम स्वोपज्ञ व्याख्या ४।।) सुभाषितरत्न संदोह अमितगति १।।) सुभाषित रत्नाकर ३।।) सुभाषितरत्न सुधाभंडागार १२) सुभाषितरत्न भाण्डागार नया संस्करण १२) सुरजन चरित चंद्रशेखर ८) सुरथोत्सव–सोमेश्वर १।) सुवृत्त तिलक–क्षेमेन्द्र ।) सूक्तिमुक्तावली–जल्हण ११) सूक्तिमुक्तावली–हरिहर सुभाषित ७।।) सूक्तिरत्नहार २।=) सूक्तिसंग्रह ≡) सूर्यशतक ।) सेतुबन्ध–प्रवरसेन ४।।) स्यानन्दूर पुरवर्णन प्रबंध २।=) स्तवमाला ३) सौन्दरानंद काव्य ३) ३) भाषा टीका ३) हरचरितचिन्तामणि ३) हरिहर सुभाषित ।।।) हर्षचरित–जीवानंद टीका ६।) संकेत टीका ३) केवल भाषानुवाद दोभाग १–८ उच्छ्वास ५) प्रथम उच्छ्वास सं० हि० १।) हर्षचरितसार–अनन्ताचार्य ।।=) भाषा ।।) हर्षचरितसार–अंग्रेजी नोट्स सहित ३।) हरिचरित–परमेश्वर ५) हरिहरचतुरंगम ६।।) त्रिवेणिका ।।=)

नाटक-नाट्य ग्रन्थ

अभिज्ञान शाकुन्तला नाटक सटीक ३) राघवभट्ट टीका ३।।) हरिदास सं० टीका ४) गुरुप्रसाद कृत संस्कृत हिन्दी टीका ६) केवल भाषा टीका सहित २।।) दो संस्कृत टीका सहित ४।) अभिनव नाट्यशास्त्र–सीताराम चतुर्वेदी भाषा १५) अद्भुत दर्पण–महादेव १) अम्रतोदय–गोकुलनाथ ।।।) उन्मतराघव–भास्करकवि ।।) उन्मतराघव–विरुपाक्ष १।।।) उत्तररामचरित मूल १।।।) वीरराघव कृत संस्कृत टीका सहित २।।) उत्तररामचरित–संस्कृत तथा हिन्दी टीका सहित ४।।) उरुभंग–भास भाषा टीका ।।) कर्पूर मंजरी सट्टक–राजशेखर सटीक २।।) कलकता ३।।) जीवानंद सटीक ।।।)।। कंसवध शेषकृष्ण ।।।) चंद्रलेखा सट्टक–प्राकृत नाटक रुद्रदास ८) चैतन्य चन्द्रोदय ३।।) जीवानंद १।) जीवानंद–आनंदराय २०) दूताङ्गदछाया सुभटकवि ।=) हिन्दी टीका सहित ।।।) धनञ्जय विजय ।=) धर्मविजय नाटक ।।=) नलविलास–रामचंद्र सूरि २।) नागानंद जीवानंद कृत सं० टीका १।) गुरुप्रसाद कृत संस्कृत हिन्दी टीका ३) बलदेव उपाध्याय कृत संस्कृत तथा हिन्दी टीका ३।।) केवल भाषा ।।।≡) नाटयशास्त्र–भरतमनि बंबई

१०) केवल एक अध्याय ।।) केवल १—२ अध्याय हिन्दी टीका ।।=) नाट्यशास्त्र—अभिनव गुप्त टीका केवल दूसरा भाग ५) पार्वतीपरिणय—बाण ।।) प्रबोध चंद्रोदय—सटीक बंबई २) ट्रीवेंड्रम २।=) प्रतिमा—भास सं० तथा हि० टीका २।।) सटीक २।=) प्रतिज्ञा यौगन्धरायण १।) प्रसन्न राघव—जयदेव १।) प्रशान्त रत्नाकर २) प्रियदर्शिका ।।=) बालमार्तण्डविजय १।।।) बाल रामभरत ३) बंगीय प्रताप २) भारतविजय म०म० पं० मथुराप्रसाद दीक्षित विरचित तथा भाषा टीका सहित सचित्र बहुत बढ़िया राष्ट्रीय नाटक है २।।) भर्तृहरि निर्वेदनाटक ।=) भासनाटक चक्र (भासके १३ नाटक) १५) भासके तीन नाटक केवल भाषा ।।=) मनोरंजन नाटक ।।)महावीरचरित-भवभूति सटीक २।।) जीवानंद टीका २।।) माधवानल कामकन्दला १०) मालतीमाधव ३ टीका (भवभूति) ३।।) हरिदास टीका ५) मेवाड़ प्रताप नाटक २) मालविकाग्नि मित्र (कालीदास) सटीक १।) ३) सं० तथा हिन्दी टीका ३। मुद्राराक्षस—(विशाखदत्त) जीवानंद कृत सं० टीका २=) तथा संस्कृत हिन्दी टीका ४।) मृगांकलेखा नाटिका ।।) मृच्छकटिक (शूद्रक) पृथ्वीधर व्याख्या ३।) जीवानंद कृत संस्कृत टीका ३।।।) रत्नावली (हर्षदेव) प्रभा व्याख्या २) भाषा टीका १।।।) केवल भाषा ।।=) रुक्मिणीहरण ३) रुक्मिणीपरिणय ।।।) विद्धशाल भञ्जिका ८) राजविजय नाटक २) रत्नेश्वर प्रासाद नाटक १।) रतिमन्मथ २) विक्रमोर्वशी—(कालिदास) रंगनाथ व्याख्या १।।।) सुरेन्द्रनाथ व्याख्या ३) विदग्धमाधव—रूपगोस्वामि सटीक २) विद्यापरिणय—आनंदराम ।।।)वीणावासवदत्ता ।।=) विश्वमोहन नाटक ३।।।) विराज सरोजिनी १) वेणी संहार (भट्ट नारायण) सटीक १।।) सं० तथा हिन्दी टीका ४), गौरीनाथ पाठक ३) वृषभानुजा ।।।) सुभद्राहरण—माधवभट्ट ।।) सरस्वती नाटिका—पं० सदाशिव दीक्षित ।।) सुभद्रापरिणय ।=) सौगन्धिका हरण ।।) संकल्प सूर्योदय ३।।) संकल्प सूर्योदय वेंकटनाथ-प्रभाविलास तथा प्रभावलि दो व्याख्या सहित ३०) स्वप्नवासवदत्ता—(भास) सटीक २।।) संस्कृत तथा हिन्दी टीका २।।।) (जिल्द) २।।) हास्यार्णव प्रहसन ।।।=) हनुमन्नाटक भाषा टीका ३।।) संस्कृत टीका २।।)

नीति न्थ

अभिलषितार्थ चिन्तामणि २।।) अर्थशास्त्र पद सूची ७) ईसवनीति २ भाग १।।।=) कौटिल्यार्थ शास्त्र—गणपतिशास्त्री कृत संस्कृत टीका सहित १५) चाणक्य शतक ।=) चाणक्यनीति भा० टी० ।।।) चाणक्य सूत्र सं० हि० ।=) नीतिशतक—भर्तृहरि सटीक १) भाषा टीका विस्तृत हरिदास सचित्र ५) सं० हिन्दी टीका १) नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि सटीक २) तथा भाषा टीका १२) पंचतंत्र—मूल २); पूना १।।।) जीवानंद कृत संस्कृत टीका ३।।।) जीवाराम कृत संस्कृत टीका २।) सटीक बम्बई ४) भाषा टीका संपूर्ण ८) गुरुप्रसाद संस्कृत तथा भाषा टीका ६) प्रथम तंत्र सटीक १।) भाषा टीका १।।) अपरीक्षितकारक सं० हिन्दी ।।।) मित्र सम्प्राप्ति १) पुरुषपरीक्षा भाषा टीका २।।=) विदुर नीति—सटीक ।।) संस्कृत तथा हि० टीका २) वैराग्य शतक सटीक ।।) भाषा टीका हरदयाल कवित्तों में १।।) भाषा टीका १) भा० टी० हरिदास सचित्र ६) नीति वैराग्य शृंगार तीनों शतक भाषा टीका १) राजनीति रत्नाकर—चंडेश्वर ५) शतकत्रय सटीक २।।।) शतकत्रय भर्तृहरि—सटीक ६) हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद सहित बंबई ७) शुक्रनीति भाषा टीका सहित ४।।) शृंगार शतक सटीक ।।=) भाषा टीका हरिदास सचित्र ४।।) सरस्वती विलास २।।) हितोपदेश मूल १) संस्कृत टीका जीवानंद ३=) स० टीका हि० टीका गुरुप्रसाद ३।।) भाषा टीका सहित १।।) भाषा टीका सहित पं० रामेश्वर भट्ट बंबई ३।) हितोपदेश—मित्रलाभ सरल संस्कृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद सहित १।) ।

कोषग्रन्थ

अनेकार्थ तिलक—महिप कृत ६) अनेकार्थ ध्वनि मंजरी द्विरूप, एकाक्षर =) अनेकार्थध्वनिमंजरी एकाक्षर कोष =) अनेकार्थ संग्रह—श्री हेमचंद्र ३) अभिधान राजेंद्र कोष—संपूर्ण अर्धमागधी सात बड़ी २ जिल्दों में २००) अमरकोष—मूल गुटका संपूर्ण १) गुरुप्रसाद भा० टी० गुटका २) स्थूलाक्षर बंबई १) केवल प्रथम कांड भा० टी० ।=) मणिप्रभा प्रथम कांड १) द्वितीय कांड २) तृतीय कांड प्रभा टीका ।।) संक्षिप्त माहेश्वरी टीका संपूर्ण बंबई ३) क्षीरस्वामिकृत व्याख्या ७।।) भानुजी दीक्षित रामाश्रमी टीका १०) नामचंद्रिका व्याख्या, त्रिकांड शेष, हारावली, द्विरूपकोष द्वय, एकाक्षर सहित ८) आख्यात चंद्रिका—भट्टमल्ल १।।) कल्पद्रुकोष—केशव दो भागों में १४) कोषावतंस (काव्यमय) राघव २) देशी नाम माला—श्री हेमचंद्र पूना ४।।) कलकत्ता ६) नानार्थ संग्रह—अजयपाल १।।=) नामलिंगानुशासन—क्षीर तथा टीका सर्वस्व केवल ३—४ भाग मिलता है १०) पाइ- सद्द-महण्णवो (प्राकृत हिन्दी कोष) पं० हरगोविन्द दास संपूर्ण ६०) प्रामाणिक हिन्दी कोष (हिन्दी से हिन्दी) बा० रामचंद्र वर्मा १२।।।) बृहत् हिन्दी कोष—(हिन्दी से हिन्दी) ज्ञानमंडल का २०) भार्गव हिन्दी कोष (हिन्दी से हिन्दी) १२) छोटा ६) भारतीय चरितांबुधि—हिन्दी ८) मेदनी कोष—मेदनीकर संस्कृत मूल ३) लोकोक्ति कोष—विश्वंभरनाथ हिन्दी १०) विनय कोष—महावीरप्रसाद हिन्दी ६) नालंदा हिन्दी कोष (हिन्दी से हिन्दी) इसमें डेढ़ लाख शब्द हैं १५) नाममाला—अमर कीर्ति भाष्य ३।।) विश्वप्रकाश कोष—संस्कृत ३) शब्दभेद प्रकाश ।) शब्दरत्न समन्वय—सहाजी संस्कृत ११) शब्दार्थ चिन्तामणि—सुखानंद चार भागों में बहुत प्राचीन प्रति है संस्कृत दुष्प्राप्य १००) शाश्वत कोष २।।) शासन शब्दकोष—राहुलजी हिन्दी १५) श्रीकोष सं० हिन्दी १।) संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ संस्कृत-हिन्दी १०) समाचार पत्र शब्द कोष हिन्दी १।।।) संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर कोष—(हिन्दी से हिन्दी) १५) हिन्दी शब्द कोष—रामगुलाम ५) हिन्दी शब्दसागर संपूर्ण बड़ी बड़ी चार जिल्दें दुष्प्राप्य २५०) त्रिकांडशेष-सटीक ५)।

कामशास्त्र ग्रन्थ

कामसूत्र जयमंगला सं० टीका ६) जयमंगला तथा मूल की हिन्दी टीका दो भागों में २०) केवल हिन्दी ५) केलिकुतूहल—संस्कृत म० म० मथुराप्रसाद २) पंचसायक—ज्योतीश्वर संस्कृत १) भाषा टीका ३।।) नागरसर्वस्व—पद्मश्री विरचित भाषा टीका ४।) रतिमंजरी भाषा टीका ।) रतिरत्न प्रदीपिका—संस्कृत ।।।) रतिवल्लभ भाषा टीका २।।) रतिरहस्य संस्कृत टीका दीपिका सहित ३) भाषा टीका सहित ५)।

शिल्पशास्त्र ग्रन्थ

अपराजित पृछा १८।=) काश्यपशिल्प—महेश्वर ५=) देवतामूर्ति प्रकरण—रूपमंडन ६।) प्रासादमंडन—राजवल्लभ १०), ३) वास्तुविद्या १।।) शिल्परत्न दूसरा भाग २) सम्यक सम्बद्ध प्रतिमालक्षण ।।=) ।

संगीतराग ग्रन्थ

कुचेलोपाख्यान ।=) दत्तिलम् ।=) बृहद्देशी–मातंगमुनि १।।) मलेरागमलिका २) राग-रत्नाकर भाषा १०)रागविबोध–सोमनाथ ६) संगीतकृतयः रामवर्मा १।) संगीत मालिका–मुहम्मदशाह–संस्कृत ३) संगीत राज–महाराणा कुम्भ प्रथम भाग ३) संगीत रत्नाकर–शार्ङ्गदेव संस्कृत २ भाग १७।) तथा चतुर कल्लिनाथ तथा सिंह भूपाल कृत संस्कृत व्याख्या सहित ३ जिल्दों में ३४) संगीत समय सार–श्रीपार्श्वदेव २) संगीत शास्त्र प्रवेशिका सप्रे–मराठी १।।) संगीत कला प्रवेश–सप्रे–मराठी प्रथम २) संग्रह चूडामणि ५)

भाषामें संगीतभजन

आरतीसंग्रह =) गोविंदविलास ३।।) निर्भयविलास २।।) ब्रह्मानंद भजनमाला असली १।।=) ब्रजविहार ४।।) भजनमाला ५ भागों में ।।=) भजन रत्नावली बड़ी ३।।) मुकलावा बहार ६) रुक्मिनीमंगल भाष्य ४) लावणीब्रह्मज्ञान ४) विश्रामसागर ८) ब्रजविलास ६) मनमोहनी–बिन्दुजी १।।) राधे श्याम रामायण असली बरेली संपूर्ण १०।।=) नकल काशी ६)।

स्तोत्र ग्रन्थ

अपराजिता स्तोत्र =) अन्नपूर्णा स्तोत्र =) आदित्यहृदय ‑)।। मोटा अक्षर ।।) आलवंदार स्तोत्र ‑) ऋणमोचनमंगल स्तोत्र ‑) कालीकवच ‑)।। गजेंद्र मोक्ष भा० टी० ।) गणेशमहिम्न ‑)।। गंगालहरी =)।। संस्कृत टीका ।≡) भाषा टीका ≡) गायत्री रामायण ‑) गोपालसहस्रनाम ।=), ।।), ।।।=), भाषा टीका ।।।) चर्पटमंजरी =) देव्यापराधक्षमापन ‑) दुर्गाकवच ‑)।। देवी-पुष्पांजली ‑) नर्मदाष्टक ‑)नवग्रह स्तोत्र ।।),बड़ा ।।।) प्रश्नोत्तरी हिं० टीका)।। बगुलामुखी स्तोत्र ‑) बटुकभैरव ‑)।। बृहत्स्तोत्ररत्नाकर मोटा अक्षर काशी ३) बंबई ३।।)गुटका बंबई ३।।) काशी २) बृहत्स्तोत्ररत्नाहार (४७६ स्तोत्र) गुटका बंबई ६) भक्तिदर्पण–आर्यासमज १।।) महाविद्यास्तोत्र ‑)।। महालक्ष्मी स्तोत्र ‑)।। महिम्न स्तोत्र मूल =) मधुसूदनी सं० टीका ।।) बंबई ।।=) सात टीका सहित १।।) भाषा टीका =) मृतसंजीवनी =)।। मृत्युञ्जय मानसिक ‑) रामरक्षा ≡)।। रामनामसहस्र =) राममहिम्न =) विष्णु सहस्रनाम मूल)।।।, ‑)।। भा० टी० ।।) लक्ष्मीनारायण हृदय ।।) शनिस्तोत्र =)।। शिवतांडव भा० टी० =) शिवस्तोत्र ‑)।। शीतला-ष्टक ‑) लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनाम =)।। संतानगोपाल ‑)।। सिद्धसरस्वती =) सूर्याद्विद्वादशी =)।। रामपद्धति, रामपटल, सिधान्तपटल, मंत्रमुक्तावली, चतुर्विंशति गायत्री सब एक गुटके में २) रामपटल ।।) गोविन्द दामोदर ‑)।

जैनग्रन्थ

अकलंक ग्रन्थ त्रय भट्टाकलंक देव (लघीयस्त्रयम्, न्यायविनिश्चयः, प्रमाण संग्रहश्च) ३) श्रीआचाराङ्ग सूत्र दीपिका–श्री अजितदेव सूरि ६) अनुत्तरोपपातिक सूत्र–अर्थबोधिनी वृत्ति ३।।) श्री उत्तराध्ययनसूत्र–श्री भद्रबाहु स्वामिकृत निर्युक्ति तथा बृहत् टीका युक्त प्रथम भाग ६) आगम युग का अनेकान्तवाद–पं० दलसुख भाषा ।।) अहिंसा की साधना–काका कालेलकर ।) अनेकान्तवाद–भाषा (व्यावहारिक और तात्त्विक) पं० सुखलालजी ।।।) अनेकान्तजयपताका–श्रीहरिभद्र सूरि दो भाग २८) आदि पुराण–हिन्दी अनुवाद सहित दो भागों में २०) आधुनिक जैन कवि भाषा ३।।) अगड़दत्तो १) अन्तगडदसाओ–अणुत्तरोववाइय-दसाओ–डा० वैद्य ३) कालकाचार्य कथानक–साराभाई नवाब (बिना चित्रके) ३०) कथाकोष प्रकरण–श्रीजिनेश्वर सूरि कृत १०।।) कुमार पाल चरित (प्राकृतद्वाश्रय काव्य) श्री हेमचंद्र ६) कुम्मा-पुत्तचरिअम्–डा० वैद्य १।।) करलक्खण (सामुद्रिक शास्त्र) १) कन्नड प्रांतीय ताड़पत्रीयग्रन्थ सूची १३) केवल ज्ञान प्रश्नांक चूडामणि ४) कंसवहो–रामपाणिवाद २) गोम्मटसार-कर्मकांड –श्री नेमिचंद्र भाषा टीका सहित ३) कुन्दकुन्दाचार्य के तीन रत्न २) जैनतर्कभाषा–श्री यशो-विजयकृत ३) जैनपुस्तक प्रशस्तिसंग्रह–पुरातन समय लिखित प्रथम भाग १०) जैनशासन–भाषा (पं० सुमेरुचंद्र ३) जैन आगम–पं० दलसुख ।।=) जैन संस्कृति का हृदय भाषा ।) जैन-तत्वज्ञान–पं० सुखलालजी ।) जैनसाहित्य की प्रगति १९४९–५१ पं० सुखलालजी भाषा ।।।) जैनग्रन्थ और ग्रन्थकार–श्री फतेहचंद बेलानी १।।) जैनधर्म श्रीकैलाशचंद्र भाषा ४।।) जैन सम्प्रदाय शिक्षा–भाषा–यति श्रीपालचंद्र जी ६) जीवन में स्याद्वाद–श्री चंद्रशंकर शुक्ल ।।।) तत्त्वार्थसूत्र–पं० सुखलालजी कृत विस्तृत अनुवाद हिन्दीमें ५।।) तत्त्वार्थवृत्ति–हिन्दी सार और विस्तृत प्रस्तावना सहित –सं० पं० महेंद्र कुमार १६) तत्त्वार्थ सूत्र–भास्करानंद विरचित सुखबोध व्याख्या २।।) तत्त्वार्थाधिगम सूत्र–सभाष्य प. खूबचन्द्रजी कृत भाषाटीका सहित ३) दिग्विजय महाकाव्य–महोपाध्याय मेघविजय विरचित ८) देवानंद महाकाव्य–श्री मेघविजयो-पाध्याय ४) द्रव्यसंग्रह–भाषा टीका सहित १।।), ।=) धर्मबिन्दु–श्रीहरिभद्रसूरि–श्री मुनिचंद्र कृत व्याख्या सहित ४) धूर्ताख्यान–श्री हरिभद्रसूरि ८) धर्माभ्युदय काव्य–श्रीउदयप्रभसूरि विरचित ८।।) धर्मोपदेशमाला–विवरण–श्रीजयसिंह सूरि विरचित ९।।।) धर्म और समाज–पं० सुखलाल १।।) निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय–भाषा पं० सुखलाल १) न्यायदीपिका–पं० दरबारी लाल कृत भाषाटीका ५) न्यायावतारवार्तिक वृत्ति–श्री शान्तिसूरि विरचित १६।।) नाममाला सभाष्य–धनंजय कृत नाममाला कोष पर अमरकीर्ति का भाष्य ३) न्याय विनिश्चय विवरण–भट्टाकलंकदेव विरचित तथा वादिराज सूरि कृत विस्तृत टीका प्रथम भाग–विस्तृत हिन्दी प्रस्ता-वना सहित संपादक–प्रो० महेन्द्रकुमार १५) न्यायावतार–श्रीसिद्ध सेन दिवाकर–डा० वैद्य १।।) न्याय कुमुदचंद्र–(प्रभाचार्य) (भट्टाकलंक देव की लघीयस्त्रय की व्याख्या) सं० प्रो० महेन्द्रकुमार १६।।) न्यायावतार–श्रीसिद्ध सेन दिवाकर भाषाटीका पं० विजय मूर्तिकृत ५) पउमसिरिचरिउ–धाहिल विरचित (अपभ्रंश भाषामय) ४।।) प्राचीन जैन तीर्थ–डा० जगदीशचंद्र १।।) परमात्म प्रकाश और योगसार (श्रीयोगीन्द्र देव विरचित) भाषानुवाद सहित ५) प्रबंध चिन्तामणि–श्री मेरुतुंग विरचित ६) तथा हिन्दी अनुवाद ६) पुरातन प्रबंध संग्रह ऐतिहासिक प्रबंध ७) प्रबंध कोष–राजशेखर सूरि कृत ६) प्रमाण मीमांसा–श्री हेमचंद्राचार्य कृत स्वोपज्ञ वृत्ति तथा हिन्दी अनुवाद सहित ७) प्रभावकचरित–प्रभाचन्द्राचार्य विरचित श्री जिनविजय संपादित ७) तथा डा० हीरानंद सम्पादित ३) पद्मचरित–श्री रविषेण विरचित ३ भागों में संपूर्ण ५।।) परीक्षा मुख सूत्र श्री माणिक्यनंदी विरचित तथा लघुवृत्ति सहित २) प्रशमरति प्रकरण–श्री उमास्वाति विरचित श्री हरिभद्र सूरि कृत टीका सहित ६) पुष्पमाला–मोक्षमाला और भावनाबोध–भाषा श्री राजचंद्र कृत १।।) परिशिष्ट पर्व–श्री हेमचंद्र ६) प्राकृत व्याकरण–श्री हेमचंद्र २) प्रवचनसार–हिंदी टीका सहित ५) बम्भदत्तो–डा० वैद्य ।।।) बृहत्क-

थाकोश—श्री हरिषेणचार्य रचित १६) भद्रबाहु संहिता—ज्योतिष ५।।।) भानुचंद्र गणि चरित—श्री सिद्धिचंद्र उपाध्याय विरचित ८) महापुराण—पुष्पदन्त विरचित—डा० वैद्य ३ भागों में २६) महाचमत्कारिक विशा यंत्र कल्प—श्री मेघविजय ५) महीवालकहा—श्री वीरदेव गणि विरचित २।।) महावीरवाणी—श्री बेचरदास १।।।) मदन पराजय—नागदेव ८) महाबन्ध—(महाधवल सिद्धान्त शास्त्र)—श्री भूतबलि भट्टारक प्रथम भाग हिन्दी अनुवाद सहित १२) रामायण—श्री पुष्पदन्त—अपभ्रंश भाषा—डा० वैद्य २।।) रिष्टसमुच्चय दुर्गदेवाचार्य १०) लीलावई कहा-कोऊहल-विरइया (कौतूहल कवि कृत लीलावती नाम्नी महाराष्ट्री प्राकृत कथा१५) विविधतीर्थकल्प—जिनप्रभ सूरि ६) वर्द्धमान-महाकाव्य—भगवान् महावीर का जीवन भाषा-काव्य पं० अनूप शर्मा ६) श्रीमद् राजचंद्र-जीवन हिन्दी १०) श्री सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन—श्री हेमचंद्र सूरीश्वर विरचित स्वोपज्ञ तत्त्वप्रकाशिका तथा श्री चंद्रसागर कृत आनंदबोधिनी वृत्ति सहित प्रथम भाग कारक पर्यन्त ३०) स्याद्वाद मंजरी—श्री मल्लिषेण—अन्ययोगव्यवछेद श्री हेमचंद्र कृत संपादक श्री ध्रुव ११) स्याद्वादमंजरी—डा० जगदीश चंद्र कृत भाषानुवाद सहित ६) श्री सिद्ध हेम व्याकरण श्री हेमचंद्र कृत स्वोपज्ञ लघु वृत्ति सहित १०) षड्दर्शन समुच्चय—श्री हरिभद्र सूरि—श्री सोमतिलक कृत वृत्ति सहित ३) संखित्ततरंग वइकहा—श्री नेमिचंद २।।) सभाष्यरत्नमंजूषा—छन्दशास्त्रका ग्रन्थ २) सन्देशरासक-कवि-अब्दुल रहमान १०) वस्तुपाल का विद्यामंडल भाषा ।।) विश्वसमस्या और व्रतविचार भाषा ।) विवागसूयं—डा० वैद्य २।।) भैरव पद्मावती कल्प—सचित्र गुजराती भाषांतर ३१ परिशिष्ट सहित २५) हरिवंश पुराण—पुष्पदन्त—अपभ्रंश भाषा—डा० वैद्य २।।) हैम लघुप्रक्रिया ५) हिन्दू-जैन और हरिजन मंदिर प्रवेश—प्रो० पृथ्वीराज ।≡) हरिवंश पुराण श्री जिनसेन कृत दो भाग ३।।) त्रिषष्टि स्मृतिशास्त्र—पं० आशाधर ।।) त्रिशष्टि शलाकापुरुषचरित—श्रीहेमचंद्र प्रथम भाग ५) द्वितीय भाग ८) ज्ञानार्णव—श्री शुभचंद्रविरचित हिन्दी टीका सहित ६) हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमंडल ।‒)

बौध ग्रन्थ

अट्ठसालिनी ८) अद्वयवज्र संग्रह २) अभिधर्मकोष ५) अभिधर्मकोष व्याख्या २०) आर्यशालिस्तम्ब सूत्र ४।।) करुणपुण्डरीक—महायान ५) गिल्गित मैनुस्क्रिप्ट्स—३ वोल्युम ५ भागों में ६४।।) गौतम बुद्ध-बंगला में १।।) जातक—भाषानुवाद ३ जिल्दों में—आनन्दकौसल्यायन २५) जातकमाला—आर्यशूर—विरचित सम्पूर्ण अमरीका ३०) जातकमाला—बाला व्याख्या परीक्षोपयोगी २।) जातक संग्रह १।) जातकट्ठकथा—मूल ९) चित्तविशुद्धिप्रकरण आर्यदेव ५) तर्कभाषा—मोक्षाकरगुप्त २) थेरी गाथा १) थेरगाथा १।।) दीघनिकाय-सुत्त पिटक—श्रीराहुलजी हिन्दी अनुवाद ६) दीघनिकायो—मूल पाठ २ भागों में ५) धम्मसंगणि—(अभिधम्म पिटक) ५) धम्मपद-मूल पालि, संस्कृत छाया-हिन्दी अनुवाद श्री अवधकिशोर १।।) नारायण परिपृच्छा ।।।) पञ्चविंशतिका साहस्रिका प्रज्ञापारमिता ८) पातिमोक्ख सूत्र १) पालिपाठावली—सं०मु० जिनविजय १।) पालिजातकावली—श्री बटुकनाथ २।) पाली धातुरूपावली १।) पालि शब्दरूपावली १‒) पालि महाव्याकरण—श्री जगदीश काश्यप—हि० भाषा में ६) पालिसाहित्य का इतिहास भरतसिंह उपाध्याय हिन्दी १०) प्रमाण वार्तिक सटीक ३०) प्रज्ञापारमिता—अभिसमयालंकारालोक श्रीहरिभद्र कृत १२) प्राचीन बौद्ध तर्क ग्रन्थ ९) बौद्धदर्शन मीमांसा—बलदेव उपाध्याय ६) ब्रह्मजाल सुत्त १) बुद्ध मीमांसा—भाषा मैत्रेय ५) मज्झिमनिकायो—केवल दूसरा भाग मूल पाठ १।।) मज्झिमनिकाय—हिन्दी अनुवाद—श्रीराहुलजी ८) महावंसो—मूल पाठ २।।) महावंस—हिन्दी अनुवाद—आनन्द कौसल्यायन ४) महावग्ग—(विनय पिटक) पठमो भाग ३।।) महायान हिन्दी—भदन्त शान्तिभिक्षु ३) मिलिन्दपन्हो—मूलपाठ ३) हिन्दी अनुवाद ४) वज्रयान ग्रन्थद्वय ३) वार्तिकालंकार प्रत्यक्षपरिच्छेद ५) विशुद्धिमग्गो—बुद्धघोसाचरिय विरचितो १६) बालिद्वीप ग्रन्था ३।।) विनयपिटक हिन्दी अनुवाद ६) शतसाहस्रिका पारमिता अपूर्ण १४।) हेतुतत्त्वोपदेश—जितारि १।।) त्रिस्वभावनिर्देश वसुबन्धु १०) सेकोद्देश टीका—नरोपा २।।)।

ज्योतिषग्रन्थ

अद्भुतसागर—श्री बल्लालसेन मूल १०) अवकहडाचक्र भा० टी० ।≡) अर्वमार्तण्ड—पं० मुकुन्दवल्लभ जी कृत भाषा में । तेजीमन्दी में इससे बढ़कर ग्रन्थ आजतक नहीं छपा । ज्योतिषियों का यह जीवनदाता है । गुणों का मूल्य है १०) अहिबलचक्र—भाषा टीका ।) आर्यभट्टीय नीलकंठकृत भाष्य सहित ४≈) भाषा टीका २।।) आशुबोध ज्योतिष संस्कृत ।≈) आर्यासप्तति सटीक ।।) उदयतीन्दुशेखर १०) करलक्खण (सामुद्रिक) प्राकृत १) करणकुतूहल—भास्कराचार्य सं० टीका १।) करणकौस्तुभ मूल १) करणपद्धति मूल ।≈) करणप्रकाश—ब्रह्मदेव १।।) कर्मविपाक—नक्षत्रचरणगत भाषा टीका ३) कुण्डलीदर्पण भाषा १) केरल प्रश्न संग्रह भा० टी० ।।) केरलीय जातक—भाषा छन्दबद्ध ।।) केवलज्ञानप्रश्नचूडामणि ४) केशवी जातक भाषा टीका सहित २।।।) खण्डखाद्यक टीका २।।) खेटकौतुक भा० टी० ।≈), ≡) गणक तरंगिणी सुधाकर द्विवेदी १।।।) गणित कौमुदी—नारायण पंडित दो भाग में संस्कृत ३।‒) गणित कौमुदी भाषा २) गणित का इतिहास—भाषा सुधाकर द्विवेदी २) गणित तिलक—श्रीपति कृत तथा संस्कृत टीका सहित ४) गर्गमनोरमा—भा० टी० ≡), ।≈) गोलपरिभाषा-तत्त्वप्रकाशिका ।) गोलाध्याय-मरीचि संस्कृत ४।) गोलीय रेखागणित सटीक १।।) ग्रहगणिताध्याय संस्कृत ७।‒) ग्रहगोचर भा० टी० ≈) ग्रहणफलदर्पण भा० टी० १) ग्रहलाघवकरण—मल्लारि—विश्वनाथ व्याख्या ७) भाषा टीका ३।।) ग्रहलाघव सारणि १।।।) चंद्रसारणी २) चक्रावलीसंग्रह संस्कृत टीका ४।।) चमत्कार चिन्तामणि भा० टी० ।।), चमत्कार ज्योतिष भाषा टी० २।) चलनकलन १।।) चलन कलन प्रश्नोत्तर विवरण ।।।) चलराशि कलण दो भाग १।।।) चापीय त्रिकोण गणित सटीक १।।) जन्मपत्र व्यवस्था भा० टी० ।।) जन्मपत्रिका विधान संस्कृत टीका १।।) जन्मपत्र दीपक भा० टी० १।) जातकालंकार भा० टी० ।।।), ।।≈) जातकतत्त्वभाषा टीका ६।।) जातक शिरोमणि भाषा टीका ३।।) जातकसंग्रह भाषा टीका ५) जातकाभरण भाषा टीका काशी ५) बंबई ७) जैमिनीपद्यामृत सटीक १।।) जैमिनी सूत्र भाषा टीका सीताराम १।।) विमला सं० हि० टीका २) ज्योतिषसर्व संग्रह भा० टी० २) ज्योतिर्विदा भरण सटीक १०) ज्योतिष चन्द्रार्क भा० टी० ३) ज्योतिष श्यामसंग्रह भा० टी० ७) ज्योतिष तत्त्व विवेक भाषा टीका २।।) ज्योतिषतत्त्व सुधार्णव—भाषा टीका ७) ज्योतिष कल्पद्रुम भाषा २।।≈) ज्योतिषसार भा० टी० ३।।) ज्योतिर्निबंध—संस्कृत ६।।≡) ज्योतिषवेदांग—सुधाकर द्विवेदी १।।।) ताजिक

नीलकंठी–संस्कृत टीका २।) भाषा टीका सीताराम ३।।।) भाषा टीका जलदगर्जनी टीका ४।।) भा० टी० बंबई ४) ताजिक भूषण भा० टी० १) ताजिक संग्रह भा० टीका ।।।) तिथिचिन्तामणि भा० टी० ।।) तिलविचार भाषा रतलाम १) तेजीमंदी रतलाम १।।) दीपिका वा शुद्धिदीपिका भाषा टीका ३।।) दैवज्ञवल्लभ भा० टी० ।।।=) दीर्घवृत्तलक्षण सुधाकर द्विवेदी १।।) देवकेरल–चन्द्रकला नाडी प्राचीन ग्रन्थ संस्कृत में ११।) दशाफलदर्पण–रतलाम संस्कृत ४) वैदज्ञ कामधेनु संस्कृत ४।।) द्वात्रिंशयोगावली संस्कृत =) दशवर्षीय पंचांग २००५ से २०१४ तक ५।।) तथा २०११ से २०२० तक ६) धराचक्र भा० टी० ≡) धराभ्रम सटीक ।।) नरपतिजयचर्या सटीक ४।) नरपतिजयचर्या-स्वरोदय १) नन्दिदत्तपंच =) नारद संहिता मूल १) भाषा टीका ३।।) निधिप्रदीप संस्कृत ।=) नेप्च्युन भाषा ।।) नृसिंह तेजीमंदी ५।) परमसिद्धान्त ज्योतिष–प्रेमवल्लभ संस्कृत ७) परीक्षा चक्रावली भा० टी० ।≡) पल्लीपतन भा० टी० ≡) पत्रीमार्ग प्रदीपिका और वर्षदीपक भा० टी० २।।।) प्रश्नशिरोमणि भाषा टीका ३।।) पद्मकोष भा० टी० ।=) प्रतिभाबोधक ।।।) प्रश्नांकचूडामणि =) प्रस्तारचक्र–भा० टी० =) पंचस्वरा सुबोधनी टीका १।।।) पंचांग विज्ञान ।=) परवलय क्षेत्र–मुरली ठक्कुर ।।) प्रश्नवैष्णव मूल ।।) भा० टी० १।।) पंचांगमंजूषा भा० टी० ।।।) प्रश्नभूषण भा० टी० ।।।=) पंचांगदर्पण बंगला २) परीक्षा विचार =) बालबोध ज्योतिष भा० टी० १।।) बृहज्जातक भा० टी० ४) बृहत्पाराशर होरा–पूर्वभाग मूल तथा उत्तर भाग भा० टी० सहित बंबई मोटा अक्षर १६) तथा पं० सीताराम कृत भाषा टीका संपूर्ण ग्रन्थ १५) १२) बृहदवकहडाचक्र भा० टी० ।।।=) काशी १।=) बृहद्दैवज्ञरंजन ५।) बृहत् सिद्धखेटी १।।) बृहज्ज्योतिषसार भा० टी० ६) बीजगणित भा० टी० लखनऊ २।।) काशी सं० टीका. भा० टी० ६), ८) तथा सटीक पूना ३।=) बृहद् होडाचक्रविवरण भा० टी० ।।) बीजवासन ।।=) भद्रबाहु संहिता–जैनग्रन्थ मूल ५।।।) फलितसंग्रह भा० टी० १) फलितप्रकाश =) फलदीपिका संस्कृत ४) बृहद् वास्तुमाला २) भारतीय ज्योतिष भाषा नेमिचंद्र ६) भृगुसंहिता योगावली खंड संस्कृत मूल ५।) भार्गव नाडिका मूल प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ पहली बार छपा है ६) भाभ्रमबोध ।।) भाभ्रम रेखा निरूपण ।।) भावफलाध्याय ।) भावकुतूहल भा० टी० २) भाग्यरहस्य भाषा १=) भृगुसंहिता पद्धति सरल भाषा में। श्री भगवानदास ज्योतिषीजी ने दैवी शक्ति से ही हर कुण्डली का फलादेश भृगु संहिता वत् प्रत्यक्ष कर दिखाया है। पुस्तक इतनी उपयोगी है कि हाथोंहाथ यह संस्करण समाप्त हो जावेगा १०) महाभास्करीय संस्कृत २=) मनुष्य जातक संस्कृत टीका २) मयूर चित्रक मूल ।≡) मुहूर्त प्रकाश भा० टी० ४।।) मुहूर्त दीपक ।≡) मुहूर्तमंजरी भा० टी० ।।=) मुहूर्तकल्पद्रुम संस्कृत ।।।) मुहूर्त चिन्तामणि-पीयूष धारा सटीक ५) प्रमिताक्षरा सटीक ३) भा० टी० २।।), ३) महासिद्धान्त आर्यभट्ट ४।।) मुहूर्तमार्तण्ड सं० टीका भा० टी० ३) मानसागरी भा० टी० ७) मानसप्रश्न दीपिका ।≡) महावीरप्रश्नावली भाषा -) योगिनी जातक भा० टी० ।-) यवन जातक ।) यंत्रराज यंत्रशिरोमणि २) रमल शास्त्र भाषा–चेचान पांडे २।।) रमलरहस्य संस्कृत १) रमलनवरत्न भा० टी० २।।) रत्नद्योत भा० टी० ।।=) रणदीपिका मूल ।=) रविसिद्धान्तमंजरी संस्कृत ।।।) रत्नदीप रत्नशास्त्र संस्कृत २।) रत्नगर्भा ।) रेखागणित ११–१२ अध्याय १।।) षष्ठ अध्याय ।=) लघु-भास्करीय संस्कृत २=) लघुमानस ।।=) लघुमानस कलकत्ता ५) लीलावती सटीक ३), पूना ४।।) भा० टी० २।।) लग्नचंद्रिका भा० टी० २) लग्नरत्नाकर भा० टी० ।=) लग्नवाराही =) लघुजातक भा०टी० १।।) लग्नसारिणी समुच्चय ३) लघु पाराशरी मध्यपराशरी भा० टी० १।) लघुसंग्रह १।।) वास्तवचन्द्र शृंगोन्नति १।।) वर्षपद्धति मूल २) विश्वहितम् १) विद्यामाधवीय (मुहूर्त दीपिका) ३ भाग ५।।) वृद्धसूर्यार्णवकर्म विपाक मूल१२) वर्षयोग समूह भा० टी० १।) वनमाला भा० टी० ।) वास्तुरत्नावली सं० हिं० टीका २।।) विवाहवृन्दावन सं० हिं० टीका २।।) वसन्त राज शकुन भा० टी० ९) वाशिष्ठ संहिता ३।।) वृन्दावली ।।) विश्वकर्माविद्याप्रकाश भा० टी० २।।) वास्तुराजवल्लभ २) वास्तुसारणी ३) षट्पंचाशिका भा० टी० ।=), ।।) शीघ्रबोध भा० टी० ।।।), १) शिशुबोध भा० टी० ।।=) शिवजातक भा० टी० =) शकुनविचार ≡) शनिविचार रतलाभ ।।।) शम्भुहोरा प्रकाश भा० टी० ४।।) सर्वसंग्रह भा० टी० ४।।) सिधान्तदैवज्ञ विनोद भा० टी० ५।) सूर्य सिद्धान्त भा० टी० ५।) संस्कृत टीका ३।।) संकेत निधि भा० टी० ३।।) संवत्सर निर्णय ।।।=) स्कान्द शरीर–सामुद्रिक संस्कृत २।।=) संग्रामविजय संस्कृत २।=) सूर्य सारणी २) सर्वतोभद्र भा० टी० १) संततिसमयविचार १) स्त्रीजातक १।) स्वप्नप्रकाशिका ।-) स्वप्नाध्याय ≡) सिद्धान्त योगाकर ।≡) सामुद्रिक भा० टी० ।।) सामुद्रिका शास्त्र भा० टी० बंबई ३।।) सामुद्रिक कुञ्जिका ।।=) सामुद्रिक दर्पण ।।।) सामुद्रिक रहस्य भा० टी० ३) सामुद्रिक दीपिका दो भागों में बहुत बढ़िया सचित्र ११) सिद्धान्त शिरोमणि वासना भाष्य संपूर्ण ६) नवीनवैज्ञानिक उपपत्ति सहित टीका पं० मुरलीधर स्पष्टाधिकारान्त ५) सिधान्त शिरोमणि गणिताध्याय लखनऊ २।।) सिद्धान्त-तत्त्व विवेक दो भाग ७) सिद्धान्त शेखर श्रीपति सटीक ७।।) सारावली मूल २।।) हर्षल भाषा ।।) हनुमान ज्योतिष ।।) हायनरत्न मूल ३।।) हायनफल रत्न ।।।) हायनबोध ।।=) होरा शास्त्र–वाराहमिहिर प्रथम भाग (१–१०) १२।।) हरिहरचतुरंग मूल ६।।) हस्तपरीक्षा रतलाम भाषा ६।।) ।

चिकित्सा ग्रन्थ

अंग्रेजी हिन्दी मेडिकल डिक्शनरी भट्टाचार्य १०।।=) अंड तथा अंत्रवृद्धि चिकित्सा हिन्दी कृष्णप्रसाद ।=) अजीर्णतिमिरभास्कर–हिन्दी ।।=) अजीर्णमंजरी–हिन्दी टीका ।≡) अञ्जन निदान–मूल ≡) तथा हिन्दी टीका १=) अञ्जीर–ले० श्रीरमेशवेदी हिन्दी १) अनुपानदर्पण–हिन्दी टीका २।) अनुपान विधि–ले० श्यामसुन्दर हिन्दी ।।) अनुभूत योग चिकित्सा–ले० श्री चन्द्रदत्त त्रिपाठी हिन्दी १) अनुभूत योग–दो भाग में हिन्दी श्रीश्यामसुन्दर २) अनुभूत योगचिन्तामणि–दो भाग में ले० डा० गणपति सिंह हिन्दी ८।) अनुभूतयोगप्रकाश–दो भाग में ले० डा० गणपति सिंह हिन्दी ७।।) अपना इलाज–आप करो हिन्दी ।।) अभिधान मंजरी–भिषगार्य विरचित संस्कृत १।) अभिनव निघण्टु–पं० दत्तराम चौबे कृत हिन्दी टीका सहित ३) अभिनवप्रसूतितंत्र–दामोदर गौडकृत सचित्र संस्कृत १२) अभिनव प्राकृतिक चिकित्सा–ले० कुलरंजन मुखर्जी हिन्दी ४) अभिनव बूटि दर्पण-सचित्र–श्री रूपलाल जी हिन्दी १०) अमृत-सागर–(नूतन) हिन्दी बंबई ९) मथुरा ७) लखनऊ ७) अरिष्टक (रीठा) गुणविधान–हिन्दी ।।) अर्कगुणविधान–हिन्दी १।।) अर्कप्रकाश–रावण कृत हिन्दी अनुवाद ३), २।।) अर्शरोग चिकित्सा–हिन्दी बा० मनोहरदास ।।) अष्टांगसंग्रह–इन्दुसंस्कृत व्याख्या शरीरस्थान ३) निदानस्थान ३) श्री अत्रिदेव कृत हिन्दी टीका प्रथम भाग १२) अष्टांगहृदय–मूल गुटका ३।।)

कलकत्ता ३॥) अरुणदत्त कृतसर्वांगसुन्दरी तथा हेमाद्रि कृत आयुर्वेद रसायन दो प्राचीन संस्कृत-व्याख्या २५) वाक्यप्रदीपिका संस्कृत व्याख्या प्रथम भाग ३) सूत्रस्थान ३ संस्कृत टीका (सर्वांग-सुन्दरी-पदार्थ-चंद्रिका-आयुर्वेद रसायन) १०) उत्तरस्थान-केरली संस्कृत व्याख्या ७) उत्तर-तन्त्र-शिवदास सेन कृत संस्कृत व्याख्या ४) सूत्रस्थान-शिवशर्मा कृत हिन्दी टीका ७) पं० शिवशर्मा कृत हिन्दी टीका संपूर्ण २२) श्री अत्रिदेव कृत हिन्दी टीका संपूर्ण १६) दास पंडित विरचित हृदयबोधिका संस्कृत व्याख्या सूत्रस्थान ५) अश्ववैद्यक-जयदत्त कृत मूल २) आत्म-सर्वस्व-पं० भागीरथ स्वामि कृत १००० अनुभूत योग हिन्दी ५।) आदर्शआहार-ले० डा० एस० सी० दास हिन्दी १) आदर्शभोजन-ले० श्री केदारनाथ हिन्दी १।) आदिशास्त्र अर्थात् रति शास्त्र-हिन्दी टीका १॥) आम्रगुणविधान-डा० गणपतिसिंह १।) आयुर्वेद चिकित्सा सागर-ले० श्री शम्भुनाथ हिन्दी ४) आयुर्वेद चिन्तामणि-हिन्दी टीका ४॥) आयुर्वेद परिचय-स्वा० शिवानन्दजी ॥।=) आयुर्वेद प्रकाश-(१म भाग) प्रो० सोमदेव कृत स० तथा हिन्दी टीका ५) आयुर्वेद मीमांसा-ले० श्रीजगन्नाथ हिन्दी १) आयुर्वेद विज्ञान सार-हिन्दी टीका १॥) आयुर्वेद सार संग्रह हिन्दी-चिकित्सा, औषधनिर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य ७) आयुर्वेद सुषेणसंहिता-हिन्दी टीका २) आयुर्वेदसूत्र-योगानन्द कृत संस्कृत व्याख्या २॥।) आयुर्वेदसूत्र-पं० रामप्रसाद कृत हि० टीका ॥।=) आयुर्वेदिक इंजक्शन चिकित्सा-ले० डा० श्यामसुन्दर हिन्दी २॥) ले० राधागोविन्द ५) आयुर्वेदिक प्रश्नोत्तरावली हिन्दी-केवल द्वितीय भाग २) आयुर्वेदीय औषधगुण धर्मशास्त्र-भस्में ले० श्री गंगाधर गुणेहिन्दी १॥) आयुर्वेदीय क्रिया शरीर-वैद्य रणजीत राय ६) आयुर्वेदीय पदार्थविज्ञान-वै० रणजीत राय हिन्दी ६) आयुर्वेदीय परिभाषा-हिन्दी टीका १।) आयुर्वेदीय यंत्रशस्त्र परिचय-आचार्य सुरेन्द्रमोहन १॥) आयुर्वेदीय-विश्व-कोष (३ भागों में) केवल अ से क तक है डा० दलजीत सिंह ३०) आरोग्य की कुंजी-महात्मा गांधीजी के प्रयोग ॥) आरोग्यप्रकाश-श्रीरामनारायण (आरोग्यता, स्वच्छता पर) १॥।) आरोग्य मंदिर-हिन्दी १) आरोग्य लेखांजलि-ले० श्रीकेदारनाथ हिन्दी १) आरोग्यविधान-ले० श्री जगन्नाथप्रसाद हिन्दी ६) आरोग्यशास्त्र-डा० भावे हिन्दी २॥) आरोग्यशिक्षा-पं० मुरलीधर हिन्दी ॥।) आरोग्यसाधन-श्री महात्मागांधी हिन्दी ॥।=) आर्गेनन-(भट्टाचार्य) होमियो विज्ञान चिकित्सा ३॥) आर्गेनन-(होमियो) अनु० डा० टण्डन २॥) आर्गेनन-हिन्दी रूपान्तरकार डा० सुरेशप्रसाद होमियो ४) आसवविज्ञान-ले० हरिशरणानंद हिन्दी १॥) आसवारिष्ट संग्रह-हिन्दी १॥।) आहार-ले० श्री रामरक्ष पाठक हिन्दी ५) अहारसूत्रावली-हिन्दी ले० केदारनाथ ॥) आंख का अचूक इलाज-ले० महेन्द्र नाथ २।) आँखों की प्राकृतिक चिकित्सा-स्वामिनाथ सिंह हिन्दी १) इंजेक्शन-डा० सुरेशप्रसाद कृत तृतीय संस्करण १०) इंजेक्शन चिकित्सा-ले० डा० भवानी प्रसाद ३) इंजेक्शन तत्त्व प्रदीप-ले० श्रीगणपति सिंह हिंदी ५) इंजेक्शन विज्ञान-वै० प्यारेलाल गुप्त हिन्दी ५) इन्द्रायणगुण विधान-ले० श्रीगणपति सिंह हिन्दी ॥=) इलाजुलगुर्बा-यूनानी इलाज की प्रसिद्ध पुस्तक हिन्दी ३॥) ऊर्ध्वाङ्गचिकित्सा-ले० श्री जगन्नाथ चार भागों में १०) (यह पृथक् पृथक् भी मिलते हैं मुख रोग विज्ञान २) कर्णरोग विज्ञान २) नासारोग विज्ञान २) शिरोरोग विज्ञान ४) उपचारपद्धति और पथ्य-ले० रवीन्द्र हिन्दी ॥।=) उपदंश चिकित्सा-ले० पं० गणेशदत्त हिन्दी १) उपदंशतिमिर -(गर्मी) नाशक-भाषा ।=) उपवास और फलाहार-हिन्दी ॥।=) उपवास चिकित्सा-वी० मैक्फेडेन हिन्दी २) उपवास से लाभ-ले० विठ्ठलदास मोदी हिन्दी १।) एकऔषधिगुणविधान-ले० गणपति सिंह हिन्दी १॥।=) एनीमा और कैथेटर-डा० सुरेशप्रसाद हिन्दी ।=) एलोपैथिक गाईड-ले० डा० रामनाथ वर्मा ऐसी उपयोगी पुस्तक एलोपैथिकके ऊपर आजतक नहीं छपी यही कारण है कि एक साल में इसके दो संस्करण हो गये हैं। तृतीय संस्करण भी समाप्ति पर है ८) एलोपैथिक निघंटु-ले० डा० रामनाथ वर्मा अर्थात् एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका प्रथम संस्करण ६ महीने में समाप्त हो गया। दूसरा संस्करण १०) वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा-डा० रामनाथ वर्मा १५) एलोपैथी औषधि संग्रह-ले० पं० जगन्नाथ शास्त्री ६॥) एलोपैथिक इंजेक्शन चिकित्सा-डा० बी० श्रीवास्तव हिन्दी ३) एलेन्स को नोट्स-होमियो-भट्टाचार्य ४।) औपसर्गिक रोग-ले० डा० घाणेकर हिन्दी दो भागोंमें १८) (पृथक् पृथक् भी मिलते हैं प्रथम ८) द्वितीय १०) औषधि कल्पलता-भाषा टीका ॥) औषधिक्रिया-भाषा टीका १=) औषध गुणधर्म विवेचन-कालेडा बोगला का सजिल्द ४॥) औषधिगुणधर्म विवेचन-दो भागों में ले० कृष्णप्राद ॥।=) औषधि गुणधर्मशास्त्र-१०१ गुणों का तुलनात्मक विवेचन ३) औषधि पीयुष-ले० ज्वालाप्रसाद हिन्दी दोहे १॥) औषधि विज्ञान-ले० धर्मदत्त जी दो भागों में २॥) कब्ज या कोष्ठबद्धता-ले० श्री महेन्द्रनाथ हिन्दी १) ले० डा० बालेश्वर सिंह हिन्दी १) कर्णरोग विज्ञान-ले० श्रीजगन्नाथ हिन्दी २) करावादीन कादरी-चार भागों में यूनानी हिन्दी ४) करावादीन शिफाई-यूनानी हिन्दी २) करिकल्पलता-छन्दोबद्ध भाषा हाथियों की चिकित्सा ३।) काकचण्डीश्वर कल्पतंत्र-मूल संस्कृत (सं०) १) कामकुतूहल-हेमाद्रि हिन्दी टीका ॥=) कामकुंज-ले० सन्तराम बी० ए० हिन्दी २॥) कामरत्न-नित्यनाथ हिन्दी टीका ५) कामसूत्र-वात्स्यायन जयमंगला संस्कृत व्याख्या ६) कामसूत्र-वात्स्यायन तथा यशोधर कृत जयमंगला संस्कृत व्याख्या तथा पं० माधवाचार्य कृत मूल तथा संस्कृत टीका दोनों का हिन्दी अनुवाद दो भागों में संपूर्ण २०) क्या खूब डिबिया-(जरीहीयोग) यूनानी डाक्टरी भाषा ॥।=) क्वाथमणिमाला-ले० आर्यदास कुमार सिंह हिन्दी टीका १॥) किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य-ले० रवीन्द्र नाथ हिन्दी ॥) कुचुमार-तंत्र-हिन्दी टीका ॥) कुमार तन्त्र-रावण कृत हिन्दी टीका ॥ =) कुल्लयात-ले० हकीम दलजीत सिंह हिन्दी १।) कूटमुद्गर-हिन्दी टीका ।) कूपीपक्वरस निर्माण-श्री हरिशरणानन्द ५) केण्ट मेटेरियामेडिका-भट्टाचार्य हिन्दी (होमियो) १९) केलिकुतूहल-मूल संस्कृत ले० म० म० पं० मथुराप्रसाद दीक्षित कामशास्त्र का बहुत बढ़िया नवीन ग्रन्थ संस्कृत में २) कोकशास्त्र-बड़ा हिन्दी ४) कोकसार-वैद्यक ले० नारायण प्रसाद हिन्दी ५।) कौमारभृत्य-अथवा बालचिकित्सा ले० पं० किशोरीदत्त हिन्दी १॥) ले० श्री रघुवीरप्रसाद हिन्दी ९) खूबचंद चिकित्सा-हिन्दी अनुभूत १२२ योग १॥) गंगयतिनिदान-सरल हिन्दी में निदान विषय बड़ी सरलता से समझाया है। हर रोग का निदान दिया है जिसे अनजान भी समझ सकता है ६) गाँवों में औषधरत्न-८८सुलभ प्राप्त वनौषधियों का विस्तृत हाल ३) गुड़ का महत्व और उसका प्रयोग-ले० पं० दुर्गाप्रसाद हिन्दी २॥) गुणों की पिटारी-ले० स्वा० परमानन्द हिन्दी २) गुलरगुणविकास-(आरोग्यप्रकाश) ले० चंद्रशेखर शास्त्री १।) गौरीकांचलिका तन्त्र-हिन्दी टीका ॥।=) गृह-चिकित्सा-ले० टंडन (हि०) (होमियो) १॥) गृहवास्तुचिकित्सा-ले० पं० किशोरीदत्त (हि०) १) गृहविज्ञान-व्यावहारिक प्रयोग-कालेडा बोगला ॥) ग्रन्थि और ग्रन्थि प्रणाली के रोग-ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) १) ग्राम्य चिकित्सा-ले० श्री केदारनाथ हिन्दी ॥=) घरेलू

—चिकित्सा १) ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) २) घरेलू वैद्य—[illegible] घरेलू [illegible] दवायें—हिंदी ३) घावचिकित्सा—ले० डा० श्यामसुन्दर (होमियो) हि० १) घृत गुणविधान—हिन्दी ।।) घृतचिकित्सा—ले० रामदेव त्रिपाठी ।।=) चक्रदत्त—(चक्रपाणिविरचित) शिवदास कृत संस्कृत टीका ६।) पं० जगन्नाथ कृत हिन्दी टीका ७) पं० जगदीश्वर प्रसाद कृत हिन्दी टीका १०) चरक संहिता अग्निवेश कृत मूल बंबई ६) भागीरथी सं० टिप्पणी ७) आयुर्वेद दीपिका तथा जल्पकल्पतरु दो संस्कृत टीका सहित ३ भागों में संपूर्ण ३०) चक्रपाणिकृत आयुर्वेद दीपिका तथा जेजट कृत निरन्तर पददीपिका दो संस्कृत टीका सहित बहुत बढ़िया निर्णय सागरी टाईप में दो जिल्दों में संपूर्ण १५) आयुर्वेदाचार्य श्री जयदेव विद्यालंकार कृत सुविस्तृत विवेचनात्मक सरल हिन्दी अनुवाद संपूर्ण दो बढ़िया जिल्दों में—चतुर्थावृत्ति इससे बढ़कर सरल हिन्दी अनुवाद आज तक नहीं छपा ३२) चर्याचन्द्रोदय—हिन्दी टीका सहित चर्याविषय का सर्वोत्कृष्ट ४।) चिकित्सा कलिका—तीसटाचार्य कृत मूल २) चिकित्सक के कर्तव्य—तथा अंग्रेजी औषधों का असंमिलन १।।) चिकित्सक व्यवहार विज्ञान—(हि०) ले० सूर्यनारायण ।।) चिकित्सक हस्तपुस्तिका—या अनुपान—ले० राम बिहारीलाल हि० १) चिकित्सकोपदेशिका—ले० पं० गणेशदत्त हिन्दी १) चिकित्सा चंद्रोदय—ले० हरिदास वैद्य संपूर्ण चिकित्सा सात भाग ४७।) चिकित्सा चक्रवर्ति—(मुजर्बात अकबरी का हिन्दी अनुवाद) १।।।) चिकित्सा तत्त्वप्रदीप—प्रथम भाग ग्लेज कालेडा बोगला सजिल्द ६।।) चिकित्साधातुसार—धातुफूंकने के उपयोग हिन्दी ।।=) चिकित्सासारसंग्रह वङ्गसेनकृत—मूलसंस्कृत सजिल्द ९) चिकित्साञ्जन—हिन्दी टीका १=) चूर्णचिकित्सा—पं० रामदेव त्रिपाठी हिन्दी ।।=) छातीपरीक्षा—ले० डा० टण्डन सचित्र ।।) जननेन्द्रिय के रोग—ले० भट्टाचार्य (हि०) १।=) जन्मनिरोध—सरल हिन्दी सचित्र ७) जर्राही प्रकाश चारों भाग चीर फाड़ के लिये हिन्दी ३।।) जलचिकित्सा—पानी का इलाज १) जलचिकित्साविज्ञान—ले० देवराज (हि०) २।।) ज्वरचिकित्सा—ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) २।।।) ज्वरमीमांसा—ले० श्रीहरिशरणानंद हिन्दी १।।) ज्वरविज्ञान—(हि०) कालेडा बोगला वालों का सजिल्द ४।।) जीने की कला—ले० श्री विठ्ठलदास मोदी (हि०) १।।) जीवनतत्व—(हि०) ले० श्रीमहेन्द्रनाथ १।।) जीवतिक्त विमर्श—ले० हरिश्चन्द्र (हि०) (विटेमन्स के ऊपर) १।) जीवाणु विज्ञान—ले० डा० घानेकर (हि०) १०) जुकाम—ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) १।।) टोटका विज्ञान—ले० केदारनाथ (हि०) १=) डाक्टरी चिकित्सार्णव बड़ा—(एलोपैथी तथा होमियो) हि० ४।।) डाक्टरी ज्ञान का मैटेरियामेडिका—ले० राधावल्लभ हि० छोटा ५) तन्त्रयुक्तिविचार—मूलसंस्कृत ।।।) तपेदिक—ले० श्री महेन्द्रनाथ हिन्दी ४) तपेदिक का प्राकृतिक इलाज—ले० डा० पाण्डेय (हि०) ४।।) तरुणों की दिनचर्या—और गर्भाधान विधि =) तिब्ब अकबर—यूनानी (हिन्दी में) १०) तिब्ब इहसानी—यूनानी हिन्दी १।।।) तीन महामारी—प्लेग, चेचक, हैजा (हि०) ले० डा० वर्मा होमियो १।।) तुलसी—ले० श्री रमेश वेदी हिन्दी २) तैलचिकित्सा—हि० पं० ज्ञानेन्द्र दत्त ।।=) थर्मामीटर—हिंदी ।) दन्तविज्ञान (हि०)—ले० पं० गोपीनाथ ।=) दमा, श्वास, कफ, खांसी का इलाज—(हिन्दी) ।≡) दशमूल-सचित्र—ले० रूपलाल हिन्दी ।।) द्रव्यगुण—चक्रपाणि-विरचित हिन्दी टीका २) द्रव्यगुण-आदर्श-हिन्दी—श्री महेन्द्रनाथ शास्त्री २।।) द्रव्यगुण विज्ञान—ले० आचार्य यादवजी त्रिकमजी पूर्वार्द्ध (द्रव्यगुण-रस-विपाक-वीर्य-प्रभाव विज्ञानात्मक) हिन्दी ५) उत्तरार्द्ध परिभाषाखंड ३।।) उत्तरार्द्ध औषधद्रव्यविज्ञानीयो नाम द्वितीयः खण्डः [illegible] कृत हिन्दी टीका ।।=) द्रव्यगुणसंग्रह—शिवदास कृत संस्कृत व्याख्या १।) दि निऊ मदर टिञ्चर मटेरियामेडिका—ले० डा० श्रीवास्तव ।।।) दीर्घजीवन ले० श्रीविश्वेश्वरदयालु (हिन्दी) ।।) दीर्घायु—अर्थात् आरोग्य सूत्रावली (हिन्दी) २) दुग्ध-चिकित्सा—ले०—महेन्द्रनाथ (हिन्दी) ४) दुग्धचिकित्सा—ले० छोटेलाल गांधी हिन्दी ।=) दुग्धचिकित्सा—ले० स्वा० जगदीश्वरानंद हिन्दी ।।) दुग्धगुणविधान—हिन्दी) १) दूध से रोगों का इलाज—हिन्दी ।।।) देहाती इलाज—ले० श्री रमेश वेदी हिन्दी १) देहातियों की तन्दुरुस्ती—ले. केदारनाथ हिन्दी ।।।) दैनिक प्रयोगावली-ले. श्री गंगाशरण प्रथम भाग ३।।) संक्षिप्त औषधनिर्माण विज्ञान सहित ३।।) दोषधातु विज्ञान सचित्र ।।=) दोषविज्ञान—ले० राधावल्लभ ≡) धन्वन्तरि परिचय—ले० रघुवीरशरण वैद्य २।।) धन्वन्तरीय निघण्टु—राजनिघण्टु सहित—मूल संस्कृत १०।।) धूप-हवा-सर्दी का इलाज हिन्दी १) नपुंसक चिकित्सा व यौवन के गुप्तरहस्य—ले० श्री गणपति सिंह हिन्दी ३) नपुंसक चिकित्सा—हिन्दी टीका ।।=) नपुंसकामृतार्णव—पं० रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका २।।) नमक—ले० श्री विश्वेश्वरदयालु हिन्दी ।।=) नरदेह परिचय—हिन्दी १।।=) नवपरिभाषा—ले० उपेन्द्रनाथ दास हिन्दी टीका १।।।) नवीन चिकित्सा पद्धति १।) नवीन चिकित्सा विज्ञान—हिन्दी ले०—डा० लुईकूने ५) नव्यरोगनिदान—(माधवनिदान परिशिष्ट) मूलसंस्कृत ।।।) न्युमोनिया प्रकाश—ले० पं० देवकरण ।=) नागरसर्वस्व —पद्मश्री कृत हिन्दी टीका ४।) नाड़ीपरीक्षा—ले० डा० टंडन (हि०) ।।।) नाड़ीपरीक्षा—हिन्दी टीका ।–) नाड़ी-विज्ञान (कणादविरचित) हि० टीका ।–) नाड़ीज्ञानतरंगिणी—अनुपानतरंगिणी हिन्दी टीका सहित २), १।।) नाडीज्ञानदर्पण—भूधरभट्टविरचित हिन्दी टीका ।।) नारूरोग—हिन्दी भाषा ।) नासारोगविज्ञान—ले० श्रीजगन्नाथ-हिन्दी २) निघंटुविज्ञान—(मखजन उल मुफरदात) हिन्दी २) निघंटुसार संग्रह—परिशिष्टरूप १।।) निंबु और उसके १०० उपयोग—हिन्दी ।) निमोनिया चिकित्सा—ले० डा० टण्डन हिन्दी ।।) नीम और उसके १०० उपयोग—हिन्दी ।) नीम के उपयोग-आयुर्वेद-यूनानी-एलोपैथी सब दृष्टिकोण से १) नीमगुणविधान हिन्दी ।।≡) नूतन शिशुपालन महेन्द्रलाल =) नेश लीडर—इन होमियोपैथिक थरोपिटक्स हिन्दी भट्टाचार्य ५।–) नेत्ररोगविज्ञान—ले० डा० यादव जी हंसराज। नेत्ररोगपर बढ़िया ग्रन्थ। सचित्र हिन्दी १५) नेत्ररोगों का इलाज—हिन्दी ।।=) नेत्रसुधार ले० डा० अग्रवाल (हि०) ४) नैसर्गिक आरोग्य -(nature cure) ले० श्री जगन्नाथ हि० २) पंचभूत विज्ञान-ले० श्री उपेन्द्रनाथ दास (हि०) ३) पंचसायक—ज्योतीश्वराचार्य मूल १) हि० टीका ३।।) पथ्यापथ्य—(विश्वनाथ विरचित) हिन्दी टीका २) निर्णय—हिन्दी टीका खूबचंद ।।।) पथ्यापथ्यनिरूपण—ले० श्री जगन्नाथ हिन्दी ।।) पदार्थ विनिश्चय—ले० श्री अनन्तकुल कर्णी हि० १) पदार्थविज्ञान—ले० रामरक्ष पाठक हि० ३।।) पर्यायमुक्तावली—श्री हरिचरण सेन संस्कृत ५।।) पर्यायरत्नमाला—श्री माधवकर मूल ६) परीक्षित प्रयोग—प्रथम भाग डा० शिवदयालु गुप्त ।।।) पलाण्डु चिकित्सा-हिन्दी ।।) पशुचिकित्सा-(वृषकल्पद्रुम) छन्दोबद्ध भाषा ३।=) पशुचिकित्सा—अर्थात् करिकल्पलता बड़ा ४) छोटा ३) पशुसंक्रामकरोग चिकित्सक—ले० डा० राजेन्द्रप्रसाद सिंह। आधुनिक ढंग से पशुओं की प्रायः सभी बीमारियों का ठीक इलाज ५।।=) पाकचंद्रिका—हिन्दी पाकविषय पर अत्युत्तम ६) पाक-प्रदीप—और पुष्टिप्रकाश हि० टीका सहित १=) पाकविलास—हिन्दी १) पाकावली ग्रन्थ—मूल संस्कृत ।।) पारदसंहिता—बा० निरंजनप्रसाद कृत पारद आदि रसक्रिया का अद्भुत ग्रन्थ भाषा

टीका २०) पारिवारिक चिकित्सा–(होमियो) भट्टाचार्य (हि०) १०।।।) पारिवारिक भेषज-
तत्त्व–(होमियो) भट्टाचार्य (हि०) ६) पीपल गुणविधान –(हि०) ।।) पुरुषेन्द्रिय के रोग–
तथा उनकी चिकित्सा ले० टण्डन (हि०) होमियो २) पेटन्ट औषधें और भारतवर्ष–दो भाग
(हि०) श्री विश्वेश्वर दयालु १।।) ले० डा० रामकृष्ण हि०) ३≡) पेनिसिलीन व स्ट्रेप्टोमाइ-
सीन तथा मत्र परीक्षा–ले० राजकुमार १) पैसे पैसे के चुटकले–ले० गणपतिसिंह ३) प्रत्यक्षशरीर
–ले० श्रीगणनाथ सेन हिन्दी अनुवाद १म भाग सजिल्द ७।) २य भाग सजिल्द ८।।।) प्रमेह
और अर्शरोग–(आयुर्वेद परिषद निबंधावली) हि० १।) प्रमेह विवेचन–ले० श्री महेन्द्रनाथ
हि० २) प्रयोगपुष्पावली–ले० पं० महावीर मालवीय हि० १) प्रयोगमणिमाला–ले० वैद्यक
बाँकेलाल हिन्दी ८।) प्रयोगमंजूषा–ले० कृष्ण बलवन्त हि० ।।।≡) प्रयोग शतक–भागीरथ स्वामी
।–) प्रयोग सहस्त्री-(उत्तरखंड) ले० रामदेव त्रिपाठी हिन्दी १।।।≡) प्रसवविद्या-ले० कान्तिनारयण
मिश्र (हि०) सचित्र ५।) प्रसवविज्ञान अर्थात् धात्रीविद्या–ले० शिवशरण सचित्र १५) प्रसूति-
तंत्र–डा० काशीनाथ गोखले हिन्दी नया संस्करण ३।।) प्रसूति तंत्रः–ले० डा० रामदयाल कपूर
(हि०) ५) प्राकृतिक चिकित्सा–हि० रामनारायण वर्मा ।।।) प्राकृतिक चिकित्सा कल्प–
हिन्दी १) प्राकृतिक चिकित्सा पथप्रदर्शक–हिन्दी ।।।) प्राकृतिक चिकित्सा प्रश्नोत्तरी–हिन्दी
।।=) प्राकृतिक चिकित्सा सागर–हिन्दी १।।) प्राकृतिक जीवन की ओर –(हि०) ले० जस्ट अनु
विट्ठलदास ३।।) प्राकृतिक ज्वर–राधावल्लभ ।) प्राणिज औषधि –ले० शंकरदाजी हि० ।–)
प्रारम्भिक उपचार–ले० पं० गणेशदत्त शास्त्री (हि०) १) प्रारंभिक उद्भिद्शास्त्र-(वनस्पति)
ले० बलवन्तसिंह (हि०) ४।।) प्रारंभिक जीवविज्ञान–ले० सन्तप्रसाद टण्डन सजिल्द ३।।)
प्रारंभिक भौतिकी–ले० निहालकरण सेठी हिन्दी ८) प्रारंभिक रसायन–ले० फूलदेव सहाय
हिन्दी ४।।।) प्रारंभिक रसायन–ले० अमीचंद विद्यालंकार १।।) प्रारंभिक स्वास्थ्य–ले०
गौरीशंकर हिन्दी ।=) प्रिंस मेटेरिया मेडिका–होमियो डा० सुरेशप्रसाद ५) प्लीहा रोगचिकि-
त्सा–ले० ज्ञानचन्द हिन्दी ।) फलसंरक्षणविज्ञान–ले० युगल किशोर हिन्दी १) फलाहार–ले०
नारायण प्रसाद हि०) १) फलाहार चिकित्सा–ले० श्रीमहेन्द्रनाथ (हि०) २।।।) फलों से
इलाज–ले० गणपति सिंह (हि०) २।।) फिटकरी–(स्फटिक) हिन्दी ।=) फिटकरीगुणविधान
–ले० म० अबदुल्ला १।।) फिरंगादर्श–हिन्दी (आतशक सुजाक) ।।।=) फुफ्फुस परीक्षा–ले०
प्रो० श्री रमेशचन्द्र वर्मा (हि०)–(भौतिक, दर्शन, स्पर्श, ठपन, विधि तथा श्रवण आदि सब
प्रकार की परीक्षा सरलतया समझाई गई है। Lungs परीक्षा के लिये अत्युत्तम १।) फुफुस सन्नि-
पात चिकित्सा–वैद्य हनुमान प्रसाद जोशी हि० २।।≡) बच्चों का पालन पोषण–ले० बृजमोहन
(हि०) २।) बच्चों की रक्षा–लूई कुने हिन्दी ।=) बच्चों के रोग और उनका इलाज–ले०
श्री महेन्द्रनाथ (हि०) २) वनस्पति विज्ञान–ले० शंकरराव (हि०) १।।) बनौषधचन्द्रोदय–
श्रीचन्द्रराजभंडारी संपूर्ण दश भागों में बूटियों सम्बन्धि इतना बड़ा संग्रह हिन्दी में आजतक कोई
नहीं छपा ४०) बनौषधिदर्शिका–ले० प्रो० बलवन्त सिंह २।।) बबूल–ले० श्री विश्वेश्वर
दयालु (हि०) ।=) बबूल-गुणविधान ।।) ब्रह्मचर्य सन्देश–ले० सत्य व्रत (हि०) ४।।) बायो-
केमिक चिकित्सा–केवल १२ औषधों से चिकित्सा सुरेशप्रसाद ४) भट्टाचार्य (हि०) ६।।)
बायोकेमिक पाकेट गाइड–ले० डा० सुरेशप्रसाद (हि०) १) बालतन्त्र–(कल्याण वैद्य विरचित
हिन्दी टीका सहित २।।) बालरोग चिकित्सा-पं० महावीर प्रसाद (हि०) १) बिच्छूविष चिकित्सा-

हिन्दी =)।। बुखार का अचूक इलाज–हिन्दी ।≡) बुढ़ापा बिमारी से बचने के उपाय–हिन्दी ।।।)
बृहत्पाक संग्रह–ले० पं० कृष्णप्रसाद ४।।) बृहत्बूटीप्रचार–हिन्दी भाषा सचित्र २।।) बृहत्
इंजेक्शन चिकित्सा–ले० रामविचार पांडेय हिन्दी ६) बृहद्योगतरंगिणी–त्रिमल्लभट्ट विरचित–
संस्कृत १८) बृहद् रसराज सुन्दर–श्रीदत्तराम चौबे कृत हिन्दी टीका १२) बृहन्निघंटुरत्नाकर–
हिन्दी टीका सहित चतुर्थभाग (चिकित्सा खंड) पंचम भाग (रोगों का कर्म विपाक) षष्ठभाग
(रोगों की चिकित्सा) केवल यहीतीन भाग मिलते हैं ३६) बोपदेवशतक–हिन्दी टीका ।।।=)
भस्म और रसायन–ले० श्री वेणी प्रसाद (हि०) ।=) भारतभैषज्यरत्नाकर–संपूर्ण पाँच भागों
में हिन्दी टीका ५०) भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेन्ट मेडीसिन–सुरेशप्रसाद १।।)
भारतीय ग्रहचिकित्सा–ले० पं० परमेश्वरदीन हिन्दी ३) भारतीय जड़ीबूटी–ले० गणपतिसिंह
(संन्यासियों की गुप्त बूटियां) ५।।) भारतीय जड़ी बूटी अंक रसायनका–ले० गणपति सिंह
१।।) भारतीय जीवाणु विज्ञान–ले० रघुवीर शरण १।।) भारतीय बनौषधि परिचय–ले० डा०
विश्वास–बंगाली भाषा में बंगलाक्षर दो भागों में सचित्र १६) भारतीय भौतिक विज्ञान–ले०
जगन्नाथ प्रसाद ।।) भारतीय रसपद्धति–ले० श्री अत्रिदेव गुप्त हिन्दी १।।) भारतीय वनस्पतियाँ
–हिन्दी २) भारतीय रसशास्त्र–ले०श्री जगन्नाथ प्रसाद ।=) भारतीय रसायनशास्त्र–ले०
विश्वेश्वरदयालु ।।) भावप्रकाश मूल संस्कृतपूर्वार्द्ध ३), मध्यमोत्तर खंड ७), संपूर्ण १०) स्थू-
लाक्षर बंबई ८) विद्योतिनी हिन्दी टीका सहित बारीक टाईप संपूर्ण ३०) पूर्वार्द्ध १२) मध्यमो-
त्तर २०) डा० शालिग्राम कृत सरल हिन्दी टीका स्थूलाक्षर २५) ज्वराधिकार–हिन्दी टीका
३), हिन्दी टीका पं० दत्तराम प्रथम भाग ५) भावप्रकाशनिघण्टु–सटिप्पण मूल १।।) बंबई ४)
आचार्य श्री विश्वनाथ जी द्विवेदी कृत ललितार्थ करी अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिंदी टीका
सहित तृतीया वृत्ति ७) भिन्न २ रोगों का इलाज–हिन्दी २) भेषजलक्षणसंग्रह–भट्टाचार्य (हि०)
बृहत् होमियो मेटेरिया मेडिका दो भागों में २६।।) भेषजविधान–(होमियो) भट्टाचार्य हिन्दी
७।।) भैषज्यकल्पना–ले० श्री अत्रिदेव गुप्त हिन्दी १।।।) भैषज्यरत्नावली–मूल संस्कृत ४)
विनोदलाल सेन कृत संस्कृत टीका ७।।) भैषज्यरत्नावली–अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त टीकाकार
सुप्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य श्रीजयदेवजी विद्यालंकार कृत अत्यन्त सरल तथा सब गूढ़ अर्थों को
खोलनेवाली हिन्दी टीका सहित जितने योग इस संस्करण में है उतने आज तक किसी संस्करण में
नहीं छपे। सफेद बढ़िया कागज छठा संस्करण विशेष परिवर्द्धित करके छपता है। भैषजरहस्य–
(होमियो) डा० टण्डन हिन्दी ३।।।) भैषजसार–ले० डा० सुरेशप्रसाद (होमियो) २) भोजन-
विधि–व रोग और पथ्यापथ्य हि० ले० श्री केदानाथ २) भोजन ही अमृत है–ले० श्री महेन्द्रनाथ
(हि०) १।।।) मकरध्वज–चन्द्रोदय और स्वर्ण सिन्दूर बनाने की विधि ।।=) मखजन उल मुफ-
रदात–यूनानी हिन्दी २) मट्ठा उसके गुण तथा उपयोग–ले० श्री महेन्द्रनाथ (हि०) ।।।=)
मट्ठा या छाछ के उपयोग–ले० प्रवासीलाल (हि०) १) मदनपाल निघंटु –मूल १) भाषानुवाद
पं० शक्तिधर ३) मधु के उपयोग–(हिन्दी) केदारनाथ १) मधु चिकित्सा–(हिन्दी) ले०
रामचन्द्र वर्मा ।–) मधु गुणविधान–डा० गणपति सह १।।) मधुमेह–ले० श्री परशुराम शास्त्री
हि० ।।) मधुमेह चिकित्सा–ले० श्री महेन्द्रनाथ हिन्दी ।=) मन्थरज्वरविज्ञान–ले० श्री हरिशर-
णानंद हि० २) मन्थरज्वरचिकित्सा–ले० कविराज हरिवल्लभ (हिन्दी) २) गर्भविज्ञान–ले०
श्रीरामरक्ष पाठक हिन्दी ३।।) मलावरोध–या कब्ज का इलाज हिन्दी १)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता :–मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस

मलेरिया–श्रीमनमोहन धूप–मलेरिया पर इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं छपी (एलोपैथिक) नवीनतम औषधियोंके वर्णन सहित २।) मलेरिया और कालाजार चिकित्सा––हिन्दी १॥।) महामारी विवेचन–हिन्दीटीका सहित ॥=) मॉडर्न मेडिकल ट्रीटमैंट–ले० डा० एम० एल गुजराल। हिन्दी अनुवाद एलोपैथीके चिकित्सक के लिये अत्यन्त उपयोगी छपता है। माधव-निदान–सुधालहरी टिप्पणी १॥) मधुकोष आतंक दर्पण दो संस्कृत टीका ८॥) मधुकोष आतंक-सं० टीका तथा मूल और मधुकोष का हिन्दी अनुवादसहित पं० दीनानाथ कृत संपूर्ण दो भाग १२) माधवी हिन्दी टीका २॥) माधवनिदान–पं० लालचंद्रजीकृत सर्वांग सुन्दरी हिन्दी टीका ४॥) पं० दत्तरामचौबेकृत हिन्दी टीका ६) पं० चण्डिका प्रसाद अवस्थीकृत हिन्दीटीका ६) पं० सुदर्शनलाल त्रिवेदी कृत हिन्दी टीका ६) मानवशरीररचनाविज्ञान–ले० डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी प्रथमभाग १४) मानवशरीररहस्य–लेखक डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी प्रथमभाग ३॥) दूसराभाग ४॥) मानवसंतति प्रसूतिशास्त्र (युवतिसखा) कविराजबलवंतसिंह कृत १॥।) मानसरोग विज्ञान–ले० डा० बालकृष्ण पाठक ५॥) मानसिक चिकित्सा–ले० लालजीराम शुक्ल ४) मानसिक रोगविज्ञान–ले० श्री जगन्नाथ हिन्दी ४) मिक्सचर (एलोपैथी)—ले० डा० सुरेशप्रसाद हिन्दी २।) मिर्च–ले० रमेशवेदी हिन्दी (अनेक रोगोंमें उपयोगिता) १) मीजान तिब्ब–अथवा सर्वांग चिकित्सा यूनानी ३॥) मुखरोग विज्ञान ले० श्री जगन्नाथ हिन्दी २) मूत्रपरीक्षा–भट्टाचार्य (होमियो) १=) मूत्रपरीक्षा–पाश्चात्यमतानुसार ले० शिवशरण २) ले० श्री रामकृष्ण हिन्दी १) ले० डा० टण्डन ॥) मेडिकल प्रेक्टिशनर–डा० चौहाण कृत हिन्दी ५) मेघविनोद–श्री मेघमुनिप्रणीत। सरल हिन्दीमें। हर बीमारी का शर्तिया सरल इलाज। दवाइयाँ भी वह जो आसानी से बाजार में मिल सकें और पैसों में ही आ सकें। द्वितीयावृत्ति ६) मैं तन्दुरुस्त हूँ या बीमार–ले० डा० लूईकूने हिन्दी ॥) मोटापा दूर करने के उपाय–ले० रामनारायण मिश्र १) यकृत और प्लीहा के रोग–हिन्दी पं० विश्वेश्वर दयालु ॥) यकृत के रोग और उनकी चिकित्सा–हिन्दी २) यूनानी चिकित्सा विधि–अर्थात् यूनानी का फार्माकोपिया लेखक–हकीम मन्साराम। हररोगके लिये यूनानी इलाज किसप्रकार करना चाहिये उसी का पूरा तरीका दिया है किस हालत में कौन दवाई देनी। शरीर परिचय सहित हिन्दी ५) यूनानी चिकित्सासागर–ले० हकीम मन्साराम–इसमें यूनानी के प्रायः सभी अजमाये हुये नुस्खे दिये हैं। जिस रोग पर काम आते हैं वह भी लिखा है। उनके बनाने के तरीके भी लिखे हैं। हर प्रकार के अर्क, शर्बत, माजून, चटनी इत्यादि कोई भी चीज छूटी नहीं अर्थात् यूनानीमें जो भी जानने योग्य नुस्खा है इसमें सबदिया है। मूल्य १०) यूनानीद्रव्य गुणविज्ञान–ले० ठाकुर दलजीतसिंह २२) यूनानी शब्दकोष–अर्थात् अरबी फारसी के शब्दों का हिन्दी ।=) यूनानी सिद्धयोग संग्रह–ले० ठाकुर दलजीतसिंह २॥) योगचिन्तामणि–हिन्दी टीका बम्बई ४) योगतरंगिणी–(त्रिमल्लभट्ट विरचित) हिन्दी टीका ६) योगरत्न समुच्चय–मूल संस्कृत दो भाग में प्राचीन ग्रंथ ९॥) योगरत्नाकर ७) योगशतक–पं० ज्वालाप्रसाद कृत हिन्दी टीका ।=) यौनविज्ञान और वैवाहिक जीवन ले० मन्मथनाथ ५) रक्त के रोग–ले डा. घाणेकर हिन्दी १०) रणवीर वैद्यक–हिन्दी दोहा कवित्त में (महाराजा काश्मीर द्वारा अनेक विद्वानों से तैयार कराया ग्रन्थ) २०) रतिमंजरी–हिन्दी टीका ।) रतिरहस्य–श्रीकोक्कोक विरचित संस्कृत टीका ३) हिन्दी टीका ५) रसचिन्तामणि–हिन्दी टीका ३॥) रसजलनिधि–भूदेव मुकुर्जी विरचित अंग्रेजी अनुवाद ३७॥) रसतन्त्रसार व सिद्ध प्रयोगसंग्रह–कालेडा बोगला सातवां संस्करण जिल्ददार ११) रसतरंगिणी–लाहौर के सुप्रसिद्ध कविराज नरेन्द्रनाथ तथा प्राणाचार्य श्री सदानंदजी विरचित तथा श्री पं० हरिदत्तजीकृत संस्कृत टीका तथा कविराज श्री धर्मानन्दजी कृत रसविज्ञान नामक सरल हिन्दी टीका सहित। पुस्तक कितनी उपयोगी है इसी से सिद्ध है कि यह इसका चौथा संस्करण भी प्रायः समाप्त है। इसमें केवल अनुभूत प्रयोग ही लिखे हैं सभी जगह पाठ्य ग्रन्थ है नया संस्करण सफेद कागजपर छपता है। रसप्रदीप–हिन्दी टीका ॥) रसमंजरी–हिन्दी टीका बंबई २।) रसरत्नसमुच्चय–मूल ३॥) सरलार्थ प्रकाशिनी संस्कृत टीका केवल ४।) जीवानंद बोधनी संस्कृत टीका १०) हिन्दी टीका १०) रस-वैशेषिकसूत्र–भदन्त नागार्जुन कृत संस्कृत टीका २॥) रसव्यंजनप्रकाश–भगवानदास कृत (अचार, सिरका, चूर्ण, गोली) १=) रसाध्याय–संस्कृत टीका ॥=) रसामृत– ले. वैद्य यादवजी त्रिकम जी आचार्य। आचार्यजी का यह जीवन पर्यन्त का रसशास्त्र संबंधी अनुभव है। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों को रसशास्त्रके पाठ्यग्रन्थके रूपमें तथा चिकित्सकों को भस्म, पिष्टि, रसयोग आदिके ठीक निर्माणमें उपयुक्त मार्गदर्शक हो इस दृष्टिसे लिखा गया है। अभी हालमें प्रकाशित हुआ है ५) रसायनखंड-नित्यनाथसिद्ध कृत मूल ॥) रसायनतंत्र-हिन्दी टीका ।) रसायन प्रवेशिका–आयुर्वेद के छात्रों के लिये ३) रसायनसंहिता–हिन्दी टीका १) रसायनसार–हिन्दी ले. श्यामसुन्दराचार्य ८) रसार्णव–नाम रसतंत्र–सटिप्पण संस्कृत २) रसेन्द्रचिन्तामणि–श्री ढुंढकनाथ सिद्ध विरचित हिन्दी टीका ३॥) रसेन्द्रपुराण–पं० रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका ७) रसेंद्रभास्कर–हिन्दी टीका (पं० लक्ष्मीनारायण प्रणीत) २॥) रसेंद्रसारसंग्रह–सटिप्पण १॥) गूढ़ार्थ दीपिका संस्कृतटीका ५) विस्तृत हिन्दी टीका सहित श्रीघनानंद पन्त ११) रसायनी भाषा टीका ३) रसचन्द्रिका हिन्दी टीका ६) रसोपनिषत्–मूल २।) राजकीय औषध योगसंग्रह–ले. रघुवीर प्रसाद हिन्दी ७) राजनिघंटु–नरहरि कृत संस्कृत टीका ३=) राजनिघंटु सहिता–धन्वन्तरीयनिघंटु मूल १०॥=) राजयक्ष्मा–ले. विश्वेश्वरदयालु हिन्दी ॥) राजवल्लभनिघंटु–हिन्दी टीका २॥) रामविनोद–भाषा २॥) दथा १) राष्ट्रिय चिकित्सा–सिद्धयोग संग्रह–ले. रघुवीर प्रसाद हिन्दी १॥) रिलेसनशिप–ले. डा. श्यामसुन्दर (नित्य व्यावहारिक औषधियों का पारस्परि संबंध) २) रूपनिघंटु–केवल दो ही भाग छपे हैं हिन्दी ३) रेपंटरी–दवा चुनने की सर्वोत्तम पुस्तक-होमियो भट्टाचार्य १०॥) रोगनामावली कोष (रोगनिर्दशिका) तथा वैद्यकीय मानतौल–ले० ठा० दलजीतसिंह ३॥) रोगपरीक्षा पद्धति–ले. डा. आशानंद पंजरत्न हिन्दी ७) रोगलक्षणसंग्रह–होमियो ≡) रोगी की सेवा-और पथ्य–डा० सुरेशप्रसाद ३) रोगीपरीक्षा–ले० शिवनाथखन्ना (हि०) ६) रोगोत्पादकमक्खी–ले० जगन्नाथ ≡) रोगोंकी अचूक चिकित्सा–ले० जानकीशरण हिं० ७) रोगों की सरल चिकित्सा–ले० श्रीविट्ठलदास प्राकृतिक इलाज ४) रुग्ण चिकित्सा–हिन्दी डा० म्हस्कर ३॥) लगाने की औषधियाँ–और प्रथमसोपचार १=) लहसुन-प्याज–ले० श्रीरामेशवेदी हिन्दी २॥) लक्ष्मीमोदतरङ्गिणी–ले० पं० गणेशदत्त २) वंगसेन–हिन्दी टीका सहित ला० शालिग्रामकृत १८) वटिका चिकित्सा–पं० रामदेव त्रिपाठी हिन्दी ॥=) वनौषधिशास्त्र–सचित्र भगीरथस्वामी १५) वक्षपरीक्षा–(हि०) भट्टाचार्य २=) वात्स्यायन–कामसूत्र का केवल हिन्दी अनुवाद ६) वादिखंड ऋद्धिखंड–श्रीनित्यनाथ प्रणीत संस्कृत ३) विद्युत विज्ञान चिकित्सा–ले० हरिहर मिश्रा हिं०) २॥) विष चिकित्सादर्पण–

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:–**मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस**

हिन्दी ।।) विषतन्त्रचिकित्सा प्रकाश-हिन्दी टीका १।।।) विषविज्ञान-ले० कविराज सोहनलाल हिन्दी ४) वीरसिंहावलोक-मूलसंस्कृत वीरसिंहसंकलित ३।।) वृन्दमाधव-सिद्धयोग कण्ठदत्त-कृत संस्कृत व्याख्या ११।।) वृन्दवैद्यक-(वृन्द प्रणीत) हिन्दी टीका ७) वृषकल्पद्रुम-अर्थात् पशुचिकित्सा-दोहा चौपाई में ३।=) वृक्ष विज्ञान-ले० प्रवासीलाल हिन्दी ४) वेदनाविहीन प्रसव-हिन्दी अनुवाद ।।।) वैद्यकलाधर-हिन्दी-निदान तथा कठिन रोगोंका सहज उपाय १।।) वैद्यक कल्पद्रुम-हिन्दी टीका सहित पं० रघुनाथप्रसादकृत १०।।) वैद्यकपरिभाषा प्रदीप-हिन्दी टीका बंबई २) संस्कृत टीका ।।।≡) भाषा प्रदीप-प्रदीपिका हिन्दी टीका १।।) वैद्यकरसराज महोदधि-प्रथम २) दूसरा २) तीसरा २) चौथा २।।) पांचवां २।।) संपूर्ण पांचों भाग १०) वैद्यकविज्ञान प्रकाश-ले० डा० चौहान गुजराती भाषामें १६) वैद्यक शब्दकोष-हिन्दी पं० विश्वेश्वरदयालु ।) वैद्यकशब्दनिधि-ले० गोपीनाथ १) वैद्यकसंग्रह-पं० रामलग्न पाण्डेय हिन्दी १) वैद्यकसार शंकर-हिन्दीटीका ।।=) वैद्यकौस्तुभ-श्रीमेवारामामिश्र विरचित संस्कृत २) वैद्यचन्द्रोदय-त्रिमल्लभट्टकृत हिन्दी टीका १) वैद्यजीवन-लोलिंबराज कृत-हिन्दी टीका १।) तथा ।।।) वैद्यमनोत्सव-हिन्दी (नैनसुख) ।।) वैद्यमनोरमा-धाराकल्प-कालिदास कृत हिन्दी-टीका सहित १।।।) वैद्यरहस्य-(विद्यापति प्रणीत) हिन्दी टीका ५) वैद्यविनोदसंहिता-शंकर-भट्ट विरचित सटिप्पण ३।) व्रणोपचार पद्धति-महावीर प्रसाद ।।) व्यवहारायुर्वेद-अर्थात् कानूनीवैद्य-श्रीकृष्णबलवन्त हिन्दी ३।।) व्याधिनिग्रह प्रसस्तौषध संग्रह-मूल १।) व्याधिविज्ञान -डा० आशानंद कृत। रोगों के ज्ञान के लिये अद्भुत ग्रन्थ है अनेकों चित्र सहित प्रथम भाग चतुर्थ संस्करण ९) व्यायाम और शारीरिक विकास-ले० अशोककुमार २।।) शरीरक्रिया-विज्ञान-ले० श्री रणजीतराय हिन्दी ६) शरीरपरिभाषा-अंग्रेजी से संस्कृत और संस्कृत से अंग्रेजी २।।) शरीर विज्ञान-ले० डा० भावे हिन्दी २।।) शिरो रोगविज्ञान-ले० श्री जगन्नाथ ४) शवछेद विज्ञान-हिन्दी १) शहद-ले. रमेशवेदी हिन्दी ३) शहद के गुण और उपयोग-ले. श्री महेन्द्रनाथ ।।।) शारीरिकोन्नति-ले. श्री ठाकुरदत्त अमृतधारा २) शार्ङ्गधर संहिता-मूल संस्कृत अंजन निदान सहित गुटका २) दीपिका तथा गूढार्थ दीपिकादो सं० व्याख्या सहित ८) आढमल्ल कृत दीपिका सं० व्याख्या ३।।।) सुबोधिनी हिन्दी टीका ६) रामप्रसाद कृत हिन्दी टीका ९) श्यामा हिन्दी टीका ४) शालहोत्र-बड़ा सचित्र भाषा २) शालाक्यतंत्र-श्रीरमानाथ द्विवेदी८) शालाक्यतंत्र-यामिनीभूषण कृत संस्कृत ३) शालिहोत्र-छन्दोबद्ध १।) भाषावार्तिक ।।=) शालिग्रामौषधि शब्दसागर-आयुर्वेदीय शब्दकोष सं० से हिन्दी ४।।) शिफा उल अमराज-यूनानी दो भाग में २।।) शिवनाथ सागर-हिन्दी डा० शिवनाथ सिंह कृत ७) शिशुपालन-ले. डा० मुकुन्द स्वरूप हिन्दी १।।) कविराज बलवन्त सिंह१।।।) शीतला परिहार-अर्थात् आरोग्या मृत बिन्दु हिन्दी २।।) शुभसन्ततियोगप्रकाश-हिन्दी टीका सहित २।।) शुस्लर साहब की बारह दवाइयां- ३) श्वासरोग चिकित्सा-ले० गोकुल प्रसाद ।) संक्रामक पशुरोग चिकित्सक-ले. डा० राजेन्द्र प्रसाद ५।।=) संगतरा गुणविधान-हिन्दी ।=) संतानशास्त्र-ले० पं० गणेशदत्त हिन्दी ५) संस्कारविधि विमर्श-ले. श्री अत्रिदेवगुप्त-चिकित्सा-प्रजनन और प्रजा शास्त्र के आधारपर ३) संक्षिप्त औषधपरिचय-हिन्दी ।।=) संक्षिप्तपारिवारिक चिकित्सा- २=) संक्षिप्तशरीर परि-चय-ले० जगन्नाथ प्रसाद हिन्दी १।) संक्षिप्तशल्यविज्ञान-ले. डा० मुकुन्द स्वरूप हिन्दी सचित्र ८) संज्ञापंचकविमर्श-संस्कृत-म. म. गणनाथसेन कृत ३) सचित्रवनस्पति गुणादर्श-(प्रथम-भाग) ले. श्री हरिरामन हिन्दी २।।) सरलचिकित्सा विज्ञान-ले. श्रीरामजीत सिंह हिन्दी ७) सरलरोग विज्ञान-ले. श्री रवीन्द्र शास्त्री हिन्दी ५) सरलविषविज्ञान-ले. श्रीयुगलकिशोर हिं० १।।।) सरलशरीरविज्ञान-ले. नारायणदास १।।) सर्दी जुकाम खांसी-ले. डा० अल्सेकर हिन्दी अनुवाद ।।।) सर्प विषविज्ञान-ले० ठाकुर दलजीतसिंह (हिन्दी) १।।) सव्यवहारायुर्वेदापमृत्यु विज्ञान-ले० पं० गणेशदत्त दो भागों में ८) सिद्धपरीक्षापद्धति-प्रथमखंड-कालेडा बोगलावालों का हिन्दी ८) सिद्धप्रयोग दो भाग-ले. विश्वेश्वर दयालु हिन्दी १।।) सिद्धभैषज्यमणिमाला-सटिप्पण संस्कृत ६।।) सिद्धमृत्युंजययोग-५३ सिद्धप्रयोग हिन्दी १) सिद्धयोगसंग्रह-ले० आचार्य यादवजी त्रिकमजी हिन्दी सहित २।।) सिद्धान्तनिदान-ले० श्रीगणनाथसेन-संस्कृत में दो भागोंमें सिद्धौषधि प्रकाश-ले० पं० बालमुकुन्द वैद्यशास्त्री हिन्दी १।।) सुलभचिकित्सा सागर-प्रथमभाग वद्य सदानन्दकृत हिन्दी २।) सुश्रुतसंहिता-मूल-शस्त्र परिचायक परिशिष्ट ८) सूत्रस्थान-भानुमति संस्कृत टीका ५) कविराज श्रीअत्रिदेवगुप्त कृत सरल हिन्दी अनुवाद सहित संपूर्ण ग्रन्थ एक ही जिल्द में २०) (शारीरस्थान केवल) डा० जे० डी० शर्माकृत विवेचनात्मक तथा पाश्चात्यमत से तुलनात्मक अति विस्तृत हिन्दी अनुवाद सहित शीघ्र प्रकाशित होगा।
शारीरस्थान-प्रभा, दर्पण हिन्दीटीका ३) डा० घाणेकरकृत हिन्दी टीका ८) तथा सूत्र-निदान डा० घाणेकर हिन्दी टीका १०) मुरलीधरकृत हिन्दी टीका २।।) सुषेणवैद्यक-हिन्दी टीका सहित २) सूचीवेध विज्ञान-ले० आचार्य श्रीरमेशचन्द्र। इंजेक्शन के ऊपर इससे सरल तथा विषय की ठीक तरह समझानेवाला ग्रन्थ आजतक नहीं छपा। दो भागों में १००० से ऊपर इंजेक्शन छपता है। सूचीवेधविज्ञान-ले० श्री राजकुमार हिन्दी १।।) सूर्य और चक्षु व्यायाम-ले० डा० अग्रवाल ।) सूर्यकिरण चिकित्सा-गोविन्दराव ५) सूर्यरश्मि किचित्सा-(अर्थात् सूर्यकिरण चिकित्सा) ।।।) सोजाकचिकित्सा-ले० ले० पं० गणेशदत्त ।।) सोंठ-ले० श्रीरमेशवेदी हिन्दी १।।) सौश्रुती-ले० श्रीरमानाथ द्विवेदी हिन्दी गलेज ८।।) सादा ७।।) स्टैथस्कोप विज्ञान-छाती परीक्षा-ले० डा० टण्डन ।।) डा० रामविचार पाण्डेय १) डा० श्यामसुन्दर १) स्नान चिकित्सा-ले० श्री रवीन्द्रनाथ हिन्दी ।।) स्वप्नदोषरक्षक-हिन्दी इन्द्रविरचित ।।) स्वप्नदोष विज्ञान-सरल हिन्दी-स्वप्नदोष की चिकित्सा पं० गणेशदत्त२) स्वर्णक्षीरी गुणविधान-ले० श्री गणपति-सिंह ।।।) स्वस्थवृत्तसमुच्चय-ले० श्री राजेश्वदत्त हिन्दीटीका ६।।) स्वास्थ्य और दीर्घायु-ले० पं० छबिनाथ पाण्डेय १।) स्वास्थ्य और रोग -ले० डा० त्रिलोकीनाथ हिन्दी १२।।) स्वास्थ्य और सद्वृत्त-ले० श्री अत्रिदेव गुप्त २) स्वास्थ्य के लिये शाक तरकारियां-ले० श्री महेन्द्रनाथ १।।) स्वास्थ्यप्रदीपिका-ले० डा० मुकुन्दस्वरूप १।।) स्वास्थ्यरक्षा-ले० श्रीहरिदासवैद्य ५) स्वास्थ्यविज्ञान- ले० डा० घाणेकर (हिन्दी) ६) ले० डा० मुकुन्दस्वरूप हिन्दी ७) स्वास्थ्य-साधन-ले० रामदासगौड़ हिन्दी ३।।) स्वास्थ्य संहिता-ले. श्रीनानकचंदजी हिन्दी सहित २।।) स्त्रियों का स्वास्थ्य और रोग-ले. श्रीअत्रिदेव गुप्त (युवतियों के जानने योग्य विवाहितों के पढ़ने योग्य तथा डाक्टरों के बरतने योग्य ३) स्त्रीचिकित्सा-हिन्दी टीका ।।=) स्त्रीपुरुषसंजी-वन-हिन्दी टीका ।।।=) स्त्रीरोग चिकित्सा-ले. भट्टाचार्य होमियो ४।) श्री विश्वेश्वरदयालु हिन्दी १) डा. टण्डन हिन्दी २।।) हंसराजनिदान-हिन्दी टीका २) हमारा भोजन-ले. श्री महेन्द्रनाथ हिं० ४) हमारे बच्चे -ले. श्रीमहेन्द्रनाथ १।।।) हमारे भोजन की समस्या-ले. श्री अत्रिदेव गुप्त १।।।) हमारे शरीरकी रचना-ले. श्री त्रिलोकीनाथ वर्मा संपूर्ण दो भागों

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:-मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस

में सचित्र २५।।।) पृथक् २ भी मिलते हैं प्रथम भाग १०=) दूसरा १५।।=) हरमेखला–माहुक विरचित संस्कृत टीका दो भाग २।=) हरिधारित ग्रन्थरत्न–श्रीवासुदेव हि० टीका ।=) हल्दी–हिन्दी ।=) तथा १) हस्त्यायुर्वेद–पाल्काप्यमुनि विरचित संस्कृत १२।।) हमें क्या खाना चाहिये–हि० ।।) हारीत संहिता–हिन्दी टीका ८।।) हिक्मतप्रकाश–संस्कृत टीका (महादेव विरचित) ३) हितोपदेश–वैद्यक श्रीकण्ठकृत हिन्दी टीका ३) हिन्दी मेटेरिया मेडिका–होमियो पैथिक दो भाग ३।।) हिन्दी होमियो फार्म कोपिया–ले. डा. टंडन २) हिन्दुयोगियों की व्यावहारिक जल चिकित्सा– ।।।) हृदयक्रिया विज्ञान–पं० गणेशदत्त ।।) हैजा चिकित्सा–ले. श्यामसुन्दर होमियो १) भट्टाचार्य १।।=) ले. डा. टंडन २) होमियो इंजेक्शन चिकित्सा–ले. डा. सुरेशप्रसाद १।।।) होमियो टाइफाइड चिकित्सा–डा० सुरेशप्रसाद ।।।) होमियो थाइसिस चिकित्सा–डा० सुरेश प्रसाद ।।।) होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा–डा० सुरेशप्रसाद ।।।) होमियो पशु चिकित्सा–डा० गंगाधर मिश्र २) होमियो पाकेट गाइड–डा० सुरेशप्रसाद १) होमियो पैथिक चिकित्सा–हिन्दी ८) होमियो पारिवारिक चिकित्सा–डा० सुरेशप्रसाद ५) होमियो पैथिक चिकित्सा विज्ञान–ले० डा० बालकृष्ण अत्युपयोगी १०) होमियो पैथिक चिकित्सा सिद्धान्त–ले० डा० बालकृष्ण अत्युपयोगी ३।।) होमियो पैथिक नुस्खा—डा० श्यामसुन्दर १।) होमियोपैथिक–पारिवारिक–हिन्दी भट्टाचार्य दो भागों में १०।।=) होमियो पैथिक मेट्रेरियामेडिका–बृहद दो भागों में ९।।) होमियो मेटेरिया मेडिका–डा० एस मुकर्जी २५) होमियो पैथिक सारसंग्रह १।।।) होमियो पैथिक स्त्री चिकित्सा ४।) क्षयादर्श–ले० पं० हरिशंकर शर्मा ।।।) क्षारनिर्माणविज्ञान–ले० हरि-शरणानन्द ।।) त्रिदोषतत्त्वविमर्श–ले० रामरक्ष पाठक २।।=) त्रिदोषमीमांसा–ले० हरि-शरणानन्द २।।) त्रिदोषविज्ञान–ले० उपेन्द्रनाथदास २।।) त्रिफला–ले० श्री रमेशवेदी ३) त्रिरातिवैद्यक–संस्कृत टीका हिन्दी टीका सहित २।।)

तुलसीरामायण आदिग्रन्थ

रामचरित मानस (सात कांड) मूल गुटका ।।।) मध्यमाक्षर २) स्थूलाक्षर ३।।), ४) भाषाटीका गुटका ३।।) बड़ा अक्षर भाषाटीका ७।।) भाषाटीका बा. श्यामसुदंरदास १२) तुलसीरामायण आ कांड मूल स्थूलाक्षर ६) भाषाटीका काशी १५), १२), ६) लखनौ सफेद कागज सूर्यदीन १३) बड़ा अक्षर बड़ा साईज २५) भाषाटीका ज्वालाप्रसाद गुटका बंबई मध्यमाक्षर मध्यम साइज १८) भाषा टीका बड़ा साईज स्थूलाक्षर बबंई ज्वाल प्रसाद सफेद कागज ३४) रामायण राधेश्याम असली बरेली १०।।=) नकली काशी ८) विश्रामसागर ाषा मोटा अक्षर ८) रामचरितमानस बालकांड मूल ।।=) भाषाटीका १=) अयोध्याकांड मूल ।।) भाषाटीका ।।।–) अरण्यकांड मूल ≡) भाषाटीका ।) किष्किंधा कांड =) सुन्दरकांड मूल –) भाषाटीका ।) लंकाकांड मूल ।) भाषाटीका ।।) उत्तरकांड मूल ।) ाषाटीका ।।) मानस रहस्य १।) मानस शंका समाधान ।।) विनय पत्रिका मूल १) भाषाटीका १) जिल्द १।=) भाषाटीका बड़ी ४) गीतावली भाषाटीका १) कवितावली भाषाटीका ।।–) ोहावली ।।)

भक्तचरित तथा अन्य धार्मिक पुस्तकें गीताप्रेस

प्रेमयोग–वियोगीहरि १।।) तत्वचिंतामणी-जयदयाल सातभागोंमें ५।।।≡) श्रीचैतन्य-चरितावली पांचभाग ४।=) सूक्तिसुधाकर ।।=) सत्संग के बिखरे मोती ।।।) सत्संगसुधा ।।) सुखी जीवन ।।) भगवच्चर्चा दो भाग १) रामायणके कुछ आदर्शपात्र ।=) उपनिषदों के १४ रत्न ।=) लोक परलोक सुधार ५ भाग २।) भक्तनरसिंहमेहता ।=) प्रेमदर्शन ।–) भव रोग की रामबाण दवा ।–) भक्तबालक ।–) भक्तनारी ।–) भक्तपंचरत्न ।–) आदर्शभक्त ।–) भक्तसप्तरत्न ।–) भक्तचंद्रिका ।–) भक्तकुसम ।–) प्रेमीभक्त ।–) प्राचीनभक्त ।।) भक्तसरोज ।=) भक्तसुमन ।=) भक्तसौरभ ।–) भक्तसुधाकर ।।) भक्तमहिलारत्न ।≡) भक्तदिवाकर ।≡) भक्तरत्नाकर ।≡) भक्तराजहनुमान ।–) सत्य-प्रेमी हरिश्चंद्र ।–) प्रेमीभक्तउद्धव ≡) महात्माविदुर =)।। भक्तराजध्रुव ≡) परमार्थ पत्रावली ४ भाग १।।) कल्याणकंज ३ भाग ।।।≡) महाभारतके कुछ आदर्शपात्र ।) भगवान पर विश्वास ।) सत्संगमाला ।) प्रार्थना ≡) आदर्शनारी सुशीला ≡) आदर्श भ्रातृ-प्रेम ≡) मानवधर्म ≡) गीता निबंधावली =)।। साधनपथ =)।। मननमाला =)।। नवधा-भक्ति =) बालशिक्षा =) भरतजीकी नवधाभक्ति =) स्त्रीधर्म प्रश्नोत ी –)।। नारीधर्म –)।। गोपीप्रेम –)।। ध्यानावस्थामें प्रभुसे वार्तलाप –)।। हनुमानबाहुक –)।। मनको वश करनेके उपाय –)। ईश्वर –)। हरे रामभजन –) १४ माला ।–) ६४ माला १)

स्वा. विवेकानन्दजी की पुस्तकें

मेरी समरनीति ।≡) हिन्दुधर्म १।।) मनकी शक्तियां ।।) धर्मविज्ञान १।।=) स्वाधीनभारत १=) शिकागोवकृता ।।।≡) मरणोत्तर जीवन ।।) हिन्दुधर्मके पक्षमें ।।=) स्वा. विवेकानंद से वार्तालाप १।=) विवेकानंदकी कथायें १।) महापुरुषोंकी जीवनगाथायें १।) प्ररिव्राजक १।) मेरे गुरुदेव ।।=) श्रीरामकृष्ण उपदेश ।।=) देववाणी २=) धर्मरहस्य १) रामकृष्ण धर्म और संघ ।।।=) वेदान्त सिधान्त ।।=) इशदूत ईसा ।=) प्राच्य और पाश्चात्य १।) शिक्षा ।।=) मेरा जीवन और ध्येय ।।) श्रीरामकृष्णलीलामृत दो भाग १०) श्रीरामकृष्णवचनामृत तीनभाग १६।।) विवेकानंदचरित ६) परमार्थ प्रसग ३।।।) भारतमें विवेकानंद ५) विवेकानन्दजी के संगमें ५।) ज्ञानयोग ३) राजयोग१=) कर्मयोग १।।=) प्रेमयोग १।=) भक्तियोग १।=) सरल राजयोग ।।) आत्मनुभूति तथा उसके मार्ग १।) वर्तमान भारत ।।) पत्रावली २ भाग ४।)

हमारी अपनी प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

गल्पमंजरी-सुदर्शन ३) प्रतिनिधि कहानियां-वाजपेयी ३) कथाकुंज प्रो० जगन्नाथ ३।।=) पुरस्कार तथा अन्य कहानियां-पाठक ३) दृग्दान १।।) अन्तहीन अन्त १।) दृश्य-कुसुमार १।।) देखा-सुना उपन्यास ३) हिन्दी काव्यशैली का विकास ४) अलंकार प्रवेशिका २) छंदोलंकारमंजरी २।।) शकुनशास्त्र हिन्दी छपता है। वैशाख की रात १।।) सफल जीवन ३) पद्यपुष्पांजली २।।) हिन्दी गद्य प्रसार २)। नये एकांकी नाटक-पाठक ३)

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र पता:—मोतीलाल बनारसीदास-पुस्तक विक्रेता पोस्ट बक्स नं० ७५ बनारस

(२४ पृष्ठ का शेष)

इयूरिंग लेबर, सप्रीमिआ, सैप्टिक, इन्फैक्शन, सब इन्वोल्यूशन ओफ यूटरस लैक्टेशन, डिस्प्लेसमन्ट ऑफ यूट्रस, प्रोलैप्स ऑफ यूट्रस, कैन्सर ऑफ सर्विक्स, कैन्सर ऑफ यूट्रस, एण्डो मेट्राइटिस, गोनोहियल इन्फैक्शन सिफिलिस, फिब्रोइड ट्यूमर्स, मैस्टाइटिस, प्रुराइटिस, वल्वा वेजिनाइटिस, वेजाइटिस, ल्युकोरिआ, स्टरिलिटी अक्लैम्पशिआ। बच्चों के रोग—एडीनोयड्स, कोरिया, एन्यूरेसिस, क्रेटिनिज्म, इनफन्टाइल कन्वल्शन्स, डिफ्थीरिया, इक्टेरस निओनेटोरम, लैरिंजमस स्ट्रिडुलस मैरस्मस, मीजल्स, मम्प्स, नाईट, टैरर्स, एक्यूट एन्टीरिअर पोलियोमाइलाइटिस, रिकेट्स स्कार्लेट फीवर, थ्रश, थ्रेडवर्म्स, हूपिंगकफ, समर डायरिया। विविधरोग—इसमें सर्जीकल (चीरफाड़) के रोगों का वर्णन दिया है। मदात्यय, अनिद्रारोग, खांसी, रक्तवमन, बलगम में खून आना, रक्तमेह, शिर का दर्द, गला बैठ जाना, नपुंसकता, शुक्रमेह, धातुक्षीणता घबराहट, कोलैप्स, सन्यास, प्रलाप, लू लगना, ऐडिनोइड्स, संधिप्रवाह अर्थात् जोड़ों का सूजन, रगड़ घिसट, फोड़ा-विद्रधि, मूत्र का न बनना, मूत्रावरोध, शय्याव्रण, गिटी, जलजाना—अग्निदग्ध—द्रव से जलजाना, सरतान—घातक अर्बुद, अन्त्रवृद्धि, अर्शरोग—बवासीर, मसकोड़, गठीली रगें—शिराओं का फूल जाना सेल्युलाइटिस, बवाई फटना—अलस, अंडग्रंथिप्रदाह, अंडकोषवृद्धि, शिश्न चर्म संकोच, पैराफाइमोसिस, भगन्दर, गुदभ्रंश या कांच निकलना, कोश-अंग का मृत हो जाना, गैस गैंग्रीन, घाव, सर्पदंश, सोजाक, पूर्वीव्रण—नाड़ीरी जखम, नखप्रदाह, इनग्रोइंगनेल, अंगुलबेल।

घर बैठे डाक्टर बनें ! घर बैठे डाक्टर बनें !!

वर्मा एलोपैथिक चिकित्सा

लेखक—एलोपैथिक गाईड तथा लोपैथिकनिघंटु के सिद्धहस्त लेखक डा० रामना वर्मा।

इस पुस्तक में स्त्री-पुरुष-तथा बच्चों को होनेवाले हर रोग की अनुभव सिद्ध एलोपैथिक (डाक्टरी) चिकित्सा दी गई है। जिससे घर बैठे हर बिमारी का इलाज आसानी से किया जा सकता है। हर रोग के कारण—लक्षण—चिकित्सा जहाँ पेटेन्ट मेडिसन देना ही ठीक है वहाँ वह पेटेन्ट मेडिसन जिसमें जिस हालत में जो योग देना उचित है वह, जहाँ इंजेक्सन देना आवश्यक है वहाँ इंजेक्शन और जहाँ पर नवीन औषधियों का देना ठीक है वहाँ नवीन औषधियें अर्थात रोग को हर प्रकार से ठीक करने के उपाय दे दिये हैं और जहाँ सर्जिकल प्रयोग ही उचित है वहाँ वह भी दे दिया गया है। तथा पथ्य आदि का भी पूरा वर्णन दिया गया है। निम्नलिखित रोगों की चिकित्सा आदि सब कुछ दिया है। इन्फेक्शस डिसीसेज—छूतवाले रोग—ऐन्थ्रक्स, ऐक्यूट पोलिओमाइलाइटिस, ब्लैक वाटर फीवर, सेरिब्रो—स्पाइनल फीवर, चिकनपौक्स, कौलरा, डेंगे फीवर, डिसेन्ट्री, डिफ्थीरिआ, एरिसिपलास, फूट एण्ड माऊथ डिसीज ग्लैण्डर्स, हाइड्रो फोबिआ, इन्फलुअन्जा, कालाजार, लेप्रोसी, मलेरिया, मीजिल्स, मम्प्स औस्टिओ माइलाइटिस, प्लेग, पौट्स डिसीसेज, पाइरेक्सिआ, पाइरिआ, सैप्टीसीमिआ, रैट बाईट फीवर, रिलैप्सिंग फीवर, रूमेटिक फीवर, स्मौल पौक्स, स्कार्लेट फीवर, सौफ्ट शैंकर, सिफ़िल्स, टैटेनस, टाइफाइड फीवर, टाइफस फीवर, हूपिंग कफ, यौज।

वातरोग अर्थात् नाड़ी संस्थान के रोग—कोरिया, डायबेटीज़, इन्सपीडस, एपिलैप्सी, हैमिप्लीजिआ, हाइपोकौन्ड्रिआसिस, हिस्ट्रीरिया, इन्फैन्टाइल कन्वल्शन्स मैनिन्जाइटिस-मिग्रेन, न्युरेल्जिआ, न्युरस्थेनिआ, न्युराइटिस, पैरैलाइसिस, एजिटन्स, स्याटिका, टेबीज़ डौर्सलिस, टैटेनि, वर्टिगो, राइटर्स, क्रैम्पस, सेरिब्रल हैमोरेज, एम्बोलिज्म और थोम्बोसिस, कोम्प्रेशन आफ़ ब्रेन, कन्कशन ऑफ ब्रेन, माइलाइटिस, कैटेलेप्सी, फेशियल पैरेलाइसिस, पैराप्लीजिया जनरल पैरेला सिस आफ़ इन्सेन्स, हिक्कफ, इन्सेनिटी। मांसपेशियों के रोग—मायेल्जिआ, मस्कुलर एट्रोफ़ी, माइ-एस्थेनिआ ग्रेविस। स्वासोच्छ्वास के अंगों के रोग—नाक के रोग—ऐक्यूट राइनाइटिस, क्रौनिक राइनाइटिस ऐपिस्टैक्सिस, हे फीवर। स्वर यंत्रके रोग—लैरिन्जाइटिस, पैरेलाइसिस ऑफ़ लैरिजंअल मसिल्स, टेटुवे के रोग—ट्रैकाइटस, स्वासप्रणालियों के रोग—एक्यूट ब्रौन्काइटिस, क्रौनिक ब्रौन्काइटिस, एज्मा। फुफ्फुसों के रोग—ऐम्फाइज़ीमा, निमोनिया, ब्रौन्कोनिमोनिया, थाइसिस, फुफ्फुसावरण के रोग प्लुरिसी, एम्पाइमा, हाइड्रोथोरैक्स, न्यमोथीरेक्स। हृदय के रोग—ब्रैडीकार्डिया, टेकीकार्डिया, हाइपर्ट्रोफी आफ हार्ट, डाइलेटेशन आफ हार्ट, मायोकार्डाइटिस, पैरिकार्डाइटिस, एन्डोकार्डाइटिस, अन्जाइना पैक्टोरिस, पल्पीटेशन। रक्त वाहिनियों के रोग—हाइ आर्टीरिअल टैन्शन, लो आर्टीरिअल टैन्शन, ऐन्युरिज्म वाइटिस, थ्रौम्बोसिस और ऐम्बोलिज्म रेनौड्स डिसीज। मुंह, कंठ, मूल ग्रन्थि और कंठ के रोग—स्टमेटाइसिस, कैंटोहल सारे थ्रोट, टौन्सिलाइटिस क्रौनिक अन्लार्जमेण्ट ऑफ टौन्सिल्स, क्रौनिक फैरिन्जाइटिस। थूक लाल पैदा करने वाली ग्रन्थियों के रोग—टायेलिज्म, ड्राईमाथ, पैरोटाइटिस, क्रौनिक अन्लार्जमेन्ट्स। आमाशय के रोग—इनडिजेस्शन, वौमिटिंग, गैस्ट्राइटिस, डाइलटेशन, आवर ग्लास कान्टैक्शन, अल्सर, कैन्सर, ट्युमर्स, एसिडिटि, फ्लैटलैन्स, नौशिआ, टिम्पेनाइटीज़, हार्टबर्न। आंतों की बीमारियाँ—कौन्सटिपेशन, ऐलिमेन्टरि टौक्सीमिया डायरिया, हीमोर्हेज, कौलिक अल्सर आँफ ड्योडीनम, एन्टराइटिस, फूड पौइज़निंग, स्प्रू कौलाइटिस, एपेन्डि साइटिस, इन्टैस्टाइनल ट्युबर्कुलोसिस, कैन्सर और सिफिलस, औब्सट्रक्शन, इन्टसस सैप्शन एन्ट्रो स्पाज्म, इन्टैस्टाइनल वर्म्स, मेलीना। यकृत के रोग—जैन्डिस, ऐसाइटीज हिपेटाइटिस, ऐब्सेस, सिहोंसिस, कौलीसिस्टाइटिस, गौलस्ट्रोन्स, कन्जैस्शन। क्लोमग्रन्थि के रोग—एक्यूट पैन्क्रियाराइटिस, क्रौनिक पैन्क्रियाटाइटिस, ट्युमर्स। रक्तरोग—अनीमिया, क्लोरोसिस, ल्युकीमिया, ल्युकोपीनिया, पर्पुरा, हीमोफाइलिया। लसीका ग्रन्थियों तथा वाहिनियों के रोग—हौड्जकिन्सडिसीज़ टेबीस मेसेन्ट्रिका, फिलेरिएसिस, एलिफेन्टायेसिस। प्रणली विहीन ग्रन्थियों के रोग—थाइरौइड ग्लैण्ड, पैराथाइरौइड ग्लैण्ड, सप्रारीनल ग्लैण्ड, पिटुइटरी ग्लैण्ड, थाइमस ग्लैण्ड, पीनिअल ग्लैण्ड। मूत्र यंत्र के रोग—एक्यूट नेफ्राइटिस, क्रौनिक ट्युबल नेफ्राइटिस, क्रौनिक इन्टर्स टीशल नेफ्राइटिस, पेरिनेफ्राइटिस, पाइलाइटिस पायोनोफ्रोसिस, विल्हार्जिआसिस, मूवेबिल किडनी, रीनल कैल्कुलस, अल्व्युमिनरिया हाइड्रोनेफ्रोसिस, एनेसाटका। चर्मरोग—एरीथीमा, अर्टीकेरिया, पेम्फीगस, हर्पीज़, ड्रग इरप्शन्स, ऍक्ज़ीमा पिटिरिआसिस, सोरायसिस, लिकेन, प्रूराइगो, प्रूराइटिस, इम्पेटिगो, ल्युपस वल्गेरिस, कैलोसाइटिस और कौर्न्स, वार्टस, लेन्टिगो, ल्युकोडर्मिया, एनिड्रोसिस, हाइपरिड्रोसिस, ब्रोमिड्रोसिस, सुडामिना, सेबोरिहया, एक्नि वॉइल्स, कार्बंकिल, सेबेसिअस सिस्टस, एलोपीसिआ, साइकोसिस, रिंगवर्म, फेवस, स्केबीज़ कौन्डीलोमा, प्रिकलीहीट, पेडिक्लोसिस। अस्थियों और सन्धियों के रोग—रूमेटाईट, आर्थराइटिस, क्रौनिक रूमेटिज्म, इन्फेक्टिव आर्थराइटिस औस्टो-मलेशिया। रोग जिनका संबंध परिपोषण और संवर्तन से है—गाऊट डायबिटीज मेलिटस, ओवेसिटि, बेरिबेरि, स्कर्वी, रिकेट्स। आंखों के रोग—ब्लेफाइटिस, कैटेरैक्स, कंजक्टीवाइटिस, कौर्नियल अल्सर, कौर्नियल ओपेसिटी, ग्लौकोमा, हाईपर्मेटोपिआ आइराइटिस, केरेटाइटिस, मायोपिया, नाईट ब्लाइन्डनेस, निस्टेग्मस औप्टिक न्युराइटिस, प्रेस बायोपिया, टटेरीजियम, स्कुइन्ट, स्टाई, ट्रैकोमा, कैलज़िअन, एन्ट्रोपिअन, एक्ट्रोपिअन, टोसिस, एपिफारो ड्रैकोसिस्टाइटिस, सिम्पैथटिक औफ्थेल्माइटिस, पैनौफ्थैल्माइटिस रेटिनाइटिस, कलर ब्लाइन्डनेस, अस्टिग्मेटिज्म, डिप्लोपिया, ट्रिक्यासिस। कर्णरोग—फोरेन बौडीज़, इम्पैक्टेड सेरुमन, कैटाईल ओटाइटिस मीडिआ, डैफनेस। मसूढ़ों और दांतों के रोग—टूथेक, जिन्जिवाइटिस, गमबौयल, पायोरिहया, एल्विओलेरिस डैन्टल केरीज। स्त्री रोग—अबौर्शन, मिस कैरिज, प्रीमेच्योर लेबर, डिलेड लेबर, प्रेसिपिटेट लेबर, एमिनोरिहया, डिस्मेनोर्हिया, मेनोर्हेजिआ, मेट्रोर्हेजिआ, मनोपौज़, एन्टि-पार्टम हीमोर्हेज, पोस्ट-पार्टम हीमोर्हेज, डिस ऑर्डर्स प्रैग्नैन्सी, रिटेन्ड प्लेसेन्टा, पुट्राइन इनर्शिआ इन्जरीज़

(शेष पृष्ठ २३ में देखिये।)

ज्योतिष-कार्यालय के नियम

श्रीमार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय में जन्मपत्र, वर्षफल, टेवे आदि बड़े परिश्रम से बनाए जाते हैं। जन्मपत्र में आयु, सन्तान, स्त्री, धन, व्यापार, नौकरी, शरीर का सुख दुःख, भाग्योदयादि का पूरा-पूरा विचार शास्त्रानुसार किया जाता है। इसी प्रकार वर्षफल भी बनाए जाते हैं। बाहर से प्रश्न पूछनेवालों को पत्र लिखते समय ठीक-ठीक वक्त और अपना जन्म दिन, संवत् या उमर का अन्दाज तथा पेशा लिख भेजना चाहिये। जन्मपत्र की फीस ५१) रु० से २५०) रु० तक। वर्षफल २१।) से २५) रु० तक। टेवा २१) रु०। शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त प्रश्न और ग्रह-मेलापक (कुण्डली मिलान) की फीस २१) रु०। भारत से बाहर द्वीपान्तरों (अफ्रीका, चीन, ब्रह्मा, जापान, अमेरिका आदि) में पैदा हुए बालकों के शुद्ध इष्ट और केवल लग्नकुंडली बनाने की फीस ७) रु०। आयुर्निर्णय (अंशायुर्गणित मारकेश रोगविचारादि) २५) स १००) रु० तक। प्रत्येक कार्य की आधी फीस पेशगी ली जाती है। बाहर से कार्य भेजनेवाले पत्र के साथ ही आधी फीस भेज दें। आधी फीस पेशगी आए बिना कार्यारंभ नहीं होता। पत्र-व्यवहार जहाँ तक हो सके हिन्दी राष्ट्रभाषा में होना चाहिए। बैरंग-पत्र-वापस किए जाते हैं। उत्तर के लिए टिकट या जवाबी पत्र भेजना जरूरी है। हर कष्ट का उपाय भी बताया जाता है।

व्यापार के चांस-अनुभवसिद्ध एक तरफ के पक्के चांस कभी-कभी आते हैं। प्राचीन ढंग से तेजी मन्दी पूरी नहीं मिलती, प्रत्येक वर्ष में आनेवाले सोना, चाँदी, बाजरा, गेहूँ, रूई के २१४ चांस पूछना हो तो पेशगी ११) रु० भेजिए और लाभ में से दशमांश भेजने की प्रतिज्ञा कीजिये।

नोट—जो सज्जन हमसे प्रत्यक्ष मिलना चाहें तो वह जवाबी कार्ड भेजकर मिलने की तारीख निश्चित कर लेवें। 'कुराली' के लिए लुधियाना, अम्बाला के मध्य सरहन्द जंकशन से गाड़ी बदलनी पड़ती है। प्रत्यक्ष मिलने का समय-ग्रीष्म में ८ से ११ तक मध्याह्नोत्तर १ से ६ तक। शीतकाल म १० बजे से शाम को ४ बजे तक। बाहर से अकेले आकर शांत चित्त से एक ही प्रश्न करें। हमारा ज्योतिष कार्यालय (मार्तण्ड भवन) रेलवे स्टेशन के पास है।

पता—राजज्यौतिषी पं० मुकुन्दवल्लभ ज्योतिषाचार्य
अध्यक्ष—श्रीमार्तण्ड ज्योतिषकार्यालय,
कुराली (पूर्वी पंजाब)

जीवन से निराश रोगियो—

यदि आप अपने रोग को असाध्य समझकर जीवन से निराश हो चुके हों तो योगी सेवाश्रम में पधारें या पत्र व्यवहार करें। योगीराज श्रीमनोहरलाल जी तथा श्रीशिवनाथ जी योगी की कृपा से प्रतिमास सहस्रों रोगी स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं। इस औषधालय का लाभ गरीब रोगियों पर खर्च होता है।

पता—सेवायोगी आश्रम धर्मार्थ औषधालय, मु पो.—बराड़ा, जि. अंबाला—(पूर्वी पंजाब)

दन्त रोगों के विशेषज्ञ

यदि आप दांतों के किसी भी प्रकार के रोग से पीड़ित हैं तो निम्न लखित पते पर पधारें या पत्र व्यवहार करें शर्तिया लाभ होगा।

पता—डाक्टर जगदीश चन्द्र जी दिग्वा. गांधी चौक रोपड़ (पंजाब)

श्रीस्वाध्याय (त्रैमासिक)

भारतीय साहित्य संस्कृति और ज्योतिश्शास्त्र के रहस्यों को प्रकाशित करनेवाला यह पत्र बारह वर्ष से निकल रहा है ज्योतिषियों धर्मशास्त्रियों और व्यापारियों के लिये उपयोगी है वार्षिक मूल्य ४) एक प्रति का १)

पता—श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला)

विज्ञानज्योति :—

इस मासिक पत्र में व्यापारी वर्ग के लाभार्थ महर्घ, समर्घ, मुहूर्त, ज्योतिष विज्ञान के चमत्कारादि अनेक अत्युपयोगी विषय छपते हैं जो देखने ही योग्य हैं। वार्षिक चन्दा ५।=)

श्री पं० विशुद्धानन्द जी ज्योतिषाचार्य, विज्ञानज्योति कार्यालय, मु० पो० खुरजा (यू० पी०)

विज्ञापन-बाजों से सावधान !

पञ्जाब-केसरी श्रीसिद्धमहायन्त्र

इस यन्त्र को धारणकर महाराजा श्रीरणजीतसिंहजी ने अपने जीवन की सभी चामत्कारिक सफलतायें प्राप्त की थीं। उन्हीं के राजज्योतिषी के घराने से यह सिद्धमहायन्त्र प्राप्त हुआ है और वर्षों से अनेक व्यक्तियों पर इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया गया है, केवल जनता के उपकारार्थ इस महासिद्धयन्त्र का प्रचार किया गया है, इसे कोरी विज्ञापन बाजी न सम सभी स्त्री पुरुष इसे धारण कर मनोवाञ्छितफल प्राप्त कर सकते हैं। विश्वास पूर्वक इसको धारण कर चमत्कार देखिये। प्रतिष्ठित सुवर्णयन्त्र १०१) रु० रजतयन्त्र ५१) रु० ताम्रयन्त्र २१।) रु० डाक व्यय पृथक्।

मिलने का पता—सिद्धयन्त्र कुटी, पो० सुन्दरनगर (हिमाचल-प्रदेश)

छप गया !

ज्योतिष शास्त्र का अद्भुत आविष्कार

भृगुसंहिता पद्धति

सरल हिन्दी में

आविष्कार कर्त्ता सुप्रसिद्ध ज्योतिषी श्रीभगवानदास जी मित्तल

सम्प्रति संसार में ज्योतिष सम्बन्धी फलादेश के जितने प्राप्त ग्रन्थ हैं, ऐसे तो सभी अपने २ ढंग के अद्वितीय हैं किन्तु उक्त ज्योतिषी जी ने इस पुस्तक को तैयार कर सर्व साधारण के लिये भृगुसंहिता का फलादेश प्रत्यक्ष सिद्ध कर दिखाया है। पुस्तक रत्नों के साथ तौलने योग्य है। हर कुण्डली के फलादेश प्रायः शतशः ठीक मिलते हैं यही कारण है कि उक्त ज्योतिषी जी के पास फलादेश पूछनेवालों का ताँता बँधा रहता है। वह जो भी फलादेश करते हैं उसे ईश्वरीय फलादेश ही समझना चाहिये। अतः उन्होंने ९ ग्रहों की गति के अनसार जितनी कुण्डली बन सकती हैं उन्हें बनाकर तथा अपनी दैवी शक्ति से उनके फलादेश कर सब इस पुस्तक में दे दिया है ताकि हर एक को यह आसानी से मिल सके। बहुत थोड़ी प्रतियां छपी हैं। इसलिये अपनी प्रति तुरन्त मंगा लें। अन्यथा दूसरे संस्करण की प्रतीक्षा करनी होगी। ज्योतिषियों के लिये तो यह पुस्तक जीवनदाता का काम करेगी। मूल्य केवल १०) रु०।

छप गया !

अर्घ-मार्तण्ड

[तेजी मन्दी का अनुपम ग्रन्थ]

पञ्चाङ्गकर्त्ता

राजज्योतिषी पं० मुकुन्दवल्लभजी कृत

इस ग्रन्थरत्न में रूई, सूत, वस्त्र, शेयर, ऊन, सोना, चाँदी, तांबा, लोहा आदि धातु तथा गुड़, खांड, रसकस, इलायची, कालीमिर्च, मसाला, मूंगफली, करयाना, जवाहरात, घृत, तिल, तेल, सरसों, बाजरा, अलसी, गेहूं, चावल, खली, बिनौला, लकड़ी, रंग आदि प्रत्येक वस्तु की तेजी मन्दी के उत्तम अचूक सुनहरी चान्सों के योग सरल हिन्दी भाषा में दिल खोलकर लिखे गये हैं। जिन योगों को हजारों रुपये खर्च करने पर भी ज्योतिषी लोग नहीं बतलाते थे वह सब तेजी मन्दी के अनुभवसिद्ध गुप्त भेद २५ वर्ष की जांच के बाद लिखे गये हैं। ऐसा ग्रन्थ अन्यत्र संसार की किसी भाषा में भी छपा हुआ नहीं मिलेगा। यदि आप धन कमाकर लक्षाधीश बनना चाहें तो इसे मँगाकर देखने में देरी न करें ग्रंथ के अन्त में सर्वोपकारार्थ लक्ष्मीप्राप्ति के सिद्ध प्रयोग भी लिख दिये हैं जिनके करने से निर्भाग्य निर्धन भी लक्ष्मीयुक्त (धनीमानी) होकर सर्वसुख ऐश्वर्य की जिन्दगी भोग सकता है। व्यापारियों का तो यह जीवन है। ऐसे अनुपमग्रंथ को अविश्वास करके न मंगाना दुर्भाग्य ही होता है व्यापार में हानि उठाये हुए व्यापारी भी यदि इस ग्रंथ को गौर से विचारेंगे तो वह भी कभी न कभी अपना घाटा पूरा कर ही लेंगे इस में संदेह नहीं। यह सदैव काम आनेवाली पुस्तक बढ़िया कागज तथा कपड़े की पक्की जिल्द सहित तैयार हुई है, मूल्य १०) रुपये। यह पृष्ठों का मूल्य नहीं, गुण की भेंट मात्र है।

स्तवसार्वभौम—इस अभूतपूर्व स्तोत्र के पाठ करने से भक्तों की सम्पूर्ण विपत्तियां दूर होकर सर्व शुभ कामनाएं पूर्ण होती हैं। निष्काम पाठ करने से अत्युत्तम फल की सद्यः प्राप्ति होती है। प्रभु कृपा से यह स्तोत्र १६ वर्ष की अल्पायु में ही एक बालक द्वारा श्लोक बद्ध निर्माण हुआ था। मूल्य ।)

मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता, पो० बक्स ७५, बनारस।

किनारी बाजार—देहली | बाँकीपुर—पटना

प्रकाशक—सुन्दरलाल जैन अध्यक्ष मोतीलाल बनारसीदास पुस्तक विक्रेता नेपालीखपरा, बनारस। मुद्रक—शान्तिलाल जैन, नवभारत प्रेस, नेपाली खपरा, बनारस